

सृगन्धर्वनी

(ऐतिहासिक उपन्यास)

श्रीमानलाल बन्ना एडवाकेट

(लेखक—श्रीमानलाल, बंगाली की रामो लक्ष्मीरा^२ कथकार, ईश-मन्त्र,
दूरे की^२ मुक्तिकथन, लयन, विराट की बलिनी सोम संवत्,
, २-म की घोर, कथन की विविधा, वहुत बार, पूर्व की घोर चारि)

मयूर प्रकाशन,
• दिल्ली • ग्वालिगर • जयपुर •

प्रकाशक—
अनन्त बर्मा जी, ए., एल-एल जी,
संयुक्त-प्रकाशन मद्रास।

चतुर्थ संस्करण—१९५२

पुष्प, पुष्पद्रव्य और चित्रण निर्माण आदि के सर्वप्रथम
प्रकाशक के अधीन है।

मूल्य ५)

हरक—
द्वारिकाप्रसाद मिश्र 'इन्डियन
ग्यापीन प्रेस, मद्रास।

परिचय

१९४६ के अन्त में ग्वालियर की एक सम्मानित पाठिका ने सम्प्रति ममनमयी घोर मार्तण्डिह तोमर के ऐतिहासिक कमाने कबानक पर उपस्थापित करने का अनुरोध किया। उन दिनों छूट काट्टे उपस्थापित समाप्ति पर था गता था। उसको समाप्त करके कुछ निश्चय की बाध्यता मन में थी ही मने उस कबानक की ऐतिहासिक पुष्टि का अध्ययन अवसर पडे ही आरम्भ कर दिया। दिन स्वार्थों का सम्बन्ध उपस्थान की मुख्य कथा से है उनका प्रयत्न भी किया।

मार्तण्डिह तोमर १४८६ से १५१९ ई० तक ग्वालियर का राजा रहा। क्रिस्ता के इतिहास केकक ने मार्तण्डिह को बीर और धाम्य गानक बतलाया है। अंग्रेज इतिहास लेखकों ने मार्तण्डिह के राज्यकाल को तोमर शासन का स्वर्णकाल (Golden Age of Tomar Rule) कहा है। पण्डितजी मताब्दि के अन्त और सोलहवीं के आरम्भ को राजनैतिक और धार्मिक दृष्टि से भारतीय इतिहास का कलाय बढोर और कामा बन कहें तो प्रतिशयोक्ति न होगी। उत्तर में तिकन्वर सोही और उसके सहयोगियों के परस्पर युद्ध तथा दोनों द्वारा जोर बनपीड़न राजस्थान में पण्डा कुम्मा का घपन बढ के ही हाथ से विप द्वारा बच और उसके उपस्थान बहा की बराबरकता मुजरात में महमद बघरा के प्रगणित बिजन और रक्तपात मापना में ब्रह्मासुहीन निजनी और उसके उत्तराधिकारी नसीरुद्दीन की मत्पाचार-प्रियता और धर्म्यापी दक्षिण में बहमनी सल्तनत और बिजयनगर राज्य के युद्ध और बहमनी सल्तनत का पाँच सल्तनतों में बिजन बाना बोलपुर बिहार और बङ्गाल में पठान सरबारों की निरन्तर मोह-बलोट और इन सबके अवधग बीच में ग्वालियर। ग्वालियर पर तिकन्वर सोही के पिता बहमोल न आचयण किसे

फिर विक्रम्वर ने स्वाभियर का कपूमर निकालन में कसर नहीं लगाई । विक्रम्वर स्वाभियर पर पाँच बार बम के साथ धाया । पाँचो बार सचन्दो मानसिंह के सामने से लौट जाना पड़ा । उसके इग्तदारी इतिहास केरफों—घरबार नबोसों—ने लिखा है कि मानसिंह ने प्रत्येक बार सोना चाँदी रत्न का बादा—मोना चाँदी नहीं—देकर टाका । बादर्षव है विक्रम्वर सरीखा कठोर घोषा मान भी लेता था । अन्त में विक्रम्वर को १५ ४ में धाकर का निर्माण इसी मानसिंह तोगर के पराजित करने के लिये करना पड़ा । इसके पहले धावण एक लक्ष्य स स्थान था । तो भी विक्रम्वर सफल न हो पाया । स्वाभियर पर बर बामकर नरवर पर बहाई कर ही । नरवर स्वाभियर राज्य में था । वह पर दावा राजसिंह कछवाड़ा का था । राजसिंह ने विक्रम्वर का साथ दिया । तो भी नरवर बाफे ११ महीने तक लगातार पछ में छाटी पड़ाने रहे । जब खाने को पास घोर पेहों की खाल तक धलभ्य हो गई । उस वन लोनों में आत्म-नमर्पण किया । फिर विक्रम्वर ने वन की जलन के नरवर स्थित मन्धिरों घोर मूर्तियों पर निकाभी—बहु ध महीने इस उद्दम से नरवर म रहा ।

ऐसे वन में इनने संघर्षों में भी मानसिंह हुआ । घोर उनने तक उसकी रानी मुनमयनी ने जो कुछ किया उसका प्रत्यक्ष प्रमाण था भी हमार सामने है । स्वाभियर किन के भीतर मानसिंह घोर गूजर महान हिन्दू वास्तु ज्ञान के धारण नुनर घोर मोहक प्रतीक है, उस प्रुवपद और बमार की मन्धरी घोर स्वाभियर का विद्यापीठ जिसने पिप्प नामनेन ने धाम भी जान नर में प्रविष्ट है । जिसकी नवन वास्तु घोर रवापर कला कहने है वह नका मानसिंह के स्वाभियर प्रितियों में दिन नहीं है ? महाकवि हागोर ने तात्रमहम की ज्ञान के पान का धाम कहा है । यदि भी । जिसकी कविता पर संशय का भी बाबा नहीं है । मानसिंह घोर गूजरी महान की ज्ञान के हीनों की पम्पान कहें तो महाकवि नावीर के उस वाक्य का एक प्रकार से समझन की — १ ।

जब ११२७ में शहर ने मालमन्दिर और मूखरी बङ्गल को दया तथा उत्तको बने २० वर्ष हो चुके थे । तो तब ११७७ में ये बन चुके थे । मूखरी रानी मदनयनी के साथ मानसिंह का विवाह १५६२ के लगभग हुआ होता । मानमन्दिर और मूखरी बङ्गल के मूल की बनना को मदनयनी से प्रेरणा मिली होती । ईशनाथ नाथक (बैजू बाबा) मानसिंह मदनयनी के मादक थे । मूखरी टोड़ी मदन मूखरी इत्यादि रात इसी मदनयनी के नाम पर बन है । जिस सम्मानित पाठक ने मदनयनी के बनावट पर उपस्थात सत्सम का अनुरोध किया था उन्होंने ठीक सिखा कि मदनयनी शीर्ष और कला दोनों के लिए विख्यात थी ।

मदनयनी मूखर कुल की थी । राई बाँध की रीति विधान कथा । पारोरिक बल और परम लौक्य के लिए वह स्थाह के पड़ते ही प्रतिष्ठ हो गई थी । परम्परा में तो उनके विषय में यही उक्त कहा गया है कि राजा मानसिंह राई बाँध के बङ्गल में निवास करने पर उसे ही देखकर कि मदनयनी (अपमान के प्रारम्भ की निम्नी) ने बङ्गली घेरा की सोम पकड़कर मोड़ दिया । एक साहस ने परम विद्वान के साथ मुन्हा को अनुमान कि राजा मानसिंह अपने मङ्गल बैठ चुके थे नीचे देखा बङ्गली मेरे के बीच पकड़कर मदनयनी मरोड़ रही है और उत्तको मोड़ रही है ।। ग्वालिपर द्वारे के भीतर बङ्गली मेरा पहुँच गया और राई बाँध से भी ग्वालिपर से पश्चिम-दक्षिण में ११ मील है मदनयनी बङ्गली भले की मोड़ने-मरोड़ने के लिये था गई ।।।

वैने पहली परम्परा की ही माग्यता की है । ग्वालिपर पञ्जीटियर में उत्ती का उल्लेख है ।

किर वेने मूखरी में धूम-ध्वज कर बार्ते की । उन्होंने भी उत्ती का उल्लेख किया ।

पहाड़ों में होकर लोक नदी राई बाँध के नीचे से निरमी है । लोह नदी पर पियरा का बँध बंध गया है और राई बाँध बूझ गया है । राई

के ऊपर ढँधी पड़ा हो पर किन्तु उनके माई की गद्दी भी अब सँवहल हो गई है। परन्तु उनके माई और साखी के त्यागों के सँवहल नहीं हो सकते।

गुजरात का महम्मद बखरी जिस जितना कदवा घोर भोजन करता था यह फरसों की गरीब मोरत तिकमरी में बर्ब हु र इमियट और हासन में हमका प्रत्यक्ष किया है। मासका-मुस्तान नसीबुल्लाम की पत्रह हजार बखरी थी—राज्य इसने पाया था बासनाभा की मृत्ति के सिम अपने बाप की बहुर ईकर। जब लगभग १ बर पीछे समय बासनाह जहाँगीर मासका की राजधानी पाई दया घोर उसने नसीबुल्लाम के काँदों का हाल सुना तब हमको इनका क्रोध आया कि नसीबुल्लाम की कबर उगड़वा डाली और उसकी हड्डियों को बसका दिया। मापाक था मापाक था वह ॥ जहाँगीर ने कहा था। उसकी कबर को जहाँगीर ने भी उगड़वाता तो भी आज वह बेपनाह बनिघान सँवहल होती। मातसिह घोर मुननवनी की साखी घोर घटम की स्मृति का सँवहल तो कभी होगा ही नहीं।

उपस्थान में घाये हुये सभी चरित्र-सोहों को छोड़कर—ऐं ठहातिक है। विजयचक्रम निज्जाफन था। ग्वासियर के किले के भीतर जैसे ठैल मन्दिर (उसका नाम ठैली का मन्दिर प्राप्त है) बना उरी प्रकार कर्नाटक से विजय ग्वासियर में प्राप्नुर्भूत हुआ। निज्जाफन सम्प्रदाय का बासब पुराण इतिहास में बाग़ददी सताहि में लिखा गया था। इस सम्प्रदाय में बर्जुनेर का निरुद्धार किया गया है। अम-१५८८-को जो महत्त्व घोर मोरब बाणव ने दिया है उसको देखकर बँब रह जाना पड़ता है। संसार के किसी भी देश में उस समय अम घोर यमिकों को मोरब नहीं दिया गया था। इसका अर्थ निज्जाफन सम्प्रदाय के प्रविष्टता को ही है। साम ही प्रहिगा मोर सहाचार घोर मासक बन्तु-निरोध पर जो मोर दिया गया है, उससे जान पड़ता है जैसे प्रविष्टता का अर्थ बीसवीं सताहि में हुआ हो। प्रविष्टता का प्रमाण ने मोर उनका महि एक प्रविष्ट नये को प्रार्थी गई थी—बह भी बाग़ददी सताहि में।

विजयवंतम मित्रायत मानसिह तोगर का मित्र था। मानसिह ने इस से भी कुछ पाया तो कोई धारण्य नहीं।

काठपाठ में भारत में रक्षारमक कार्य भी किया और आज भी सायब कुछ कर रहा हो परन्तु इसका विनाशात्मक काम भी कुछ कम नहीं हुआ है। वर्षस सन १२५ में धारी एक बनना है। टेहरी (धनमोडा) के एक गाँव में एक लुहार ने १२ वर्ष हुए कुनरी बानि की मकड़ी के साथ विवाह कर लिया। बारह वर्ष तक यह लुहार काठपाठ में बाहर रहा। कभी सब धर्मस में मान की नहीं पंचायत में उनको बर्णन किया। फिर लुहार की बोलबाली घट भि में लाली धोर घटस के तिर पर क्या क्या न होती होकी कसकी कल्पना ही की जा सकती है।

साक्षी धोर घटस की क्या के साथ नटों का सम्बन्ध है। नटों धोर नरवर के प्रसंग में एक बोझ प्रचलित है —

नरवर कहे न बेड़नी नुबी कहे न छिट
मुपनीट प्रोअन नहों इरन पके न ईट।

किम्बदन्ती है कि किसी ने एक नटिनी (बड़िनी) को नरवर हिले से बाहर रस्से पर लीने टेंग बाकर जो किस क बाहर एक पेड़ से बँबा हुआ था बिट्टी ले जाने के लिये कहा और बचन दिया कि यदि बिट्टी बाहर पहुँचा हो तो नरवर का प्राचा राज्य दे दिया जायगा। नटिनी रस्से क सहारे किले से बाहर हो गई। जब उसी सहारे बापिस था रही थी तब बचन देने वाले न रस्से को काट दिया और नटिनी नीचे लड़ में पिरकर बकनाचूर हो गई।

मने इस किम्बदन्ती का दूसरे प्रकार से उपयोग किया है।

मुपलब्धी ने अपने ब्याह से पहले राजा मानसिह से जा बचन लिये थे उनमें से एक यह भी था कि राजा राई बाँध से खातिबर किस एक साँक नहीं की नहर के पार्यने। राजा ने यह नहर बनवाई उसके बिन्दु अब भी वर्तमान है।

एक किम्बदन्ती है कि मानसिंह के दो सौ रानियाँ थीं। ग्वालियर किले के बार्ड ने मुझको दूसरी किम्बदन्ती का पता दिया कि राजा मानसिंह के एट घाठो रानियाँ थीं। मैंने बार्ड के शब्दों को ज्यों का त्यों उद्धृत कर दिया है। 'एट' उग्री का है। न निश्चयता तो कहते मेरा अपमान किया। चंपबी का एक मन्त्र ही होता था उसको भी छोड़ दिया।

मैंने बार्ड की कही हुई बात को ही उपर्युक्त में माय्यता दी है।

बार्ड और मूजरों ने बतसाया कि मृगमयी के दो पुत्र हुए थे— एक का नाम राजे हमरे का बासे। मानसिंह के बही रानी से एक पुत्र विक्रमादित्य का जो मानसिंह के पीछे गया हुआ। बार्ड और मूजरों ने बतसाया कि राजा और बासे ईर्ष्या से मारे जाने लगे थे कि उन्होंने आत्महत्या कर लिया। मुझको यह परम्परा माय्य नहीं है। मूजरों की ही एक दूसरी परम्परा है कि मृगमयी ने अपने पुत्रों को राज्य न दिलवाकर विक्रमादित्य को राज्य बिसबाया। मुझको यही माय्य है।

जब बीहड़ भयकर यम में मानसिंह को मृक पठन आक्रमणकारियों से निरन्तर लड़ना पड़ा परन्तु उसके मन में मसलमानों के प्रति कोई द्वेष नहीं रहा। उसने मिर्ज़ा के भाई जलालुद्दीन के साथ जाये हुये धनक मसलमानों को ग्वालियर में शरण्य प्रदान की और सभितकमानों के सिधे मानसिंह और मृगमयी ने जो कुछ किया वह भारत के इतिहास में धमक रहेगा।

जोयन बाह्य एतिहासिक व्यक्तित्व है। उनके मारने वालों की बबरता का मैंने बहुत जोड़ा बणन किया है। उसके कुरूप का लावकमान प्रस्तुत किया है—करना पड़ा।

कथावस्तु के संग्रह में महाभाष्या महाराणी साहब ग्वालियर मध्य भारत के मणिमण्डल—विजयपुर मेरे मित्र श्री स्वामय्याल जो पाण्डवीय—और ग्वालियर के पुरातन विभाग न मेरी बहुत सहायता की है मैं उनका

बहुत कठिन हैं। ग्वालियर पुरातत्व विभाग को बाहरेक्टर डाक्टर पाटील का भी ये धामापी हैं बिनाके सौजन्य से मुझको वे बिना भिसे जो इस अपभ्यास में छाये गये हैं। उनके प्रकाशन का उन्होंने मुझको अधिकार दिया इसके लिये धन्यवाद।

पाठक चाहेंगे कि मैं सोमरोँ ग्वालियर और भरवर के किलों और उनके भीतर स्थित इमारतों का वर्णन परिचय में करूँ। कुछ पाठक चाहेंगे कि मैं तत्कालीन आर्थिक स्थिति समझने के लिये आकरूँ हूँ, परन्तु उनके पाठक कहानी चाहेंगे इसलिये अब कहानी—बाकी फिर कभी।

अंसी
१४-७-१९४६ }

बृम्हावनसाधन वर्मा

सृजनयनी

[१]

सासपास घीर दूर-दूर तक के पाँव उगड़ चुके थे। खेती का नाम-निघान तक न बचा था। बीच-बीच में बज्जस भी काट जाता बचा था पर फटे हुए पेड़ों की जड़ों से नई घासें फूट निकली थीं घीर भूमि इन घासों से ढक गई थी।

पाँव उगड़े घीर उनके बहुत से निवासी या वो धाकमलकारियों की तलवार के घात उठर पड़े या भूतों-प्रायों मर गये। जो बच वे तितर बितर हो गये। ग्वाभियर पर पत्तड़हवीं सतामि में घनेक धाकमल हुए। उठने ही बार माँव निर्जन हुई। पुराने कुछ-कुछ धाकमल हुए। जङ्गलों में नदियों-जालों के किनारे थोड़े से गये बसे। घस्य हो जाने घीर भस्म में से गये पीछी के जगने का क्रम बना रहा।

बहुमोल सोरी ने फिर उनके सत्तराधिकारी सिवम्बर न सब तरह के उपाय किये परन्तु ग्वाभियर का क्रिया हाथ न लगा। सोचा था राजा

मार्गविह्वल करके है। अनुभवहीन इसलिये ग्वाभियर की ईंट से ईंट बजाओ जायगी। गांव भिटा दिये पत्ती उजाड़ दो ग्वाभियर नगर को बीरान कर दिया फिर भी ग्वाभियर के ऊँचे फ़िसे ने न तो फाटक लोभे घोर बसर झुकाया। अन्त में कुंधों में जानवरों की सड़ी-गसी बाछों को डाल कर, मार्गविह्वल उसके तीमर भाई-बन्धों की धम्य भड़ने बालों को मन ही मन याधिया देता हुआ सिकन्दर कालपी को बिछा से विस्मी की घोर बना गया क्योंकि वही उसके पठान भाई-बन्धों ने सर उठा लिया था।

सिकन्दर मोरी ने अपने दरबारी इतिहास-कैलक से जो अपने उसूलों का कट्टर पाबन्द मक्का या मिश्रवाया ग्वाभियर को फट्टे कर दिया और विराज का बादा डेकर राजा को फ़िराहास छोड़ दिया।

धार्मिककारियों के बड़े जाने के बाद इधर-उधर बर्बदुबे ठितर बितर बिदे-लुके प्राचीन अपने निवास-स्थानों के बिये निकल पड़े। कुछ अपने पुराने स्थानों पर चौकटे चौकट से या यवे कुछ ने बङ्गल पहाड़ों में होकर बहने वाली किसी नदी का किनारा या पकड़ा घोर नये सिरे से पाँव बसा लिया। इन्होंने भी इतिहास को बुझाया। जो लोग मायाहायी थे इन्होंने बङ्गल के जानवरों से पेट भर जो निरामिष भोजी थे दुप्याप्य बंयसी फल फूल और अपने धोड़े से पालतु पशुओं के दूध-बही पर प्राणों की रक्षा करन लये। बिन्होंने धार्मिक के समय में गधों में बीज छिपाकर रस दिया था वे लीन जाने पर छेती पर बिपट गये।

नदी के किनारे, गांव के पास पहाड़ियों बंयस के बीच-बीच में कुछ पतों में गह्र घोर जाने के पीछ बहलहा उठे। लैठ पकने पर या रहे वे मत्नी के साथ झूमने लगे थे।

साँक नदी में पानी या प्रवाह था। अथपके धाम्य की स्पन्दन देता हुआ पवन बरी के प्रवाह की भी पुनकार-पुनकार करता था।

गांव में एक मन्दिर का लंडहन था जो अन्तिम धार्मिक के पहले ही मृतकाल में बिल बसा था। परन्तु फिर-फिर लौट पड़ने वाले

प्राचीनों ने उसकी मरम्मत की गई मूर्ति को प्रतिष्ठित किया और घब की बार बाँव बाँवों ने उसको मिट्टी के लोशों की ढ़ेबाई देकर फूस से ढक दिया । घास-घास के सभी गाँवों की पञ्चायतों का ध्येय था कि ईंट-पत्थर के मकान न बनाये जायें इसलिये मिट्टी की दीवारों पर फूस खाने का ब्रजन पड़ गया था ।

शालिवर के पवित्र-क्षेत्र में समयम छ. कोस की दूरी पर साँक नदी के किनारे राई नाम का गाँव था । इसमें मन्दिर के साम ही घब जड़े और घबट्ट बरों को भी फूस से छा लिया । बाकी गाँव में खंडहल बिहारे के बिहारे पड़े रह गये । इनके कुछ निवासी पड़ोस के नगवा नामक गाँव में जा बसे व कोई कमी कोई कमी ।

ऊँसल काट कर घर में या पट्टों में रखन की उतावली भी परन्तु अप्र अभी कहीं-कहीं हरा था । पीपों की सहर को छेक कर उतावली किसान हाथ में होंसिया लिये हुए रह-रह जाता था— हरी बाल को कसे काटू ? होली बसने तक तो ठहरना ही पड़ता । किसान को ठहर ।

सिक्खर बसा गया था शालिवर के किले से राजा मानसिंह के पोछा बाहर निकल पड़े व और उनमें से बहुत से अपनी सेतो किसानों को बेत-भाल भी करने लग व । इसलिये किसान ने भाग्य के भरोसे अपनी उतावली को रोका ।

हाली जा गई और सम्म्या के मुहूर्त में बसा ली गई ।

[२]

पाँच दिन रज्जुपंचमी तक होसी मनामे की प्रथा थी। किसी मृग में एक महीने तक मनाई जाती थी। बीसन के बोझों ने एक महीने से बढ़ाकर पाँच दिन में सीमित कर दिया। अब एक दिन भी दूभर था।

सदेरा होते ही कुछ सोरों ने हमरी की बोड़ी सी नाओं को बाँटकर रज्जु तैयार किया और भीड़ते भीड़ते होनी खेल ली। जिनकी गाँठ में रज्जु नहीं था उन्होंने रास्ते की घूम बटोरी और पानी में बोली। पिस्तली बिपदाओं को भुलकर कम से कम कुछ घंटों के लिये मतवाले हो जाने की ठान ली। इनमें संख्या स्थियों की अधिक थी।

धूँधट आये हुये धूँधट के ही भीतर घट्टहास करती हुई स्त्रियों ने एक दूसरे पर मटीला पानी और कीचड़ उछाला। नाते में जो पुरुष पैर सजते थे उनकी बीड़धूप में डूबाया और सब माली अब कीचड़ से उनकी सराबोर कर दिया।

गाँव की सड़कियों पर कोई पुरुष रज्जु या कीचड़ नहीं डाल रहा था। मनब और माबज के परस्पर नाते वाली स्त्रियाँ प्रत्यक्ष घूम और कीचड़ की एक दूसरे पर उछाल रही थी। भगवान ने मुन्किनों से यह दिन बिपदाया फिर कसर क्यों लगाई जाय ? रज्जु हो तो रज्जु—गुलाम तो भी ही नहीं—नहीं तो घूम रज्जु और गुलाम दोनों का काम सजाने के लिये तैयार भी ही।

फिर से बसे हुये इस गाँव में एक सड़की धपनी धाँ के साथ एक उजड़े हुए गाँव से कुछ दिन पहले आ गई थी। परन्तु गाँव में सड़की की तरह रहने के कारण उस पर कोई पुरुष रज्जु या कीचड़ नहीं पटक रहा था।

धूम धमी तक साझ सबूची बची लड़ी हो साची। एक कीचड़ के द्वार पर टनिया की घोट में लड़ी हुई हँसती मुस्कराती हुई सड़की से मिट्टी

की वाली-कनूटी घटकिया में मिट्टी बोसे हुये दूसरी हँसती हुई लड़की ने रास्ते में रोड़ लगाते हुये कहा ।

जिसको साखी के सम्बोधन से चिनीती दी गई थी वह ईर्ष्या की कसक से धर्म स्त्रियों को घुस धीर कीचड़ में सना हुआ बेसकर घपने ऊपर धाकमण किये जाने के लिये मुस्कानों से ग्योवा छा बे रही थी । दटिया को घपनुसा छोड़कर साखी भीतर की धीर भायी । जिसने सम्बोधन किया था वह झपट कर भीतर बँस गई ।

‘हँ—हँ—निम्नी हमारे कपड़ मँके मत करो । साखी ने निवारण करते हुए धामन्त्रण दिया ।

‘बाहुर निकलो बाहुर तुमको सिर से पैर तक न रँध दिया धीर बचा न बिना तो मेरा माम निम्नी नहीं ! घटकिया वाले ने समझाया ।

घरे रे रे रे रे ॥ साखी ने हँसते हुये होठों पर—दोनों पर—दोनों हाथ रत लिय धीर धालें मूव ली । उल्लस-उल्लस कर धीर घट्टहात करते हुये निम्नी ने उसको कीचड़ से साग दिया ।

मन मेरी बारी है । पास पड़े हुये गोबर को झपटकर साखी ने छठामा धीर निम्नी की ओर बढ़ी ।

वे दोनों समबयस्क थीं—घाय समयग पन्नाह सोमह वर्ष । परन्तु निम्नी बमिष्ठ और पुष्ट कामा की साखी दुबली और धीरेयी । निम्नी गोबर के स्फकार से डरना नहीं चाहती थी ।

‘माओ घाघो इसी की कमी रह गई है सो पोसे देती हूँ ।’ निम्नी ने हँसते हुये कहा ।

साखी सहमी नहीं । निम्नी से जा बिपटी । निम्नी ने साखी के गोबर वाले हाथ को घपम एक हाथ की मुट्ठी में पकड़ लिया धीर दूसरे से गोबर को छीनकर उसके माथे धीर एक शाल पर मम दिया ।

‘धरी री री ! तुमने तो मेरी कच्चाई ही तोड़ ली । साखी ने हँसते में से कहा ।

निम्नी ने लोचा कुछ क्यारती हो गई । साखी को छोड़ दिया और मुसकराते हुई तनकर गड़ी हो गई ।

बोनी, 'अच्छा अच्छा बुरा न मानो । तुम मुझे मया हो जहाँ तुम्हारा भी बाहे ।

'एसे नहीं । तुमको हराकर सगाऊँगी तब तो बात है । नाभी ने गोबर बालो मुट्ठी को ठामकर कहा ।

निम्नी हार नहीं सकती थी परन्तु वह हारना चाहती थी । भागने के बहाने एक हो डब हुयी । नाभी उस पर झपकी । निम्नी डोली पड़ गई । नाभी ने लिपट कर उसके पाँचे और बालों गालों पर गोबर पीत दिया ।

प्यास भयन वा लिया भाखी गिलमिलवाती हुई बोली तुम्हारे गारे पालों पर कैसा बीठा ह । पहा ह्रा ह्रा ॥ छिटीमा खा लन गया ॥ । अब बिम्बी को नजर नहीं लन पावेथी ॥ ॥ ॥

'तुम्हारे एक मान पर लवने से रद्द क्या है तो तुमको किसी की बीठ लय जावेथी ।

हूँ । तो लयावो नहीं तो धपने हाव से लयाव लेती हूँ ।

'बाहर बसो कोई न कोई लया बगा ।

'कोई कैसे लया देगा ? जो तुमको लया मकता है वही तो मुझको लया गरेगा ।

'भाचनें है बाहर और कुछ बहिनें ।

'तुम्हारी है कोई लया ?

'बरी छिट ।

गागो हँस गई । निम्नी की बड़ी-बड़ी आँखों में बनाबटी रोव और होगी वर बदलान की पड़कन थी । नाभी की भी उलमी बड़ी तो नहीं परन्तु बारी बरी धाँगे थी उनमें से हँसी भर रही थी ।

'तुम्हारा प्याह नहीं हुआ ? नाभी ने पूछा ।

धीर गुप्त रात भर कापते रहोये ?
यही तो एक बुद्धिवा की बात है ।

कोई बुद्धिवा नहीं । कमान तरफ़ से मरे तीर धीर तलवार निचे
काओ है । दुन भी बसो । बारी बारी से जाग और सोवने ।
‘मह ठीक है । बसो ।

के दानों हथियार केकर पल पर चले गये । रात होते ही घटन
ममान पर सो गया । निमी बगल में तीर कमान धीर तलवार रक्त हुये
बैठी रही ।

बाग़मा का उदय हो घाया का जब चोइनी छिन्नक बसी । पास के
धीर दूर के नेनों से रक्तबालों को हा-हा ह-ह मुनाई पड़ने लगी । ठन्डी
हवा देने से धारकर सरसराने लगी । किसी ने घपनी मोड़ी बाहर
लपेटे धीर घन्य के पैताने रक्ती हुई दूसरी बाहर उलका उडा बी ।
मिथी हा-हा ह-ह का पोर नहीं कर रही बी ।

बुरबाब बैठी हुई घेन के नोनों पर बाँध पसारे थी । पवन के
झाकों के कारण बनी-बनी घट के छोटे-छोटे झाड़-झकटे हिल जाते
थे ता उसको किसी बन्ध पसु के घा जाने की संका हो जाती थी । मुग्ध
कमान पर तीर बढ़ा लेती थी ।

हा पहर रात गये घासनाम के गतों की हा-हा ह-ह कम ही गई
धीर दूर के नेनों की बहुत सील । चोइनी ऐसी छिन्नक घाई कि दूर वा
भी स्पष्ट दिगमनाई पड़ने लगा । जिन भयनों का निमा का कई बार
जगनो बस होन का भय हुआ था जब के संका का कारण न रहे ।
परन्तु बीच-बीच में बाँध घपनने लगी । जगकियों के बीच में घपपदी
घाँघ से जाप पड़ने पर कभी मुजर धीर बनी जंपनी भेला हवा के
मर्राँ के नाच दिगमनाई पड़-पड़ जाता था । वह बाया वह बाया धीर
नया । जग की घासने लपटा । हाव तीर-कमान पर जाता ।

यदि ये बोझ या सोझ ? भैया को जगावू ? उमने सोचा । मही दिन भर के बके हे घोर में कुछ बीती बनी नहीं हूँ । यदि धकेली ही पाई होती तो क्या इधर तरह की आकियां से-लेकर लज की रसवामी करती ? जब आगिपर को दिम्पी का मुग्धाव बरे हुये वा घोर अङ्गन पहाड़ के किनारे बड़े पेड़ पर रात काटत व तब ये आकियां क्यों नहीं घांटी थीं ? उमने धाने मन से पूछा घोर झटके के नाव अकियों को क्या दिया । अङ्गनाई की घांटी मोड़ों इधर-उधर देखा कि कोई अङ्गना जानवर तो नहीं था चुन दे सत में घोर सजय सावनाम होकर बैठ गई । अब कदापि नींद नहीं धाने पावेगी । उसने निश्चय किया । सोचा धीरे धीरे कुछ नाई । दिन बाला पीत याद था क्या धीरे बह गान सयो—

आय परी मैं तिम के जगावू...

उसकी स्वयं धाने धाने का अङ्ग धीरे धपना स्वर बहुत प्राया । नीव समाप्त नहीं हो पाया था कि उसको सया जैसे कोई बड़ा जानवर तैल में आ गया हो । वायन को समाप्त करके खत के कोन-कोने को प्रांच से टटोलने लगी । कोरा अम वा उसने निश्चय किया ।

सब से बोझी ही दूर नहीं बह रही थी । उसके एक घिरे का पानी बहता हुआ दिखलाई पड़ रहा था । अन्धमा की रिपन्तो हुई झिल-मिल बाग पड़ती थी मानो बांधी की बाहरों के बाहरों पर बाबरे बिलचिमा रहें हों । घोम्ने-खोई छो छोड़ा-सीधी लहरें उठ-उठ कर इन बाबरी को पहल-पहल लेनी थी । सम्पूर्ण लहरों का समूह बांधी की उन बाबरी को धोड़ लेने की होड़ नी सया रहा था । पवन के धाने-धाने वाले अब मोरे इन बाबरी को धीरे धीरे जलत कर रहे थे । लहरों की कमकम मोर्कों पर नाचती-खलती हुई अंग के पोथों की मूम पर उतर उतर पड़ रही थी । अग्निका खेत के हरे पीथों की अथपकी बाबों को प्रगती कोमल अङ्गनायों से जिना सा रही थी । हरी पत्तियों पर जमे हुये घोलनम कमक कमक कर बिहार-बिहार आ रहे थे । दिक्कतों अङ्गन

के लम्बकाम वृक्षों के बड़े बड़े पत्तनों को छरभरा-छरभराकर पवन मानों किसी दूर देश को चला जा रहा था। कभी समसमाहट थीर कभी छहसड़ाहट। इन्हीं ध्वनियों में होकर नाहर से डरे हुये सौमरों की चीतनों की कभी तीटग थीर कभी मन्द पुकारें। निम्नी ने सोचा बानसर दूर है परन्तु उसने मन पर हृष्ट आश्वासन को टिकने नहीं दिया। जैसे धीरे मुँह से चुनचाप ही धारें बने। वह और भी सन्नत हुई।

मचान ऊपर से डका हुआ था धीरे चारों तरफ से जमा हुआ। निम्नी ने जङ्गल को देखने के लिये मचान के बाहर सिर निकाला और ऊपर की पार जानें की। लम्बी-लम्बी बरोनियों ने मोहों का झूँ लिया। साँसें इनती बड़ी कि उनको वास्तव में हिरन के खीन की धाव कहा जा सकता था। निम्नी ने सोचा जायी रात हो चुकी है। सिर मचान के भीतर कर लिया भाई की घोर देखा। वह बाड़ी नीचे तो रहा था। कभी-कभी गरीब भी घर बैठा था जो बरी के कचक्रम से टकट बाते थे। निम्नी चाहती थी घटन निरसक सोना रहे क्योंकि जीव का उठना भरोसा न करके काग बहुत अधिक ध्यान के साथ सवाये हुए थी—कहीं कोई बर्तना ननु न था रहा हो।

पवन कीरे धीरे मन्द बहा। घटन के दरारें बिनीन हो गय। नदी की नहरों के अवनुष्ठान छोटे पड़ यम धीरे चारी की चारों ती तनने लगी। गैर के गोपों को अन्त हनुकी पड़ गई जैसे सो पसे हो। निरट बनी बट पेड़ी की गरगराहट भी निरन्तर न रही।

एक दिना में उन रम्य नहरों के उम पार छोटी-छोटी बहादियों के ऊपर एक ऊँची पहाड़ी निर उग्र कर बचिन नेवों में चारनी की घर ना सेवा चाहती थी ऊँची बहाड़ी का बिबर बुर्य का बिबर पुन्य सा धान पड़ता था। नदी के इन पार नुपरी दिना में विद्याल बृक्षों की सेत्र के पीछ एक ऊँचा पहाड़ जगमा था माना नीचे उतर जाने के लिये आबाहन ना है रहा था। बीच-बीच में उनीनो टी-टी ची-ची कर देनी भी बिजने

न तो चांदनी निर्जमित हो रही थी घोर न पर्वत के ऊँचे चितिर का ध्यान ही । मिट्टी की बृत्ति कभी जेत की ऊँचती हुई बाधों पर, कभी नदी की चमकती हुई चंचल ऊँचियों पर कभी बुरखती मृमिष पहलू पर घोर कभी निकटवर्ती पहलू के चितर पर जा रही थी ।

बहु भी रहूँ इस प्यारी नदी की वमकती हुई कस्मोमिनी धार को जलने पास में रहूँ । बाहर बाऊ तो क्या इसको बावकर समेटकर मही के जाया का सफटा ? ऊँचती सहृदयी बालों का किसी काण्ड पर उतार निवा बाय । पहलू की ऊँचाइयों को एक स्थल पर क्यों न झुका कर सूं ? बड़े-बड़े पेनों के बन्दनवार बना लिये बायं घोर डालियों-पत्तों के सारों के झरोखे । उनमें से चांदी को कड़ियों वाली सहृदयी को नाचता हुआ देखा बाय घोर फिर बाऊ — जाय परी में पिय के बयाये — सहृदयी चांदी घोर मोतियों के हार से पहने हुये इठलाती हुई बावती रहूँगी बन्दनवार सदा हरे रहूँगी पत्तों की मिर्मितियाँ निरन्तर चांदनी की भीनी हुई चमक घोर फुलों को महक से लयी रहूँगी । उसन सोचा । बाव ही स्मरस्य हो बाया — यदि सिकम्बर या उस घरीखा कोई धा मया तो इनको फिर रौंड़ डालेगा । जिस भाति जनसे पमुषों से लती की रखा तीरकमान द्वारा होती है क्या उसी भाति इन नदी घोर उस जंगल पहलू की रखा उसी तीर कमान से मही हो सफती ? परन्तु किसानों का यह सब सर्वनाथ के लिये झोड़कर गिरि कम्बरायों की धरस्य लेनी पड़ती है । राजा लोग अपने झोड़ से भाई बावलों को किसी एक में बन्द करके सड़ते सड़ते मर जात हैं और उनकी स्त्रियाँ बिना में बलकर भरम हो जाती हैं ! क्या ये स्त्रियाँ तीर कमान बलाना नहीं जानती होंगी ? क्या इनके जेत नहीं होंग जिनकी रलबाभी करन के लिय उनको मथान पर तीर कमान घोर ठसवार लकर बैठना पड़ता है ? उनके जेत नहीं होंगे क्योंकि पालिया तो पर्व में मुहु क्षिपामे बैठी रहनी है । सुनती तो यही घाई हूँ परन्तु क्या उनक हाथ पैर इतने निकम्ब होते होंगे कि अपने ऊपर घाल घोर हाव डालने वाले पुरुष को बूसे से बरती न लूँपा लफें ? कौसी

स्त्रियाँ होंगी ये । जाने की इतना धीर ऐसा धन्या मिलते हूँ भी मन उनके ऐसे मधियम !! चिता में जलकर मरें स्त्रियों पर हाथ डालने वाला !!! मैं तो कभी इस तरह नहीं मरने की ।

निध्री न सहसा बात भीचे ।

उत्तको धपने निकार पर धारणर्ष हुआ । मृत्कटाई धीरे लेठ क ऊँपने हुये पोचों पर वृष्टि फेरती हुई नदी की ऊँपिया का चौरनी के साथ गेल देलने सभी ।

हुवा और भी ठण्डी हो गई । पहाड़ की ऊँचाइया जङ्गल क निधान वृक्षों के बन्दनवारों बड़े-बड़े हरे पत्तियों के धरोहरों इन कमकीसी बँदीनी सहरो और पतंगी की उन बोलियों की कंठे एक ही स्थान पर दफ्तरा किया जाय ? बहु अचर्षदी धानों सोचने सभी । अन्धा बहुत ली मिट्टी की सानकर ठससे नदी प्रवाह पहाड़ वृक्ष पतनव गेहूँ बने के सहराते हुने खेत बना भिये जायने । मिट्टी के एक मयन में यह सब था जायना । और उन पतंगी की बोली ? वी पाईपी — आप परो बव — परन्तु विरह्य धाने न बढ़ा । भीम धाई धीरे माया भय नया मचान के डनन से धीरे से जाकर टिक गया ।

धाची धाई के उपरान्त उत्तको मायिन हुआ धानो नदी की सहरो की वनवम से धान के करीने जाटकराने हों । हकबड़ाकर धाल लोली । देना तो गेठ क बीच में एक बड़ा गुपर बड़ाकों के साथ बम का सहार कर रहा है ।

निध्री में तीर कमान लंघानकर धामन जमान । सैन सामकर लम्ब बोया । तीर एक तर्र के साथ गुपर के एक बाजू की फोड़कर गहन के पार धाया निरन गया । गुपर कुछ दूर करके वहीं बचकर लाने लगा । धान आप गया । निध्री ने कमान की डोर पर दूगरा तीर साथ लिया था । कुछ दूरा उड़ान गुपर लमाण हो गया ।

धान बाता ऐसा धन्या भिमाना तो मैं भी नहीं ले सकता हूँ ।

भूँ ढें ! तुमसे ही तो सीखा हूँ । निभी न कहा ।

एसे लक्ष्य निभी ने कई बार बतलें थे । अन्त स्वयं चन्द्रा निघाने
बाग या परगु वह निभी को इसो तरह उत्साहित किया करता था । मोर
फिर इतनी देर तक सोने रहने का प्रायश्चित्त भी तो करता था ।

अटल ने अनुरोध किया बेटी तुम से जाओ । मने भी भरकर
तो मिया है ।

निभी यही चाहती थी । अटल रखवाली के लिये बैठ गया मोर
निभी से गई । सुघर का दूसरे जानवरों के लिये बिजुका बदन के लिये
वही पड़ा रहता था ।

[४]

दुमरे ही दिन दीज थी । हरे भरे बग में होज के दिन पूजा पकवान
रङ्ग गुसास धबीर धीर नाच-गान बाजी होसी मनाई जाती थी ।
परन्तु राई मोर में राज के दिन के लिये यी सिखाय पूजा धीर माने
नाचन के धीर कुछ न था । पूजा पजारी के जिये धीर उछलकूट छाया
रग जनना की — मानो बँटवारा कर लिया हो ।

पूजारी के सिखाय बाकी लोपो के लिय निघी का बेवा हुषा
बर्नला बड़ा गुजर था । दिन लोपो के मन म होज के ममल की छाव
धील थी वे भी बून-बउकड़ धीर मोर कीच-पिलाव की मौज में मस्त
हो गये ।

दोज के दिन फिर जाती धीर निघी की जोड़ी बन गई । घटल
धीर भी घटिक बहुरंगियेन बग बह मबा । भर-भारी हँस रहे न धीर
बाहर-कीचड़ ककने न कसर नहीं लगा रहे थे ।

मागी साज तो तुम्हारे सारे गाँवले-सलोने धीर की मोर से
मनेदूषी । निघी ने कटा कर मागी को पठरने हुये कहा ।

बह उमने बिमर कर बोली 'लोपो अपने सारे घट्टों को तुम्हारे
घट्टो से रनड हुँगी जो मोर में छाया छाया हो पायवा ।

बग्या लो लो ।

हाँ हाँने लो । ह । ह ॥ ह ॥ ॥ ह ॥ ॥ ॥

ह । ह ॥ ह ॥ ॥ ह ॥ ॥ ॥ ह ॥ ॥ ॥

लोनों एक दुमरे से जगमग गई धीर देर तक जगमगी रही । उनको
हम बात की बरकाह नहीं थी कि ऊपर से कसर तक छकाई है । मई है ।
बाहर हुस्मड़ की बाहुर बाकर दोनों घनब हा गई । लोनों कीचड़ धीर
मोर में लज गई थी । लोनों के साथे गाँवों धीर दुमरे घट्टों पर मोर
की पाड़ी-टेड़ी बिजवारी बन गई थी । लोनों एक दुमरे को देखकर बग
या । हुये हँस रही थी । लोनों ने धाने धाने बरग नमाने ।

नित्सी ने कहा 'तुम बहुत समझी हो हाथ ऐसे ह जैसे मनुष्य की
हाथों पर मैं भी किसी तरह पाए पाही गई । होंस हो तो फिर भागो ।

'मेरी बाहें यदि मनुष्य के पंख की भाँति हों तो तुम्हारी साँप को रस्सी
जैसी ह । हे भयनाम् जैसी कस आती है ! यच्छा सब जगो दूसरों को
सुझावें ।

'हर के मारे कोई भी स्त्री तुम्हारा सामना नहीं करेगी । किसी
पुरुष को न डीटो ?

'अरी हिप्प ! गाँव की सड़की है न । ऐसा नहीं हो सकता । तुम
इस गाँव की सड़की नहीं हो हमारे भाई पर खल सा न होनी ।

'वाह ! बड़ी बेसी हो !! क्या कहेंगे गाँव के लोग ?

'यच्छा तो कुछ और रही ।

'पुंवारी को सुकामा चाहिम बड़ा चिन्ता आन पड़ता है ।

'कैसे ? सचता है तुमने कुछ भाँपा है ।

'जब कस नागा गाबना हो रहा था तब वह मेरी पीरतुम्हारी ठण्ड
बार-बार देल रहा था । कभी-कभी भीग भीगकर टीन्क टेन्ककर ।

'मेरी तरफ ! मेने नहीं परल पाया ।

'परल कैसी तो बसा करती ?

'हाँ करती तो कुछ नहीं । बनेसा पक्ष तो है नहीं ओ उस पर और
छोड़ देती ।

'माथ सलना कि देलता है या नहीं तुम्हारी ओर ।

'यच्छा पर अभी तो देर है । तब तक एक ओर खेल जमें । मिट्टी
के बोरे बनाकर एक भजन बनावें । ऊँचे पहाड़ों की दुर्गों जैसे मोल
पिम्बर, जलपर कँयूरे । झारों पर बड़े-बड़े पेड़ों के तनों जैसे जम्मे ओर
बड़े-बड़े पेड़ों पर घूम-उत्ते मोर, नीलकण्ठ और पतंगियां पत्तों के चरोखों

जैसी मिथिली । पास में नहीं बन के लव घोर उनके मोच से राई
नहीं—

‘इतना सब बनाने के लिये तो कई बरस चाहिये ।

भारी तिलीना ही ती है, घाघो बनावें—सोटा बनायेंगी मिट्टी
मिट्टी अपने पास है उतनी से ही ।

दोनों हम प्रकार का मिनीना बनाने पर पिस पड़ी । बच्चे दो बच्चे
इस लेम में बीबी रहीं तब तक बीच बागों का हुप्पड़ समाप्त हो गया ।
वे सब नदी में स्नान करने के लिये बनने को हुं । इसके उपरान्त
मन्दिर बनाया था । फिर रात के छिकार की बंछत होती थी ।

घटल साजी के धायन में आया ।

मिनीने को बेगकर बोला ‘वे क्या मनुने से बनाये हैं ? नहानो
मन्दिर बनना है ।

लानी घटल की ओर झाल करकर मिनी की बेगती हुई मुस्करान
लगी ।

मिनी ने पीठ फरे हुं कहा ‘हम को बह बचनबना लेने दो पहले ।

घटल ने ध्वंज किया बी होहो हो । मह्य बना रही है मिट्टी के
सोहों का । । खुने के लिये लुस की एक बन्धी मईया तो बनासे पहले ।

मिनी ने हठ किया इसको बनामू तो वह भी बन बापसी ।

घटल लानी को बैराता जाता था घोर मिनी से बनने का हठ कर
रहा था । घटल में मिनी की मानना पड़ा । वे दोनों नहाने के लिये
कहने साथ नहीं गई ।

नहा—घोकर गांव के नर मारी मन्दिर पहुँचे ।

पुसारी ने बोड़ा का नाम रद्द पहले ही चीन रक्ता था । सब सोचों
ने रात की पूजा की—नई माई हुई छोटी सी मूर्ति को प्रणाम किया ।
पुसारी ने पी की दो बार बुरों से होम दिया घोर फिर से प्रसादरूप

साध रत्न के बोझ से धीरे सब के ऊपर दिये । निम्नी के ऊपर सींग
हासने में उमका हाथ फिफका । उसकी कसर को सासी पर पुरा कर
दिया । दो एक धीरे उसके गालों पर बा पड़े । पुजारी ने अपने बमुरे
पंख से एक होसी गार्ई —

ठरमो ना श्याम कही मानो,
फट जैहँ चुनप्रिया जिन तानों ।
कंस राजा को राज कुनो है,
गोत्रस्त की गुजरिया मत जानो ।
ठरमो ना श्याम कही मानो ।

हम होनी को नर-नारियों न घसग-घसग गाया । निम्नी का मधुर
बन्ध फिर सब से ऊपर बनम रहा । जाने क समय पुजारी की भाँस
पंखे ही निम्नी पर जाती उसको निम्नी के हाथ में सीर-कमठा घोर बिधा
हुआ घट मुघर मडार आता । 'बिफट है यह सङ्का' कह साधना ।

अब त्रियां नाचने सभी घोर बारी-बारी से पुर्य तक पुजारी लाखा
को कमी अणार्थ के भिय सीब घोर कमी कमलियों देखना । सासा की
घाँब छित-मुककर बरबस सी घटस की घोर जा रही थी हमनिय उसन
पुजारी की दृष्टि को एकाधवार ही बकड़ पाया । निम्नी अपने मायन घोर
दूनरों के नृत्य पर इतनी ध्यान-मग्न थी कि उसने केवल कमी-कमी ही
यह जानने को चला की कि पुजारी की भाँस कहाँ भूम रही है । उसन
पुजारी को अपनी घोर देखते हुये नहीं पाया ।

बायन घोर नृत्य की समाप्ति पर पुजारी ने गड़ घोर उबार के मोड़
से फूँके प्रसाद में बाटे ।

'निम्नी के सदयवेध का करतब म्नाभियर के राजा को रिहसाया
बाय'—पुजारी ने उसको प्रसाद देत हुये कहा — 'तो राजा घोर उनके
सामन्त दाँतों तक उगली बवा लेंग ।

बिना किसी संकीर्ण या बनावट के निम्नी बोली 'क्यों मैंने कौन सा ऐसा पहनाइ तोड़ गिराया है ? मेरे दाढ़ ने तो नाहुर घोर धरने भेस एक-एक तीर से ही मार गिराये है ।

मटल ने निम्नी को जस्ताह दिया — बाबाजी इसने भी नाहुर घोर धरने भेस एक ही एक तीर से मार गिराये है । इसका काम राजा मार्गसिंह देखें तो बड़े प्रसन्न होंगे ।

मैं ते जसु का खानियर-जरेख के सामने । राजा मुझको धच्छी तरह जानते हैं । खानियर में बड़-बड़े यन्त्रिर हैं घोर—पुजारी ने बात पूरी नहीं कर पाई ।

निम्नी ने कटौत हुये से टोका मझको नहीं जाना खानियर-बुजासियर निम्नी राजा-धामा के सामन ।

मव लाय हूँ पड़ ।

धम्म न कहा — खानियर बहुत बड़ा नगर ह ।

हीगा — बह उयेसा के साज बोली — 'पोड़ी सी भ्येरदियों का हमारा यह नांव साँक नहीं घोर से जङ्गल-बहाड़ बहुत धच्छे ।

पुजारी हँसा — 'हाँ हाँ खानियर नगर में मुयर रीछ नाहुर घाने घेमे बड़ा रक्ने है निम्नी क निमे ।

निम्नी इस बात के भीतर अपनी प्रसन्ना की अवगत करके बहिमान में कून गई ।

उत्तके म ह से निकसा 'भासी तुम भी तीर-तलवार बसाना सीग तो । न तिगनाहेंमी बिया गिरमायने । तुम भी जङ्गली जानवरों को मारना ।

लापी ने धम्म का बरगियों देगा जोर पाग नहीं हुई त्रियों को देगरी हुई मरकराने लगी । त्रियों निम्ना की घोर बूढ़ बिरका कर हूँग नहीं जैसे कह रही हों त्रियों का तीर-कमान बलाना किनाया मरा काय है ।

निम्नी ने सहमकर सिर नीचा कर लिया । घटल ने साखी की कमलीसी चितवन को देख लिया था । वह किसी न किसी भिन्न उसको भी भरकर देख लेना चाहता था । जब वह हँसती थी उसके गालों में गहरे पड़ जाते थे । एक मूढ़े पर दो तीन साल छोटे उमर बमर कर उस हँसी को रंग स रखा था देखे दो । घटल उस रजाबट को देखना चाहता था परन्तु देख नहीं पा रहा था ।

वै सब हँसते-हँसते वहाँ से चल पड़े । उस थोड़े से प्रसाद को रास्ते में ही बचाते बचे धा रहे थे । एकाच बार मुड़कर साखी ने देखा तो उसकी आँख घटल की आँख से मिल गई ।

जब पहुँचकर साखी ने सोचा यदि मैं तीर बनाता सीख लूँ तो कुछ बुरा तो करनेही ही नहीं निम्नी भी तो लड़की ही है । पुनर-जन्मा सीख सकती है तो अहीर-जन्मा किससे कम है ? मैं बहुत अच्छी सीखूँगी । निम्नी से सीखूँगी—घटक पड़ी तो घटल से भी । इसमें कुछ भी बट नहीं है । सीख केनै पर मैं ग्वालियर के राजा के सामने लक्ष्यक्षेप भी दिलाऊँगी । राजा सा थोड़े ही जायगा । निम्नी मजाती है, पर मैं नहीं मजाऊँगी । ग्वालियर देखूँगी वडा भवर है बड़े-बड़े बीक और चौहट्टे होने मन्दिर और मूर्तियाँ अटकदार कपड़ पहिने हुये नर-माटी ।

साखी के खेतो नहीं थी । पहिले बहुत से पशु थे परन्तु आक्रमण काल में एक गाव को छोड़कर बाकी सब या तो मार डाले गये या मर गये । दाप मारा गया और सयाला भाई भी । जब माँ-बेटी गाय के दूध और दूसरों की मजदूरी पर जीवन निर्वाह कर रही थी । माँ बंजल में से कभी-कभी कुछ फल-फूल भी ले आती थी ।

साखी निम्नी से तीर बनामा सोकने लगी । माँ उसको बहुत प्यार करती थी । सोलन में कोई मजदूरन नहीं वाली । घटल न भी सिखाया ।

बीस-पच्चीस दिन के बाद अती पक गई और प्रथम काटकर जने अंगम के भीतर धिरे हुये अश्रियानों में रखा भी गई । लोगों का अधिकार

समय वहीं बीतने लगा । बंनसी आनवरों से रखा घाग घोर तीर-कमान से होशो रहती थी । पुरानी भी वहीं रमने लगा । घनाज के गाहे जाने पर उसको भी मन्थिर के नाते कुछ घस घिसना था । बरफे में वह पुराणों की गाथायें कुछ अपना निमक-मिर्च मिलाकर मुनासा करता था । रात को घाग के घास-घास कभी भजन घीर कभी रावसे ।

घनाज गाहूँ लेने के बाद खासियर से राज्य की उमाही के लिये संहर्षा घामे घोर पुरानो परम्परा के घमसार उपज का छुनवाँ घस ले बसे । उमाही में उन्होंने कोई कूरता नहीं की । बाकी घनाज की निघानों ने दिया-मुकाकर रघ किया ।

लापो घीर उसकी माँ की कटाई, मङ्गुरी में बीड़ा का घनाज मिस मया परल्लु वह कुमरी कसल तक के लिये पर्याप्त न था । कसल कटने क उरघट नाव में कोई घीर मङ्गुरी नहीं थी । बीबन-बावन के लिये माभी ने तीर-कमान के घम्पान को घीर भी बड़ा दिया परल्लु सोहे क तीर या उनके फप दुष्प्राप्त ने इनलिये बीस क तीरों की मङ्गोली मोकों से नाम बनाया । कोई बड़ा आनवर न मार पाये तो पैट पासने के लिय बिडिया घीर नही की मछलिया ही लही ।

घागट क लिय वह निघी घीर घन्स के साव जङ्गल न जाने लगी । निघी एक दिन कुछ घन्सर पर एक दिवा में घमप बड़ गई कबल लागी घीर घन्स साव रह बसे ।

घन्स उसको भी भरकर देग सिता जागता था । कई बार जाहा वा बरल्लु एक बार भी गकल न हुआ । वे दोनों एक पेड़ के नीच लिमी आनवर की घाहट केवर लड़े हो गये । घाहट की दिवा में घाने बडाकर देगने लये ।

घटन ने मङ्गुर लागी की घीर जरा ना देगा । उनल घागों के गकल से प्रलन दिया । घन्स ने एक निरवान को बडाया । लागी ने फिर प्रलनूतक दुष्टि की । उनके लन्दे केनों की एक जग नाम वर से

होठों की ओर घा गई थी। तिर का जरा सा झटका देकर उसकी पीछे किया।

घटन ने कुछ स्थिरता के साथ उसकी ओर देखा। लाखी ने मांस मीची नहीं की।

धीरे से पूछा क्या बात है ?

'क्या कहूँ ? कैसे कहूँ ? बक नहीं फटता।

'फिर भी ?

'मैं तुमको बहुत चाहता हूँ। बहुत प्यार करता हूँ।

'मैं जानती हूँ।

लाखी ने धीरे मीची करली। घटन ने उसके कंधे को एक बांह में घेर लिया।

'हम तुम एक होकर सब साथ रहना चाहते हैं। कभी अलग नहीं होंगे। घटन ने काँपते हुए स्वर में कहा।

'कैसे हा सकता है ऐसा ? हमारी तुम्हारी जात-पात अलग-अलग है।

तुम मुझको चाहती हो या नहीं ? पहले यह बात बतलाओ।

मैं क्या कह सकती हूँ ? तुमको कैसा ज्ञान पड़ता है ?

'मुझको ज्ञान पड़ता है कि हम-तुम एक हो जायेंगे।

'परन्तु जातपात ?

'पहले दुआ है। हमारी-तुम्हारी जाति में ब्याह-सम्बन्ध हुए हैं। पुजारी बाबा पुरान की कथाओं में गुनासे रहते हैं।

मेरी माँ और तुम्हारी बहिन मांग सेंगी ?

'मरोडा तो है।

'धीरे धीरे चले ? पञ्च धीरे मझिया ?

अच्छा ठहरेन न माना तो ?

‘न माना तो मैं क्या कर सकती हूँ ?

फिर भी हम लोग एक ही सकते हैं और एक होकर रहने । मैंने प्रण कर लिया है ।

निध्री कभी-कभी ठठोसी कर बैठती है । वह मेरे नाम को पहिचान नहीं है । कुछ पाँच पाँच भी स्वास् जानते हों ।

तुम्हारा मन पक्का है ।

‘मेरे मन से नहीं अपने मन से पूछो ।

‘बस अब और कुछ नहीं पूछना है ।

घटन लागी की कुछ राख अपनी बाँह में कसे रहा । जिस दिशा से बाहट घाई की उस दिशा से एक गर-मोर भागता हुआ आ रहा था । साखी तुरन्त घटन की बाँह से समग हुई । कमान पर बाँस का एक पैना तीर बढ़ाकर छोड़ दिया । मोर बीच के साच नहीं गिर पड़ा । साखी ने दूसरे तीर से उसकी पीड़ा को तुरन्त समाप्त कर दिया ।

घटन के मुँह से निकला ‘बाह ! बाह !!

उसो राख एक झाड़ी के पीछे से तेंदुया छप्य कर घोट के सिव भागा । घटन ने उस पर तीर छोड़ा परन्तु वह तेंदुया का नहीं मारा । तेंदुया भाग गया । उस दोनों ने पेड़ को धाड़ छोड़ दी । मोर के पास गये । पीछे से निध्री आ गई । उसने मृग मोर को दग लिया परन्तु जागते हुये तेंदुया को नहीं रोक पाया था ।

घटन ने ऊँचे स्वर में कहा ‘देखो निध्री साखी ने कैना पक्का निशाना लगाया है ।

निध्री ने समझन लिया ‘बढ़ तुम्हारी मुँह निजतगी बाऊ ।

घटन हँस पड़ा । लागी थी विलतिमा पड़ी ।

घटन बोला मैंने तेंदुया पर तीर लगाया था, पर कैना निशाना लागी मारा ।

‘क्योंकि तेंदुषा से तो हम लोगों का पेट भरता नहीं। इस मोर ने जो दिन का काय बन आयया। साक्षी ने कहा।

घन्त घपने चुके हुये तीर को दूध भाया। मोर को बट्खर व सब घर की घोर बनने लय। निमी के हाथ कुछ नहीं मया था। साक्षी को प्रसन्न देखकर वह बुड़ रही थी।

बोली ‘ये होती तो तेंदुषा को यों ही न निकल जाने देती घोर मोर को न मारती।

घन्त ने इस व्याज के बीनर द्विती हुई बुड़न को पहिचान लिया परन्तु उसके ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। साक्षी को प्रसन्नता में कार्य कभी नहीं आई।

निमी कहती रही ‘तीर को जाता तो घोर भी अच्छा होता।

घन्त न घोर भी बिड़वाया ‘तुम्हारा तीर तेंदुषा के पेट को छेन्दा तुम सपक कर बहुतों पेट पर घोर तेंदुषा तीर को भिजे हुये बन देता किसी पहाड़ की गण्डा में। तेंदुषा घोर तीर की तपस्या का फल कर्म किसी को न मिल पाता।

‘भाव ता जाता तेंदुषा तीर को बुराकर। गर्दन में न देती को टार के साथ वहीं को जाता। निमी न तिनक कर कहा।

‘अच्छा अच्छा बहुत अच्छा। फिर कभी नहीं। घन्त बोला।

साक्षी ने निमी को फुमलाते हुये कहा, ‘पेट भरने के लिये मोर मिल गया घोर निमान के लिये तीर, यह क्या कम है?’

[२]

राज्य के सिपाहियों की उपाही के बार पुजारी की समाधी लहज ही नहीं हो गई। किसानों को अन्न के बर्षन राम राम करके हुये थे इस-
लिये वे इन्हे में क्षिण-मिनर कर रहे थे। पुजारी ने कहा 'शास्त्र का
बचन कमो न मूलो छप्पा भाव राजा का हुला है तो तुमने दे दिया।
बीसवीं बरसा का तीसवीं बाह्यग्य का हुला है। उनके देने में अनाकाली
करने से यह लोक तो बिगड़वा ही परलाक से भी हाथ धो बैठोय।

एक रिमान विनिपात्र को छिपाना हुआ बोला 'फिर हम क्या
कार्य ?

'अगवान हों। ये अन्न जो कर्षेवा।

'अन्न करने पर भी शिगो के मुस्तान ने इतना लून बहा दिया।
दलन पर घोर गड़े दल कोप कर दिये ।।

वरा इस मूर्ख को ! हम बार मालिक को ।। अब कोई गई
बिरद को बलान बाना है। करता है एक भोषमान भुवतनी पड़ती है
हम तब अब को ।

'घरे बन रे लु। पुजारी महाराज ने कंसी बान करता है ।।

'ता तुम के बी पहल। भर तो निबा है पर बीरगह्य मेहू-बने रो।

'देन नहीं तो क्या तुम सरीने न बाबेने ?

रार भी होनी देगकर बड़ी अन्न का गया। उनमें पुजारी का पद्य
मिया। बाना ये तो अपने भाव को गरी के साथ बूता। बैदना घोर
बाह्यग्य का अन्न इना ही पड़ता है। न जाने वहाँ से बड़नी हा आयनी।

अन्न ने पुजारी के बेजने पर गढ़ी मजामुमति की अरकाज पाई।
अपिबाग रिमान घानाबानी करते हुये भा जानन ये रि अन्निबाय का
निवारण बड़ी होने का हमनिये देने के लिये अपने को विवज पा गी रहे

वे घटना की शान्ति में पगा हुआ सा देखकर दल गये । घन्त ने सोचा 'पुजारी की सहानुभूति धामे चलकर काम देगी । सब किसानों ने देवता का बीसवाँ और ब्राह्मण का तीसवाँ यानी पुजारी को कुल बाग़हवाँ हिस्सा भेंट कर दिया । सब मिलाकर घन्त का बीसा भाग किसानों के पास से निकल गया । तीन बीकाई फिर भी बचा रहा । उन्होंने मन ही मन झूठकर संतोष कर लिया जो बाहर के सटेरे सब का सब के जाते तो गाँठ में कुछ भी न बचता ।

घन्त घबहर दूढ़कर पुजारी से एकान्त में मिला । बड़ी तन्नता और मोठेपन के साथ उसने चर्चा छड़ी ।

'महाराज आपको इतना ज्ञान कहाँ से मिला ? पोसी-पधे तो आपलें पास बोड़े ही हैं, पर जानते आप आपत भर की बातें हैं ।

'मरे नहीं भाई । मयवान का भजन करता हूँ । मैं तो मयवान के नाम के सिवाय और कुछ नहीं जानता ।

'बाबा जी आपको रामायण महाभारत और न जाने कितने शास्त्र पढ़े पढ़े हैं । क्या हम लोग भी पढ़ सकते हैं ?

क्यों नहीं पढ़ सकते ? तुम तो क्षत्रिय हो । वेद तक पढ़ सकते हो ।

जवा आपने वेद पढ़े हैं ?

'मरे वों ही कुछ-कुछ । कलियुग में देवों के पढ़न-पढ़ाने वाले रहें ही कितने हैं ?

जवा स्त्रियाँ पढ़ सकती हैं ?

'वेद ! मरे राम राम !! स्त्रियाँ और शूद्र वेद नहीं पढ़ सकते ।

वेद नहीं महाराज पुराण-बुधाल ।

'कैसे हो तुम ! पुराण को बुराण नहीं कहते । मनावर नहीं करना चाहिये ।

'कैसे ही कहा । जवा क्षीययेया । स्त्रियाँ पढ़ सकती हैं ?

दीव ने बिष्णु से कहा, 'मगजस की बार ज. बूझों से क्या होगा ?
म कहता हूँ बिभी फूल का, फूल न मिले तो धुल मिट्टी का सिवमिज्ज
बनाकर घीर 'अ' नम सिवाय से अभिमिश्रित करके नुये में डाल दो,
फूलों धुल हा जामन' नयो जंजाम बड़ा रहे हा ।

मगजस घीर फल का मिट्टी में बीसे कोई घण्टर ही न हो ?
भुमरा बाबा ।

गिरि की बटाछों से बंगा जो निकली है । हमनिये छिब कीर संपा
में अन्तर है परन्तु मे पूछता हूँ कि छिब बड़े या सपा बड़ी ?

ओह, समान कीर समय के भव से छोटे बड़ घीर बड़े छोटे हो
ज ते है ।

क्या समान बात कहने हो । जो छोटा है वह छोटा हो खेया जो
बना है यह छोटा नहीं हो सक्ता ।

जठ करन का तो गुहारा स्वभाव ही है । बिष्णु घीर बिब में
बिष्णु का बड़ा बड़ा सपा है परन्तु किमी-बिभी घबतर पर छिब बड़े
हा भव है

कभी नहीं । समभव । छिब के नामने बिष्णु की क्या बिष्णु ?

स्वयं भयड़ा करने हो । नव मार्ग एक ही तीर को पहुँचाते है ।

गिरिफुल भठ । नव माय एक ही तीर पर से जाते हैं तो बिर पड़ो
नुये में, नदी में पहाड़ पर से किले पर से, पहुँचोये मन्त्र में बेबुद्ध
भाव । यही न ?

अपने का अवयव तुम जैसे गिरिफुलाना जाने करते है बीसा तो कोई
नहीं कर सक्ता ।

गिरिफुलाना जाने में ही बेरो के भाव्य दिने ह नहो तो दूब भरे होने
बम्पु भर बानी में तुम बीह प्रदेस के नव जाहिरा ।

गुहारे माये में तो मड़ने-जड़ने के लिए कीड़े कुलकुलाया करते
है । गुहारे समान में हमनी छोटी नी बाग क्यों नहीं धानी कि नुर

बावली में पिरकर मरना धीर बात है भिन्न मार्गों से पूजा धीर
पारायणा करके धर्मोप तक पहुँचना दूसरी बात । ध्यान धीर मन को
एकाग्र करके किसी भी मार्ग को ग्रहण कर लेने से मनुष्य मोक्ष को पा
सकता है ।

अधियों पेड़ों साँप के बिलों टौरिया पहाड़ों मेड़ियों बिसावों
धीर जाहे जिस परवर के टुकड़ों का ध्यान धीर मन से पूजा करो कि
मिसा योग ! अरे तुमने ही इस युग को कलिपुत्र बनाया ! बिककार
है तुमका !!!

बिककार तुमको धीर तुम्हारे बाप को । अज्ञान के बध समझते
हो कि तुम्हारा जीवन ही सब कुछ है !! विद्यालय भ्रम में पड़े हो ।
नरक में जानोये ।

बोनों के स्वर सीझुता पर चढ़ घाये थे । बोनों ने अपने अपने
वासन छोड़ दिये । कुर्छे पर काम करने नाम मजबूर काम छोड़कर छाया
में जा पड़े । नायक समाधा कुछ धीर निबारे-सबारे ने लोभ चाहते थे ।
नरक में बिलबिसाबोये तुम धीर तुम सरीके सब बिन्होंने वर्तमान
जीवन को अपने स्वार्थ के सिवाय धीर कोई महत्व नहीं दिया । हम
निष्ठापन इस जीवन को स्वर्ग बनाते हैं धीर मरने पर कैलाश तो हमारे
सिधे हैं ही । बूझते ने जपट कर कहा ।

मजबूरों का मुलिया बीच में जा गया । निवारण करते हुये बोला
‘महाराज सड़ी मत । हम लोगों के सिये भी कहीं कुछ है ?’

परम बाह्य ने तपाक से कहा ‘हय बतला सकते हैं यह विष
ज्ञाने का विषयवस्तु नहीं बतला सकता ।

बिस्का नाम विषयवस्तु बतलाया गया था बोला ‘यह बतला-
गया । क्या बतलाता है बतला ।

‘भजन भजन भजन भजन करो मुझे । उन्होंने बतलाया ।
‘किम्का ? मजबूरों के मुलिया ने पूछा ।

विजयजङ्गम ने बुराई उत्तर दिया इस पेदू का सपनी मखनूरी
घीर पेट काटकर भरो इस भिक्षुर्गो का पेट । भजन से इसका यहाँ
प्रयोग है ।

बहु मरना । मखनूर घाटे घा नये । बहु छपाछुत के डर से बही
ठग पया ।

विजय ने कहा ये काम करें तुम भोज माँग-माँवकर खात्र रहो ।
यही है म तुम्हारे भजन की शिक्षा ?

मखनूरों का मुरिया बोला हमारे भाग्य में यही बचा है । पूर्व
जन्म का पुन जो भुवनना पन्ना है । घाय सबसे भाग्य में पहमा-लितना
राज्य करना कराना भिगा है सो बही जात में जन्म लेते हो ।

‘मह नव भ्रम है विजय ने प्रतिबाध किया — ‘जीवन में काम
करना धर्म में रोटी का उपार्जन करना और धिक् का नाम सना यही
बीरव है । इसी में जीवन की सार्थकता है । भोग माँव कर खाना धन
बाग्य पान्द से धर्मानिपा की भ्रष्टा का संग्रह करते रहना यही सबसे बड़ा
पाप है । पूर्व जन्म में नव के लिये काम को प्रयाग कर रखा है । पूर्व
जन्म के नव दुःख धर्म और धिक् की गामिनी से बट जाते हैं ।

मखनूर इस व्याख्या का नहीं समझे ।

दुमरा बिबाही बाता ‘बड़ा धिक् की गामिनी बाता बना फिरता है ।
सापत्री केबल एक है बैबल एक ।

‘विचको तुम लोको में दित्त-दित्त कर मदीता कर दित्त है । गुना
सबत हो इन मोया को अरना सापत्री ?

‘तुम तो हा मूर्ख ! गामिनी किमी का गुनाई जाती है ? अत्यन्त
भारतीय है — जह ब्रह्म ।

धिक् की गामिनी एमी है जिगवा जह बाबदास भी कर सकता है
घीर पवित्र हो सकता । परन्तु तुमको धाना वेन भरने घीर बापण्ड
रचन के धरकात बड़ी ?

‘वहाँ लिता है कि शिव की भी कोई धसप मायिनी है ?
आसब पुराण में मुक्त ।

‘धीरे धबिक वाली बकी तो डेले से ओपडा मोल हुआ ।
भुँके से सोपडा मोलने के पहले त्रिपुन से तुम्हारी बातें हम पहले

ही बाहर कर देंगे ।
फिर एक दूसरे पर कपटे । मजदूर फिर बीच में था गडे ।

‘अब रे ठिमलू राजा के पास । वहीं ग्याप धीरे ठीक दण्ड होया ।
बैपुण ने बिस्माकर कहा ।

‘विजय भी बिस्माया — ‘ये ठिमलू नहीं हूँ बबे ये कर्मांक का हूँ
वहाँ नयी धीरे भववान शंकर ने धबतार लिये । अब ग्याप होया तो
मुँह तेरा काका दिया कायया ।

‘अबिमुन में धबतार ! अब वहीं निर्णय धीरे ग्याप होया ।
दूसरा पूरे मरे स्वर में बोला ।

‘मजदूरों को उसने धाईय दिया तुम लोग माली हो । हमारे साथ
बलो ।

‘मजदूरों का मुखिया बोला ‘पर धभी कुछ हुआ तो है ही नहीं
न होया बला धीरे न त्रिपुन । बातें जो आप दोनों के बीच में हुई हैं
तो हम लोग समझे नहीं ।

‘बैपुण ने कहा ‘हमने भववान की बुवाई की यह तो तुम समझे ?
सब न बलें धकेले तुम ही बले बलो ।

‘फिर यहाँ काम कौन करायेया ? मुखिया ने पूछा ।
उस बिबारी ने भर्त्सना की — ‘साह में क्या काम ! काम की देखते

हो या बर्म पर क्रिये गये धापाठ को ?
‘तुमको क्या — मुखिया ने जोसा के साथ कहा, — ‘राजा का

काम रुका पडा रहेया । धाव जानो । कुर्पा ठीक कर लिया गया है ।
आप बंवाजन धीरे मंत्र से कुर्पा को सुख कर दो फिर बले बलो ।

‘धर्म क सामने कुर्या-बुर्या कुछ नहीं । बलौ मेरे साथ । उसने हठ किया ।

ये तीनों किले को घोर बले । किले के फाटक पर रोक लिये गये । राजा बोले पहर सध्या के समय विमेंये जब लोचो को बसलाया गया । वे शान्तों हूँ ये । मजदूरों का मुन्निषा मनचाहा बियाम पा बमा था ।

तीनों फाटक के पास एक बनी छया में छहर गये ।

छोठरे पहर एक छोटी सी बोलती बाँधे राई बाँध का पुजारी भी बही था गया ।

घाते हो उसने पूछा क्या फाटक नहीं खुला गयी ?

‘आँखे पहर भुलेंगे । उसको उत्तर मिला ।

बिजय ने पुजारी को बूल-बुलाए धीरे पसीने में भीगी हुई माङ्गुटि का निरीक्षण किया । पुजारी के बेहरे पर गमता थी । पुजारी ने शान्तों को टंगला ।

बिजय क माँची ने पुजारी से प्रश्न किया ‘कौन हो कहाँ से आवे हो ?’

उसने उत्तर दिया ‘छ. कौन की बूटों पर राई नाम का एक उजड़ा हुआ छोटा ना गाव है । बही से आया हूँ । नाम बिज बोचन चारबी है ।

जब बिपारी ने पूरी पड़गाव की—बोध शान्त मूत्र पिता का नाम धर्म धर्म सभी पुछ जाना । जब पूरा पता लगा निदा जब जल पी लेने का प्रयत्न किया । बोधन जल पीकर आया था इमनिवे हुना बनावे रगने भर की बाण्डा प्रवट की ।

‘कैसे आवे ? उसने शान्त का प्रयोजन पूछा ।

बोधन ने प्रयाजन प्रकट किया,—‘याँच में भयवान का मगिरा था । बावनावादिवा ने मल कर दिया । उनसे भीगोंदर इत्यादि की बाचना के निवे राजा के नाम आया हूँ ।

एक से ही हुये—घोर घुसरा घासी ! विजय के विवाही को अपने
मीठर स्फुटि का स्पन्दन मिला । बोधन ने विवाही के घाने का कारण
पूछा ।

उसने सावस्तार बतलाया ।

विवाही ने कहा 'इनका माम विजयवज्जम है । तिमज्जाना या
जनिक के है । यह इस बात को नहीं मानते कि किसी भी मार्ग से भी
बाधे, पहुँचेंगे जमीष्ट स्थान पर ही ।

विजय बोला 'किस घाने का ? कुछ कहीं ठाँकने और मोहन
घोष सबाने के परिणाम और अन्तर को कैसे भुल जाऊँ ?

बोधन सहमत नहीं हुआ ।

विजय का विवाही बोला 'यह हम एकत्र हो हो गये हैं । करलो

जितना घातार्थ करना हो ।

बोधन ने मोर्चा लेने से इनकार नहीं किया *The negative makes one.*
विजय ने व्यङ्ग्य किया — 'हो नहीं की एक हाथी को बम छकरी है

परन्तु वा प्रबो का मोम एक बलिमान नहीं होता है ।

बोधन की मोह तन गई, परन्तु बोला कुछ नहीं ।

विवाही ने व्यङ्ग्य का उत्तर दिया 'माम इनका अज्जम है परन्तु है
वास्तव में बड़ ।

बोधन विवाह को बढ़ाना नहीं चाहता था और वह राजा के सामने
बारी या प्रतिबारी के रूप में नहीं पहुँचना चाहता था । बोला 'घड़ी
घायी बड़ी पीछे राजा के घामने पहुँचे जाते हैं वहीं निर्णय और स्वाय

बीचे पहर का बग़ावत ही फाटक खुल गये । वे चारों भीतर
गुंथ गये । कोट की ऊँची दीवार के भीतर कई छोटे-छोटे कोट मिले ।
जिनमें सेमिकों का घावात था । प्रत्येक फाटक पर सप्त सावधान पहरें ।
मिथ रिघा के दीवान के और पर सात बहू और सेली के मन्दिर थे ।

अर्ध के सामने कुर्सी-पुर्सी कुछ नहीं। बसो मेरे साम। उसने हठ दिया।

वे तीनों क्रिने की ओर चले। क्रिने के फाटक पर रोक लिये गये। राजा बोले पहर संध्या के समय विमेंगे उम लोगों को बरमाया गया। वे वालों बुद्ध थे। मज्झुरो का मुखिया मन्त्राष्टा विद्याम वा गया था।

तीनों फाटक के पास एक बनी छाया में ठहर गये।

छोटे पहर एक छोटी ली पाटली बाँचे राई नाम का पुजारी भी वहीं था गया।

पाते हो उसने पुछा क्या फाटक नहीं खुला अभी ?

बाँचे पहर अनेके। उसको उत्तर मिला।

विजय ने पुजारी की बूल-बुलारि धीरे धीरे से भीपी हुई प्राकृति का निरीक्षण किया। पुजारी के चेहरे पर नम्रता थी। पुजारी ने दोनों को टटोला।

विजय के साथी ने पुजारी से प्रश्न किया कौन हो कहाँ से आये हो ?

उसने उत्तर दिया 'हूँ कौन की दूरी पर राई नाम का एक उग्रहा हुआ जोना सा नाम है। वहीं से आया हूँ। नाम मेरा बोधन घातकी है।

उस विजारी ने पूरी पड़ताल की—बोधन घातका मूत्र पिता का नाम धर्म कर्म सभी पुछ डाला। जब पूरा पता लगा लिया तब जब पी लेने का अनुरोध किया। बोधन जब पीकर आया था इसलिये कुरा बनाये रखने भर की साम्प्रदायिक प्रथा की।

कैसे आये ? उसने धान का प्रयोजन पुछा।

बोधन ने प्रयोजन ब्रकट किया — गाँव में मयबाल का मन्दिर था। धारमणकारियों ने गट्ट कर दिया। उसके बीणोंद्वार इत्यादि को पाचना के लिये राजा के पास आया हूँ।

एक स वा हुये—धीर भूमरा घासनी । विजय के विवाहो को अपने भीतर स्फूर्ति का स्पन्दन भिजा । बोधन ने विवाहो के घाने का कारण पूछा ।

उसने साबित्तार बतलाया ।

विवाहो ने कहा इनका नाम विजयवज्जय है । तिसज्जगना वा कर्णिक के है । यह इस बात को नहीं मानते कि किसी भी मार्ग से भी बाधो पहुँचेंगे खचीट स्वाभ पर ही ।

विजय बोला 'किस नाम बाधों ? कड़ा कर्कट फाँकने धीर मोहन घोर सवाने के परिणाम धीर खतर को किस भूत बाधों ?

बोधन सहमत नहीं हुआ ।

विजय का विवाहो बोला अब हम एकत्र हो हो गये हैं । करलो भित्ति घासार्थ करमा हो ।

बोधन ने मोर्चा देने से इनकार नहीं किया । *The negative make one*

विजय ने व्यज्ञ किया — वो नाहीं की एक हाथो तो बन सपटी है परम्पु हा मखों का योग एक बुद्धिमान नहीं होता है ।

बोधन की भौंह तन गई परम्पु बोला कुछ नहीं ।

विवाहो ने व्यज्ञ का उत्तर दिया नाम इनका बज्जय है परम्पु है वास्तव में बड़ ।

बोधन विवाह को बड़ाना नहीं चाहता था धीर वह राजा के सामने बादी या प्रतिवादी के रूप में नहीं पहुँचना चाहता था । बोला 'बड़ी घासी बड़ी पीछे राजा के सामने पहुँचे जाते हैं वही निर्णय और म्याय होमा ।

चौथे पहर का बग़्ता बजते ही फाटक धुल गये । वे चारों भीतर पहुँच गये । कोट की ऊँची दीवार के भीतर कई छोटे-छोटे कोट मिले । भित्तों सैनिकों का घासघ बा । प्रत्येक फाटक पर सघन साबनाम पदरे । बग़िच दिया के मीदान के धोर पर साघ बड़ और तैली के मन्दिर थे ।

मही फूट के छोटे छोटे झोंपड़े डाले हुये फिर से मीटे हुये कुछ निवासी विपद के दिन काट रहे थे। कुर्छों के साफ हो जाने की प्रतीक्षा में पड़े थे। राजा का भवन उत्तरवर्ती कोट के भीतर था। इस कोट के फाटक पर बोड़ी ही दर की प्रतीक्षा के बाद राजा ने उन सबों को अपने कक्ष में बुला लिया। वे सब राजा को पहले से जानते थे। मञ्जूर को छोड़ कर बाक़ी तीनों की राजा भी पहिचानता था। उन तीनों को घासल दे दिया गया। मञ्जूर लड़ा रहा।

राजा मानसिंह मुवावस्था के आने का चुका था। बड़ी काली घाँवें मरी भौंह सीधी-सम्बी नाक बेहुरा मरा हुआ कुछ जम्बा। ठोड़ी रुढ़ होंठ सहज मुस्कान वाले। छारा धरीर बीठा जलधरत व्यापाम से तरामा धीर कसा गया हो। ऊँच जम्बा धीर छाती चौड़ी। बनी नौकदार नुई।

मानसिंह को इन लोगों के आने का कारण जानूम था परन्तु उसने विवाद के विषय को नहीं धेड़ना चाहा। पुराने परिचय को नया करने के लिये बोधन से पुछा 'कहाँ-कहाँ कष्ट घेनते क्रिगत रहे शास्त्री जी? जमजान ने हमारी सब की नाब रखली तो ठिठ एक हमारे से मिलने का दिन था गये। मानसिंह के स्वर की जनक ऐसी थी मानो तबहार मजमना गई हा।

बोधन ने अपने कष्टों की निवृत्ति नहीं बिनाई, क्योंकि उसने मानसिंह धीर उसके साथियों की कष्ट नाशार्थे मुन रखी थी। उसने कहा 'सुना था महाराज की कई बाँध लगे।

मानसिंह ने मुस्कराकर जेसा प्रकट की — 'साधारण ही कारोब की शास्त्रीजी। बो-तीन तीर छू गये थे बस। मेरे साथी अवश्य बहुत मारे गये धीर बायल हा गये। वरन्तु उम्होंने जो वरम्परा बना दी है उसके बस हम सीप ऐसे ऐसे धमेक धाकमणों का डटकर सामना करते रहेंगे। एक बात अवश्य बहुत बुद्ध हैती है। जमता बहुत समाह होनई है धीर कुँए धमी तक सबके सब साह नही हो पावे है।

मजदूर हिमकर रह गया ।

बोवन बोला 'हुय जाते ह महाराज हो ही रह है ।
राजा न बाँव का हान पूछा ।

बोवन ने सबसे पहले मन्दिर की दुर्दशा का वर्णन करके घात का परिणाम प्रकट किया—'एक घातमण में दो सी बरप पहले मन्दिर गट्ट हो गया था फिर घातके पूर्वजों ने बनवा दिया फिर गट्ट किया गया और फिर बनवाया गया सब की बार फिर गट्ट हो गया है । उस पर फूट छाया हुआ है । भीमान से फिर बनवा देने की याचना करने के लिये आया हूँ ।

राजा न निःशब्द बोल के सब कुछ 'पहले कुर्र बाबलियाँ लालाब और गहरों का छतार कर लू फिर मन्दिर को देखूँगा । जितनी सामर्थ्य होभी सहायता कर्त्तव्य कुछ भाप बेघाटन करके सठों से उपाही र मीजिये ।

बोवन चुप रहा । राजा ने बात नहीं छोड़ी ।
बोला, बाँव को जेतोपाती और जानवरों का क्या हाल है ?

बोवन ने कहा 'सुनि घसी बोड़ी सी ही बठ पाई है । अपने बरप बनवान को करा से बाप भी इन-तये था आवेसी यामें भस बोड़ी सी ही बपी है । जंगली वसु बहुत उपद्रव किये हैं ।

'कीन कीन से वसु है जंगल में ?

घरने भंसे मुघर रीझ बीतल सागर'—
आहर लेंगुए भी ?

'हां भीमान आहर लेंगुए भी है ।

'बाँव में कोई गिफाटी लक्ष्यबधी नहीं है ?

'छोटासा रह गया है बाँव । उसमें दो तीन बहुत बज्जल लक्ष्य बंधे हैं । भाई बहिन पुनर और एक सहीर-सहकी ।

मङ्गिकी लक्ष्मण करती है । बम्ब है वह गाँव ।।

पट्टीर की मङ्गिकी तो नी-सिखी ही है । महाराज परम्पु नृमर की मङ्गिकी बसी देखन में सुन्दर थीर दूक घरीर की है । बीनी ही तीर बसाने में बड़ी निपुण है । गुप्तर, माहर तबुये की एक ही तीर में मार बिस्ता है ।

‘एक ही तीर में ! घबछा !। घबकाव मिलते ही घहर के निचे भी मैं किसी दिन आऊँ ना । घापके मन्दिर को भी बैजूना घीर उसके उछार को खीझ ही मोखवा भी करूँगा ।

बीजन न मानो सब कुछ पा लिया । बिजय और उसके बिबाही के निर्णय न्याय में सबको कैबल घोटा की बलि रह गई । राजा उत बर्षों को टालना चाहता था परम्पु बीजन ने समय में झड़ दिया —

‘महाराज को इनके बिबाह का कुछ निर्णय करना है ।

राजा ने उन लोयों के प्रति उधारता घरी हुई घाँव घुमाई मानो धारम्भ करने के लिये कह रहे हों ।

बिजय ने धारम्भ कर दिया — ‘जब लड़ाई चल रही थी वह बाह्यण बालियर में नहीं था मैं आमान् के साथ बही बन्द था । हम तीन दिन रात काम करते नहीं बचात थे घीर न बकते हो । ब । हल सबकी समझ में आयी कि बीजन इसको कहते हैं । मयबान बंकर के सामने बर्ष घबर्ण सुबाव कुजात का कोई मेंद नहीं । हम सब जब कन्धे से कन्धा भिड़ाकर लड़ रहे थे सब एककार था तब हम लोयों की झूत-झाँट को मानते तो एव दूक करके गिन-गिन कर मारे जाते ।

‘वह घापका का समय था । संकट के समय को कुछ भी उचित किया जाय सब बर्मे हैं । यह गलातन निछाँस है परम्पु निरापन्न समय में यह स्वतन्त्रता नहीं हो जा सकती । बिबाही ने कहा ।

राजा ने प्रश्न किया ‘घीर कोई समस्या है या इतनी ही ? मजदूर ये पूछा ‘तुम कैसे पाये ?

उत्तम विनीत उत्तर दिया मैं कुर्वे की शोष का काम करवा रहा था। मूठ नहीं बोलूँ वा भीमान्, इन दोनों में न तो हुआ—बाहों हुई हैं और न फिर फुटम्बल केवल जीव को मचाते रहे और हम लोग जैसी पानी कभी नक बाते हैं बीभी गाली भी इनके मुँह से नहीं निकली। केवल मुरख-मुरख कहा सो संसार भर ही मुरख हूँ समझाता।
राजा ने हँसी को रोक कर कहा 'तुम जाकर अपना काम देखो। तुम्हारी शांति की आवश्यकता नहीं पड़ती।'

महदूर चला गया। राजा न दोनों विचारियों की ओर बृष्टि फेरी। विजय ने कहा 'यह कभी यह कहते थे किसी भी मार्ग से जाओ ईश्वर की प्राप्ति हो जायगी। संसार के बले पर छाड़ा जाता जाओ और भयवान का नाम लेते जाओ तो क्या इस मार्ग से भी मोक्ष मिल जायेगा? बल्लू बल्लू के मोक्ष प्राप्त कर एक दूसरे से बुरा करते रहो समूहों को मनुष्य न समझो क्षुधा-मृत के गरज में रहते हुए भी भजन की माला टांगते रहो तो क्या वीरुक्त प्राप्त हो जायगा? जो नायिको सबको पवित्र कर सकती हैं उसको अँधरी मँगी कोठरी में बन्द रखो और कहो कि यदि किसी धर्म को इसकी ज़रूरी मिल गई तो वह अपवित्र हो जायगी। कि यह कैसी नायिकी?—

विवादी न उसको और धाम नहीं बढ़ने दिया। टोका—इनके पास महापद्म इन बातों का क्या प्रमाण है?

'हमारा वाचन पुराण'—विजय अज्ञान न उत्तर दिया—'महापद्म जानते हैं। मैंने सझाई के ही काल में कभी-कभी सुनाया है।

विवादी बोला 'संसार पाप और पापियों से भर गया है। भजन और त्याग से ही पापों के फले काट जा सकते हैं। यह कहते हैं जीवन में तनै रहो शस्त्र-अँधुर जीवन के मोह के माया में सत-पत रहो और एक बार जब 'सिवाय' कहा नहीं कि वीररणी का बेड़ा पार हुआ।

धार्मार्थ को उग्र तापमान पर पहुँचता हुआ देखकर राजा ने मुस्काय के साथ हाथ के संकेत से निवारण किया।

बोला 'यह तो धर्म का विचार जान पड़ता है। मैंने शास्त्रों को नहीं पढ़ा है। राजा एक क्षम्य भूप रहा।

विजय बीच में बूझ पड़ा — 'शास्त्र पढ़े हैं और नहीं भी पढ़े हैं तो मुझे तो है।

राजा ने उसकी संकेत से क्षम्य कर दिया।

तपस्या बड़ी वस्तु है परन्तु सुनता हूँ कि तपस्या करने वाले भय और अहंकार के कारण अत्यन्त-यमन में जीन हो जाते हैं और इस प्राप्त यमन को परमपद समझ कर दूसरों को घातकृत करने लगते हैं। जब ऐसे लोगों को इस लोक में बोरन नहीं मिल जाता है तब उन लोक में उठने अधिक गौरव के पाने की आशा पर उनको अचम्भा होने लगता है और पामस हो जाते हैं। राजा ने ठीकते हुए कहा।

राजा क्षम्य हो गया। वे दोनों क्षम्य रहे। बोचन तो निश्चय तटस्थ बैठा ही था। वे दोनों सोच रहे थे राजा ने निर्णय सा दे दिया है परन्तु वह समझ में नहीं आया कि किसके पक्ष में दिया।

राजा ने बात समाप्त की 'ब बड़े-ठोके के वाक-पत्र धर्म है। धर्म मुख्य है। जो इसके बचना चाहते हैं, वे ही धर्म-धर्म को पगडण्डियाँ कटते हैं। बोड़ी बेर निश्चयता छाई रही।

विजय ने स्थिरता को पहले भङ्ग किया—'शास्त्र पुराण में कुछ इस प्रकार की बात मूठे और सुन्ने ढोंगियों के सम्मुख में कही गई है।

विवाही बोला 'हमारे यहाँ भी कुछ इसी तरह की बात कही गई है।

'बीज-शास्त्र में भी कुछ इसी प्रकार की बात कही गई है' पीरे से बोचन ने अपना यत्न प्रकट किया।

राजा ने हँसकर कहा 'मैं नहीं जानता। मैंने कहीं से सुना या कूट दिया। मैं न शास्त्री हूँ और न पण्डित। केवल इतना कह सकता हूँ कि लड़िये मत। कुछ काम करिये और पाने की तैयारी में बिपट लड़िये क्योंकि आश्चर्यकारी बार-बार अपने जनपद को रोकने के लिये आयेने। बोचन को आश्वासन दिया 'मेरीय ही आपके नाँव की ओर जाऊँगा।

तीसरा पहर था नू बहुत जोर की बस रही थी। साजी की माँ पाय के साथ नदी किनारे के भरके को हरियाली बनने और वहीं छाया में आराम करने के लिये गई हुई थी। साजी ने बाँस के तीर तरकस में धरकर एक कण पर बाँसे कमठे को बूँदरे कण पर सटकाया छुरी कमर में डाल ली और नये पर निमी की कोमड़ी पर पहुँची। घनस अपने दो बँसों और एक पाय के साथ नदी किनारे कुछ दूर बसा गया था।

‘बमी तो घुप बहुत करो है। बोड़ी देर में न बसो। निमी न बजसाते स्वर में कह्य।

‘सुपर और धरने जैसे नदी किनारे किसी बह में सोर रहे होंग। बोड़ी देर में वे जंगल में करने के लिय घुप जायेंगे फिर क्या हान घावेया ? धमी बसो। नू का सरसणटा है गरमी नहीं लपेयी। साजी ने आग्रह किया।

‘अकेली बसी जाओ।

‘तो ठी सोहे के तीर से दो। बाँस के तीर से जैसे का कुछ नहीं बिजड़ेया और सुपर भी स्याव् ही घान माने।

‘यह कहो मुझको लिबाने नहीं धाई हो, तीरों के सेग को धाई हो। धबको कमर पर कुछ बचा सकी तो सोहे के लच्छ तीर धर

कस बिदा लूँगी।

‘अच्छा बसो।

‘तो न सही एक तीर मुझको बजार दे दोगी ?

‘भैया से माँग लेना यह कई तीर यों ही से होंग।

‘यों ही कोई किसी को कुछ नहीं देता।

‘तो क्या इस सनसनाती दुपहरी में सड़ने को धाई हो ?

‘मेरे जाने का कुछ लपटा हो तो यह बसो।

‘हां पहुँचो डींग में । कहीं न कहीं भैया भिन्न ही जाएंगे ते केना
तनसे तीर ।

‘मिल जाएंगे तो परबाहू नहीं घीर न मिलेंगे तो बिम्बा नहीं ।

साखी मूँह मरोड़ कर बलने को हुई ।

निम्नी ने मनाया ‘बटी ठहर भी । यों ही बकुरने सभी । में बनती
हूँ । तीर भी बूँदी ।

साखी पीठ करके खड़ी हो गई । उसाँसे के रही थी । खरेटी देह पर
बल सनर-उबर कर भिर रहा था । निम्नी ने तीर कमान छटी से सी
घोर जूते पहिने । साखी को नज़्जेँ पैर बेलकर उसको अपने जूतों पर
धबिमान हुषा ।

बोली ‘कुछ मनाज कहीं से या जाये तो तुम भी जूते बनवा केना ।

साखी के चेहरे का रौप छँट रहा था । उसाँस को बराबर मुस्काने
की चेष्टा करती हुई तिगली ‘अब लोहे के तीर मोल लूँगी तब जूते भी
बनवा लूँगी ।

निम्नी हली । उसने कहा ‘मुसीता हो जाय तो में बपने बिने गई
बोड़ी बनबासूँ जीर तुमको अपनी दे बूँ ।

निम्नी के पैर का पैसा बड़ा था । उसके जूते अपने पैर में डालकर
जब बसेमी तब को फड़र-फड़र होगी धीर बोड़ने पर एक पैर का
जूता कहीं धीर दूसरे का कहीं फिक्कर भी ना पड़ जावना सोचकर
साखी को हँसी या गई ।

बोली ‘नज़्जेँ पैर बलने में भी भीन छाती है वह दूसरे के पासरे
नहीं मिल सकती ।

निम्नी को साखी का हँसना अच्छा लगा । तरकस में से लोहे का
एक तीर निकालकर उसको दिया । कहा ‘घटक भीर पड़ने पर एक
धीर बूँदी ।

साखी ने तीर की बड़े जाब के साथ तरकस में रख दिया । दोनों
बन पड़ी । बज्जल नाँव से धवा हुषा था । दूसरी धोर नदी । तेब लूँ ते

बहुती हुई बार कसौलें कर रही थी उसकी देख-रेखकर उन दोनों की
 धाँधें ठगठग पा रही थीं। इसी प्रवाह के कहीं समीप ही सुघर और
 बज्जनी मधे पड़े होने यह सोच-सोचकर दोनों ठुसठा रही थी। वे दोनों
 नदी के किनारे को झोड़कर बज्जनी में बस गईं। दोनों ने एक हाथ में
 कमान और दूसरे में मोहे का एक-एक तीर ले लिया। साँची को सप
 रहा था मानो हाथ में इन्ध का बरत बा बसा हो। बज्जनी में धीरे-धीरे
 घाहूँ लेटी हुई दोनों बड़ रही थीं। नृ के झकोरों से भूमि के बाँटीक
 कड़क धीरे बिछे हुये घूले पल उड़-उड़कर मिट्टी के तपे हुये बोरे धीरे
 साँची के साँचके गालों पर पड़-पड़ जा रहे थे। उन दोनों ने झोड़नी को
 सिर से लपेट रक्खा था। घुटनों तक मोट लहंगे का कपड़ा। ज़रोज कंचुकी
 से बड़े हुये पीठ से सये हुये पेट उखाड़। पैसे में भूषो धीरे काँच के
 छोटे बड़े बानों की भासा। कलाहियों पर काँच की दो-दो मोटी बूझियाँ।
 पैरों में काँचे या पीतल तक का कड़ा नहीं। धीरे का बछीना पिठलियों
 की भूम पर मोटी पठली रेखायें बनाता हुआ था रहा था। नृ से उनकी
 उगड़क निस रही थी। मिट्टी की बड़ी-बड़ी धीरे साँची की कुछ ही
 छोटी काली कजराये धाँधें बने पेड़ों के बीच ध्यान के साथ कुछ टटोल
 रही थी। सिर और कन्धे झुके हुये मानो उसका कर किसी पर टूटने
 वाली ही हो।

वे दोनों उगड़-खावड़ बज्जनी में कुछ दूर निकस गईं। नदी का
 किनारा छूट गया था। मिट्टी के होंठ भूखन लगे।

धीरे से बोली 'नदी का किनारा पकड़ो। प्यास लग रही है।
 साँची ने बसभूसाहट की — 'बस हाँसे ही में।

मिट्टी की सीधी-पठली गाँव का गजना जरा सा घूम गया।
 नहीं पिछनी — उसने निश्चय प्रकट किया साँच तक नहीं

पिछनी धीरे घुम पानी पीने के लिये कहोमी तक घुमकी थी नहीं पीन
 यो।

साखा ने चुप रहने का संकेत किया। मानो कुछ हुआ ही न हो मानो धिक्कार ही सब कुछ थी। दोनों उसी तीस के साथ घागे बड़तो गईं। धावे एक छोटी सी पहाड़ी की ओट मिली जो लम्बाई में नदी की घोर गई थी। घास के इधारे से दोनों इसी के नीचे की घोर बढ़ी। पहाड़ी के नीचे सास सायोन महुए घोर घाघार के बड़े-बड़े लम्ब देह थे। पहाड़ी के ऊपर करवाई की बनी हुलकी करवाई रंग की झाड़ी थी। दोनों इस पर बढ़कर उस ओर के नीचे मैदान के बज्जल की निरख करना चाहती थी परन्तु पहाड़ी की बनी करवाई में घुसने के निचे पतली पक्कड़ी थी नहीं थी। दोनों ने अपने सँझों को घुटनों के ऊपर समेटकर कसकर कम्ब बाँधा। दोनों की गोरी-गोरी जाँघें घाबी सबड गईं। लाखी की पतली घुली हुई सी थी और निमी की नाम्दस पट्टों वाली जैसे बैठें समाने वाले किसी पहलवान की हों। दोनों करवाई की पनी झाड़ों में घुस जाने के निचे सकरे छोटे से ही नान की उसाघ में झुक-झुककर हाँफ-हाँफकर साँस साव-सावकर, फिरत लगी। एक हाव में कमान और दूसरे में सूर्य की प्रसर किरणों में बमक-बमक जाने वाला छोड़े का तीर साबे हुने। निमी के होंठ मूक रहे व परन्तु उसने पानी न पीने का निश्चय कर लिया था। तनूरी के धारे साखी के पैर चल रहे थे। चुरचुराहट न करने के अभिप्राय से वे दोनों सूखे पत्तों पर बर बाप न करने की सावधानी बरत रही थी। साखी बड़े पैरों ही परन्तु उसकी बाँसें करवाई की बनी झाड़ी की झाँकों को टटोल रही थी तनूरी की बलन अवयव ही नहीं हा रही थी।

एक घोर निरख ही भूमि पर कुरों की प्रस्पष्ट छाँदी धीरे करवाई की शक्ति की टूटन धीरे कुचलन को बेबकर लाखी के छाँसे माल बेहरे पर प्रसन्नता की रेखायें बिखर गईं। तीर के इधारे से उसने निमी को बतनाया। निमी की बाँल ने भी तत्क्षण टटोल लिया। साखी बोरे बेहरे पर हँसी की मुलासी-सी फैल गई।

निमी ने गर्दन उग्रा कर संकेत किया 'बड़ चर्ने यही होकर ।
 दोनों उस दृढ़-कुचलग पर पहुँच गई ।
 निमी ने धीरे से साखी के काम में कहा करने भैंने गये ह यही
 होकर ।

'चपो' साखी ने उत्साह प्रकट किया ।

सोचा यदि एक घरने को भी बेचकर गिर लिया तो उसकी सात
 से अपने घोर बुढ़ी माँ के लिये कुछ बन जायेंगे बाकी को बेचकर कुछ
 धन या बायगा माँ से मजूरों की मजुरी चुक जायगी । एक 'परन्तु'
 जो मन में उसी समय धाया—परन्तु यदि न मिला घरला या तीर
 साकर तीर समेत भाग गया तो निमी का उधार न मामूम कब तक
 चुका पाऊँगी ।

निमी झाड़ी में पहुँचे घस गई । वह साखी को पछड़ता चाहती
 थी । बड़े होकर या नुक़ कर भी जगन के निय बछड़ाइया न थी । बैठ
 कर घीर कहीं सेटकर ही बड़ा या सफ़ता था । वे दोनों कहीं बैठ-बैठ
 कर घीर कहीं सेट-सेटकर रेंगन सगों । ऊँची छातियाँ पत्थरों घीर करधई-
 के मोटे काँटों से टकरा-टकरा जा रही थी परन्तु मानो उनमें पत्थरों घीर
 काँटों से भी सड़ जाने की सम हो । करधई की टेढ़ी-मेढ़ी डालें घिर से
 बाँधी हुई सोड़नी में घण्ट-घण्टक जा रही थी । गोरी सलोनो मुवाभों में
 काँटे बरोचे कर-कर रक़ की पतली सीधें निकलत रहे वे कम बीर वृष
 उनको मुवाकर मरहम का-सा काम कर रही थी । उन दोनों ने करधई
 की डालों में उबझी हुई सोड़नी को सावधानी के साथ गुलमया घीर
 कमर से कस लिया । बिना तेल के लम्बे-काळे केप-कुम्हसों में बांधी
 के एक दो मोकों ने ही कम घीर करधई के छोटे-छोटे मूक पत्त मर
 दिये । वे दोनों धन सबाइ-मति से धीरे-धीरे बढ़कर पहाड़ों की चोटी
 पर पहुँच गई । करधई के एक बड़े भ्रष्ट के नीचे बड़े होने योग्य स्थान
 था । दोनों तीर-कपास साथ कर खड़ी हो गई । हमर-उबर घाँवें

बीड़ाई परन्तु टटोल में कुछ नहीं आया। घुटने खिन्न बने थे। हवा लगने से कुछ कसक जायी। झुक कर उनको पोंछा पत्रकार। सोचने और मुस्ताने के लिये बैठ गई। काल लगाये गये। पत्र नहीं की ओर बढ़ रहा था। पेड़ों की सरसराहट आँखों की मम्ब या द्रुत-गति के साथ दुर्बल या तीव्र सुनाई पड़ती थी। कुछ जगह के अपरान्व नदी की दिशा में बत्तार की डोकर का घग्घ सुनाई पड़ा। दोनों जाँक सी पड़ी। उम्क कर देखा। कुछ नहीं दिखलाई पड़ा। खड़ी हो गई। देखा नदी की ओर दो बड़े-बड़े सुपर बसे बा रहे हैं। बोड़ी देर बाद वे दोनों नदी के बरके में उतर गई।

मिमी ने कहा 'ये पानी पीकरगी' बाबेंवे बसों' साधी असहमत्त हुई, 'पानी पीकर नदी के किसी पट्ट में सोरेंगे ठहरेंगे।

बोड़ी देर ठहर कर वे दोनों उसी प्रकार पहाड़ी पर से उठे। जब नीचे पहुँच गईं कुछ जगह मुस्ताई। कमर से बोझों को धोकर धिरसे जेबेट सिबा और नदी के किनारे की ओर सावधानी के साथ चल गी।

वे घाट केरी बा रही थी। सिबाय जाँकी की सरसराहट के और कुछ नहीं सुनाई पड़ रहा था। ज्यों-ज्यों करके उस बरके में पहुँची वहाँ दोनों सुबर उतर गये थे। बरके में एक मोड़ की। उस मोड़ से सुपरों के निकल जाने की ठाणी खूरी बनी हुई थी। बरके के ऊपर छोली-सी झाड़ी थी। वे उस झाड़ी की छोट के लिये बरके की सीढ़ी काव पर फेट और पंखों के बल नहीं कमान की ओर और तीर को मुँह में बपि हुये।

ऊपर पहुँच कर एहके घूमी हुई राँस को ठिकार्ये किया फिर उम्क कर ऊपर के नीचे के बावर को देखा। बावर में एक सुबर का धिर बरैन एक निकला हुआ दिखलाई पड़ा। कुछ सुपर नहीं दिखलाई पड़ा। सुपर की बड़ी-बड़ी बीसें थीं। मिमी व झाड़ी के भरौछे में से सुपर की परैन का गिपाना बनाया और बोरी को घुटा बीचकर तीर का

सम्प्राप्त कर दिया। तीर बर्रम में बँस गया। सुघर वहीं हुड़क कर पानी को मचाने लगा। एक उछाल लेकर किनारे पर आ पड़ा और भी-भी करने लगा। घुसरा भरके के नीचे से मागता हुआ जङ्गल की ओर चला गया। उस पर लाली या निमी ने तीर नहीं चला पाया।

सुघर को हुड़क और भी-भी पर ऊपर के ऊपर से छड़-छड़ का शब्द हुआ। कुछ ही क्षणों में उपरान्त एक मर-पूरा धरना भँसा उस बावर के ऊपर बाँके टीले पर आ-बड़ा मुघा और इस भरके तथा उस टीले के बीच में किनारे पर पड़े हुए अस्तमात्र सुघर को देखने लगा। धरना कीचड़ में जलपथ का इसलिये अधिक भीमकाय दिखलाई पड़ा था।

उन दोनों ने कमालों पर तीर चड़ा लिये। पहले लाली का सूटा। निमी ने नहीं चला पाया।

लाली का तीर धरने के पृष्ठ से हटकर कलेजे की कोख पर पड़ा और अधिकार बँस गया। धरने ने भीत्कार दिया और तुरन्त भड़मड़ाता हुआ टीले के नीचे चला गया। घुसरे तीर के चलने की बापी नहीं आई।

धरना जंगल की ओर भागा। पत्तों की बुरबुराहट पत्थरों की कड़कड़ाहट और बूझों की कालियों की सर-सर कुछ दूर तक सुनाई पड़ी। हवा जस्टी बस रही थी इसलिये फिर और कुछ नहीं सुनाई पड़ा। किनारे पर पड़ा हुआ सुघर अन्तिम साँस ले रहा था। उसके मर जाने पर वे दोनों भरके से नीचे छतरों।

निमी के कब्जे होठों पर मरी मुस्कान थी। लाली 'सोचती हूँ पहले पानी पिठें या सुघर की बर्रम में से तीर निकालूँ और उस मेंसे को दूँ' फिर पानी पिठें।

'पहुँचे मैं पीती हूँ। तुम भीपी में हारी। लाली ने कहा।
वे हँसती हुई पानी में छतर गई। जो भरकर पानी पिया।

मिमी ने हँसकर कहा 'मेरे की तुम उठा के जसो मुघर को मे टोने लेती हूँ ।

'धरे राम ! साखी बोली—'हय तुम दोनों एक मुघर का ही न उठा पावेंगे मेरे के सिये तो बार छ. भावमी चाहिये ।

मिमी ने मुझया 'मुघर को टांगे सिये जघते हूँ फिर पाँव से कुछ लोप धाकर घरने को उठा के जायेन ।

वे दोनों मुघर के पाँच लीन चाई । उन्होंने मुघर को उठाने का प्रयत्न किया परन्तु न बन सका । मिमी साव पर घा गई ।

'हसकी दोनों टांगें सावकर मे पीठ करके बैठी जाती हूँ । पीठ पर उठाती जाऊँगी तुम पूरा बस लवाकर बढ़ा देना । धकेली सावकर ले जसूनी ।

'धकेली ! साखी ने आश्चर्य प्रकट किया ।

'हाँ धकेली ! पीठ पर सावकर के जसूनी ! मेरे हम दोनों नहीं ले पावेंगी ।

तुम मेरे हथियार से लो ।

काफी प्रयास के बाद मिमी ने साखी की सहायता से उस बड़े मुघर को पीठ पर लाव लिया । ली के किनारे किनारे वे दोनों लोपे पहर के पहले ही पाँव में घा गई । मिमी ने मुघर को अपने घर में उतार लिया । कुछ लोप पाँव में वे धीरे कुछ पाँव के बाहर, वे सब घा पड़े । घरने मेरे का ठीर ठिकला बतला दिया गया । उसको उठाने के लिये पाँच छ. जस गये । साखी अपने घर जाने को ही थी कि एक स्त्री ने जाकर साखी को समझाकर दिया 'मुम्हारी यी को नू लव गई हूँ । पर पर धकेत पड़ी हूँ ।

साखी धीरे मिमी बोली गई ।

जब वे दोनों घर पहुँची तो उन्होंने बुढ़िया को धकेल नहीं मरा हुआ लाया। साखी बिलक-बिलक कर रोने लगी। मित्रों भी रोई परन्तु साखी को धमिक बिह्वल बैठ कर सम्मन गई।

साखी कह रही थी अब मेरा कोई नहीं रहा।
निमी ने समझाया 'हम लोग हैं। जन्म भर साथ नहीं छोड़ेंगे।
धीरे सिपरी भी था गई। उन्होंने समझाया-बुझाया।

एक ने कहा जब हम सब पहाड़ की कन्दराओं में समय काट रहे थे तब यदि मैं विचार जाती ता रो भी न पाते कि हल्सा सुनकर कोई सिध्दर न था थाय। कहाँ हम लोग जियेयें-मरेयें वहीं तुमथी। रोना पीटना बन्द करो। पायको पालती पोसती रहा घल बोझा सा घर में है ही न होना तो बोझा २ सब लोग होंगे। धीरे-धीरे बज्जल गया हुआ है। भगवान होंगे।' घल था गया। उसने भी समझाया। बुढ़िया के बाह की तैयारी हुई तब से घरने को सट्टों पर लाकर कुछ लोग के घाए। घल उसकी बीर-झड़ का प्रबन्ध करके बुढ़िया को बाह के सिपे से गया।

बाह करके जब घल लौटा पाउ हो गई थी। उसके बार अन्य सिपियों के साथ साखी नदी में स्नान करने गई। सौट कर जब घर आई तब घर को सुना पाकर फिर रोई।

निमी ने अनुरोध किया 'कहो तो हम लोग यहाँ था कैटें चाहो तो उस घर में बनी बसो। यहाँ धँसेरे मुने घर में तुमको पकैली करावि नहीं रहे हैं।' घल ने भी हठ किया।

साखी ने सोचा इस प्रकार उस घर में पहुँचना लिखा था भाय्य में। परन्तु वह विवश थी। सुना घर भार्य भाय्य सा कर रहा था। मीठ के घर में वह पकैली नहीं कैटना चाहती थी। परन्तु माँ के मरते ही घल के घर जाना—बड़ी विहम्बना होती।

घटन ने ससको चुपचाप बिभूते हुये देखकर जागत से गाय को बोला ।

बोमा निभी तुम इनको लेकर बर्तन-माँझें सहित आ जाओ ।

जायी इनकार नहीं कर सकी । घटन गाय को लेकर अपने घर चला गया ।

बाब के कुछ लोगों ने सोचा 'यह गाय को हजिवा से गया और सबकी को भी फंस देगा ?

निभी उसके बोहे ॥ पनाब का बड़ी प्रबन्ध करके बर्तन माँझें लेकर जो बोहे ही थे—जायी को अपने घर लिया लाई ।

बाब वाले सुभर और घरने के बीरने में लगे रहे । गाँव मर को कई दिन के भोजन का प्रसाधन मिल गया । जायी को मँसे की धान ।

निभी ने जायी को धिवा-पिला कर अपने पास लिटा दिया । दाजी को नींद नहीं आ रही थी । ध्यान कभी ब्रुत माठा की ओर कभी सुभर के नरपदेव और कभी घरने मँसे की इन धाँसों की तरफ आ रहा था ।

एक बार उसने सोचा 'यदि धग्गा भेसा कय पायल होता और टीले पर बह गाठा तो माँ बटी का बाह एक साब ही होता ! क्या मैं भी मर जाऊँ ? क्यों मर जाऊँ ? क्यों ऐसे ही मर जाऊँ ? कुछ बीकर घच्छी तरह बीकर क्यों न मरूँ ? सबको मरना है परन्तु बीबन का कुछ देव-मुन कर ही मरना चाहिए ।

निभी ने सोचा जायी खुशी है । बीली 'जायी मेने तुमसे धाम बहुत बक-बक की । तुमको क्षमा कर दोषी । धाये कभी तुम्हारे मनको दुखाई तो मेरी बीम काट कर फेंक देना ।

'तही मेरी निभी' जायी ने कहा और सिझकने लगी । घटन ने उस सिझक को सुना ।

जबीर स्वर में बोला, 'बाह्र संसार इधर का उधर हो जाय बाह्र मेरी बोझी बोझी कट जाय तुमको कभी कष्ट नहीं होय पूरा साती ।

'ये भी नहीं कहना चाहती बी' निधी ने कहा ।

लाखी की छिछकी बग्य हो गई । उसने बीरे से कहा 'मुझको मरोसा ।' सोचा 'इसी घर में इस तरह से घाना बा ।

बाँव बाँवों में बटपट चीरछाड़ करके सुगर की बाँट लिया घनस को बाँट में अधिक भाग मिला । घटल को निधी के बस और निमाने का बड़ा धर्य हुआ । वह यह नहीं भाग कर सकता था कि दुर्बल खरेरी लाखी भी कुछ कर सकती है—घरने भंसे को विरा सकती है ।

भरने की लाल का बहुत मोल है । बढे में काफ़ी धन मिलेगा । बहुत दिनों सुख होगी । उसने सोचा और पुरस्न स्थानि के साथ अपनी धर्तना भी—उस लाल का ये वह उपयोग करें । विकार है । एक परीव लड़की ने अपनी बाग जोलों में लाल-बासकर इतना बड़ा पराक्रम किया मैं सियार की तरह ठाक-झाँक लगा कर बोरी करें । राम राम ।।। लाल पूरी की पूरी उसकी । मैं एक चिन्ती भी उसमें से न लूँगा । उसके पास कुंठे नहीं हैं नज़्ज़े पैरों पाय कराने के लिये बायपी कीर नज़्ज़े पैर बज़्ज़मी पसुमों का सामना करेगी । लाल भी उसके पास कम ही है । लाल का पूरा लाल भी उसी का रहेगा । बलिष्ठ धन में अपना बिनाईना । बगका रक्खा रहेगा जिससे उसके लिये खेती करेगा ।'

दुसरे दिन उसने लाधी को उखाड़ देला । निधी उसके पास ही थी । स्थानियर से लौटकर भागे हुये पुगारी की बाँवों की उसने दुहराया ।

कहा 'निधी का नाम चारों दिशाओं में फैल गया है कि बड़ी लय बेचिन है । सब तुम्हारा भी फैलेगा बापी ।

निध्री मुह बिड़ाकर बोली 'सो क्या मिल जायगा हम सोयी को ?

जटल कहता गया 'अब धीर कीति फैलेगी कि हज़ारी निध्री मारी से मारी गुबार की धकेली पीठ पर साज लाती है । ग्वाभियर से राजा भानसिंह घायले कमी बिकार खेतने तब देखेये वह मज्जा दीर बसाते है या निध्री धीर जायी !

मात्मी की जवाबी में से वाक्य फूटा राजा गुबार का पीठ पर धकेले उठ खानेने डीब में से ?

-

तैमूर के प्रत्यर्कर बिगास ने दिल्ली की सल्तनत को उठना निर्बल नहीं किया था जितना राजस्थान के राजपूत और बन्तवों के किसानों के निरन्तर अनवरत मजदूर युद्धों और उत्पातों ने। दिल्ली के शासकों ने धनबंद से लेकर बज्जाल तक के प्रदोषों को छोटे-छोटे पठान बागीरदारों में बाँट दिया था। इन सबके पास बार-बार स.स. हजार से लेकर पैंतालीस हजार तक की संख्या में सेना रहती थी। बन्तवों में प्रत्येक एक बागीरदार के हाथ में पैंतालीस हजार पठान और सात सौ हाथी थे। दिल्ली के शासक की कयर छरा होती पड़ी कि ये स्वतन्त्र हो जाने के तान पर घा आते थे। मारकाट करते रहना और जनता को छोड़ते रहना तथा उस छोपण के सहारे एव घायल करना ही इनमें से बचिवास का उद्देश्य रहता था। राजपूत परस्पर की प्रतिहिंसा और लड़ाई से मजबूत ही कम पाते थे इसलिये इनके धनुष्ण बने रहने में देने बिन ही बिघ्न थे।

मेवाड़ उन बड़े से राज्यों में था जो कम से कम अपने जनपदों की रक्षा के लिये सदा व्यग्र से बने रहते थे। मुजरात और मालवा के पठान शासकों से मेवाड़ का प्रायः मुँह बलता रहता था। मेवाड़ को कभी-कभी दिल्ली के शासकों को भी मिश्रित छोड़नी पड़ती थी। मालवा के महमूद बिसबी को पराजित करके उपराल राणा कुम्भा ने बिसबी में कोवि स्वयं बनवाया तो महमूद बिसबी ने मन की बलम को लाग करके लिये मोड़ में सवर्जडा महल बनवाया। बीजपुर के शासकों का राज्य या मुजरात में मुँहाइय न देन कर कासपी पर बड़ाई करती थीर उसको अपनी सल्तनत में सामिल कर लिया।

महमूद बिसबी को मरने के बाद उसके पुत्र प्रयागुदीन उत्तराधिकारी हुआ। इसके समय में कासपी हाथ से चली गई परन्तु उसको फिर से

प्रतिकूल करने की हथियार सम्राट् की नजरों में नहीं थी। सम्राट् की नजरों में मेवाड़ के राजा संधि करनी। बड़ी संख्या में राजपूत मासवा में रहते थे। उसने इनके साथ धर्मार्थ कराना शुरू किया। मासवा करता था कि उनकी सहायता से मुगल धीरे-धीरे हिस्सी का भी कब्जा कर लूगा।

कालपी हिस्सी के घसीन हो गई थी। उसको विश्वास था कि मेवाड़ धीरे-धीरे हिस्सी की टक्कर के समय कालपी पर आक्रमण कर देने में काम बन जायगा। परन्तु उसका स्वभाव धीरे-धीरे उग्रतः कामुक और छपटाग्रिभ्य था। मधिरा पीने पर वह सहज स्वाभाविक मानव सा हो जाता था। पीता अधिक नहीं था परन्तु पी लेने पर उसकी मानवीयता उल्लेख्य और हृदय-प्रियता तथा कामुकता बढ़ जाती थी। हिम्बुओं के साथ वह प्रत्येक नही करता था। कट्टरता का वह मजाक उड़ावा करता था—बारूक बीने पर—इसलिये मुस्मादों से उल्लेख्य रहता था। कामुकता के सम्बन्ध में वह मुख्य और स्त्री की पहिचान नहीं रखता था और न सारी जगहों की परवाह करता था।

जबालीय पैठानों के साथ भी घसीन थी। नदका नहीं बहोत पञ्चीस बर्ष का जबान था परन्तु उसका स्नेह एक स्त्रिया के ऊपर सबसे अधिक था। नदीर को मुस्मादों से बिरवा रखता था। नदीर मुस्मादों के राजकीय प्रभाव को जानता था। उसको नमाज धीरे-धीरे रोबों से इतना प्रेम नहीं था जितना उस मजिह्य का जिसकी वह बाट देता रहा था और जिसकी वह मुस्मादों के धीरे-धीरे प्रभावित तथा प्रेरित मुखमनान सरदारों के हाथ में देखता था। सम्राट् ने सोचा नदीर की मुस्मादों के मुपुर्ब करके मुस्मादों धीरे-धीरे नदीर-दोनों—से जुटो पाई परन्तु वह यह न देख सका कि किसी दिन 'नमाज छूटने पर धीरे-धीरे बसे पड़े' की कहावत बरिठार्थ होगी धमी तो रीत से गुजरती है का वह जायस था। उन दिनों नदीर के पर निकले भी न थे।

बारूक धीरे-धीरे। प्रचण्ड वेम के साथ पानी बरसने लगा। मांहु की जल्दी-मुन्नी पहारियाँ हरी-भरी हो गईं। नदीर नामो ने किनारी की

सुगतयनी

मर्यादा छोड़ थी। भासने का पग-पग रोटी डम-डम नीर गा बिस्पाठ होई अब प्रयुक्त-प्रयुक्त कर पानी भरने घोर समाने सपा।

- गहन के नाच का कासियावह-सरोवर पानी बाबलों की बूटों घोर पवन के प्रवण झड़ोरो से उठावता सा हो उठा। सम्प्रा का समय था परन्तु जल पड़ता था जैसे रक्त हो गई हो।

निजो कम की बारहदरो में बिड़की के पास तल पर रंग-बिरंगे फूलफूलें पैसी मसनद घोर लक्ष्मियों में हुआ हुआ-सा एवामुद्दीन बैठा था। बबानिन रमनरति माने की मुगही घोर फटोरे निय खड़ी थी। नीचे उसका म हू सगा कबाका मटक बैठा हुआ। एक दो बटोरो का चुस कर उसने बबानिन को जिहा कर पिबा। बिड़की ने ठण्ठी हवा के झोंक पर झोंके धा रहे थे। मपास को फुरेरी धाई।

ऐसा कन तो कहीं कमी देसा नहीं सुशाबन्ध नियामत। कबाजा ने मोक्ष नीचो करके झड़ को।

कैना म्या ? बिचड़ी बानों बानी दाड़ी को हिलाकर घोर बिचड़ी बानों बानी मूथों पर एक ड नली फेरते हुवे एवामुद्दीन ने पूछा।

बासियर से नजदीक पर एक गांव में।

फिर गांव में ? बासियर से किनारी दूर ? कौन है ये ?

कबाजा ने बतलाया।

‘अब तक क्यों नहीं जाहिर किया तुमने ? इन दिनों इस मौसम में तो वे लोगो यहां पहुंचें में होनी चाहिये थी। तयास ने व्यपता प्रकट की।

कबाजा मन्क ने व्याख्या की — ‘जहाँनाह देहात में ऐसी कूबमूरती नहीं पाई जाती है इसलिये जब पहले पहल सुना तो यकीन नहीं किया फिर सरकार उन मन्क मौलवियों की जलमन घोर दूसरे राजकाज में उलझ गये।

‘बहुत में जाये मस्ते-मौलवी। मेरा बस चले तो घारे के सारे छिरे को हिन्दुओं के बिकुल में पहुँचा दूँ जहाँ करते रहें बहस कबामत

तक परिवर्तों की छरिस्तों से। और, बरसात खतम होते ही कामपी पर बाधा करना है। बरसात होकर आसियर के करीब से निकल बसने में। पनका कुछ धीर हान मुनापो।

‘एक गुजर है दूसरी गहरी। दोनों छिकार बसती है। तीर बसती है।

कह का छिकार बसती है ? किस बीज के बाल बसती है ? मर के न ? तीखी चित्तबलों के ? तु भी मटक सागर है।

‘नहीं बहाना, यह धारणी नहीं है। सीधी-सच्ची बात है। बहानों का छिकार बसती है और सोहे के लम्बे तीर बसती है।

‘तोबा ! तोबा !! और के बूझसुरत भी है !!! कहाँ की हाँक रहे हो ? कहीं नज़ा तो नहीं कर माये स्वाभा ?

‘नहीं बहाना, यह धारणी नहीं है। बहानों ने बैसा है वही धर्म कर रहा है। दोनों बाँव के करीब घर की छोकियाँ हैं। पाने को नहीं बुझा तो छिकार से मुहर-बसर कर उठीं। कपड़े पहनने को नहीं। घर मईया पर बिर्क फूस जिससे बरसात की मूसलाधार धोड़ी सी हो बच सकती है। पैर में बूते नहीं।

‘बिचारियों के फटोके पड़-पड़ जाते होंगे।

अक्सर छिकार नहीं मिलता तो बहानों के कम बम्ब से पेट भरती है। फटे कपड़ों में पैरबन्ध नहीं लगा पाती तो बहानों के पत्तों से तल तक डेती है। हुजुर ने एक बार उस काफिर सागर कासिराम की बकुलता का बँसा निकल मुना या बैसी ही।

‘कहाँ कोई मुन्ना धीलनी तो बैठा नहीं है जो तुम कासिराम को काफिर कहो। बाह ! क्या धामर बा ! सागर नहीं सागरों का ओहर बा। दुनिया के किसी भी पर्ये पर ऐसा धामर नहीं हुआ। प्रामुखीन का पना भर बाबा और बान्ने बीनी हो गई। स्वाभा ने समझ लिया कि सुपही की नियामत ने बहानी मोरी में समेन लिया है।

हमाबा बोला, 'आमम पनाह, माम मी सनके बड़ मिठास भरे हैं ।
माँ में जिसको निभी कहते हैं उसका असली नाम ममममनी है और
दूसरी जिसको लायी कहते हैं उसमें बाबासामी है ।

'उनके कोई भोर हैं ?'

'एक भाई है उनका । कुछ ऐसा वैसा ही नाम है उसका । बहुत
बुरा है ।

'आतामास कर दोगे । कुछ बे लेकर बुझा न ली ।

'अमापरवर के नकासिले मेरा सज्जा नहीं के बराबर है । पराई
सस्तनत में रुपये मा जेवर के सोम-मासक से काम नहीं चल सकेवा ।
काबरी के ऊपर बाबा करने के सिनसिले में ही यह काम बन पावेवा ।

'इस कमबस्त बरसात के लिये क्या किया जाय ? यह भी और
तेजी के साथ बरस पड़ा ! जैसे आसमान में छेद दो पड़े हों ! ! मैं तो
घान रात हो जाई के लिय कूब कोल देता लेकिन रास्ते में बे-हिस्सक
कोबड़ बड़ी-बड़ी नहरों के पुर बसेरुह-गौरह जाग जा जायेंगे ।

'तब तक मैं कुछ हिक्मते सझाऊँगा हासाकि अम्मेर कम है ।

'फिर भी ?'

'आताबदोस नद बेहिमे कऊऊह दुनिया भर का नल नवाया
करते हैं । इनके जलिये कमी-कमी काम बन जाता है । कोसिल कऊँगा ।

'अरर मेरे प्यारे बटक । तुम भाब से ही अपना काम शुरू करदो ।
कहाँ हैं मे गल-बहिमे इन दिन ?

'म सोल धाह में नहीं रहते हैं । आताबदात है कमी किसी भाब
के पास कमी किसी जऊल में । मैं पठा मगाता हूँ ।

'एक अवासिन साँसती हुई भाई । हाब बाँवकर नकी हो गई, जैसे
कुछ कहना चाहती हो । मयास में मासने की समुमति थी ।

'आबी आबम बीदार हासिल करने का प्रयास चाहते हैं ।
अवासिन बोधी ।

घालफ लेता मैं उम्हाने शिखबाद धीर निघ के बिसे पड़ ने ब सब उनको सब प्रतीत हुये । कसेबा सभी समाप्त गही सुभा था । समाप्ति के पहले सतको सवेरे का पूरा काम कर दासना था ।

एक कस ने बा कीर करने के बाद बघर्रा ने प्रबाग जामूस की धीर मुह फेर कर 'कोय' की । जैसे बादल गरज गया हा । जामूस न कापते हुये तिर उठया । घाघ गीची बिने हुये बासा 'मामना के मुस्तान गयामुद्दीन खिलजी—

बघर्रा के मुह में घाघा कोला एक ठगफ था बाबा गले से नीके उतर जाने की बासी में । घाघा मुह पानी था । उठी शिखा से दबी हुई कड़क निकसी—'मुस्तान नहीं है तू नामाकूब । गुलाम दानवान का खिलजी है । कइो उसकी बात कया कहना है ?

कापते हुये कंठ को सँजानकर जामूस ने कहा 'अहापनाह गयामुद्दीन खिलजी को दोस्ती मेबाक के काफिर राना के साथ ज्यों की त्यों चल रही है । मेबाक के राना ने बिस्मी के मुस्तान—मैं भूल गया बस्या बाक —बिस्मी के तिकन्दर सोरो की फौज को हरा दिया है ।

बघर्रा के मन्त्राय को मुनाने के लिय जामूस ठहर गया । कुछ एक टोटे कंठे को समूचा मुह में डालकर बघर्रा बोला, जैसे किसी बासे ने प्रबाह के जोर से बाँध को फोक डाला ही—'एक मूजी ने दूसरे मूजी को मारा । कहते बाघो । गयामुद्दीन घाबकब कया कर रहा है ?

जामूस ने बतलाया —'अहापनाह, वह एक खूबमूरत बराबा सौंठे के बहुत बहने में है ।

'मन्ता है । भरेबा । धीर घाघे ? बघर्रा बोला, जैसे जमीन के नीचे से पत्थर में हाकर नूकप बोला ।

जामूस दानवान से कुछ सम्भाष्य को भी कहता गया 'गयामुद्दीन फौज भी बढ़ती कर रहा है । खासियर पर चढाई करना चाहता है क्योंकि खासियर के पास राई नाम के बाँध में दो बहुत खूबमूरत हिन्दू सड़कियाँ । शिकार खेलती हैं जलनी मेंमे भोर, सुभर, सँजुये रोछ बरैरह को

मालूम है। बरखा ने कहा जैसे जाती हुई भाँबी किसी बड़े पेड़ को एक बड़ा छपाटा दे गई हो।—लेकिन बहमनी सख्तमठ के बाबूजों में इतनी ताकत हमेशा बनी रहैगी कि बिजयनगर के राजा को पछाड़ती रहे यह क्या मालवे वाला सो वह बहमनियी का कुछ बिगाड़ नहीं सकता। जे उलका होस जल्दी ठिकाने सवाळैया। पुर्नगामी क्या कर रहे हैं ?

‘जहाँको ताकत को बढ़ाने में लगे हुये हैं। उन्होंने पाँच जहाज गये तैयार करवाये हैं।’

कोई छिफिर नहीं। तबख्तबीस तुर्की के मुस्ताफ घाबम खमीर्रा घरीऊ को लिखो कि तैयार रह। तुर्की धीरे मुबरात की ताकत पुर्तगालियों पर बेपनाह ऊँहर बरसावेयी।

‘अहाँपनाह।’

‘साँझ पर बढ़ाई बरसात में की जावेयी। ज्वाबल की बिजलियों धीरे लकी नालों के पानी के चरोसे जब गयासुद्दीन माँह के बिल में घुसा होगा तब में अपनी बिजलियाँ मालवे पर कड़काऊँगा—बरसाऊँगा। तैयारी को बढाओ।’

‘ओ हुसम अहाँपनाह।’

‘छिलहाल कहीं भी तो बढ़ना है।’

‘हुसम अहाँपनाह ? बम्पानेर के घास-गास पचपूत फिर फिर उठाने लगे हैं।’

‘घासी सात बरस भी नहीं हुये हैं कि जब भेने सबका इस्तेमाल करवा दिया था। इसको इतनी जल्दी भूल गये ये लोग।’

‘बहमनी मुस्ताफ ने काश्मी के सारे मन्दिर तोड़दिये थे वहाँ फिर मन्दिर बनाये जाने वाले हैं।’

‘उन मन्दिरों को भेने भी देया था बूतों को भी। कुछ भी हो मन्दिर से बूबसूरत। बूतों को तोड़ डालते काफ़ी था। पत्थर को जान देने के प्रयत्न में हिन्दुओं ने जंग जमात को हासिल किया है ताज्जुब होया

हैं। हमारे मुसलमान तो वैसे कारीगरी नहीं कर सकते। उस कारीगरी को बनान में ही पटा नहीं कर सकते वैसे क्रूरता कर दिखाना तो बहुत दूर की बात है।

हरजारी सिर मुझाये हुए चुन रहे। बघर्रा ने मन में कहा 'पहाड़ों पेहों पून पत्तियों कोमल की कूकों धीर परियों की लोच-लचको को जैसे एक साथ इन मन्दिरों के बनाव सिवार में टाँकी धीर हुनोड़े स मकल' मकल कर उतार दिया हो। मैं तो देखकर ठगा सा लड़ा रह गया था। धीर चुन भी बेपनाह लुबलुबती के। बाहुता का उन कुतों को बीये ही नियम कर पेट के छिपी कोने में रखे रहूँ। बरे यह तो कुछ है। लेकिन कुछ घपर दिस को बीन दे तो क्या कुछ ? सोचा ! सोचा !! लुदा और करे।

पेट पर हाथ डेर कर बघर्रा ने एक लम्बी डकार भी बीये बरसात में कोई कच्चा मकान बिगाड़ो। दरबारियों को कुछ देखकर अपने अपनी बात का प्रापदित्त किया — 'मन्दिर तोड़ दिये अब कोड़ दिये तो और मकल हो किया। न रहेगा बाँस न बजैगी बाँसुरी बीसा कि यहाँ के क्यकिर घावर कहते हैं। अब उन लोगों को फिर से नये मन्दिर नहा बनाने बाँदिय। मुमकिन है कुछ मन्दिर तोड़े जान से बच बय हों और जन्हीं को कह दिया गया हो कि नय भिरे से बनाये जा रहे ह। तुम चुन मने से वहाँ बाँसु ?

बाँसुन कीन गया — बघर्रा बाहुता भी यही था — बोना 'अहीपनाह मे पुर्नवातियों की काररबाइयों की जाँच में मया रहा। काग़्भी लुद नटा का पाया। बहसा जाळें।

बघर्रा ने मलायम स्वर में कहा — फिर भी जान पडा जैसे कई फटे बाँस एक साथ बज पड़े हों — 'कोई बात नहीं। मुमको "न दिनों काग़्भी या बिजयनगर में विलचस्पी नहीं है। माँह में बहुत से हिन्दू कारीगर ह। मुसलमान होने को वे तैयार नहीं हैं। जबरदस्ती उनके साथ की नहीं जा सकती। माँह की बडाई के मन्त्री में समको यहाँ

पकड़ साईं घीर मजहब बरतने के लिये न कहूँ तो वे महमदाबाद को घीर भी घना देंगे । मुस्मों घीर काजियों ने मेरे स्याल की टाईर करबी है इसलिये कोई धिक्कत नहीं । अजिये की शकल में उनकी मजहूरी में से बोझा सा काट मिटा आया करेगा ।

‘जो हुक्म जहांपनाह । ग्वाभियर में भी बहुत होखियार कापीबर है ।

‘मोबू को पीतने के बाद ग्वाभियर को भी कूटा जायगा । कौनसा पांव है जहां के दो छोकरियां पछती हैं ? ग्वाभियर है कितनी दूर है ?

‘पांव का नाम पाई है । ग्वाभियर से करीब छः कोस दूर ।

‘ठीक है । बरसात में देखूंगा । आज जम्पानेर की तरफ बोमहर का खाना खाने के बाद कम । जब तक हवाएं पांव ही छिर बह से सुनी सफाई में रोज जहा न कहें तक तक भैंग नहीं पड़ता ।

‘जहांपनाह । दरबारियों ने भी छिर किये हुये ही क्षीण मुस्कान में भिपोकड़ समर्थन को प्रकट किया ।

बबरों ने फिर उकार भी जैसे कोई बड़ी बोंकनी फाँकर बोल गई हो मानो पैद के भीतर से किसी ने बोमहर के निकट खाने-बाने की इत्तिहा घीर बोमहर के योजना की माँग एक साथ भेजी हो ।

घम्य नित्य नैमित्तिक काम की बातें करके दरबारी बबरों के घादेघ निकर बने गये ।

दो मोटी सांवरी सलोनी बोंकरियां आबादी के साथ सिकार सेलती हैं और वे भीलनी भी नहीं हैं हालाँकि गीलों में भी खूबसूरती देखी है । दिन्नु कापीबरों ने पत्थरों में तरह तरह की खूबसूरत घीरों को बेहिसाब छरछों और छरछों में पेश किया है, लेकिन इस किस्म की घीरों को कहीं नहीं समारा है । अजर मिल नहीं तो देखूंगा । कम से कम स्याल प्रच्छा है मजेदार है । कुछ भी न मिला तो जब की कसरत तो हाथों पैरों को मिलेनी ही । तबबार और तीर से कटकड़ भुङ्कते हुये छिर घीर बून पर बहता हुआ जून । बबरों ने सोचा ।

[११]

कबल बर्या से थोड़ा सा घबड़ाप मिमते ही घग्म ने बँबियों वाले एक सेठ में जान बोली । पास लगे हुये एक इमने खत में थोड़ी सी प्यार बाकी भूमि को ज्वारी के सिने रख छोड़ा । कुछ समय के उपरान्त बाब के बीच जब निकले । जैसे ही जान कुछ बड़ी हुई घट में पैनाकर गया हो । बहुत पानी बरसा धीरे घट भर गया तो एक ओर से बँबिया को छोटकर फलतू पानी निकाल दिया । दो जहीन में जान खत में सहजने लगे ज्वार भी बड़े बड़े पत्तों वाली धीरे होनहार । भाई बहिन और साप्पी, तानों खतों की रजबानी में तलर थे ।

जाने का यत्न समाप्त होने को थाया । शम्प पशु बङ्गल में अधिक फलतू के घर विरक्त भय । खतों को रजबानी का धीरे पेट भरना था । रजबानी के सिने एक मजान जान के खत पर वा धीरे बुरस बगल के फिजारे ज्वार की रजबानी के सिने । जानवर विरक्त भय थे धीरे रात में कभी इस पहर धीरे कभी उस पहर था खाते थे । दिन में मिमते बहुत कम थे । बाङ्गल में हरियारी इतनी अधिक हो गई थी धीरे फलतू ऐसे पल्लवित हो बने थे कि थिकार हुआ नहीं भवता था । घटल ने अपना सब धनमा खा लिया । सब कैशन नाखी का रह गया था । लाली की धीरे अपनी माय की होहनी कर उन तीनों की गुजर हो नहीं सकती थी । पानी कभी-कभी इतना बरसता था कि दिन में घर से ही निकलना मुसह हो जाता था । रात में बरसी धीरे पानी के कारण इतना भँवर छाया रहता था कि जंगली जानवरों को चिन्ता नित्थाकर बचावा तो ना सकता था बरम्पु धीरे से धनका थिकार नहीं किया जा सकता था ।

लाली के यत्न को धूने से घटल का प्रणु होकार कर रहा था । ता सब क्या लाले ? धीरे के लजमन शम्प लीन भी इसी परिस्थिति में थे । उनमें हल नहीं मिलता था । भाई नवी में के अछलियो भी नहीं पकड़ी जा सकती थी ।

साथी ने कहा 'घनाबरनका तो है । कुछ दिन उससे काम चलानो ।

'जब बड़ी माँ का देहान्त हुआ । तब मैंने प्रण किया था कि इस मरघ को तुम्हारे लिये खेत में बोझूँगा । इसलिये इसको नहीं घना बाँटा है ।

'तो अपना सब मरघको क्यों खिलाया ?

'तुम्हारा ही तो था वह ।

'घोर वह तुम्हारा घोर निघी का नहीं है ?

'है तो पर मैंने प्रण जो किया था ।

'घोर में भी कोई प्रण कर नूँ तो ?

'कैसा ? कौन सा ?

'वैसा ही । समझ से काम नहीं लेते ?

'निघी से भी पूछनूँ बाहर गई है घाटी ही होगी ।

'तो मेरे कहने का कोई मोल नहीं ?

'है । नहीं पूछना निघी से । पर जब वह थुक खाबना तब क्या करेदे ?

'तबी कम हो जायबी मरघली मिलन लबेबी घोर बर्पा कम हो जाने पर झिझार बी । तब तक जान घोर ज्वार पक बडेबी ।

घटन न उस गुरभित जनाब में से कुछ के लिया । निघी जब बाहर से घाई देखकर बोली 'मैया तुमने इसमें क्यों शय लगाया ?

घटन ने उत्तर दिया 'इन्होंने कह दिया तो के लिया । जर में घाब के बिये घोर कुछ या भी नहीं । इन्होंने कहा वह भी तो अपना ही है ।

निघी ने साखी पर व्याङ्गकी मुस्कान डाली । बोली 'ठीक ठोफ़हा ।

घटन बाहर चला गया । जन दोनों ने बीसगा बीसा घोर रोटी बनाई तब कहीं साँफ़ को पेट भर पाया ।

रात के पहुँचे ही थे लोगों खेतों की रसवाली के बिये चले गये ।

निघी घोर साखी जान वाले खेत के मधान पर जा केनी घटन ज्वार वाले पर पहुँच गया ।

रात होते ही अम्बेरा का बसा। पहरी कासी पटायें। आकाश में
बज्रपा के होते हुये भी चांदनी का नाम नहीं। रुक रुक कर पुहार
पड़ जाती थी। हवा चल रही थी परन्तु मच्छर मूढ़ गांव-वाँसकर
टूट टूट पड़ रहे थे। बोड़े से काड़े परन्तु इतने कि धरोर को डक सें।
धरीर डका नहीं कि बरसो धीर पसीने के मारे ठडक के तिये फिर
बज्रों को बाहर निकालना पड़ता। फिर मच्छर धीर फिर बरसो धीर
सोने का कम। उन दोनों को बैठ जाना पड़ा।

निधी ने कहा 'कुछ बात चोठ ही करें।

बाकी बोली 'बाठ चोठ करने को है हो क्या? कुछ पायो।

'गाँवें तो पर मच्छर मुँह में चुस चुस पड़ रहे हैं। जो चाहता है
मच्छरों को पकड़ गाँवें तो मारकर भस्म कर दू।

'सुना है बड़े जोर र ब-रबबाइँ में इनसे बचने के लिये मच्छरी
... छेते हैं।

भेने भी सुना है।

कैसी होसी होनी मच्छरी?

'क्या मामूम। जान कर क्या करोगी? सवाधोगी क्या मच्छरी?

मपने माम में कहाँ मिली है। एक घरमा भेसा मार लें तो सचकी
बात से पहले तो वो महीने का घनाज छे लें। दूसरा मार लें तो उससे
कुछ कपड़े धीर दो मच्छरिका के लें—एक घपन लिये धीर दूसरी तुम्हारे
लिये।

'हाँ तीसरी की घटक भी क्या है। तुम्हारे धीर भैया के लिये एक
ही बहुत है।

फिर तुमने ठठोसी की। गाँव वाले यों ही घनजामे से देखते है
कमी तुम्हारे मुँह से ऐसी बात किसी के सामने निकल जाय तो क्या
होपा?

'बाउ उजावर हो जाय तो घण्डा ही है। ब्याह रचा दिया जायगा।

‘बाँव के पंच नहीं होने लेंगे ।

‘रखेसी की तरह रखें तो बाँव के पंच कुछ नहीं कहेंगे ब्याह हो जाय तो मानो कम पर बाव फिर पड़गी ।

‘ये तो अकेली ही बनी रहूँगी । किसी की रखेसी बनकर रहम से पहले खाई गयी में बने से पत्थर बाँव कर अब मरना भसा है । तुम्हारे साथ रहकर जन्म कट जायगा ।

‘ये क्या अकेली हो बनी रहूँगी ?

‘ब्याह करोगी ?

‘कर्मों सब मन चाहेंगा ।

‘तुम्हारा मन वा तुम्हारे भैया का मन ?

‘बेला जायगा । घाव की ही रात तो ब्याह होना नहीं है ।

‘दोनों मच्छरों को ममाने मारने में लय पई । कुछ बेर बाव सेठ के एक कोने पर जपजप सम्ब सुनाई पड़ा । दोनों बीकरी होकर सुनने लगी ।

‘नाबी को एक धाकार दिखावाई पड़ा । साफ़ नहीं भिबरा । परन्तु उसने मोहे का एक तीर छोड़ दिया । वह धाकार मस्त से हुषा । उसने दूसरा छोड़ दिया । धाकार को वह तीर भी लया । घरने भेसे की ऊँची झिड़कार हुई परन्तु वह मिरा नहीं । भाग गया । कङ्कल में धायने की बोड़ी दूर तक बाहट मिली । फिर कुछ नहीं सुनाई पड़ा ।

‘बरना वा । भाग गया — ‘निधी ने कहा ‘तुमने बहुत उठावली कररी ।

‘सेठ में या बाटा तो बाग की रौब डाकता । नाबी बोली ।

‘फिरनी बाग रौब डाकता ? वो तीर छोड़िये । बहुत बढ़िया तीर थे । तुमको कुछ सूझता बोड़ा ही है ।

‘तुम मिरा केती उसको ?

‘मिरा न केती तो तीर तो न को बेती ।

‘सैसे उग विनों पिलपिलाती बोपहरी में धरने में से दोनों निकालकर
सीटा बिने न ऐसे ही सवेरे में दोनों भी बूझकर सीटा हुई।

‘बूझ लिया धरने को ! और सीटा दिये तोर ! ! धरना कोसों पर
जाकर हम सेवा ! ! !

‘तो प्राण न ला जाओ ! और तक औरत करो !’

‘बड़ा पक्का करने लगी हा ।

‘तब धरने की लास के जूते न बनवाए होते और मनाजन के लिया
होता तो ऐसे-ऐसे न जानें किसने तीर सा गये होते मेरे पास ।

‘कौन यकने हम जोशों में लाया वह पनाम ! और जूते तो तुम्हारे
ही बने थे और उनके जिनके साथ तुम्हारा जीवन बीतना है ।

‘ये का गई वह तब ।

‘अब हम तोय ला रहे हैं तुम्हारा अन्न तो नित्य बसना दिया
करना ।

‘माझी जीम काटकर रह गई । निमी बोड़ी देर चुप रही परन्तु
धनिक समय तक हाथ पड़ना उसको नहीं रुक रहा था ।

‘बोली क्या-क्या लौटाघोरी मुझको तुम ?

‘तो कुछ लूँगी वह तब ।

‘मेरे माई को भी ?

‘बात ही करना हो तो कुछ और बर्बाद करो जिनसे रात भर बस
बढ़िया होता रहे । यदि इस बात को तुमने कहा तो अभी मनाम पर
से उतर पड़ूँगी और धरने को बूझने और तुम्हारे समझौते बनोसे तीर
जाने के लिये जङ्गल में बस दूँगी ।

‘ओ हो हो हो ! बड़ी अनुप पंडिता हो न ।

‘अभी दिखलावे देती हूँ ये क्या हूँ ।

साक्षी ने तमबार सठाई और धम्म से मधान के नीचे बर पड़ी । निम्नी ने उसको नहीं पकड़ पाया । निम्नी मधान से नीचे छूटी । तब तक साक्षी गहरे पाँव कीचड़ में छप-छर करती हुई कई दम आग निकल गई । निम्नी ने बौढ़मा चाहा परन्तु वह बीड़ नहीं खाती । साक्षी धीरे धीरे की भी इसलिये उसको अधिक भावा नहीं हुई ।

निम्नी ने विस्त्राकर कहा 'तुमको मेरी सीपन्ध नई लड़ी रहो ! मेरा मरा मूह देखो जो एक पल भी धामे बरो ।'

साक्षी रक गई । निम्नी ने उसको जा पकड़ा । लीने । निम्नी ने कड़े स्वर में कहा ।

भाई । दुबला के साथ साक्षी बोली ।

'तो मैं भी तुम्हारे साथ ही मरने चली । निम्नी ने निश्चय प्रकट किया ।

दूसरे छेद के सिरे वाले मधान से घटल ने कुछ धुन बिना और कुछ देखा लिया । वह उतर कर इन दोनों की तरफ भागा ।

वहीं से विस्त्राया — क्या बात है ?

निम्नी ने बीरे से साक्षी से कहा जो अब निबटो उनसे जाह उनके मधान पर चली जाओ ।

'तुम बाइली ॥ कि मैं मर जाऊँ या कही निकल जाऊँ अब देखो तब सहा करती हो । साक्षी बोली

मैं ही कही क्यों न चली जाऊँ जिसमें तुमको काँटा न घसे । निम्नी ने सोचा परन्तु कहा कुछ नहीं ।

निष्कट जाने वाले घटल की ओर देखने लगी । घटल ने पास जाते ही धारधर्म के साथ पूछा 'मह क्या ! कहीं जा रही हो तुम दोनों नरु पाँव ?'

निम्नी न गुरल छतर दिया 'मरना जाया जा । तुमने नहीं देखा बाऊ ।

निम्नी बोली 'दुर्गों में उस बर से सीर चलाये । उसको दोनों लय । वह बिड़का और भागा । तुमने नहीं सुना ? कहीं मैं तुम ?

अन्ध ने धरनाड़े-धरमाउ बजनाया 'मने अम हो दी रज्जु को पना । अब तुम बिम्बाई तब भीन्न लुनी देखा ना दुन दोनों नहा पड़ी-मर्ग कुछ बात कर रहा है । मचान से क्यों उतर पाई ?

लाम्बी ने बाधने के पहलें पके का साकू किया परन्तु निम्ना ने बोध में हा कहा 'इन्होंने कहा सीर न जोयावे धरने को होतें । दोर यह कर पड़ी । मैं गोकने के बिप लपक पाई ।

'बिगट हो तुम दोनों । आधो मचान पर । तीरों का बिम्बा दन कर । कब हुई लंबे धरने को । आधो ।

निम्ना ने लम्बा का हाथ पकड़ कर मचान का धार लीचा । वे दोनों अब मचान पर चढ़ गईं तब अन्ध धरने मचान को धोर पना ।

निम्ना ने लम्बी क मन् में हाथ बाधकर कहा 'सीमन्ध जाता हूँ कि धाव तिर कनी ऐसी बाउचोउ नहीं करेयी ।

'दनाब जानकर बाहू को कुछ कह सता हो ।

'अने को अनाब कह कर मुन्धो महा बाधन मन् बनायो । अनाब तो मैं हूँ । सीमन्ध जाता हूँ धवन प्यारे म प्यारे का सीमन्ध जाता हूँ कि बाहू को कुछ हा बाध धागे कमी नहीं लाईगा ।

इस सीमन्ध क लाठे हा लाम्बी हिलककर निम्ना म बिपन गई ।

'ऐसा सीमन्ध क्यों आई निम्ना ? लाम्बी ने फटफट हुये कण्ठ में कहा ।

'अधोकि मुन्धो ताब अस्सी धा जाता हूँ । इस सीमन्ध के कारण धन कमी नहीं आयगा ।'

'मैं धरने सारे पुरखों का सीमन्ध जाता हूँ कि नुप बाहू जैसी धानिया मुन्धो देना जाला-पीटना पर मैं कमी कुछ नहीं मार्गुनी ।

'अब सब निबट चुका । धावे मेरी-मुम्हारी बाड़ाई कमी नहीं होरी । पन्धा धन हम को ।

झोपड़ में उनके घने बीं में घेर घेर बहिरा-बहरे बंधे हुए थे । कुछ दूधर छूटियों से एक झोपड़े के किनारे कमठे तीरों में ठरकठ घेर लम्बे लूरे रखे हुए थे । छोटे बच्चे बाल से टेंगी हुई छतियों में थे । पाँच-साठ बच्चे घेर बगान स्थियाँ जामा पकाने में लगी हुई थीं । पुरप एक मारे हुए बगान की काटकाट में लगे हुए थे । उन सबके कैद लम्बे थे । पुस्य कन्नी बेली कोटिया पहिने हुए थे । बिजली बिजली मुदड़ोंसार पावबानें । धोड़नी कोई नहीं छोड़े थी । छोटों पर केवल बोली कसे हुए । कानों में बस्ते की बाभिया घेर नाक में पीतल के बड़े बड़े नम । घने में काँच के रंग-बिरंगे मुरियों की मालाएँ ।

उरे के चारों ओर बड़े-बड़े लकड़ों का बरग था । मार्य-वर्षकों ने निष्ठ की ओर से समझ लिया कि कीव है ।

‘ओ रे ओ !’ मार्ग प्रवर्तकों का बगान उन लोको का ध्यान धाकट करने के सिरे बिस्सावा । उन सबने पुरप देल लिया और कुर्नी के साथ कड़े हो बने । उनके चेहरों पर मय नहीं था केवल धावचर्य था । इनका मुखिया बनेड़ धवसा का था । बोला ‘क्या है ?’

बगुधा ने कहा ‘बुधराठ के मुस्तान की श्रौम यहीं पास था गई है और तुमको खबर नहीं !’

‘इसको नहीं माधूम ।’

‘माधु का रास्ता बतलाओ और नवी का भाग ।’

‘इसको नहीं माधूम ।’

‘श्रीम को इसी बड़ी उस पार उतरना है ।’

‘काहे के लिये ?’

‘काहे के लिये । तुम्हारे पुरकों को तारने के लिये । निकलता है इस बाड़े में से या हम दख-दखा बजाकर श्रीम के हाँवियों को तुम्हें कुछल बालवे के लिये बलाएँ ?’

एक बुधती ने मिड़मिड़ाहट के साथ कहा—परन्तु उसकी धाँकों में कोई मिड़मिड़ाहट नहीं थी शराब थी—भरे महापत्र क्यों मों ही लाए जाते हो ? हमारा तमाशा देखो नाच रस्से पर डोलकी बजाते हुये बीड़ना कुत्तों एक पेड़ पर से दूसरे पर उछल कर पहुँचना बन्धनों के धल धीर भगविगते करतब । मुम्बरिया । धरी धो मुम्बरिया ।। उसने झोपड़ी में बँधे हुये बन्धनों की धीर मुह करके सम्बोधन किया । छत्रिया मटकई धीर मार्ग-बर्चकों के प्रति शराब भरी धाँस बसाई ।

‘जितनी पूछूँ है । नटनी ही तो ठहरी । समुधा न सीखा ।

बोला ‘वह सब मुम्बान सनायत धीर उनके सरदारों को दिखलाना । इनाम मिलेगी । हमको तो पस्ता बतसायो ।

‘जहाँ है मुम्हारे बाबसाह और सरदार ? मैं तो दिखलाऊँगी पासमान तक का पस्ता । बल जाऊ मुम्हारी महाराज । क्या इनाम मिलेगा ?

‘बाबसाह के जो मन में पाये ।

नटों के मुलिया ने कहा ‘रास्ता तो सीखा है ।

समुधा बोला ‘हम लोप भुस बये है । जलो साथ ।

जब बुधती ने तुरन्त एक झोपड़ी में से अपनी घोड़नी उठाई और बूटे पहिने । नटों का मुलिया भी तैयार हुआ । कुछ नट धीर बबेड़ बबरबा बानी एक स्थिती थी ।

समुधा ने मुलिया से पूछा ‘मुम्हारा नाम ?

‘पोटा ।’

‘और इस बड़की का नाम ।

‘पिल्ली ।

‘स्त्रियों को साथ जाने की शरारत नहीं है ।

‘पाय हाय ! तुम जो उकरत न होनी । मैं तो चतूरी । मैं पस्ता दिखलायेंगे मैं जेत दिखलाऊँगी ।

कहाँ के रहने वाले हो तुम लोग ?

‘इसी मानवा के ।

धनुष को छन सबों को साथ लेना पड़ा । एक कोस धमने पर धनुष ने मार्ग दिखमा दिया । वहाँ से गजरात की सेना की बहन गहन कुछ कुछ सुनाई पड़ी ।

मखिया ने ह्माम मांगा ।

प्रमथा ने नाही की — ‘मरी का बात तो बतलाओ ।

विस्सी पिरक कर बोली ‘बाहे मार डालो जब तक में अपना सेन समारा बाबमाह को नहीं दिखनाऊँगी बात नहीं बतलाया जावगा ।

धनुषा को बिखल होना पड़ा । वे सब सेना में पहुँच गये । सुस्तान महमद बघरी को भुल लग आई थी । अचिन्तम हाथियों पर से तल्व डतारा क्या धीरे जोड़ कर रख दिया गया । मसनह तकिफ मया दिये गये । साना या मया ।

कमिया के भलाया बघरी दिन भर में एक मन गुजराती बजान का भोजन करता था जो इस गये बुजरे बमाने म बीच खेर के बराबर होता है । भोजन में रोटियाँ माँस के लाना प्रकार के व्यंजन बाल छाक वही इत्यादि रहते थे जिनको रसोद्वे हाथियों पर पकाते हुए या गरम रखकर पनते थे ।

बघरी ने जाना मक किया ही था कि सेना के एक छिरे पर कुछ बसाधारण धोर सुनाई पड़ा ।

‘मया है यह ? बघरी ने पूछा—‘जैसे कोई पेड़ टूट कर पिरा हो ।
पहरेदार बीड़ गये । लौट कर बतलाया ‘रास्ता बतमाने वाले नट पाये हैं । उनके साथ कुछ भीररों भी हैं । जैसे-तमामे दिखला रही हैं छिपाहियों को ।

लामो इधर । बघरी ने पाव धर का एक घास बूढ़ में डालते हुये मिठास के साथ कहा—‘जैसे पेड़ की कोई डाल टूट पड़ी हो ।

मृगमी घोर मृग बघरों के पास जा गये । सुस्ताम को बचुर ठठाकर देखा धक्किलता समझी जाती थी—उसके लिये कड़ा बन्ध भी था । मृग चूपचाप खड़े हो गये ।

मदनियों ने, विशेष कर पिल्ली ने देह की बसाधारण लोचो-बचको से अत्यन्त ही कुत्तारि आनी धारम्भ कर दी । पिल्ली ने तब की मद्य बह बर-एक बड़ा सजीव होर घर देखा घोर मोहन के छोटे-बड़े समूह । वह नीची लियार्हो अपना खेक विस्तारणी रही । बघरों को धीरे को ऐसी मोर्हो-मोर्हो देखकर भावपर्य हुआ । कुछ क्षण के लिये मोहन के डरों को कम करने से हाथ रक गया ।

बहुत दूर । बघरों के मुँह से निकला—जैसे किसी चूड़ू घर से चढ़ान दूट कर लुढ़की हो ।

मृग काप गये । पिल्ली की लिट्टी भुल गई । वह प्रत्येक के धाव खाई होकर नीचे से ही सुस्ताम को भाग गयी । उस धीरे, बाड़ी घोर मूँछ को देखकर उसके रोंकट खड़े हो गये । सुस्ताम ने पाव-पाव कर के घातों से मोहन करना जारी कर दिया ।

एक घात को बचाते-बचाते बघरों बोला, कहाँ रहती हो ?

पिल्ली के कर्णों को प्रतीत हुआ जैसे किसी बड़े मरे हुए होल में भेसा कुदा हो ।

बायीक स्वर में बोली 'सरकार, मोड़ के पास के एक बज्जल — रहने वाले हैं हम लोग ।

कहाँ जा रहे हो तुम लोग ?' जैसे कोई चढ़ान फटी हो ।

'सरकार मेवाड़ की तरफ ।'

'क्यों ? जैसे लोहे के दो बोले जाल में टकरा गये हों ।

'बड़ा के पछासी घोर सरकारों को अपने खेत विकसमाने के लिये

'यहाँ से कच जल बोये तुम लोग ?

‘ओ-सीम दिन में । बाबल साफ हुआ नहीं कि चल पड़े ।

‘कौन जाग हो ?

‘हिन्दु और मुसलमान दोनों ।

‘यह कैसे’

‘सरकार, इन बुरा और सबबान लोग को मानते हैं और सबबान-
वर्गों का मांस खाते हैं ।

‘तोबा ! तोबा !!

‘बिबाड़ का राजाजी कहाँ है ?

‘बीबीड़ में होंगे महाराज ।

‘बिबीड़ में नहीं है । मुझने बूझने-मरने को था रहा है । यहाँ
बालीस-गवास कोस की दूरी पर है । माई के मुस्तान को सतम करके
घाटा हूँ उस पर भी । बड़ बना कि बग्यानेर का हाल किया नहीं
सतका भी करेगा ।

‘ओ हुकुम सरकार !’

‘कसम खाओ ।

‘बुदा की कसम ।

‘सबबान को भी खाओ ।

‘कसम सबबान और बहा की ।

‘म हाथ बाँध कर इनाम के सिध भुक्त गय ।

‘रास्ता और घाट बिप्लवाघो इनाम ‘बिजेया’ बघर्रा ने कहा मानो
भीटी भीषी बरी को किसी न फाड़ा हो ।

‘हो लोग बक मने । जाना जाने के बाद मुस्तान बघर्रा सेना समेत
चल पड़ा । गलों के बतमाये हुये घाट से शाम्भ हींते-हींते वह नदी के पार
हो गया और रात के निचे बज्जल को घपना सिंघिर बना लिया ।

‘सवेरा होते ही गली में बरना डेरा बछाड़ा और तेजी के साथ
छटरावे हुये मायों से माई की बिधा में चल दिने ।

बपरी के बामुखों ने बूझते हीन समाचार दिया कि बिलोचियों ने मुबारत के उत्तर में एक साल की संख्या में सिन्ध से घुसकर लुटमार उपद्रव मचा दिया है। उसने गुरग लौट पड़ने का निश्चय किया। माई के मुन्तान घोर दा देहाती छोकरियों के पीछे न पड़कर बिलोचियों का पहले कृपण डालना उकरो है फिर देखा जायगा। उसने सोचा।

महमूद बपरी बोध से ही लौट पड़ा घोर महमूदाबाद न जाकर मुबारत के उत्तर की ओर चल दिया। बिलोचियों की बतरह खदेड़ा। सिन्ध प्रान्त के उत्तर में सिन्ध नदी के किनारे बिलोचों कुछ समयकर लड़ परलु हरा दिये गये घोर बड़ी संख्या में मारे गये। वहाँ बपरी की बिरिह हुआ कि ब्रामरु के दलित्वाली बपू टापू पर पुर्नवाचियों न लड़ाई के जहाजों की बड़ी संख्या में जमा किया है एक बड़ी सेना उतार कर मुबारत में घुसने वाले है। माई के माकमल को अनिश्चित काम के लिये स्ववित कर बहु पुर्नवाचियों का सामना करने के लिये सिन्ध से सीधा मुबारत जमा गया।

बोटा के बर्य के न माई के जङ्गल में जा दिये। बपरी के बल तक बड़ी बने रहे। जब उठाने मुन्तान घोर प्रचण्ड 'छछाबी' के धंभट में बं गही पड़ना चाहते थे। रफा करते थे मुन्तान जब माया घोर तब थाया। परलु न मुन्तान माया घोर न छछाबी माये।

बबामुदीन की छछा छयमल के बरिध बने जाने का समाचार अविलम्ब निज मचा था। बहु चाहता था मेबाद के राजकुल पहले बूम जारें फिर बपरी से टकर भू। ऐना न हुआ। उसने अपने मन की बहकमा—छछा यमल में सड़ना नहीं चाहते थे। लोचते होंगे वे घोर मुन्तान महमूद कट मरें फिर मोके का जायदा यठमों में भी लयम भूदा।

परिवर्ति को निहार देकर स्वाजा मटक वे बोटा के दल का जमा लय निभा।

उसको बुलाकर कहा 'सुना है तुम बहुत होशियार हो ।

क्या काम है हज़ूर ? उसने विनय की ।

मालिक ने राई हाथ की सन दोनों लड़कियों का परिचय दिया ।
क्या करना है यह भी बतलाया ।

बोला 'घबर तुम उन दोनों को किसी भी तरीक़ी से माँदू या
हमारे इलाक़े में बिना जानी तो यूँही माँपा इनाम पाओगे । तुमको खर्च
धीर धटक धीर के बिने कुछ ठंके है दिवें आवेंगे । काम कर माँपोगे तो
सोना चाँदी से पूर दिवें जाओगे । रहने के लिये माँदू में एक धातौसान
मकान है दिया जायगा । तुम्हारे सारे साथियों को भी बहुत इनाम
मिलेगा ।

उसने कहा 'हम दोनों की मजाल नहीं चाहिये । हमकी एक ही
ठीर बसकर रहने की हमारे घर में मलाई है—हमको कसम है । हम
आपके हुकम को पातने का ज़पाव करेंगे । पूरा ज़पाव ।

कुछ जादू टोना जानते हो ?

'जादू टोना नहीं जानते तो ज़पनों के साथ-बिच्छ, बाहर उँदुए बँधे
काम में कर बैठे हैं ?

जल्दा जाओ करो काम । तुमको आज ही कुछ बख़्शें, कपड़े धीर
काफ़ी पेघनी रकम मिल जायगी ।'

पोटा सामान लेकर चला गया ।

[१३]

गामियर फिर से बस गया । कारीमरों और व्यवसायियों के संघ अपना काम कर उठे । गाँवों के किसान मजबूर रोते भीकते फिर से अपने जगहों में लौट गये और ग्राम्य पंचायतों पुनः चलने लगे । निम्नलिखित और सम्मान के कार्य में व्यस्त हो गई । मानो एक बड़ा ध्वज प्रयास या झड़ झड़ियों को झड़भोर बना कुछ पेड़ों को उखाड़ गया । मनक की बालें तोड़ गया फिर सब ज्यों का त्यों ।

गामियर की सीमाओं के अन्तर्गत—सख्ती-पड़पड़ियों—को सतक और सतक करने के लिये राजा मानसिंह ने उपाय कर दिये । नरवर का विद्यालय गङ्गा गामियर के तीमरों के अन्तर्गत समय देह सी बर्ष से बसा छाटा था । गामियर से बहुत दूर नहीं था । समय पञ्चीस कोस दक्षिण-पश्चिम में । मानवा के मुस्तान से मोर्चा देने के लिये पहुँचा और बड़ा झुका हुआ था ।

मानसिंह ने नरवर को भी सम्मान कर दिया ।

तीमरों ने नरवर के किले को कब्ज़ावालों—कब्ज़ावालों—से लिया था । कब्ज़ावालों को यह बात कानि सी नहीं लगी । मुमि की मुस बाके उस युव में यह बात सुनाई भी कैसे जा सकती थी ? मानसिंह के समय में नरवर के कब्ज़ावालों का अन्तिम बंश राजसिंह था । बचानो के बोध में उसकी राज्य-निष्ठा और तीमरों के प्रति प्रतिहिंसा बनीमूठ हो गई थी । वह गामियर की सीमा के बाहर मानवा के सख्ती नगर बहिरी में रहता था और कभी यादु के मुस्तान कभी दिल्ली के बादशाह को अपने अमीर की प्राप्ति के लिये उकसाया करता था । नरवर से बहिरी समय बीस कोस के अन्तर पर है । बहिरी में मानवा के मुस्तान का सूबेदार रहता था । वह गामियर की शक्ति को जानता था । नरवर के ऊपर आक्रमण नहीं कर सकता था । मुस्तान करे तो करे—उसका निश्चय था । राजसिंह अन्तर की ताक में था ।

जम्हेरी के बल्लिण-युर्ध से बैठवा पहण्डों घीर धंभसों को रेतती कुरेबती पूर्व में लवभम बार कोस के मस्तर से उत्तर की ओर बसी गई है। गई बंदेरी के हिस्से घीर नगर के कोठ को नामवा क मुस्तानों ने मने तिरै से बनवाया था। पुरानी बंदेरी ऊपड़ पड़ी थी।

बंदेरी—गई बंदेरी—का हिस्सा नगर के ऊपर उत्तर से पूर्व की ओर घूमकर जामे वाली एक ठोपी पहाड़ी पर था। जम्हेरी का सुबेदार इली में रहता था। नीचे बसा हुषा नगर सपन था। यहीं एक बड़े भवन में राजसिंह रह करता था। उसके पड़ोस में एक गायक का निमके गले की मधुरता घीर बीछा पर धौलियों की बसुराई बिस्यस्त हो गई थी। वह राजसिंह को अपना नामन घीर बीछा-बादन कभी-कभी सुनाया करता था। दोनों में मैत्री थी। गायक को उससे यदाकदा कुछ सहामता मिल जाती थी।

सुबेदार गायन-बादन का शौकीन नहीं था। फिर भी कभी-कभी बोझ बहुत दे देता था। गायक का नाम बीजनाथ था। बाटि का बाह्यरु मादन-बादन के धम्यस्त बढ़ाने में उसको शिल और रात मूख और प्यास भनसर और कुमबसर की परवाह नहीं रहती थी। बपर में उसको बीजू कहते थे। बीजू के घर के सामने एक चिन्कार की लहकी रहती थी। वह चिन्कारी से बढ़कर संपीत कमा में भिपुण थी। बणंसकर होने के कारण उसका युवावस्था प्राप्त हो जाने पर भी विवाह नहीं हुआ था। कम्बती भी माफी से कुछ पिछती-मुजती। बीजू हैं उसने बादन-बादन भी सीखा था परन्तु चिन्कारी में उसकी विशेष रुचि थी। राजसिंह के भवन पर जब बीजू माता था तो वह लहकी तम्बूरे का साथ देती थी और बीच-बीच में अपने कण्ठ से उसकी लय को साजती थी। फिता ने मरते मरते तक विवाह की बर्बा की कोई भी विवाह करने को तैयार नहीं हुआ तो उसने भी विवाह न करने की प्रतिज्ञा करली। नाम उसका फता था।

बारद शत्रु मय गई । सुनस पक्ष की चादनी पैरों के सहस्रहाते पतों
घोर हुआ पर बैठी हुई घोस की बूँदों के साथ खेलने लगी । बारद
पुष्टिमा की रात में बैजू का नामन राजसिंह के यहाँ हुआ । कसा तम्बूरे
की लंकार और बीच-बीच में अपने स्वर से उसका साथ दे रही थी ।
कसा की बाँखें बाई हुई थीं हस्ती का भीमा कपडा बाँखों पर डाले था
रस में इसकी बनी हुई थी कि बाई बाँखों की उसको चिन्ता न थी ।

राजसिंह की लोटी ही समा में उसके कई मित्र थे । उनमें से
एक बारद का । बारद कुछ कहने के लिये उठावला का । गायन के
बीच-बीच में उसी के मुँह से सबसे ज्यादा बाह ! बाह !! निकल रही
थी । वायक बैजू उस बाह-बाह के हलजता-बापन के लिये मुस्करा कर
देता था । बारद की बाह-बाह के प्रति हलजता प्रकट करना प्रसिद्ध
तो होता ही, सामान्य कभी हलिकारक भी हो सकता था ।

नामन की समाप्ति पर राजसिंह ने वचा-नामन वायक को कुछ
मेंट किया ।

बारद बोला 'आप जैसे वायक हो बैजनाम जी बैसा नाम राजसिंह
की उस दिन से जेब इनकी पुरानी बपीली छिट धावेली ।

राजसिंह ने उठी हुई साँस को रोका ।

बैजू ने कहा 'जो मिलनाय नहीं बहुत है । अपनी धात्मा के भीतर
से जो कुछ बाता है वह सब से बढ़कर है ।

बारद ने अपने भाव की धार तेज की—'जब बारद के क्रिमे में
इनका घण्टा पहराने, तब मैं इनको राजा कहूँगा उसी धावको घेरे
रका सोने कीर मोरियों से बाहर देंगे । उसी मेरी छाती बुझायी
मेरी मात्मा थी ।

'और उसी में सब के सामने घमन कहेंगे धीरे धर का व्याका
बैटकर पिछेगा' राजसिंह के मुँह से निकला ।

कसा ने बाँखों की कटी को बरसा सा हटाकर राजसिंह की ओर बैठा ।

चारण बोला 'हमारे पुरखों ने राजसिंह की कैं पुरलों के राज
नरवर को सीरा का जब तोमरों ने नरवर का हारण किया । हमको
प्राप्त है कि जब तक नरवर में वीर नहीं रखेंगे जबतक कछवाहों का
राज्य नरवर में फिर से नहीं हो गया ।'

बीजू राजनीति को नहीं जानता था । उसे लगा राजसिंह किसी दिन
अपने कुछ साधियों और बन्धेरी के सुबेदार के संग नरवर पर आया
कर बैठेगा जिसका परिणाम बुरा अधिक और अच्छा कम होगा ।

'हमारे लिये तो बिना राज्य के भी प्राय राजा है । नरवर बहुत बड़ा
हिता मुना है ! बहुत रक्तपात होगा । बीजू ने कहा ।

राजसिंह गया किये था । बोला 'मर जाऊँगा किसी दिन । अपनी
भूमि को फिर से पाये बिना मर जाना ही अच्छा ।

कत्ता ने फिर घोड़ की पट्टी को बँधवा । उसने राजसिंह को ऐसी
बात कहते पहले कभी नहीं सुना था ।

चारण ने कत्ता को और तेज किया — 'मर क्यों जाओगे कुमार ?
मारोवे और नरवर को फिर पाओगे । बन्धेरी के सुबेदार यादवा के
सुन्तान आपको यों ही गद्दी मर जाने देने । यों ही मरते हैं स्याद राज
पूत ऐसे नहीं मरा करते ।

राजसिंह ने तिर हिलाकर बतलाया कि उसका प्रयोजन मार कर
मरने से था—यों ही मर जाने का अनिष्टम न था ।

चारण ने एक उत्तेजक कविता सुनाया जिसका तात्पर्य था—सिंह
और राजपूत कहीं भी आकर अपने बाहुबल से राज्य की बना देंगे ।
बीजू के वादन का जो प्रभाव हुआ था उस पर अपने प्रभाव को बढ़ा
देने का उस कविज्ञ-पाठ का सर्वेस्व अधिक था राजसिंह को भड़काने
का काम ।

बीजू को न तो कविता का साहित्य अच्छा लगा और न अच्छे पाठ
की कर्तव्य धर्मि ।

बैज बोला 'घातकी कृपा से सब ठीक रहेगा । ऐसीगा कीम-कीम बड़े-बड़े सामन घाते हूँ वालियर में ।

चारण धीरे राजसिंह ने एक दूगरे की तरफ देखा । उसके मित्र ने भी किसी धार्मिक खस्य को जानने का कृतज्ञसम्पन्न किया । कला ने भी धर्म की पट्टी सजाइ कर वहाँ की उहाँ करली ।

राजसिंह ने कला से धकेले में कुछ कहा । फिर सब विचर-विचर हो गये ।

[१४]

खादियर के क़िले के दक्षिणी मैदान में पुनर्वास के लिये लोटे हुये लोगों के सब कोई सोपड़े नहीं रहे थे । वे सब क़िले के नीचे नगर में जा बैठे थे । उस मैदान के पूर्वी छोर की दीवार के नीचे छोटे-बड़े ऊँचे नीचे वालों पर विविध रंगों के बड़े चास-फूस और मिट्टी के पखी तथा डोरियों पर लटकते, बहकर लाले हुये छोट-छोट मोले बूम रहे थे । सामंतों और सैनिकों के साथ मानसिंह सीरम्बाजी का अभ्यास कर रहा था । एक बड़ी दिन बड़े ही अभ्यास करने वाले इकट्ठे होकर समूहों में बँट गये थे । मानसिंह के साथ विजयवज्रम भी था ।

जिन्होंने अभ्यास का पारम्भ ही किया था वे बड़े-बड़े लक्ष्यों को साब रहे थे । जिनको पारङ्गत समझा जाता था वे छोटों के सामने थे । इन सब के पीछे मोटे कपड़े के रेश भरे बोरो की दीवार उठा दी गई थी जिससे तीरों की मोलें कोट की दीवार से टकराकर रुक न जायें ।

मानसिंह और विजय के सामने होगी से लटकता हुआ एक छोटा सा बड़ा था । इसको सतारा गया और उसमें पानी भर दिया गया । काठ की एक छोटी सी बतख उसमें डाल दी गई ।

मानसिंह ने विजय से कहा 'टाँग देने के बाद इस पक्ष को हिमा दिया जायगा । बहकर लाले हुये पक्ष के भीतर बतख को तीर छेद कर निकल जाय तब बात है ।

कितने तीरों में से एक जग जाय तो सफल वेब समझा जायगा ? विजय ने पूछा ।

चाँच मानसिंह ने उत्तर दिया ।

शूरे राजा विजय ने स्वीकार करते हुये कहा ।

मानसिंह ने कहा 'तुम्हें सोप तीरन्वासी में बहुत बड़े-बड़े हैं। जब तक हम लोग उनकी धपेला धपेले तीरन्वासी नहीं हो पाते हैं तब तक इनका सामना सफलता के साथ नहीं हो सकता। हम लोगों में साहस हीन इत्यादि सब कुछ है परन्तु इच्छा कमी है।

विजय बोला 'और कई कमियाँ हैं जिनमें से एक बड़ी कमी धपेले घोड़ों की है। तुम्हें के पास धपेले घोड़े हैं। महापद्म को स्वरण होना कि मैंने तैलज्जाने के बलिखवर्ती विजयनगर राज्य का कुछ वृत्तान्त सुनाया था। बड़मनी सुत्तानों से बड़ने में विजयनगर की अपार सेना इन दो वृत्तियों के कारण ही रह-रह जाती है।

मानसिंह ने निश्चय के स्वर में कहा, 'मैं इन दोनों वृत्तियों को दूर करना चाहता हूँ। धम्यास धम्यास और धम्यास से हम लोग तीरन्वासी में तुम्हें से धापे निकल आइये। घोड़ों की समस्या धमस्य बुद्धिमान पड़ती है सो मेबाड़ के मार्ग से प्राप्त हो सकते हैं। मेबाड़ के राजा की मैं अपना बड़ा मानता हूँ इस काम में वे मेरी सहायता करेंगे।

'सोना चाँदी बहुत चाहना पड़ेगा। कहीं से धापया इतना? विजय ने स्निह प्रकट किया।

'सोना चाँदी की कमी नहीं रह सकती। धातन का प्रबन्ध धपेला रखना था रहा है। प्रभा धन उपभोगेगी। सेठ और व्यापारी उद्योग धन्यों को बढ़ावेंगे फिर कमी नहीं रह सकती।

'धातनको भवन बनवाना है- मन्दिर भी?

सोना था परन्तु अभी नहीं। ध्यान में ही नहीं आता है कि भवन किस प्रकार का बनेगा और कैसा। बलिख का समूचा तैल मन्दिर है परन्तु किसी और ढाँच का बने सो धपेला सोया। सबसे पहले धमस्य और सेना फिर कहीं भवन और मन्दिर।

'और धिकार? इन सबसे पहले?

'हूँ हूँ हूँ हूँ चोट करके ही माने।

‘मैंने बैसे ही कहा ।’

‘परिचय कर लेने पर कुछ घबकाव भी तो चाहिये ।

‘जीवन में कायक—काम—ही सब कुछ है । एक काम से मन उचटते तो दूधरा करने सवे । मैं तो घबकाव इसी को कहता हूँ ।’

‘बापकी इस बात को मैं बहुत पहले माँठ में बाँध चुका हूँ । इसी लिए परिचय से घाह्लाव पाता हूँ । प्रण किया है जब मजल और मन्दिर बनवाठेया ठब मजदूरों के साथ नित्य एक बण्टे में भी पत्थरों पर भ्रम कहेया ।

‘घिरार खेलने कब जायेंगे महाराज ?

‘हूँ हूँ ! हूँ ! ! फिर व्यङ्ग ! ! ! नहीं बाठेया बाबा । उस माँव का वह बाह्यस दो बार भाकर चुका गया है । हुतास में भाकर उससे कह देता हूँ कि घोम बाठेया परन्तु वह हुतास द्यसिष्ट सा रहा मैं भूम-भूम गया ।

‘याद फिर स्मरण हो आया ।

‘मरे साथ म्याय करो आचार्य । मैं केवल मन बहुलाव के सिधे नहीं जाना चाहता हूँ जङ्गलों में । तीव्र गति के साथ बीहटे हुये मरकर पशुओं को एक तीर से मार गिराने की क्रिया में निपुण होना चाहता हूँ । बन सक्त तो वहाँ के दूटे हुये मन्दिर के जखार में जो कुछ सहायता कर दूया ।’

‘पाँव के उस शास्त्री ने कुछ भीर भी कहा था ?

‘स्मरण नहीं आता ।

‘कुछ बहेसिनियों की बात कही थी ।

‘कही होभी याद नहीं रही ।

विजय को राजा ने भोजन कराया । फिर स्वयं किया । भोजन के उपरान्त विजय मानसिंह को बीणा-वादन सुनाया करता था । वह हमका कल्याण जानकार था । बीणा-वादन पर मानसिंह मुग्ध हो गया । जब रका

जब वे जमझ में भरकर कहा 'पहुँचे के लोगों ने बड़े-बड़े मन्दिर और मत्स्य मूर्तियाँ बनवाई हैं—मेँ चाहता हूँ संजीत को पत्थरों में खुदवा दूँ'।

पत्थरों में संजीत ! विजय ने बीछा को एक धोर रखकर आश्चर्य प्रकट किया ।

क्या कुछ असम्भव है ? धनमेरुके बीहान राजा विग्रहराज ने विग्रह राज मन्दिर और हरकेलि मन्दिर को खुदवा दिया था न सिलाघों पर ?

'परन्तु संजीत ? वह तो हृदय और बड़े की चीज है ।'

'क्या आपके मेने ही ठेका लिया है सब विचार करने का ? एक मुन्धन दे दिया है । कुछ धाप मो छोड़ो ।

'यह भी किसी सखिब सत्तास की हैं। जपज है महाराज या कुछ और ।

'आप कितने सरस संजीतकार हो आचार्य अपने सरस बाँटाकाट नहीं हो ।

'महाराज, मेरे मुन्धनों ने खरी बात कहने और निस्पृह रहने की शिक्षा दी है ।

'अच्छा मैं बचन देता हूँ कि उत्साह सखिब नहीं छोड़ा । ये संजीत को पत्थरों में मूर्त करने की बात—सोचा करनेवा ।

'राज-राजिनियों की मूर्तियाँ और जगकी भारीही-धबरोही धनंकार चार्ने बनार कर, खोस कर, पत्थरों को खनोस किया जायगा क्या ?

'ममी कुछ नहीं कह सकता । कहा न कि धाप भी छोड़ते रहो । सातसा है कि उसको बैसकर जनमान भी किसी भीठ को वा उठे ।

बीछा पर किसी और राज को मूर्त करिये ।

'अच्छा, कुछ धाप । फिर बोझ सा विभाय करिये और काम को देखिये ।'

विजय ने कुछ सण बीछा बसाई । मानसिह को अच्छा नहीं लगा । विजय बजाकर बसा पवा । मानसिह ने एक बड़ी विभाय किया और काम के बिने मदन के बाहर निकल आया ।

[१२]

राई पाँच के निवासियों ने बाग की फसल काट ली। ज्वार घमी चढ़ी थी।

भटपट खलियान में बालों को सुखाया और कटकर बाबल माह बिने। पयाम को बाड़े के सिम सुरक्षित रख लिया। राज्य का सहना प्राया सन्धी पौष के गया। पुजारी ने अपना घर के लिया। किसानों ने सोचा बाहर के लुटेरों से बच बच यही बहुत है इनको देना तो भाग्य में ही लिखाकर बसे है। लुटेरे कहीं से न भा दूटें तो ज्वार में से दे-दिवाने के बाह भी खाने के लिये कुछ दिनों को हो जायगा। बाबलों से प्राया कम थी क्योंकि स्त्रियों के लिये कुछ कपड़ चाहिए व और कासे-पीतल के कुछ पहने—यदि एकाम सन्धा लीरी का भी ह्रास पड़ जाय तो क्या बात है।

पुरष बने हुये बाबलों को सेंटी के बीजारों और तीरों में पलटवाना चाहते थे। परन्तु उनकी बहुत ही कम बल सकी। लगे पीरों बगे हावों स्त्रियां कबतक और कैसे हर सकती है? विधि त्योहारों पर भी बिना कहीं और खुर्शों के पीर और हाव बाबलों में धाँसू ला देते हैं। यह बात पुरुषों के मन में बिली हुई थी। कहा 'ज्वारी की छसल पर पहने और कपड़े-असे से लिये जायेंगे। स्त्रियों ने हाम की साँठ भरकर हामी भरदी यह लटक बिने। पुरुषों को बाबल का अधिकार्थ भाग हटाकर कासे पीतल के कड़-बूड़े सिने पड़े। बाबलों के लिये बोड़े से कपड़े और कुछ कम्प्यूटी करके बोड़े बोड़े से लीर।

पाँच में घटल का भर कुछ हरा-हरा समझा जाता था क्योंकि तीनों स्वस्थ से परिग्रम करते थे और धिक्कार खेलते थे। हरे मरे घर में भी कड़े-बूड़े एक भी नहीं। बस ही कम। परन्तु यहाँ बस्त्रों और पहनों के मुकाबिले में लीरों को हारना नहीं पड़ा। कोई ऐसे जानवर हाव नहीं भवे थे जिनकी बाबलों से बस्त्रों और हथियारों को ले लिया जाता। खाने के लिये बोड़े से बाबल रख लिये गये ज्वार की छसल खाने ही वाली थी

फिर उहारी । इसलिये बाकी आबनों को हविबारों और बरसों की करीद के लिये उठा लिखा । साखी को चाँदी का एक छप्पा और निघी को मसे के बिये एक छोटी पतली नी ही सही हँसुनी की आवश्यकता प्रतीत हुई । छप्पा बोड़े में धा सकता था तीर बहुत आवश्यक थे । यह साखी की मान थी । मुझको तीर नहीं चाहिये एक हँसुनी बिना बसा बिसफुस सूना रहता है इसलिये मेरे भिन्न एक हँसुनी आनी ही चाहिये, यह तय्यार निघी का था ।

जितने तीर निघी के पास थे वे उसका पर्बाण्ड नहीं जान पड़ते थे । यह साखी को अपने कुछ तीर दिये रहती थी परन्तु साखी उनको अपना नहीं कह सकती थी । घटन उन तीरों को साखी को नहीं दितना सकता था । कुछ बरस दोनों को चाहिये थे । उनसे आबनों से इतना सब हो जाना चुकर मानुस होता था ।

घटन ने फुसलाने का प्रयत्न किया—

‘धरकी बार एक बड़ी साठा हूँ । दोनों उससे सम्वास करवा । पाछ से मार सकती हो और दूर से फक कर भी ।’

‘अच्छा तो मैं मके के बिये हँसुनी नहीं लूँगी मेरे बिये बरछी सा हो । निघी ने कहा ।

साखी बोधी, ‘एक बरछी मेरे लिये भी । मुझको चाँदी का छप्पा नहीं चाहिये । उहारी की पमल पर छप्पा से लूँगी । धमी बरछी और तीर ।’

‘आबनों को कौन लायवा जो रख लिये हूँ ? उनसे हम दोनों को दो दो एक-एक छपते भी मिल आयेंगे । निघी ने गुमनाम ।

‘फिर जाने के लिये क्या बनेवा ? घटन ने भुक्तता ॥ माघ पूजा ।

‘ज्मार में भुट्टे धा गये हूँ । पकन तक उनसे काय बलायें । निघी ने बतलाया ।

धुगनपत्नी

माजी ने उत्तर दिया, 'आइ पड़ने सया है, बंभल का बास तुम सया है, कुछ बालबर हुँने से मिल ही जायेंगे। उनमे काम बनयेया। नही में मछलियां घा पई हें। उनको भी देखो।

घटम ने समझ लिया कि उसकी नहीं बात सकेयी। बर्छी की बात को मुनवा कर पछताया। फिर भी उसन घासा नहीं छोड़ी। कहा 'बन्या तो तीर, कपड़े, लाला घीर हँसुनी रही। बरछी जल्हादी की कलस पर। बोड़े से बाबल रखने दो।

'नहीं। बर्छी बबभ्य जाये। निम्री बोली।

'बर्छी तो घानी ही चाहिये। माजी ने हठ किया।

घटम को मानना पड़ा। भोजन की प्राप्ति माय के मरोसे। बाबल लेकर बहु ज्वालिमर बला गया। पुवादी भी उसके साथ गया।

वे दोनों तीर बगल लेकर जङ्गल में जा पहुँची। जहाँ माजी को बायस घरना पड़ा हुमा मिल गया या बही उन्होंने देखा पर्वों, बकरे बछिरियों बन्वों के साथ कुछ सोय घा छूरे हैं। किमकी।

निम्री ने कहा 'अ जाने कौन है ये सोय।'

माजी ने धनुमान किया — 'मूटरे नहीं हो मछलें। कोई मूमे मूके मे बाग पड़ै है। पास से चलकर देखें। डर गया है अपने पास भी तीर कमठे और छूरे हैं।

निम्री उत्तवित होकर बोली 'डर किस बात का? घरने पास है क्या जिसे यह छान से जायेंगे? जलो देखें।

वे धनक निम्र पहुँच गईं।

यह समझ पेटा घीर पिम्बी का बा। हल ही में पाया बा। सबके सब मोपड़े बगल की सुविध कर रहे य। इन दोनों को घरने पास पाया देखकर वे सब ध्यान के साथ देखने लगे। पत्ता घाय बड़ा। पिम्बी

उसके पीछे । निधी के विमलाण सौन्दर्य को देखकर पोंटा किसी के बतलाये हुये परिचय को मन में सोचने लगा । उन दोनों को तीर-कमानों से सजा हुआ देखकर उसकी धाधा की कोई ठेस नहीं लगी ।

पिस्सी बोली, 'क्या तुम दोनों इसी पाँव की हो ?

उन्होंने हमी का सिर हिलाया ।

पाँव पास हो ई क्या ? पोंटा ने पूछा ।

साक्षी ने दूरी बतसाई ।

पिस्सी घाते बढ़ धाई । सुन्दर बोली पहने बी धीर बढ़िया पैजामा—स्वाभा मटक के टंकों की देन । परन्तु घोबनी नहीं बी उसके सरीर पर ।

जैमसिया बचाकर धीर नाक के मध को हिबाकर उसने कहा 'घाबो न इबर घाबो । बन्दरों का समाधा दिखलायेंगे मर्गों के माटक रस्ते पर डोलकी बचाते हुये माध । कुछ इनाम बोली ? क्या बोली ?

निधी ने घान्त निस्संकीच भाव से कहा 'हमारे पास देने के लिये कुछ नहीं है । हमारा पाँव बहुत बरीब है ।

एक घबेड़ बटिगी या नई ।

बोली 'धरी मे सो हम सरीली बरीब है इनसे क्या इनाम लेना । इनको बीसे ही घपने सब खेल उमासे दिखलायेंगे । घाबो बेटी इबर घाबो हमारे पास अच्छे बड़े पके सीताफल हैं । बड़े पीठे हैं ।

निधी धीर साक्षी ने एक दूसरे के प्रति देखा ।

पिस्सी तुरन्त कुलाघों जाने लगी । वे दोनों रुधि धीर घबम्म के साथ घबके सरीर की लीचों-मचकों को निरखने लगीं ।

ह्रीठ को साधकर पिस्सी इन दोनों के पास या लड़ी हुई ।

उसने बड़े निहोरे के साथ कहा 'घाभी इबर घाबो बहिन हम बन्दरों के खेल दिखलायेंगे ।

मृगनयनी

पेछा बोमा 'आकाश में रखे पर नाचते हुए कमी देखा है तुमने किसी को ?'

नाकी पिस्सी के घरीर भी बनावट को परत रही थी। किसी ने कहा 'कमी नहीं देखा।

'कमी सुना ?

'न कमी सुना।

'तो तो पायो। यमी दिखाता हूँ। हम हारे बके तो हैं पर तुम का ये खेल और बाहु-टोने बिलसना हमको बहुत पण्डा लगेगा।

'बेल देखो और सीताफल खायो बाघो बेंटी इबर। घबेड़ मटिनी ने घाघड़ किया। पिस्सी को मामूम हो गया कि दोनों उसकी कुसाबों के घारबय से जर गई है परन्तु उनके तीर कमठों और बयल के करों को देखकर उसके मन में कुछ ग्लानि हुई।

उसने पूछा, 'ये तीर कमठे काहे के सिबे बांधे ह ?

नाकी ने उत्तर दिया 'बिकार बोलने का रही थीं हम दोनों, इबर-गुम लोगों को देखकर बली घाई'।

बिकार बजती हो इस घने-जयावने जङ्गल में ! कौन सी बिड़िया मारती हो तीरों से ? बिड़ियों को तो हम लोग मुकल से ही मार निराते हैं। पिस्सी ने कहा।

किसी मुस्कराती हुई बोली, बिड़ियों को हम शोब डैमनियों के कंझों से मार लेते हैं। हमारी नाकी ने एक ही तीर से घरने में से को खेव डाला था।

'इमका नाम नाकी है। और गुम्हार बेंटी ? पोन्ग ने प्रश्न किया।

नाकी ने बतलाया 'इन्होंने बड़ी-बड़ी लीसों बांके बनेसे मुपर एक एक तीर से हो लिटा दिये हैं। इमको किसी कहते हैं पर घसनी नाम मृगनयनी है।

पेटा ने साधा बीता मुना बा बँधी ही है । दूसरी भी उन्नीम बीस ही बँडेयी ।

मटों का समूह अपने निवास के लिये सफाईयों का बरा बना रहा था । सभी सफूरा था । वे दोनों समूरे घेरे के भीतर हो गई ।

अवेड़ मटिनी एक टोकनी में से दो बड़े-बड़े बकें सीताफल से घाई । निभी ने छेने से माँही कर बी ।

बीसी हम कुछ धिक्कार मारकर से घावें थीर तुमको हैं तब हम भी तुम से कुछ ल सक्ती हैं । बोंही सेंटवैत किसी का कुछ से लेना हमारे कुल की रीति नहीं है ।

अवेड़ मटिनी ने सावह किया 'धरी तुम दोनों महलों में रहने लावक हो । बड़े-बड़े पतझों पर धारम करने बोप ।। लीकिया-बादियां तुम्हारी हाजिरी में बनी रहें ।।। हुकुम करो थीर हम उतको पामें । सीताफल तुम्हारे ऊपर लोछावर है । बैलो तो, ऐसी है बैसे बुलाव थीर कमल क फूल से बनी हो बगकी देह । किसी राधा के साथ होना तुम्हारा ब्याह तब कभी कभी हमारी थीर सीताफलों की दाद करना मूलना नहीं । लिक्कार मारकर बीसी तब हम लोग के लेंगे पर इस समय हमारी यह भेंट ता कबूल करलो रानी ।

निभी को यह भाषा बुरी लगी सासी को अन्धी ।

सासी ने कहा कि लो निभी के लो । धरी रिल मर पड़ा है । कोई न कोई धिक्कार जवन में मिलेगा सो इनकी ब्याव समेत चुका देंगी ।

मटों क बावह के पीछे किसी बिषय समिप्राय को न बैलकर निभी ने एक सीताफल से लिया । दूसरा सासी ने । जब तक उन दोनों ने सीताफल समाप्त किये । पेटा ने एक टोकनी में से सम्रा रस्ता निकला । दो बुझाकार नोकदार बाँछों से एक ओर थीर बैसे ही दो बाँछों से दूसरी ओर बस रस्ते को बाँधकर राधा थीर कड़ा कर लिया । अवेड़ मटिनी के

मृगनयनी

संकेत पर पिस्सी हो बड़े-बड़े सीताफन घीर लाई। उन दोनों ने लाने से इनकार किया परन्तु पिस्सी घीर घबेड़ नटिनी के लचक-लचककर किये हुये मागह को बे न ठुकरा सकी। उन्होंने इन फसों का जाना समाप्त नहीं कर पाया था कि गले में डोस बांधकर पोटा अपने साधियों की सहायता से रस्ते पर पहुँच गया। चलने लगा।

ने दोनों धारचर्य के साथ उसकी क्रिया को देखने लगीं। पिस्सी मचम-मचमकर लचक-लचक कर माचने घीर गल गयी। पोटा कभी घीरे भीरे कभी झुठपति के साथ रस्स पर डगर से डगर घीर डगर से डगर चलने लगा। पिस्सी के गायन घीर नृत्य का साथ देन क निवे बह नर्वन में पड़ी हुई डोसकी को भी बजाता जाता था।

निग्री का धारचर्य शीघ्र समाप्त हो गया। कुछ क्षण उसको पिस्सी का पाता माया परन्तु कुछ ही क्षण। वह अपने मन को कारख नहीं समझ सकी थी परन्तु उसको पिस्सी के मायन में बेसुरापन घीर घ्रापन प्रतीत हो रहा था घीर नृत्य में बहुत भौंटापन। क्या स्निग्ध इतनी निमज्ज थी हा सकती है? उसके मन में स्नामि के साथ बार-बार प्रस्न उठ रहा था।

ताकी को उसके गायन घीर नृत्य में कुछ कुरस या नीरस नहीं लग रहा था। उसका ध्यान पोटा के संतुमन घीर विसरख सामन पर मुग्न हो रहा था।

उसके मन में उठा, क्या मैं ऐसा कर सकती हूँ? क्यों नहीं कर सकती? इन मजिनी सपित्री कुजार्ने चाहे न के पाऊँ, परन्तु इस नट के समान रस्से पर तो चल फिर लूँगी। घबराव चल फिर लूँगी। बेहू को साबने घीर साँस को सँभालने ही का तो काम है। सीलूँगी। भर में रस्ता है ही। जपन से बाँस काट साँझी। यात्र ही धुरे से चार बाँस काटूँगी घीर चर लीटते ही घम्यास कहेगी। यदि डिंकार मिलता रहा तो मर्तों को दिया कहेगी घीर उनस इस विद्या को सीख कर हो लूँगी।

नट प्रदर्शन को समाप्त करके रस्ते से मौन से उठर भागा। उसने पूछा 'बेटी कैसा लगा ?'

निम्नी ने कैमल सिर दिखाया। भाबी ने सरसाह के साथ कहा 'बहुत अच्छा लगा। कम तक रहोने तुम सब यहाँ ?'

'कुछ ठीक नहीं अभी तो घावें ही हैं। नदी का सहाय है। हमारे जानवरों के खरने के लिये पास यहाँ बहुत है। पास पास कई गाँव हैं। है वो छोटा ही पर अपने खेल समाने बिचभावे रहेंगे और पेट पालते रहेंगे। आसिपर भी दूर नहीं है। कभी वहाँ भी खेल दिखलाने जायेंगे पर अभी तो यहीं बड़े हैं। पोटा ने कहा।

पिस्ती बोली 'तुम आया करो तुमको रोज कोई न कोई नया खेल दिखलाया करेंगे। अभी दिखलाया ही गया और कितना है। अनभिन्न समाने हैं हमारे पास। तुम्हारे पाँव में भी आयेगा हम।

निम्नी ने हतोत्साहित किया 'पाँव में समाने के बच्चे कुछ नहीं दिखेगा। बहुत मरीजी छाई है।

अबेड नटिनी ने सरसाह प्रकट किया 'बेटी हम सोच बहुत लगाता सते हैं। एक गाँव में कुछ न सही। तुम्हारे महारे यहाँ अज्ञान में दिन काटेंगे यही क्या कम है ? आया करो मला। कसम है आया करो बड़ी बोलों। और देखो धिक्कर क्यों खेलती हो ? यह तो सबों का काम है। अज्ञान में खेर भानू/होने। जाई जाह और काटे हैं। तुम्हारे कंधों पर तो छुनों की पालाये और कमर में मोतियों की करबीनी होनी चाहिये। बिना तीर कमठों के ॥ आया करो। बीटी बहुत भली लपोपी।

पिस्ती ने अपने बाल पकड़ा कर बाँध निचकाई और मुस्कराई। भाबी को वह उपहास-जनक कूड़कपन लाग पड़ा। आदि और धोम के कारण निम्नी का चेहरा समतला गया।

निन्नी ने कहा 'अब हम लोग सिकार सेजने जा रही हूँ। कुछ मिला गया तो तुमको भी देंगी।

बोटा ने अनुरोध किया, 'हम लोग भी तीर चलाना जानते हैं। सब में से सो हम में से दो एक को, मशव मिलेगी। दो से तीन और तीस से चार बड़े।

साजी हाथी भरने वाली थी। निन्नी ने तुरन्त निवेदन किया 'सिकार में जहाँ दो से तीन हुए कि सिकार हुई चौपट। हम लोग किसी को साथ नहीं लेती। यहाँ तक कि ये अपने माई को भी साथ नहीं लेती।

कहाँ है तुम्हारे माई ?

'मर गये हैं घाब ही।

अब तक लौटें ?

'चार पाँच दिन में या आठवें।

बबेड़ निन्नी ने कहा 'अच्छा कोई बात नहीं। तुम दोनों मकेली हो वही बाधो पर सिकार मिला जाय तो हम लोगों को न भूख जाना। हमारे पास बहुत बड़िया आगल और मालवे का गुद् है। हम तुमको देंगे।

निन्नी ने पूछा 'तुम लोग कहाँ से जा रहे हो ?

उसने उत्तर दिया 'दूर मालवे के एक जंगल में। हम बरीबों का कोई घर नहीं होता। जिस जंगल में डेरा डाल लिया वहीं हमारा घर बन जाता है।

लासी को पिन्नी के बरतों की जमक-जमक और बहुमुख्यता पर आश्चर्य हो उठा था। ये लोग अपने कर्तों से बहुत कमा लेते होंगे सभी शक बाद इतने अच्छे कपड़े होंगे।

निन्नी बोली, 'तुम्हारे चार सीताफल हम लोग का हैं—

बबेड़ निन्नी ने टोका 'अच्छा लगे न ? हमारे पास और बहुत हैं। जंगल में से तोड़ते-बीजते लाये हैं।

मित्रो कहती गई,—संतोष तुम्हारा कुछ भी नहीं लेगी। बाग़र
बार कर बैठी तभी तुमसे फल बाग़स घीर मुड़ लेगी।

मित्रो लाली को लेकर धैर्य न एक कोने में चली गई।

मटों का सन्तोष घीर हर्ष फट पड़ने को हुआ। घबरेल गन्गिनी ने
हाठ पर उमरी रखकर धिक्क कर दिया।

पिस्ती बोली 'तुमको घीर नाच बाग़ों को बाहु टोने के करतब'
बिलसायो।

अचेंदित न कहा बीरे बीरे, सबका सब हकट्टा नहीं। बड़ी माल
बाग़ा के भाई को भा जाने दो।

पिस्ती ने बतलाया—'नाम उसका सुगनयनी है मूम यह क्या ?

'कच्ची नोलिया नहीं खेती हूँ यह साटी बिम्बनी। तू छोकरी ही
है घनी तू मने ही मूम जाइयो। अचेंद गन्गिनी ने मर्तवा की।

'नहीं मूर्खनी पिस्ती ने भावसाधन दिया।

'यहां न मोनों ने जो कपड़े कमी बेले गुने न होंगे नू उनको मयनी
के भाई के नामने पहिनियो। घीर बेस उसके सामने झूँट डालियो
तभी बतौकरन कर पावैयी। ऐसी ही धमर्गनी कड़ी हो बायनी उसके
सामने तो कही यह बिचक न जाने।

पिस्ती ने कुछ अकड़ के साथ बिबाह किया। केकिन तुमने बहुत
दिन तुमने बच बतलाया था घीर मैंने देखा भी है कि मनों को इसी तरह
कमरा घासानी के साथ सुमाया पा सकता है।

अचेंदित ने कहा कुछ छिपाव मुकाब करने से बायमी का मन
बड़ता है। नक में उसको सुगान के लिये ऐसा ही कर फिर बीसा ठीक
दिखे बीसा करना। किसी तरह भी उसके भाई को—। उसने बाक्य
पूरा नहीं किया। बाग़ को एक हमकी अगली से मजोरन समझा दिया।
पिस्ती अपन हठ पर अकड़ बाग़ नहीं।

पोटा ने बरस करने स्वर में धर्मेजिन का समर्पन किया 'समस्त के नाम करना विस्मयी ! नायकिन ठीक कह रही हैं ।

विस्मयी ने तुरन्त आज्ञाकारिता का भाव ग्रहण किया । वे सब धपन काम में लग बये । चौथा पहर नहीं जाने पाया कि उन्होंने मक्कड़ों का मजबूत बेरा बना लिया । उसका भीतर भोपड़े लड़े कर लिये और धपन जानवरों तथा सामान के लिये ठीर कर लिया ।

एक बड़ी पीछे निघ्री और लागा या गई । दोनों एक-एक सुप्तर को टाँसे थीं । दोनों छोटे से निघ्री बासा कुछ बड़ा था । कमाल और तरकस कंधों पर बाँधे पिंकार के जून से भीनी हुई गटों के पास या बड़ी हुई । वे सब के सब बाड़े को खोलकर बाहर धापये । पोटा बातकित हुमा और धर्मेजिन भी कुछ दिन गई । विस्मयी ने उनके कप से साकार भीमता देखी ।

उन दोनों ने पिंकार को जगल की बेलों से बाँध रक्खा था । लागी के जानवर को निघ्री ने खोलकर नीचे रक्खा दिया । धपना बाँधे रहीं ।

गटों से उसने कहा 'यह तुम्हारे लिये है । खाते हो ? इनको ?

गटों ने हर्ष प्रकट किया । उन लोभों से बड़े के भीतर बसने योग्य चीटाऊन खाने के लिये प्रार्थना की ।

निघ्री बोली, 'चीटाऊन बहुत खा लिये हैं ! फिर कभी देंगे । इससे बरसे में बोझ सा बाक्य और मुँह दोय ? तुमने कहा था ।

धर्मेजिन और विस्मयी के मूँह से एक साथ निकला, 'बकुर ।

पोटा ने कहा, 'माना नहीं बहुत । भीतर बाघो न ।

बाघी बोली 'समय कम है । नदी में पानी पीते हुये पर पहुँचना है । दोनों की उत्तार करनी है ।

धर्मेजिन और पोटा बड़े के भीतर बौट गय और छः सेर बाक्य तथा एक मेमी मुँह की न धापे ।

[१६]

हाथ मूँह दोनों धीर गहाने के उपरान्त साखी ने वर में वार सक-
नियी हुई। उसको छानने के बाद एक रस्सा के आई।

नित्री ने कहा उस वर में जो किया जा देखती हूँ वे भी कर
सकती हूँ या नहीं।

‘जाना नहीं बनाया है ? कब बनायोबी ?

तुम बता दो मेरी पत्नी सी नित्री।

‘आ सोपी मेरे हाथ का बनाया हुआ ?

आज नहीं तो किसी दिन जाना ही है।

‘तो मुझसे मनब कहो एक बार ही कह दो।

‘हूँ—हाँ। बड़ी बीसी हो।

‘एक बार कहो तो रोज जाना बना दिया करेबी।

‘बिसमें म निकम्मी हो जाऊँ धीर तुम मुझसे सड़ा करो।

‘अच्छा आज बना दूँगी फिर तुम बना दिया करो। पर एक बार
कह दो।

‘मनब बी बना दो जाना।

‘पत्नी बी भीबी।

वे दोनों एक दूसरे म लिपट कर हँसती रहीं।

नित्री जाना बनाने लगी। साखी न न के रस्से को तनाव का
धनुकरण किया। लकड़ियों को नाच कर कस लिया। धम्यास करने
लगी धीर वार वार निरने लगी। रस्सा खीला पड़ गया तो धनुको
फिर से कस लिया। जब तक नित्री ने जाना पकाया वह उस धम्यास
में सबन के साथ उलझी रही। धनु में वह रस्से पर कुछ शर्यों के धिरे
सबने लगी। एक बार वार पाँच द्य उस पर लगी बी। हर्ष के मारे
पूत गई। होकर नित्री के पास पहुँची।

होफ़्ती हुई थी होती में एक धठ्ठारे में रस्ते पर चलने लगीं।
ये भी कह सकती कि आकाश में चल सकती हूँ।

निधी ने बघाई थी — 'हाँ हाँ क्या कहना है। बड़ा धमूँडा काम है
न ? मेने बाबल पकाय है। अपने ता बहुत मोटे व जिम्मे भीया ले गये
ह। ये बहुत बन्ध ह। मुझ भी है बाबल तो ! भीया जब धायेंगे तब तो
पकृत ही करेंगे। माघो मुझ बाबल की बघाई थी।

दोनों ने उस रात साथ बैठकर एक ही बर्तन में खाना खाया। मचाल
पर पहुँचकर लाठी केर तक छोड़ते छोड़ते चो गई। जब सबेरा हो और
नटों के डेरों पर पहुँचूँ निधी को भी साथ ले जाऊँगी डेरों को किसी
बरबाहे को सौंप दूँगी। निधी ज्वार की रखवाली के लिये जावती रही।
जब उसको नींद भाई तब उसने लाठी को जपा दिया।

सबेरे हाव मुँह मोने के बाद डेरों का प्रबन्ध करके और कुछ बासी
खा-पीकर नटों के डेरे पर पहुँची। तीर कमठे और छुरे बिसे ही थीं।

नटों ने बहुत घाब-मघत की। अघड़िन और पिन्सी ने पाँचदे से
बिछा दिये।

लाठी ने रस्ते का खेल देखने की बाँछा प्रकट की। नट ने बाँछों को
गुलाकार नाड़कर रस्ते को कसकर तान लिया। दोलकी पले में बाँधकर
रस्ते पर पहुँच गया। पिन्सी एक बहुत रंग-बिरंगी बड़िया छोड़नी छोड़
कर भा गई। पौटा रस्ते पर चलने फिरने लगा। पिन्सी हाव माव के
साथ नाचने-गाने लगी।

निधी का मन उस छोड़नी और रस्ते पर के नाच और हासकी की
बनस्पति से उकठा गया। लाठी का मन उस छोड़नी और नट के आकाश
मूरव में बैठ बैठ जाता था। परन्तु उसने अपने मनको एसाव करके नट
के आकाश नृत्य की लीख पर प्रविष्ट लगाया। नट न रस्ते को खोर के
साथ इधर-उधर दिलाते-दुलाते दोलकी बजाते हुये चलता धारम्य किया।
लाठी प्रथम में दूबने लगी।

निम्नी ने मन में कहा 'इत काम के सिये बहुत धन्यात चाहिये । पर सीख लेने पर इससे लाभ क्या होगा ? यदि सुपर का भेंते को बर्बाद से बचाना मेने सीख लिया तो उसके पर इस तरह भ्रूणने से नहीं धन्या रहेगा ।'

नट खेल को समाप्त करके चतर भाया ।

लाखी के पंडु से यकायक निकला क्या मैं भी सीख सकती हूँ इस काम को ?

'खर' सब नट-नटियों ने एक साथ कहा ।

निम्नी ने देखा कम—बितने नट बेंडे में से उनमें से कुछ नहीं हैं । जिहासा नहीं हुई । सोचा अपने किसी काम से कहीं बड़े बने होने ।

पोटा बोला 'बहुत बस्ती सीख लोपो । तुम्हारी देह बहुत खरेरी है । कुछ ही दिन में सिखला पूना । साथ से ही धुक कर दो ।

लाखी ने निम्नी की तरफ देखा ।

निम्नी ने कहा 'आज एक धरने की धारने की बात सीख रही हूँ । यदि बाहर हाथ लग गया तो धीर भी बण्छा । धण्छी बात धण्छे मोल बिक जायगी ।

पिस्ती बोली 'अभी तो दिन भर पड़ा है धाखी अब तक कुछ बड़े बवरों की बातें सुनाई ।

लाखी सहमत हो गई । निम्नी को भी मानना पड़ा । नट एक बघड़ छिमत बसे । स्त्रियाँ एक स्वाग पर इकट्ठी रह गई । निम्नी एक झोली के भीतर उन दोनों को ले गई । अन्य नटनियाँ बाहर बैठ गई ।

निम्नी ने एक पिटारी में से कुछ बहुमूल्य थोड़नियाँ निकालीं । एक एक करके सिखलाने लगी धीर सराहना करने लगी । उन दोनों ने इस तरह के कपडे कमी नहीं देखे थे । दोनों बाह के साथ देखने-टोलने धीर सराहना को सुनने लगी ।

मृगनयनी

निन्ही ने सोचा 'इस कपड़ों से हमारा तो कोई काम कभी चलना नहीं है। इनको पहिनकर न तो रसोई बनाई जा सकती है, न धोरो घोर कती का काम किया जा सकता है और न धिंकार खनी जा सकती है। एक कांटा बीचा या बास उसझी कि फटकर फुर हो जायगी। पहिनकर यदि यार्द के सामने गई तो कहेंगे मटिनी है। राम॥ राम॥ राम॥ किन्तनी साज-हीन है यह पिस्सी ! ! ! !

'बहुत राम होय इनके ? साखी ने देखते-देखते प्रश्न किया।

'जरी हां बहुत। बड़ी घनमोब है। पिस्सी ने कहा।

'तुमको कैसे मिय यार्द ? किसी ने इनाम में दी है क्या ?

'धीर क्या ? जैसे हम जोम जोम घोड़े ही के सपने हैं। ये कपड़ तो बड़े-बड़े नवरों में ही मिलते हैं।

'तुमको कहाँ मिले य ?

'मांढू में। रानियों के पहिनने के कपड़े हैं ये। यानी रानियाँ या हमारी तुम्हारी सरीखी यन बाली ही पहिन सकती हैं इनको। मांढू के राजा को जब दिखलाया। उन्होंने प्रसन्न होकर इनाम दे दिया।

पसेफिन ने बाहर से ही रज्ज बड़ाया—'घरी बेंटी राजा क्या है मानो इन्द्र है। बहुत सोना चांदी हीरे जवाहिर, मोती हैं उसके पास। बड़े-बड़े महल। वह इसके खेनों को देपकर मट्टू हो गया था। पिस्सी नसरे के साथ हँस पड़ी। साखी ने भी साथ दिया। निन्ही भी हँसना चाहती थी। नएलु भीतर के किसी झटके में हँसी को होठों पर सीस मूकान के पाकार में संकुचित कर दिया।

पिस्सी बोधी 'मेरे मन में तुम दोनों बहनों के लिये इतना प्यार पसीब पठा है, न जाने क्यों कि चाहती हूँ एक-एक दोनों के बापों घोर पहिनी। मैं तो लेन में नाचने के समय कभी-कभी ही पहिनती हूँ सो बहुत सी रक्की है। ये तो एक-एक।

उन दोनों को यह नहीं पता। निम्नी को विशेष पड़ा। नाची उस घाफ़ास मृत्यु को सीसना चाहती थी। उनमें से किसी को भी स्पष्ट नहीं करना चाहती थी।

मुस्कराकर बोली, 'यही नहीं भेगी हम। जब कुछ है तो बोम्य हो जायेगी उस सेवी। यही तो हमारे बिये ये काम की नहीं है।

अबेकिन ने पूछा तुम्हारा क्या हो गया है ?

नाची निम्नी ने बिना संकोच के उत्तर दिया।

उसने दूसरा प्रश्न किया 'कहीं सबाई हो गई है ?

नाची को संकोच हुआ। निम्नी ने बुढ़ता के साथ उसके प्रश्न पर प्रश्न किया 'तुम्हको इससे क्या ?

नाची ने साधने का प्रयत्न किया — 'नहीं हुई है। निम्नी इन्होंने जैसे ही कुछ कोई बात नहीं।

अबेकिन सहारा पाकर बोली 'यही है। देखो तो तुम दोनों कितनी क्लबली और मोटी पाटी हो। जैसे जंगल की रानी हो। तुम्हारी सपाईं होवी किसी बड़े राजा के साथ। मे हाथ देखकर बतला सकती हूँ। जो ब्योतिषी जो बात नहीं बतला सकत यह हमसोच बतला सकते हैं। जो यत्न-यत्न कोई नहीं जानता है वह हम जानते ह। जंगल की जिन बड़ी बृष्टियों को राजधानियों के बड़े-बड़े बीच नहीं जानते उनको हम सोच पहिचानते हैं। काके नामराज से हम कटना से तो बड़ी के जोर से और मन्त्र की मार से पत्तों में बिप को धूर कर दें।

निम्नी नहीं सहमी परन्तु उत्तर नहीं दे सकी। मुस्कराकर छू गई। नाची ने अपने हाथ की गवैसी पसार दी।

अबेकिन कुछ देर तक रेखाओं को देखती रही। उसने परिखान मुबाबा, 'तुम किसी बड़े किकेदार को ब्याही जाओवी किसी बड़े ठिकाने दार को।

भुगनयनी

वे दोनों हँस पड़ीं। धर्मेद्विन को चरा भी संकोच नहीं हुआ। बोली देख केना बहुत बन्दी मेरी बात सचबी होकर रहेयी। तुम दितनायो भुगनयनी अपना हाथ।

मिस्री संकोच कर रही थी। बाकी ने पकड़ कर उसका हाथ बड़ा दिया। धर्मेद्विन ने ध्यान के साथ देखा।

कहा 'तुम जो बेटी बड़ा भारी राज्य भाग्य में लिखाकर बनी हो। राजा की नहीं किसी बड़े महाराज की रानी बनोगी। फूट निकले तो मेरी बीम काटकर फक देना। धर्मेद्विन ने साथ ही अपनी बीम बाहर निकाल कर नीतर करली। बीम पर काफ़ी पैस बसा था।

वे दोनों उस कौशुक को देखकर हँस पड़ीं।

माकी ने हँसते-हँसते पूछा 'कहाँ का राज्य मिलेगा इनको ? धर्मेद्विन ने उत्तर दिया 'बेटी बहुत से राज्य प्राप्तपाव है। विलकुल ठीक इसी धड़ी तो नहीं बतला सकती। परन्तु देखतायों को बधि बढ़ाकर ध्यान करते करते कुछ दिन बाद यह भी बतलाऊँगी। जैसे देखो इसने राज्य तो प्राप्त-पाव ही है—ज्वाभियर, कालपी, मालवा मेवाड़ घोर न जाने कितने। हम लोग सब देशों में भूमा करते हैं। बहुतेरों का तो नाम भी बाद नहीं है।

राज्यों की मिस्री की लपेट में चलने मानवा को सावधानी के साथ रक्खा। वे दोनों नहीं समझ पाईं।

धर्मेद्विन बोली 'अब हम लोग अपना काम देखती हैं, तुम तीनों सब एक अपने मन की बातें कर लो।

'हम लोग भी राजकुमारी की तरह जाती हैं।' मिस्री ने कहा।

मिस्री ने रोका, 'बाह, बाह, थोड़ी देर ठहरी। धर्म तो बहुत दिन पढ़ा हुआ है।

धर्मेद्विन अन्य मिस्रियों को लेकर वहीं से चली गई।

मिस्री ने पूछा 'यह तुम्हारी बीम है ?

रिस्ती ने बतलाया 'यह हम लोगों की सब कुछ है। हमारे मोल की बलती है यह। इन्हीं का हुकुम चलता है।

'अभी मुस्लिमी ! जो रस्ते पर चलते हैं वह होवे मुस्लिमी ?

'आहुर बासों से नहीं बात करते हैं, पर हमारे भीतर हुकुम इन्हीं का चलता है। हमारी बात में बड़ी पुरानी रिश्तों की ही चलती है।

'तुम्हारी नील है वह ?'

'हमारे माँ हैं और रस्ते पर चलने वाले हमारे कपड़े हैं। हम सब एक ही कुटुम्ब के हैं।

'तुम्हारा ब्याह हो गया है ?

'अभी नहीं हुआ है। सवाई भी नहीं हुई हैं। तुम कराचोली अपना ब्याह और यह तुम्हारी बहिन ?

'बहिन नहीं है सखी है।

'कराचोली ब्याह ?'

'हिण्ट !'

'हिण्ट कैसे ? मैं कराचोली अपना ब्याह। तुम दोनों भी कराचोली बनानी के दिन है। यही तो समय खेतन-कपने और पाने-पीने का है।

'आली-बीबी भी ह और खेतनी-कपती भी है।

'अब यह सब कोश और कबा है, बिना राग-रज्जु पारस और केन के। हम लोग तो ऐसे बूढ़े हैं कि जैसे नायकिन माँ ने तुम्हारे हाथ देकर बतलाये हैं।

माखी बोली 'अभी तो हमको अपने पेट पालने हैं। अब के हमारे बड़े करेंगे यह काम। बहू-बान्धव से माँ पार्ये तब लगे बर्बाद करना।

निमी खड़ी हो गई। आली से कहा 'धैर हो रही है अभी अब। वह भी खड़ी हो गई।

मृगजयनी

मिली ने रोक रखने का प्रयत्न किया ।

माका बोली 'कल दिन मर रहेयी । म रस्ते का काम सीखूयी तुम इनको कष्टानियी मृताना ।

मिली ने जाते जाते कहा 'यदि कुछ शिकार मिल गया तो तुम्हारे डेरे पर होकर मारेंगी ।

वे दोनों बसी गई । छग्या तक मटों ने उनकी प्रतीक्षा की परन्तु वे नहीं आई । उनको बहुत मटकने पर भी कोई शिकार नहीं मिली थी । जंगल के छोले मार्ग से भर पहुँच गई ।

[१७]

घटन को ग्रासिमर नये घाट दिन के लगभग हो नये थे। दो दिन से निम्नी घीर साखी को कुछ चिन्ता रहने लगी थी। दिन में वे नटों के डेरे पर या ब्राजेट के सिने बज्जल में रहती थीं। संझा के पहले घर घाजाती थीं। डोरों की देखभाल की मोहन बनाया लाया और रात में ज्वार की रखाने के सिने बज्जल पर पहुँच जाती।

इन दिनों रस्ते पर चलने का साखी ने इतना धमकास कर दिया था कि पोंटा कट को हँसी घापी थी।

सुल्तान का नाम न छेकर पिस्सी और नायकिन ने माजबा की राजधानी बाँदू के महलों नगर, दुकाबों सम्पत्ति और तबक-भड़क की इन दोनों के मन पर बाक बिठवाने में कसर नहीं सबाई। इस बीच में निम्नी घीर साखी को बज्जल में कोई ऐसा बालकर नहीं मिलर जिसको लेकर नटों से वे कोई सामान लेतीं। नृपत में वे कुछ सेना नहीं चाहती थीं।

दोनों संझा के पहले ही उस दिन भी घर था नहीं। डोरों के बाँधने और चारे का प्रबन्ध कर रही थीं कि घटल घाजबा। वह हाथ में बर्छीं सिने या पीठ पर तरकस में बोहे के कुछ तीर। नये मोटे पहले सास रंग के कपड़े की छोटीसी पीटसी की दूसरी बर्छीं पर कन्ने से टाने था। भापी नरकन चौबदार नुतों पर नृत्य वीर धुके हुये बेहुरा नुसा तपा हुआ। धाँधों में प्रसन्नतापूर्ण मकतता बीसे किसी बड़े समायार को सुनाने के सिने ज्वर हो। बाँधन की एक तरफ छलने एक रस्ते को दो दो तकदियों के नुसाकारों परबेबा हुआ तपा जामा। साक्षर्य हुआ।

भाङ्गाव के स्वर में पुकार सबाई—कहाँ हो री ?

साखी ने कहा 'याई।'

निम्नी बोली 'नैबा।'

मृगनयनी

दोनों मुस्कराती हुई निकल आईं। घटन ने तपाक के हाथ हाथ वाली बर्छी को परी के बग बागन में गाड़ दिया और एक हाथ में कन्धे वाली पोटेसी को के लिया। दूसरे में दूसरी बर्छी को।

तने हुए रस्स की धार देखकर हँसते हुये कहा, 'बहु क्या खेल है ? खेल तो है ही'—निम्नी बोली बतलाऊँगी पहले बहु कहो कि अपने बिन नहीं खया दिये ?

'बहुत बिस्ता रही। लाची हूँ को नहीं खिया पा रही थी। घटन ने पैर पैसाये 'घरी बड़े-बड़े समाचार है। थोड़ी देर में गुमाऊँ। बोपहर का रक्खा है खाने को कुछ ? या सर्व्वेसत बतला दू ?'

घटन पाखी मारकर बैठ गया। बुप्पी साथ ली। निम्नी ने उसके हाथ से बर्छी छीन ली। माखी ने गड़ी हुई बर्छी को उखाड़ लिया। निम्नी ने धावेस खिया 'खेल लो लाची इनकी पीठ पर से तरकस, फिर में देखती हूँ इनकी पोटेसी को। इसी में है इनके बड़े-बड़े समाचार निम्नी कसक के मारे मोनी बाबा बनकर बैठ गये हैं।

मूठ-मूठ का विरोध करते हुये बटख बोला, 'पहले खाना ! पहले खाना !!! ठग तीर-तरकस और पोटेसी !!! धरेधरे, सब खीन खिया !!!! सब मूट खिया !!!!!

दो दोनों विरोध में दूबने पसराने लयीं। पोटेसी को मूटपट बोला उसमें एक मोटी माल मोटी धीर दो बोलियों के मोटी छोट के दुकड़े निकले। सन्हीं में बाँरी की एक पतली हँसुली धीर बाँरी के दो धन्ने। तरकस को माखी ने कन्धे पर चढ़ा खिया और बर्छी की हाथ में लिये बड़े बाब के साथ देखने लयीं। निम्नी ने अपने गले में हँसुली बाब की एक बाँरी को खीनली में बाब खिया और दूसरे को बाखी की खीनली में बाँरी दिया। धन्ना माखी की ब पली में बोबा बैठा परन्तु बहु धरनो बर्छी और मोड़े के तीरों पर, उस समय धमिक ध्यान दिये थी।

पोटा पुराना पिनब के घाव बोला —'हाँस में उसके ओबदीन का भावन धीरे दिठाई थी —'में अभी बिचभाठा हूँ । बाहे सारे काम पड़े हैं पर तुमको तमाया बिचभाठेया एक ही नहीं कई तमाये ।

पिस्ली एक बहुत छीमती रंग-बिरंगी धीरे बारीक धोइनी झोड़कर लाई । वह नायकिन के पीछे बढ़ी होगई । नायकिन ने परिचय दिया उस धड़की की कसरतों को देखो पहले की बख्खती हुई यँव को भी अपनी कुचाओं से भुलवा देयी । देखो इसने अपनी वेह को कैसे जमाया है ! कैसे सुन्दर बनाया है ! धीरे कैसे चलीगी है यह !

पिस्ली एक हलकी सी मोच लेकर नायकिन के पीछे से घाने भायी आई । वहीं से उसने बटन को अपने धड़की को चरु सा पड़का कर प्राथिक बिचलाया । फिर वर बूट को चरु सा बहाया एक करु के निव बिचबन जुमाई धीरे फिर भीचा कस्के उसकी ओर कनबियों देखने लगी । सुसज्जता की इस बनावन को बटन नहीं समझा । कुछ धनीखी सी लगी । परन्तु निमी धीरे लाखी के बात कारों तक बास हो गये । बटन ने उसकी देखा परन्तु प्राथ को जमा न सका । बूधरे मटों की धार देखने जवा जैसे कोई बकुआ हो परन्तु फिर से पिस्ली को देखने के निव इच्छा मयन ही गई ।

पोटा बोला 'मे रस्स को ठान लू । अभी खेस मुक होता है ।

नायकिन ने पिस्ली को चरु सा धीरे घाये करके कहा 'यह बहुत धरमाठी हूँ, पर कमानियों कुलीनों और रस्से पर नाच हान के समय अपनी कारीगरी में ऐसी मस्त हो जाती है कि अपने को बिलकुल भुल जाती है ।

वह सुन देखने के लिये बटन के मन में कुलबुली सी बच गई । पोटा रस्से को ठानने में लय गया । नायकिन ने पिस्ली को प्राथ का हथारा दिया ।

पिस्ती ने घोड़नी को बग और कन्वे पर सपेट भिजा बिजली की गति वाली धाँस की एक कोर घटस पर फेरी और कुत्तों के लपटों में भी । घटस घ्याम के साथ लसली मोर्चों मरोड़ों कृष्ण और देह की लपटों को देखता बना । उसने किसी भी नर-नारी में इतनी कुर्सी और देह की कमाई नहीं देखी थी ।

बैठे ही पोटा ने रस्ते को तागा और डोलकी गले में डालकर रस्ते पर बढ़ने को हुषा पिस्ती ने व्यायाम बन्द कर दिया और घोड़नी को खोलकर धोने लगी । उस समय भी उसने बिचकन और घटस की लपटों को ताग के झरोखे से घटस के सामने प्रस्तुत किया । पोटा ने रस्ते पर बिचकन पतियों से चलना धारम्भ किया और पिस्ती ने घसीम स्वच्छन्दता के साथ गृत्य । घटस का मन पोटा के काम पर अधिक रीकने लगा । पिस्ती ने और भी अधिक प्रयत्न के साथ घटस का व्याम आकृष्ट करने की चेष्टायें कीं । मित्री और साखी पोटा की गतियों को अधिक चाव से देख रही थीं । पोटा रस्ते को मूला सा बना कर, इधर से उधर भूमता रहा और पिस्ती के गृत्य पर डोलकी की साथ बैठा रहा ।

जब वह खेल को समाप्त करके रस्ते पर से उतरा था 'बोला' 'बेटी' 'साखी' तुम भी जोड़ा सा धम्यास करवो ।

साखी पहले लबाई पर फिर मित्री के कन्वे के सहारे रस्ते पर पहुँचकर बैठ गई और लपटों के लिये बोड़ी देर काँपती रही । बुढ़ता के साथ लड़ी हुई, कुछ खरा स्थिर रही । एक-दो डब लची तीन बिचकी और नीचे धा गिरी । पैर में कुछ लपक भाई परन्तु उसको हवाने के लिये हँसने लगी ।

पिस्ती खिलखिलाकर हँस पड़ी । घटस ने देखा । उसने हँसते हुये बोझता भूँट डालकर कटाक किया । साखी ने नहीं देखा परन्तु मित्री और घटस ने देख लिया । मित्री बोली 'अभी साखी खेल में लगी का धम्यास करेये ।'

‘बंगल तो नहीं है। कहाँ मारी-मारी फिरोनी? नायकिन ने कहा।
 मिथी ने घाबराह किया ‘धम्यास धम्यास करना है। पास के किसी
 बड़े खेत के पेड़ पर चढ़ेंगी। उसके बाएँ बहिरी भाई की देकर सिकार
 के बिंदे खस में निकल आवेंगी।

‘धम्या। नायकिन ने मान लिया।

वे दोनों छोड़ी दूर खेत के पेड़ पर वहीं जलाने का धम्यास करने
 लगीं। घंटन वहीं बैठा रहा।

नायकिन ने उससे कहा ‘इस सड़की का खेस तुमको कैसा लगा?

‘बहुत धम्या। बटन बोला।

पिस्ती इठमाती हुई ओपड़ी में भाव गई।

नायकिन ने बीरे से कहा ‘तुमको तो यह देखते ही चाहने
 लगी है।

‘हाँ हाँ—हूँ।

‘लेको न यह समझ गई मैं क्या कहना चाहती हूँ। इसबिने दुरास
 कर गई। फिरोनी बनकली है।

बटन को घाबी लगी ही पहले देखे हुये उसके निर्लज्ज प्रदर्शन का
 पूरा स्वरुप था। मुझको चाहती है। चाह कर क्या करेगी? ध्याह
 करेगी? धीरे माफ़ी? राम। राम॥ राम॥॥ उसने सोचा।

नायकिन से कुछ नहीं कहा। उस रिश्ता में रहने लगा जिसमें
 मिथी धीरे साधी जाकर वहीं जलाने का धम्यास कर रही थी।

नायकिन ने दूसरा पहलू पकड़ा। सज्जे से थोड़ा को अपने निकट
 बुला लिया। पिस्ती ओपड़ी के एक नुमे के पीछे लगी थी।

नायकिन ने कहा, ‘इसको देख-देखान्तरी का हाल सुनाओ तब तक
 वे दोनों भाई लगी हैं। माह, कालपी, मन्दावीर फिरने बड़े-बड़े धीरे
 बीरे तक जाके रहते हैं। तुमने कभी पहले देखे?’

भूगनपत्नी

घटस ने उत्तर दिया 'वे तो अपने नाँव और भास-भास के माँका को छोड़कर और कहीं कमी भी नहीं गया। अबकी ही बार स्वासियर गया था। और कुछ नहीं देखा।

पोटा ने देखे और घनदेखे नगरों की कहानी को महारा रंग-रंगकर सुनाया। घन में बोला 'हमारे साथ माँदू बच्चो तो देखना स्वासियर उसके सामने रसी बरबर भी नहीं बैठेगा।

'निम्नी बाकी को कहीं छोट जाईया ?

'साब कैसे बसना। बड़ी घन्की है। वे भी बिचारी देख-भुन रहीं कि बुनियाँ में साँक नहीं और राई नाँव से भी बहुत बड़ बड़कर कुछ है।'।

पिस्सी घूमे के पीछे से जाती।

नायकिम ने कहा 'बहु देखो खाँसी की बोली में कह रही है कि माँदू बच्चो। तुमको सभी तरह का कुछ मिलेगा हमारे साथ में।

घटस सिकुड़ गया।

पोटा बोला 'जब लड़कियों की पढ़ाई की थीरखाबी को देखकर माँदू का सुलतान बात उसे उँसकी दबावेगा और न जाने कितना इनाम न दे देगा।

'माँदू कितनी दूर है ? कहा होकर जाते है ?

'बहुत दूर नहीं है और बवान के लिये संसार का कोई भी कोना दूर नहीं होना चाहिये। जैसे एक रास्ता गरवर होकर है। यहाँ से बिना स्वासियर बने सीधे पहुँच सकते है। पन्नीसेक कोस होया बस।'।

'स्वासियर के राजा धिंकार बोलने या रहे है। वे हम लड़कियों की गिलावाबाजी देखेंगे। माँदू फिर कमी सही।'।

स्वासियर के राजा का नाम और उसके घाने का समाचार सुनकर नटों को हलकम्य हो आया।। पोटा ने चर्चा को टाला।

‘हमारे पास कुछ अनमोल साक्षियाँ हैं। इन सक्षियों को देना चाहते हैं।

‘राम कहाँ से आयेगी देने को ?

‘हम तो वैसे ही देना चाहते हैं।

‘वे नहीं लेगी संतर्पण नहीं लेगी।

‘हाँ हाँ जैसा मन बाली है महलों में रहने के लायक।

‘क्या ?’

‘महलब उनका ऐसा जैसा मन है वैसे महलों की रहने वाली रानियों का होता है।

‘हाँ तो तो है पर छोड़ों में रहने वाले लोग महलों को क्या जानें ?

‘हमारी इन्होंने को बहुत बड़ी उपोत्तिही है उन सक्षियों के हाथ की रक्षा में देखी है। इनका कहना है कि किसी राजा की रानियाँ बनेंगी।

‘धरे बाह ! ऐसा कभी हो सकता है ?

‘हो सकता है धीरे होगा। तुम बेलोने कुछ धीकड़ियों को ?’

‘मन्त्री बात है। यों ही बैठे-बैठे क्या करेंगे।

घटम का कुतूहल जागा। उसके सामने कई चुन्हरियाँ धा गईं। वह उनकी देखने लगा। वह इनमें से एक को भी साक्षी छोड़े तो कौन सी दियेगी वह ? उसने सोचा। कपड़ों को देखते-देखते उसकी धाँख बहुतस्य बहरी छोड़े हुए पिस्ती पर गई। उसने फिर धाँख बसाई। घटम की धाँख के सामने सुरंग जागी का बिज पिस्ती के साथ ही बिज गया। उसके मनमें आगि धाई।

‘पानी पी जाऊँ मरी मैं। घटम ने कहा। गटों का पानी वह नहीं पी सकता था। बठकर मरी की धार बना गया।

‘लेन सीर नायकिन की अनुकूल होने लगी।

भृगुनयनी

‘एसे काम होता नहीं दिखता ।

‘नित्नी पर हुना है वह कुछ ।

‘बस यही एक सहाय बीसता है ।

‘मोड़ से लोट पावे वे लोग तो कुछ और उपाय बतावें ।

‘साथ में कुछ के तो बावें ।

‘हां पहले कुछ टंके और और कुछ अच्छे सवार । घायल बहुरत
पड़ जाय ।

‘वह काम है बड़े बन्दे का । कहीं ग्वालियर का राजा अपने दसबन
के साथ न घा घमके ।

‘आ भी जाय तो हम लोगों के नपाव को कोई भी नहीं समझ
पावेगा ।

‘महनों की बात इस घादमी के सामने न की जाय । लड़कियों को
दिखानाये जायें और उनको फुसलाया जाय । लड़कियाँ प्रच्छ कपड़ों और
कीनती पहनों की सीकील होती हैं । उनके पीछे अपनी जान तक है
। प्रचेमे में समझावें तो घायल कहने में घा पावें । हम घादमी को
वहीं बचा रोग । और लड़कियों को लेकर चल देंगे ।

‘उरा कटिल जान पड़ता है । पर कुछ उन्नत-बुद्ध निकालेंगे । वे
‘बोनों मोड़ से लोट पावें तभी कुछ है हो सकेगा ।

एक बड़ी पीछे घन्स लोट पाया और उनके बाद लाखी और नित्री
भी आ गई । वे बोनों अपने सम्पात पर सम्पुष्ट थी ।

नित्री ने प्रपुम्न स्वर में कहा ‘मैया हम लोग बहुत नीम बर्बा
का बलाना तीन लैनी । तीर बलाने से यह कहीं सहन है ।

‘भेंकर भी बलाया ? उसने पूछा ।

लाखी ने उत्तर दिया, ‘हां, हाँ ।

मिसी बोधी 'मैंका तुम बहिन्याँ रख सो, हम बीनों छिकार खेबने
गती है । कोई बड़ा छिकार मिल गया तो उसके बदले में इन मोषों के
लाखी के लिये एक अच्छी चूल्हरी के सुपी ।

एक तुम्हारे धिये भी तो लेनी है । साखी ने कहा ।

उसी प्रकार की एक चूल्हरी घोड़े घटस ने बिस्ती को देखा । उसने
मुस्कान के साथ तुरन्त घटस पर चितवन बसाई । इस तरह की रंग
बिरंगी कुलहार, बारीक चूल्हरी घोड़े हुये साखी कौसी जयेंगी ? उसमें
से उसका रोम रोम छिकिया जाता इस नटिनी का दिखलाई पड़ रहा है ।
कौसी घाँवें बसाती है । बज्जों को कितना चढ़काती है ॥ नाचते समय
नितनी बेसर्ती दिखलाई भी इतने ॥ साखी इस प्रकार की चूल्हरी
बहिन कर क्या इसी नटिनी खरीदी नहीं लिखेगी ? क्या वह कुछ लिखेगी ?
और मिसी ? मेरी बहिन । इस तरह के कपड़े पहिने यह कौसी दिखलाई
पड़ेगी ? नटिनी ही न ? राम । राम ॥ राम ॥ उसके मन में
श्यामि की कोचनें छठी ।

उसने कहा 'घपने वहाँ ऐसे कपड़े नहीं पहिने जाते ।

नामकिन बोली 'घनिमां तो पहिनती है ।

घटस ने प्रतिवाद किया 'न मेन कनी देखा घीर न कह सकता हूँ
और न हम बीनों को राजा-रानी बनना है ।

तो भी एक की तो जर में रख ही लेंगे । धक्कर आज पर क्या
जा सकती है । मिसी ने साखी के अनिष्य में होने वाले गवाह का संकेत
किया ।

'देखा बापदा',—साखी ने कहा 'लेने तो दो लेने एक नहीं लौ
जायगी ।'

वे दोनों छिकार खेलने जंगल में भुस बई । घटस बहिन्याँ मिल हुये
बर बना घास ।

सन्ध्या के पहले नट-शिविर में मौ-दस दिन पहले बाहर नये नट धायये । घाटे ही उन्होंने साधवाणी के साथ अपनी रेंट में ॥ एक पोटली की और गर्ब के संकेत द्वारा प्रकट किया कि साथ में कुछ इससे जो अधिक प्रयत्न साधन माने हैं ।

मिस्त्री और साखी बंगल में पूर्ववत् भटककर रीते हाथ भर धायई ।

[१२]

दूसरे दिन मिची घीर लाखी कहीं नहीं गई। घर का काम किया, बच्चियों का धम्यास बीर—लाखी ने—रस्ते पर चलने का बड़ा प्रयत्न। बटव अपने दोरों के साथ बना गया।

रात को उन दोनों ने एक निश्चय किया।

मिची बोली, 'कई दिन से जंगल में कुछ भी नहीं मिल रहा है। जानवरों के साथ तो मिलते हैं, पर बिचताई जगकी कुछ तक नहीं पड़ती। हमारे के काम-काज से निवटकर बस्ती जंगल में कुछ बनें बीर एकत्र कोस माने बड़ बावें। ऐसी धिक्कर कैसे नहीं मिलता। जानवर नलों के डेरे घीर हम सोमों के फिर-फिर वहीं घूमने के कारण कुछ दूर हट गये हैं।

लाखी ने समर्थन किया, 'बिचकुल ठीक। साथ में एक बच्ची भी के लो तो कैसा रहे ?

मित्री ने कहा 'मेरे के नुनी अपनी बच्ची। पीठ पर बोध सुंगी। श्यामी-श्यामा में बड़बल जान पड़ी तो हाथ में ले लूंगी। सबसर माने पर पहले तुम तीर बना देना फिर मैं देखूंगी।

'ठीक है। लाखी ने मानवस्त किया।

सबरे का काम-काज करके घीर कुलुआ-पीकर वे दोनों जङ्गल की ओर चले गईं। रात से थोड़ी दूर निकल जाने पर जगको पोटा मिला।

बट ने कहा 'तुम दोनों को रात में जानवरों की कोई बोली सुनाई गयी ?

'जीन है जानवरों की ?

'घरनों की डेंडकार और घुमरों की हुरे-हुरे ?

'नहीं तो।

‘भोऊ ! वही तो बतलाने को आया हूँ । हमारे डरे से कुछ दूर उबर पीछ की तरफ़ न जाने किन्तुने जानकर ऊबम कछां रहे हैं । धापर धापर में बट रहे नै ।

‘या माहुर ने दिखाई बी हो । कई दिन से जतों के भी पास जानकर नहीं धाये । तुम्हारे डरे से कितनी दूर जान पड़ते थे नै ?

बट ने अपने धनकस और जानवरों की दिशा को बतलाया । वे दोनों उठी दिशा में उत्साह के साथ चली गईं ।

बट अपने डरे की तरफ़ बट गया ।

निधो और साखी जानवरों के बिन्हों की उलाह में दूर निकल गईं ।

बहुत से साँव मिलने शुरू हुये । साँव जयस के बूँटे और साँव स्वानों में दिखावाई पड़ जाते थे परन्तु पचरीली या पास और लकड़ा बाली भूमि में बहुत कम । निधान एक-दूसरे पर बट हुय से मामूम पड़ रहे थे और साँव समझ में नहीं आरहे थे कि किस जानवर के हैं । कभी अनुमान करती थी कि बरनों के हैं कभी भ्रम हो जाता था कि बोंड़ों के हैं । बोंड़ों के ! बोंड़े यहाँ कहाँ से धाये ? उन्होंने अपने भ्रम का खरन करना कहा । दोनों एक झाड़ी की ओट में लड़ी हो गईं । खस फूस करने लगी ।

‘मुँवर और मैंसे के लुर तो बिरै होते हैं, वे बोंड़ों के साँव जान पड़ते हैं । निधो बोली ।

साखी ने कहा ‘बोंड़ों के ही हो सकते हैं परन्तु यहाँ बोंड़े कहाँ से धाये ? वही स तुम्हें न धागये हों ।

‘बिन्ह किसी बड़े लस के नहीं हैं । तुम्हें ने जड़ाई की होती तो अपने पाँव बाधों को बहुत पहले मामूम हो जाता । खस को हर टील पहाड़ पर से धाव बनती हुई दिखावाई देती । गाँव-गाँव से डोनों की

इस-इस मुनाई पड़ती थीर एक बम्बामत का कुटवार बुरी पम्बामत को समाचार दौड़कर दे जाता। कहीं ऐसा न हो कि राजा मानसिंह के मवार पहले से पाबये हों।

‘बाह ! पहले यहाँ घाटे का मौक़ा में ? थीर फिर यहाँ प्वातिपर से घाने के निचे मार्ग को गड़ी है।’

बजल में कैला हुआ ऊँचा पहाड़ कालू बजल। पपरिली बगल नीची झाड़ी समबल भूमि पर सवन बिछाल बूझ कहीं धुरमुटों में, कहीं बिसरे हुमे। पाँच सवमय एक कोस की दूरी पर। गटों का डरा भी दूर था। इन दोनों ने इधर-उधर देखा। कुछ दूरी पर एक टोरिया की घोट में लड़-लड़ का सख मुनाई पड़ा।

‘कोई बाबबर है। स्थाए घरना हो। निसी ने बहुत बीसों स्वर में कहा।

‘हाँ घरना ही होना सुघर नहीं हो सख्या पाबाज ऊँची थी।

उन्होंने कान लगाया बरगु कुछ मुनाई नहीं पड़ा।

निसी ने पीठ पर से बर्छी को खोल लिया।

सन्धी ने कहा ‘बर्छी मुझको देयो। घरने के निचे तुम्हारे हाथ का तीर धक्का रहेगा।

‘नहीं।—निसी ने समझना,—‘बर्छी मेरी मुट्टी थीर कलाही ज्यादा बल के साथ बला लकेवी तीर तुम्हारा धक्का रहेगा। इस टोरिया की ओर जहाँ जहाँ से पाहट पाई है।

वे दोनों टोरिया की दिसा में बर्छी। टोरिया के नीचे पहुँचकर देखा तो टोरिया को इतना बम्बसी हुई लाड़ी से बरा हुआ पाया कि उसमें छिटकर जाने की भी कुम्जाराह न थी। उनको बिस्वास था कि टोरिया के ऊपर से पाहट नहीं पाई, बल्कि पीछे का बयस से। भूमि ऊँची-नीची थी और बाध कुछ अधिक ऊँचा। अभी बाहर पड़ा हो थीर उधलकर तिर पर था

मिस्री घब की सज्जा धीरे निर्ययता के हूठ के इन्ध में पड़ गई ।

उसने पाँच के सङ्केत से बोड़ी बैर धीरे बढ़े रहने का आग्रह किया । कुछ ही क्षण पीछे उन दोनों को टोरिया के ऊपर से स्पष्ट झूलने का दृश्य धीरे मोड़ के पीछे से बोड़ों की टापों की धावाज सुनाई पड़ी । दोनों बक से रह गई ।

मिस्री ने एक ही क्षण सगराम्त भीह सिन्धोड़ी होंठ लटायें धीरे जाने की मुट्ठी में सावकर कहा । लीर को पकड़ें नाखी का हाथ काँपने लगा । होंठ उनके हिल रहे थे । बीरे काँपते हुये स्वर में बोली पीछे हटकर घोट के लो । सवार सारहे हूँ ।

मिस्री के भी कान ने भोखा नहीं खाया था । पाँच-पाँच कोई बच्ची घोट का सहाय न देखकर वह नाखी के साथ पीछे की मुड़ी । लौटकर देखा तो घिरे की मोड़ पर दो बोड़ों के बृषर बिखलाई पड़े । पहाड़ी पर पड़ जाने के लिये बीते घर का भी मार्ग बिखलाई नहीं पड़ रहा था । वहाँ से घाई भी उठी रास्ते से जाने में छिराव की गुंवाइस नहीं के बराबर थी । पहाड़ी के समान्तर वाली बगल में कुछ हूटी पर पेड़ों की एक झुरमुट थी । वे दोनों उठी बिछा में मुड़ी । परन्तु इस घोट के पीछ नहीं पहुँच पाई । जसम-सज्जित बार सवार घिरे की पीछे की मोड़ से उस स्थान पर मानवे वहाँ से वे लौट पड़ी थी । वे दोनों एक छोटी सी छाड़ी के पीछे पुनर्जन्म का प्रवास करने लगी ।

बार सवारों के लो घाने था भिल्लामा 'बगराधो मत जसत की गरिमो ! हम तुमको बृष करने के लिये ही धाये हैं । बचो हमारे साथ ।

कलेजे की बक-बक के साथ मिस्री खड़ी हो गई ।

उसके मुँह से फटे स्वर में निकला 'कीम हो तुम ?

सबाब के बाद ही मिस्री के कलेजे की बक-बक बन्ध हो गई धीरे बनने सिंकार का छफ़फ़ इतिहास बसकी स्मृति में बिजली की तरह कोंब पदा ।

बाकी भी खड़ी हो गई ।

‘कहाँ बसें तुम्हारे साथ ?’ लाठी बोली । स्वर निष्कम्प ऊँचा और पैसा था । हँस मुँह ।

सवार मोहे की लाठी का कबज पहिने हुये थे, भिलम पर छाछा बाँधे थे । जल्दी धाँकों की जगह केसस बड़े पोस छेद बिलसाई पड़ रहे थे । सवारों ने कोई अवाज नहीं दिया । घाने बढ़ धाये । उनके निष्कट जाकर बस गये ।

घाने वाले सवार ने कहा ‘एक एक मोहे की पीठ पर धाकर दोनों बैठ जाओ । कंटे से तुमको कस लिया जायगा । गिरने का कोई डर नहीं रहेगा । ऐसी जगह से बसेंगे जहाँ बिन्दवी सर तुमछरे उड़ापोनी । निष्कट घायी भड़की में से बड़ी ।

सवार मोहे पर से उतर पड़ा । जाम्बे पर तीरों का डरकस धीर कमल बसे था । कमर में समसार लम्बी लमसीर । उन दोनों की तरफ बढ़ा । उनके पीछे वाला सवार भी मोहे पर से उतर कर बढ़ा । चौड़ी की दोनों ने छोड़ दिया था । मोहे पास पर मूँह करने लगे । बाकी दो सवार धाक्य रहे ।

निमी न तीरों पने स्वर में रोका ‘बही बड़े रहो ! हमको क्यों छोड़ते हो ?

‘धुर-धुर में बाज-बाज इसी तरह मड़कती-उड़कती हैं फिर मसी मने मवती हैं । हुकुम की बन्दगी के लिये धाये हैं हम लोग । मोहों पर सवार हो जाओ इसके बाद तुम्हारे भी हुकुम के सामने सिर झुकावेंगे । बूँ बोबा ।

‘बब !’ निधी कड़की, जैसे बिजली लड़क गई हो । सवार ने अपने पैरों लाठी का लाठी के बजड़ने का इशास किया और स्वर्य भड़को का पकड़ कर बिजली की बल पर धाया ।

उत्तने ठंडा मारकर कहा ‘अच्छा ! वहीं लिये हो !! धीर तीर कमल!!! फजूल है कक तो बर्बा । तुम्हारा-धापका नाम मृगनयनी है?

बाहर धमूँले बरौं धोर लीरों को बोवा । गहावा भीर बर घाघई । पर पईब कर घब उनको डर भगा । बर में जैसे कोई बड़ा बज्रम हो जैसे बहा कोई जाने की बीज रहा हो । जैसे मे निरवस्थ हो निस्तथाव । बर की टटिबा बन्ध कर केने पर डगकी भीर भी डर लभा । मिट्टी मे टटिया खोम भी । घर के बाहर घाकर हबद-उभर देखने लगी ।

लाखी बोली, 'धमूँले बड़ी डेर लगाई । डोरों को लिये न जाने कहाँ डोल रहे होंगे ।

मिमी ने कहा 'बही में खोच रही थी । बाहरी हूँ इस घब क्या करके लज्जाम पर चल में ।

बोड़ी डेर में छँप्या हुई । गांव वाले अपने-अपने बीड़े से होर केकर आ गये । दूर से उनके बन्ध की गुनकर मिमी को भाव हुआ जैसे कई पुरुषवार बीड़े बने घाटे हों । लाखी बड़ी पीछे घटल थी अपने डोरों घड़ित आ गया । जैसे ये वालों तसक लिय धाँसे बिछाने बठी हों ।

मिमी बोली, 'आहा मे यही तक बड़ी डेर लगाई ।'

घटल को अचरज हुआ 'डेर लगाई । पधुधो को बानी पिला कर बीटने का वो समय ही यह है । क्यों, क्या बात है ?

लाखी ने कहा 'इस बीवों को लय रहा था जैसे कुचमय हो गया हो ।

पधुजी को सार में बीबने के बाद घटल को तबूँले पूरा कृष्णम मुलावा । घटल को विस्मय नहीं हो रहा था । धम में मानना पड़ा ।

बोवा 'तुम्हें भी कोई छोटी सी ही टुकड़ी है । बहुत होते तो तुम दोनों फिरकर मारी जाती । तुमका पकड़कर तो बे कै नहीं जा सकते थे । आज मेरे लामे लीर भीर बरौं बाबब हुने । हमारे लोपर राजा ने बामल पीर पमुगा की लीमाघों भीर भाट बावियों पर ओरों बाब रखे हैं । उनके बीच में होकर बार कः काही निकल जाय बहव हो सक्या है । कोई

मृगमयनी

बड़ी दुकड़ी या सेना बिना बड़ी लड़ाई थीर मारकाट के यहाँ तक नहीं
या सकती। बिम्बा मत करो। रात में मराम पर हम सीनों रहेंगे।
सीनों से जाना में जायता पहुँचा। कम से इतनी दूर धिक्कार सेलने मत
जाया करो। बस। प्रलय करने को जा गई है। यमाज गाहकर नहुँ में
रक्त में फिर कोई बात नहीं।

हमरे दिन सधरे मराम पर से घर घाने के बाद बोड़ी ही देर हुई थी
कि पला घाया। बसकी सीलों को डिठाई में खोजबीन नहीं की। पुत्र

सिबों के कुमाव-फिराव के चलतों में कुछ मर सा था।
घावर मूचक प्रणाम के बाद बोला इन बेटियों को कम कुछ
धिक्कार मिला था क्या? मिला हो तो बोझा इनको देवो।

प्रदल ने धमिमाम के साथ कहा धिक्कार नहीं मिला कुछ और
मिले थे तो इन्होंने उनको मार मचाया।
और। धो मयमान ॥ धो बात के बटीरिया देवता ॥ धो बोंड
जा ॥ हम लोग वहाँ घूने में लगेले पड़े हैं। क्या करें? नट ने
जवाबुलता प्रकट की।

अन्त होता 'गुम तो कई हो। तुम्हारे पास हथियार भी हैं।
नट ने मय के जसा स्वर में कहा 'हमारे पास कुछ कपड़े हैं। पावन
धीर बुझ भी बोझा था है। कुछ और सामान है। गांव की पम्ब मत
धीर पटेल कहें तो हम लोग गांव के पास ही कहीं अपना डरा
बाज में।

कोई बाड़ी नहीं करेगा। बोझा सा सोचकर उसी धमिमाम के
स्वर में अन्त ने कहा।

नट प्रतप्तता प्रकट करता हुआ वहाँ से अपने डेरे को चला गया।
धीरे से उसने पायकिम से कहा 'हमारी साँठ-गाँठ का उनको पता नहीं
है। बोझे दिन गाँव के पास ही रहकर कोई धीर जिया बर्तनी पड़ेगी।
सम्झा के पहले उन्होंने अपना शिविर गाँव के निकट खड़ा कर
लिया।

बप्प-मुष्टि में बर्छी की मूठ को पकड़ कर नोक से कबज को मज-मज के साथ धोड़ा घीर चोर को बरादायी कर दिया । दो दिन के ही अभ्यास में कितना सफल प्रबल ठीका हुआ प्रहार रहा ।। दूर दूर तक कहीं भी कोई सहायता प्राप्य नहीं रोने-बीखने तक की भी कोई सहायता नहीं ।।। कोई घोर स्थिति ऐसी परिस्थिति में पड़ी होती तो आकू उनको सज से बाटे घीर सगले सतीश को बजाह देते ।।।। निम्नी के हृदय के एक कोने में अभिमान बाव-बाव पड़ रहा था । परन्तु वे तुर्क रहे होने । घाते घनेकों को घायल करने । तब क्या होता ? यह डर निम्नी के अभिमान को दबा-दबा डबता था ।

साखी ने अपने ऊपर घाते हुये उस लडाकपोस का बेध झड़ी की जोड़ केकर, सारा घर में निशाना बाँधकर किया । थोड़ा को दूसरे तीर से कीड़ जाता उसी पर चढ़ाकर तो वह तुर्क भया से जाना चाहता था । परन्तु क्या उस समय इतना सोचा था ? कुछ भी बाध नहीं पाता कैसे क्या हो गया । परन्तु हो गया । पाँच की स्थितियों में पाँच के पुष्पों के सामने कैसे बलाना पाय ? बात चारों तरफ फैलेगी । यदि तुर्कों की शीख की शीख बढ़ बीड़ी घीर सती, पशु घीर चर मित्रा दिये तो लोग कहें इस लडाकियों ने ही सब सत्यनाथ जडा करवाया—साखी ने सोचा ।

उन दोनों ने अपने पराक्रम की कथा को सिवाय घटस के घीर किसी को नहीं सुनाया । घटस से अनुरोध किया कि वह किसी को उन सवारों के मार डालने का हास न बतलावे ।

घटस के अभिमान ने कथा को पहला रूप दिया—लडाकियों ने चोरों को मार भयाया । दूसरा रूप—चोरों के पाठ हवियर ने वे बीड़ी पर सवार वे बाध बाँधकर जाने । तीसरा रूप—चोर तुर्क ने या अन्तर्द के कोई पठन मटने चारने को घाते ने कि इन विप्लव लडाकियों ने मार

मृगनयनी

मयाया । बोवा रूप—'इम तुकों या पठानों को तीरों से छर दिया वे तीरों को ही ले जा सके । मार हासने की बात किसी से नहीं कही थीर न चोरी का अभिप्राय बताया कि वे इन सहकर्मियों का ही उठा नापने को प्राप्त थे ।

परन्तु गाँव वालों को चोरी के अभिप्राय के समझने में लगा मर का भी विचार नहीं हुआ । उनको लका हो गई कि फिर कोई बड़ा हमला होता है और फिर बन-कमराया में मरने-जाने या घबराते हो जाने की बातें प्राची हैं । राजपूतों का परस्पर कुछ तो था ही नहीं जिसमें सत्ता गाँव और लो की दृष्टत नहीं बिगाड़ी जा सकती थी ।

दूसरे-तीसरे ही दिन मिर्छों बीलों और दोरों के चराने वाले ने दो मरे हुये मनुष्यों और एक मरे घोड़े का पता दिया । मर्तों ने अपने जन्मेपाय घनस बान द्वारा उनका समर्थन किया । कबच मिलम और मूठ तुकों के हबियार भी साफ़ गाँव वालों को दिखाता दिय । लार्छों पर और जो कुछ पाया हो उसको अपने डरे म रख दिया ।

गाँव की जन-सख्या घट्य थी । घोड़ से लनों के बाजाने से गाँव की बिन्ता कम नहीं हुई । लनों की बाति उनका व्यवसाय किसी भी गाँव के घंग या घंग न होना उस गाँव में उनको हिनामिता नहीं सकता था । लार्छी निम्नी और घटल को लनों का घाबिक सम्पर्क प्राप्त था इनलिब ने उनको अपने से उतना ज्यादा घलप नहीं समझने के परन्तु गाँव की बिन्ता या मय की बबहेलना नहीं कर सकते थे ।

भाजमलु के भय का घमन केवल एक ही उपाय द्वारा हो सकता था—गुवालिपर के राजा की सहयता ।

गाँव वाले पुजारी के पास पहुँचे ।

'बाबा ! एक गाँव वाले ने कातर स्वर में कहा 'इम बिमान सोन किसी से नहीं लड़ते । लड़ाई राजपूतों तुकों और पठानों का काम है परन्तु गाँव की दो लड़ाकियां कुछ पावल ह । इनक तीरों से दो तुर्क या पठान घरने जल्ल म मारे गये ह -

घटन ने तुरन्त टीका 'बाबा मे डाक इन दोनों की बहरबस्ती छल से जाना चाहै से । हथियार न छलती तो क्या करती ? अपनी जान जो रैती ? पुरकों की बुझो रैती ?

बाब बाबा बोला 'बैठे ही तोरई छोड़ा है । पछकी बाठ कर देने दे ।

घटन मंह बिहरा कर चुप रहा ।

बाब बाबा कहता गया 'बोझोकी टापों के चिम्हों से जान पड़ता है कि मैं सब बहुत से से । लड़कियां कुन बार बनमाती है पर इतने मजबूत से कि दो को मरा छोड़कर बाझी जहां से पावे से वहाँ पहुँच गये । सब से लार्नेये अपने साथ न जाने कितनों को । यदि मानव तो न तो फलन बर्बेकी न कोर और न हम बोझों के प्राण । थाप म्वातिबर जाकर राजा से कहिये ।

'ग्वातिबर होकर ही सभी तो हम सोच भोट है । राजा ने फिर से बचन दिया है कि बार छः दिन में आयेंगे । पुजारी ने कुछ निरास स्वर में कहा ।

बाब बाबा ने प्रार्थना की कि एक बार और कष्ट करो । किसी भी बहाने हो राजा को अपने साथ हो बिधा लामो । बाब का एक बड़ा बोला, 'पुजारी बैठा पछकी बार मन्धिर को और तुमको निघनी छलन से बुझना चडावेंगे हम बाब बाबे ।

पुजारी को भविष्य भूरा नहीं लभा परन्तु वर्तमान ने सण्डिह ग्लानि बाध दी । मस्कराया । मस्कान में होठों क एक कोने पर छोटा सा विरझापन जाबया ।

घटन ने तुरन्त कहा 'पुजारी महाराज को सोम-नामक विनमाटे हो जो संसार को छोड़े हुये इस फूस के मन्धिर में अपने पोबी बर्बों समेत पड़े रह्ये है । यह किसके निब ? क्या हमारे पनाज की बड़ोकी के निबे ?

मृगनधनी

पुजारी को घटल की बात बख्शी नहीं लगी की भी उसने बादकारी परन्तु पुजारी को यह यदि—मन पर उसका प्रतिकूल खूद गया अमात्र की बढ़ोनी के सोम में यही पड़े रहते हो। परन्तु उसने अपनी मुस्कान कः नहीं छोडा।

बोला फिर से जाता हूँ। जाता हूँ कि सबकी बार बिबाहर ही घाऊँगा। और बिना बिसम्ब के घाऊँगा।

घटल ने बिना की 'ये भी साथ बनूँ ?

पुजारी ने कन्धे स्वर में खस्तीकार किया 'नहीं, ये घबेला ही घाऊँगा। दो तीन दिन बाद। एक पाठ को पूरा करते ही चल दूंगा।

गोब बाके घाटा और जस्ताह के साथ लौट आये। घटल ने बिघेप जस्ताह प्रकट किया। परन्तु सोचा टिके रहूँ या राजा के आने के पहले वही लिखक जायें।

लाखी और घटल ने टिके रहने और राजा के सामने अपने लेस बिबलाने का घाघह किया।

गोब बाके क्रमस काटने पर निक पड़े। पकने में बोड़ी सी कसर थी परन्तु वे और अधिक नहीं ठहरना चाहते थे। घटल ने भी काटा। सबने पास-पास खनिहानों में रखनी। सबकी बार खनिहान खंमल में नहीं बनाये। घटल ने निम्नी और लाखी को खन्मल में जाने से रोक दिया। वे दोनों गोब के पास के पकास बूझों पर नहीं चलाने का धम्यास करने लगी। गोब बाकों को जब उनका यह धम्यास क्याया कसकने लगा।

खिबाँ चाहती थी, दोनों कहीं टल आय ता धम्यास। सब सोचते थे पानक हो गई है—बिबकुक गोंड भीलनी नहीं तो क्या डेंबी जाति की मककियों में ऐसे कुलमखर होते हैं।

गोब बाकों की वृत्ति उन दोनों से खिपी नहीं रही। एक दिन घटल खाना साकर खनिहान में बना गया। वे दोनों हबियार लेकर खनिहान

■ कुछ ही दूर बर्षी चलाने के सम्पात के लिये निकम्बती पलाय बुद्ध समूह के बीच बहूँच गई । बस्त्रियों को पेड़ से टिकाकर छाया में बैठ गई ।

लाजी ने कहा 'यदि हम ओज हथियार बनामा न जानती होती तो वे सोच क्या हमको छोड़ देते ? हमारा सर्वनाश हो जाता तो बाँध बाँधे क्या करते ? क्या कहते ?

'रोते किमपते और क्या करते ? निन्ही बोली ।

स्यात रोते भी नहीं । हमारे नाय को दो चार ब मित्रा देकर अपने अपने काम में लग जाते ।

इन लोगों की समझ में यह क्यों नहीं आता कि हम तीनों यदि वे न होते तो इनकी आधी छत्तल को बज्जमी जानवर चोपट कर जाते और वे चार तुर्क गाँव की आधी स्त्रियों को नष्टभ्रष्ट कर जाते ?

मुझको एक संदेह है निन्ही—य सोच हम दोनों को पकड़ने जाये वे ।

'क्यों ?

क्योंकि तुम्हारे योरेपन की तुम्हारी बातों की, तुम्हारे बर्ष की चारों दिशाओं में कीर्ति फैल गई है ।

'दुर पमली ! तुम कुछ कम जानती हो ?

'हूँ या नहीं हूँ—बर्षण धारती तो अपने पास है नहीं । पर मेरा कहना ठीक है कि वे हम दोनों के पकड़ने के लिये जा जाये वे । यही वे स्वातिधर बस देना चम्पड़ा होगा ।

'फिर लाँक नहीं बज्जल चिकार और छेत ? य वही कहा सिंसमे ?

'एक धीर कारण है । तुमने सुना है या नहीं ? सुना होगा ।

नहीं तो क्या बात है ?

एक स्त्री ने मुझमें ठठोसी की थी—तुमको यहाँ रह नया है ।

मृगनयनी

'वै ! क्या है ऐसा कुछ ?

'घरी इत !'

जैसे ही स्वार को घर में गाड़ी तुम्हारा ब्याह रखूगी । गटों से लोडनी इसीनिचे लेनी है ।

'गांव वाले नहीं होने देंगे ।

'पुजारी को कुछ प्रनाम दे दिवाकर साथ लेवे ।

'देखो ।

'घोर किसी ने कही यह बात ?

'घोर तो किसी ने नहीं कहा । पर दूसरी स्त्रिया भी समझाई थी

प्यारी है मामो में कुजात हो गई हूँ ।

'तुमको जो कुजात कहे वह कुजात ।

'कभी कहा तो नहीं है परन्तु डर है कहीं कह न उठें ।

'तो कहीं भी जायेंगे सभी जगह एसी ही कहा सुनी घोर बर्राई होगी ।

'बाहर अपने को मूखरी कह उठूगी ।

'घरी बाह ! डर काहे का है ? क्यों डर ? कोई पाप नहीं हो का

यमा । पुजारी बाबा कथा-कहानियों में सुनाया करते हैं । ब्याह के बाद

तो मूखरी हो ही जाओगी । मैंने घोर मैया ने तो ब्याह होने के पहले ही

तुम्हारा अपना चौका एक कर लिया है ।

गांव वाले गांव में रहने नहीं देंगे । बापि का रक्त बहुत कठोर

होता है ।

'तब कहीं बाहर चल देंगे । इतनी दूर जहाँ कहीं हम गांव वालों की

काँव चाँव सुनाई ही न पड़े ।

'हम गटों को भी एक ब्याह है । किसी गाँव में नहीं रहते घूमते

फिरते बने रहते हैं घोर मोम करती है ।

कर पावेंगे ? किसी तरह इत नकाई से मेरा दिङ छट जाय तो बड़ी बात हो । यह जतन हो जये तो महीबहोम मुस्तान बनेगा । क्यों न अभी से छतकी छीर मगाने लपू ? मगर दससे पोंछा धूँ तब ता । जैसे इत तरह कभी पहुँचे नहीं बिगड़ । घायल फिर मृगवत मिहरबानी करने लगे । देखूँ ना । मटरू सोच रहा था ।

मुस्तान बोला 'मेबाड़ में मकली रावा ऊँचा घीर मससी रावा रायमन का फिस्ता ठो छतम हो गया है लेकिन मेबाड़ में कुछ कमजोरी कम भी है । मगर बचरी बहो उलझ रहा तो हमको ग्वातिवर की सहाई में सुबीठा रहेगा । हम मेबाड़ को किसी तरह की भी मदद नहीं देने क्योंकि विद्वसी मसबा रावा ऊँच केकर घाय घीर बचरी से बिना लड़े ही बीट जये । जैसे भी फिन्हाल में वो मोर्चा पर नकाई नहीं लड़ूँगा । एक ग्वातिवर ही काफी ठीक रहेगा । क्या कहने हो ?

मटरू ने मुस्तान को फिर बना हुआ पावा वस्तु बह अपनी विद्वसी पबती को दुहराना नहीं चाहता था ।

बोला 'वही ठीक है बहीगनाह ।

अरवर ग्वातिवर की नकाई के लिये यह मौसम मजेदार है । क्यों के पास होबियापी के छान खबर मेन देना । वो कुछ मेने कहा है होकर रहे ।'

'बहीगनाह ।

बोनहरी के समय को छोड़कर दिन में राजा मानसिंह किसी न किसी काम में व्यस्त रहता था। लोगों से मिलने का समय भी बने से बारह बजे तक। म्याय का शासन तीसरे पहर की अन्तिम घड़ियों में। बीजे पहर के घाबे भाव में सेना की तैयारी और प्रस्थारोहण दिन के पहले पहर की तरह। रात के पहले पहर में मोबन और राग्य-अबस्मा की बर्बा, दूसरे पहर में सज्जीव। यह कार्य क्रम गर्मी की ऋतु में कुछ बदल जाता था।

तीसरे पहर की समाप्ति में कुछ बिजम्ब बा। मानसिंह अपने मदन के सना-मच्छप में सिंहासन पर बैठा था। सभा में मन्त्री, सचिव इत्यादि यथास्थान थे। उसके कुछ निकट एक नया यूपपति खड़ा था। नाम निहामसिंह। निहामसिंह घट्टाईस-तीस बप का युवा था। झरेरी पठीली देह। सड़ा प्रवर्ती लाल बासी पाँव। मानसिंह ने इसको कुछ समय पहले ही अर्जित किया था। कुशल उपयुक्त सचिवों को बुझनिका मने की मानसिंह में प्रतिभा की।

‘यदि बिन्धी के मुस्तान ने बीनपुर पर फिर आक्रमण दिया तो बीनपुर मुस्तान की सहायता करनी पड़ेगी। आक्रमण अनिवार्य सा जान पड़ता है। राजा मानसिंह ने मन्त्री से कहा।

मन्त्री बाता ‘परन्तु यदि मालवा के मुस्तान से हमारे ऊपर बढ़ाई करदी महाराज तो हम बीनपुर की सहायता नहीं कर सकेंगे। यदि हमारे ऊपर पहुँचे आक्रमण होयवा तो क्या बीनपुर मुस्तान हमसे सहायता करेगा? बीनपुर का मुस्तान बैगाव की ओर बना गया था सम्भव है फिर लौट पड़ा हो।

‘परन्तु मालवा के मुस्तान की सन्धि मेबाड़ के साथ है और मेबाड़ हमारा मान्य है। फिर मालवा की अस्तानत को गुजरात के बपरी

से चैन कहाँ है ? वह हमारे ऊपर हमला करने का सबकास किस पायदा ? मानसिंह ने पूछा ।

मन्त्री ने बेबड़क उत्तर दिया 'महाराज गयासुद्दीन सनकी घोर प्रबल है । हम लोग उसके बिग्रह का विस्मृत हो कर सकते हैं परन्तु सन्धियों का भरोसा नहीं कर सकते ।

राजा ने हँसकर कहा 'हमारी की हुई सन्धियों के सम्बन्ध में भी लोग इसी प्रकार का भ्रम कर सकते हैं ।

राजा ने निहाल की घोर स्नेह की दृष्टि फेंकी । वह तुरन्त बोला 'हम मासवा और दिल्ली दोनों से सड़ सेंगे । अपने सिर हथे बचन का पालन करेंगे ।

सचिव न कहा और यदि मासवा के गयासुद्दीन खिलजी ने हम पर पहले आवा कर दिया और जीतपुर दिल्ली के बाबसाह के डर के धारे फिर बंमाल भाग गया और हम खिलजी से लड़ाई में उग्र नये उसी समय बाबसाह ने जीतपुर पर आक्रमण कर दिया अब हम यदि जीतपुर की सहायता न करें तो सिधे हुये बचन को भङ्ग करने का अपराध हमारे सिर आसना या जीतपुर के सिर आसना ?

निहालसिंह उत्साह के साथ बोला 'हम दोनों मोर्चों पर दृढ़ रहेंगे ।

मानसिंह ने निर्णय किया ऐसी परिस्थिति में हम दो मोर्चों पर सड़कर अपने बस को खींच नहीं करेंगे ।

मन्त्री और सचिव न समर्पण किया । निहालसिंह निर्णय को सम्झने की कोशिश करने लगा ।

मन्त्री ने कहा 'एक छोटा सा काम और रह गया है । बीजू पायक को आज सवेरे ही बिर्साई की आगी थी । उसने मरही सी । कुछ सनकी रा है । क्यूँ है प्यालियर में ही रहना । हमारे बिट्टे में दतता उकास

नहीं है कि एक ऐसे मायक और उनके साथ बासी बीसी गायिका और बिजबागिणी को मायिक बैठन पर रख सके। धात्रकन तो हमको अपनी सब बचत सेना पर खर्च करनी पड़ रही है।

राजा हँसकर बोला भिरे बिट्टे में कमी करके उन दोनों बचाकारों का बैठन बीच में। राज्य है काहि के भिये ? प्रजा पालन कत्ता की रखा और बडोत्तरी के ही भिये न ? प्रजा और कत्ता लोगों के भिये हमें धन प्राप्त है देने के भिये तैयार रहना चाहिये। इन दोनों की रक्षा का ही तो बुरा नाम बर्म का पालन है। कहाँ है प्राचार्य बिजय चक्रम ?

मन्त्री न उत्तर दिया निकले के भीतर जो सरोवर बन रहा है उसकी मजदूरी से नहीं सौंटे है।

बिजय को कावक — धारीरिक धम में इतना विश्वास था कि अपना पसीना बिना बहाय वह किसी ने कमी कुछ नहीं लेता था।

जितना बड़ा कछाकार और पण्डित है वह ! राज्य से कुछ नहीं लेता। बीणा सुनाने के बख्त में एक कीड़ी नहीं सेवा। कहाँ है अपनी रक्षा के पट्ट में बीणा को सुना देता हूँ। परन्तु धाम की कमी को धारीरिक धम से पूरा करता है। एक स घब तीन हों आर्येय। इसकी प्राचीनिका का प्रबन्ध तो मन्त्रीजी राज्य की ही ओर से होना चाहिये। राजा ने कहा :

मन्त्री सहमत नहीं हुआ — 'महाराज आपके और मन्त्रियों के बिट्टे में कुछ कटौती करके ही प्रबन्ध किया जा सकेगा जैसे तो नहीं हो सकता।

'करो। धन बिट्टे के सम्बन्ध में मेने पहले ही कह दिया है। राजा ने मुस्कुराकर कहा।

मिहानसिंह की समझ में राजा के दोनों निर्णय धम धाये। उसने बीणा फिर कर लिया।

हारपात ने आकर सूचना दी 'राई पाँच से पुजारी भी आये हैं ?
 धर्मन करना चाहते हैं ।

राजा ने धनमति की । हारपात पुजारी को भज भया । परस्पर
 अभिवादन के बाद पुजारी से राजा ने कुशलवाणी पूछी ।

पुजारी ने कहा श्रीमान् ने कई बार वचन दिया कि राई आकर
 शिकार खेलेंगे । अब तो साथ लेकर ही दर्भवा ग्वांसियर से ।

धमा करना शास्त्री की राज्य की व्यवस्था को बिगड़ने की व्यवस्था
 में स्थापित करने की धुन ने शिकार की धुन सा दिया है । शीघ्र ही जाने
 का उपाय करेंगे । जैसे की राज्यमर का एक शीरा तो जाहों जाहों में
 लम्पटों करना ही है, राई भी आयेगा अर्थात् यदि इस बीच में किसी
 अनु से सटक न गई और मुँह में सलाम न आता पड़ा तो ।'

'मुँह तो महाराज धमावें भर कर आ रहा है ।

कैसे ? कहाँ से शास्त्री की ?

अभी तो उसकी भूमिका हमारे बीच में उत्तर है पाई है । बाहे
 अभी वह अन्तर्बंद से हो या मालवा से ।'

'पहेली की बुझ रहे हो ! स्पष्ट कहो शास्त्री की ।

पुजारी ने विस्तार के साथ पूरी कथा सुना दी ।

मन्त्री ने कहा महाराज मे लोग अन्तर्बंद से नहीं आने होंगे ।
 कामपी और इटावा अपने मित्रों के हाथ में हैं । वे मुँह या पठान सवार
 मालवा के छिस्ती के विनाय और किसी के नहीं हो सकते ।

राज को निवारण के लिये मालसिंह बीमा 'इस बुरे काल में बार
 सुटेरों का कहीं से भी आ जाना सम्भव है ।

पुजारी ने विनय की,—'महाराज, सुटेरे तो वहाँ से भी आ सकते
 हैं परन्तु इन सुन्दर लक्ष्मियों का अपहरण करने के किसी अक्षिपात्री
 की यात्रा पर ही आये होंगे वही ।'

मृगनयनी

राजा ने पुजारी पर प्रश्न-सूचक दृष्टि की माली उन लक्ष्मियों के सम्मुख में कुछ घोर कामना बज्जना हो।

पुजारी ने जवाब दिया — वेने पिछले जठ के महीने में घोर बीछे भी उन लक्ष्मियों के सम्मुख की कृपावता के विषय में कुछ कहा था। उनकी सुन्दरता के विषय में या तो कबि ही कुछ कह सकता है या कृपाव बिचकार घोर में इनमें से एक भी नहीं।

राजा समझ गया घोर समझने के साथ ही कुछ कहा भी गया। निहालसिंह बोला 'महाराज का राई जीब पधारना माबरक हो' या है। जनता के मनमें बिचबास का संचार हो जायया समु मुनकर बीब जायया घोर महाराज माहुर, धरना हत्यादि का पिछार भी खेत लेंगे।

राजा ने अपना निदय मुनीया — 'ये कत ही राई की घोर याया करेगा। निहालसिंह अपने हत को साथ ले बजेया। जाने-पाने की सामग्री की पूरी व्यवस्था यही से कर ले जत्तो।

[२१]

एक पहर दिन नहीं बड़ा था जब गाँव के धर्मिकाँस स्त्री-मुख्य जलियाँ में पहुँच गये । एकाध में बाँध भी होने लगी थी । घटम ब बेल बजाये किसी और भाबी मधुओं को धकेलने-बगोड़ने में लग गईं । पुजारी हाँफता हुआ सा पैसी के साथ थाया । दूर से ही बिस्साया 'अरे धो ! अरे धोरे !' बम जायो बम जायो !!! यहाएक की छजारी आ रही है !!!!

जलियाँ में जो सोप काम कर रहे थे सब बम बये । पुजारी ने पुकार को बुझाया । स्त्री-मुख्य सरपट उसके पास था गये । बर लिया । उनके चेहरो पर उत्सुकता और आश्चर्य की चिन्ता फैल गई ।

‘कब ? उन नामों ने पूछा ।

‘अरे धमी आ रहे ह । पीछ था रहे हैं । बस बाँधे ही होने । बन्द करो काम । बड़े भाव्य से राजा के दर्शन होते हैं ।

‘बन्ध ही पुजारी बाबा धाम ! हमारा तो भाव्य बाप बडा । धर्म काम नहीं करेंगे । बसो रे सब दर्शन करने ।

‘अरे ऐसे नहीं । मुब हो न । बन्धी से नहायो । जलियों में दीपक छजामो । बम महाराज भाँसे सब उनकी आरती पठारो । हमन मन्दिर के पास बँदा न कुछ पीम बजाये ह । उनमें से कुछ फूल बनो । बन्ध्या नहीं । किसी और बासों की जलियों के भिने हम शोक देने फूल । नहीं तो तुम सोप सारे पीने ही जलियाँकर फेक दोये ।

‘ही बजामेने भी के विने, पर जलियाँ तो सबके पास हैं ही नहीं । बन्धुसे बाँहे सबके यहाँ निकल आयें ।

‘धन्ध जलिके पास जो निकल भावे ससो में भी के दिव रसकर पाएँ बजाएँ । राजा भगवान का बन्तार या पूर्वजन्म का योगी होता

निधी फिर सोचने लगी। साधी उतका मुह ताकने लगी।

निधी बोली 'नटों से कपड़े या बहनें ख़ार लेकर नहीं पहिना चाहिये। भाग्य में होंगे तो घपने पसीने की कमाई के पहिने में।

'वे लोभ देने को तैयार हैं। कहते हैं। पित्नी बड़िया कपड़ पहिनकर बड़ी होली पारती उत्तारने धीर हम लोगों के होने में बिगड़े-गुड़के से।

'घपने ऐस ही जान्ते। कपड़ों पर तो राजा इनाम देया नहीं। नट, नट-बेड़िये ही हैं। धीर हम लोग हम लोग।

'तुम्हारी तो सनक है जब बीसी उखड़ पड़े।

'तो क्या नटनी बन जायें? डींग-ईयर में ये जो तितलियां उड़ रही हैं क्या बीसी बनाबट बनानें? राजा से क्या बात छिपी रखेगी कि पित्नी नटिनी है? राजा हम दोनों का हुक्मिनी बेइमानी समझ बैठेगा।

'तो तुम मेरे लिये उनसे उख उख की एक चमकती मोस लेने की बात क्यों कहती थी?

'अरी पत्नी कुछ माग गई क्या? क्या के समय पहिनाऊँगी तुम को उस तरह की धमकी। पर इस सबसुर पर न तो मैं पहिनुँगी धीर न तुमको पहिने दूँगी। राजा को घपना जोहर दिखाना बीसी हीर कमान है।

निधी ने उसके माग मीड़ दिये। साधी के चेहरे की समझाहट बची गई।

मोजन करते करते धीर बालियों कचुस्तों में बीपक सजाते सजाते दो बड़िया निकल गई। पुरुष मांग के बाहर दफट्टे हो गये। स्त्रियां वरों से बाहर नहीं निकली थीं। घटस बीड़ता हुआ घावा। टटिया के बाहर से ही पुकार सयाई — 'अरी बल्लो री सगरी या गई।

उन दोनों से बीपक जला लिये। हाथ धीर बग़्गस की मोट में बालियों को लिये मांग बाहर धाकर बड़ी हो गई। धीर स्त्रियां भी या गई। पुरुष एक तरह कड़े हो गये स्त्रियां एक तरह। इन्हीं में नट बस

पुत्रादी ने नहीं बतला दिया। गटी की मायकिन तुरन्त घाने पाकर बोली 'महाराजमहिपुत्र बहुत मट जात की है। मेरी सड़की। भुँमादी है धमी। ऐसे खेल करती है कि जिसका ठिकाना नहीं। हम सोच अपने खेल महाराज को बिबलारबेने।

ससकी धारती को स्वीकार करके मार्गसिंह गटी के समीप एक क्षण भी नहीं ठहरा।

कहा 'तुम लोगों का भी खेल देखूँगा, ये यहाँ कई दिन ठहरेंगे।'

पुत्रादी ने निम्न की 'महाराज मन्दिर की ओर पधारना होने। वहीं बरगद के नीचे डेरा सपेना न ?

वहाँ सास्नी की लसी के लगभग। राजा ने उत्तर दिया।

राजा कुछ देर वहीं ठहरना चाहता था परन्तु ठहरने के लिये कोई कारण नहीं था। स्त्रियाँ भी वहाँ एक ग्राम्य भीत में रहीं थी। लाली का स्वर उस भीत में कुछ मिठास ब्राम रहा था। निम्नी नहीं पायी थी।

राजा ने कहा 'यहाँ की स्त्रियाँ तो सास्नी की खुश माली हैं।' राजा ठिठका।

पुत्रादी ने झँकोड़ की सपाई, 'महाराज मन्दिर को विचारें, वे सब वहीं आकर और भी बीच सुनायेंगी।

राजा को यहाँ से चलना पड़ा। चलते-चलते उसने एक बार फिर भुवनयनी की ओर घाँव फेरी। निम्नी ने कन्धियों देखकर माँस भीची करती।

मन्दिर पहुँचकर राजा रुक गया। अग्नित मूर्तियाँ इधर-उधर बिबरी हुई पड़ी थीं। समीप की बिबली भी कीच गई। मानो अग्नित मूर्तियों ने गुपचाप उसकी तीव्र जलना की हो।

दृढ़ स्वर में बोला 'सास्नी भी मैं इस मन्दिर का भीर्णहार करेगा धीरे—

ससकी स्मृति में दिस्ती की कुतुब भीनार के सामने गड़ी हुई चाहे की भारी-भरकम धागाका पर जगज्ज्वाल सोमर प्रथम का खूबवाया हुआ बचन समर पाया—मैं इस भूमि को फिर सच्चे धर्मों में धार्मिक बनवाऊँगा ।

मानसिह हिस गया । ससका गला भर आया । निपज्ज्वाल किया ।

यत्ना मात करके बोरे से उसने कहा धर्मिक को सीमा बमबा पूंगा ।

‘महाराज की जय हो । महाराज सब कुछ कर सकेंगे । पुनारी ने बासीबाद दिया ।

राजा की आज एक मलिकी की सज्जित मूर्ति पर गई । बाँध की सिखा में ध्यान उभरा ।

राजा पुनारी से पूछना चाहता था क्या सिखा यहाँ पीठ गाने धार्मिकी । परन्तु साहस नहीं हुआ । सिखा की योजना में सम गया ।

समस्त इत्यादि पुनरा राजा के सिखा का समाधा—हाथी बोरे, सैनिक इत्यादि—देखने के लिये सिखा की ओर चले गये । सिखा अपने अपने घर पीठ धार्मिक ।

मिमी और लाची प्रसन्न थीं । मिमी अपने किसी धनवाने सन्धन को बबान्तर लाची को और धार्मिक प्रसन्न करने का प्रयास कर रही थी ।

मिमी ने लाची के कन्धे से झूलकर कहा ‘मुझको तो बड़क सी जय गई थी तुमने बहुत अच्छा गाया ।

‘तुम तो ध्यान में मग्न हो गई थीं । सोच रही होगी हमारे बरसामे हुये कुम को राजा ने जूल में से उठाकर माथे पर बड़ा लिया ।

यही तुम्हारे फुल को भी पकड़ी में खींच लेते, पर ऊपर से बहु बड़क दिस्ती भा गई न मेड़की की तरह फुरकती हुई । धार्मिक को मिमी निर्जन्मता के साथ उबका रही थी । धर्म पर बहु बूझी ऐसी समझी थी जैसे कामी के हँस पर सिन्धूर की सिन्धी ।।’

पलकों पर ले लिया । और फिर इन्होंने उनको घोर सन्तुर्हने इनको जो कुछ मुपशुप समाचार दिया-लिया सो लाली ने घपनी-भाबें फड़-फाड़ कर देख लिया । और उन कमलियों ने कसर पूरी कर ली । धरी निमी मुन्मने बने मठ ।

‘जो हो हो हो ! तुम कहीं की बड़ी कबि हो न ! तुम्हें तो घपनी बीठी घातो हैं तो तुमने बजान डाली । सब बतमायो लाली भैया के तुम्हारे बीच में कुछ इसी तरह का बसता रहा है न ?

‘धरी बाह ! केंसी टाली घपनी करतुन मेरे घिर पर ! !

‘घसम्मर बाठें क्यों करती हो लाली ? कहाँ परीब किसान कहाँ इतना बड़ा राजा ।

‘किसान हो तो राजा को बनाता है और फिर मूबर तोमरों से किस बात में कम है ।

‘भाग्य भी तो कुछ होता है न ?

‘सो उस नटिनी ने हाथ की रेखायें रीतकर पढ़के ही बतला दिया ।

‘रेखायें तो तुम्हारे भी बेबी थीं ।

‘अब तो मन्त्रको विश्वास हो गया । तुम्हारे भैया भी कुछ होकर रहेंगे ।’

‘अभी हैं एसी बड़ी-बड़ी आचार्य मठ बाँवो ।

‘लाली बीड़ कर निमी के मल से लिपन गई । पद्मम् हो गई । रो पड़ी ।

‘हितकियों में लाली धरि काभी माई को घपना घिर मेंट करके तुम को ग्वालिपर की रानी बनवा सजूँ तो कमी नहीं मिलसूँगी ।

[१४]

दूसरे दिन मानसिंह ने शिकार का आयोजन किया। प्रातरास के पौनों से हँकाई करने वाले जा गये। शिकार का खेल घोर राजा का सङ्ग। वे सब मोद-मग्न थे। घटन भी शिकार में शामिल होना चाहता था परन्तु हँकिया बजकर नहीं। इससे भी बड़कर उसकी कामना भी निम्नी घोर साक्षी के सबबसे-परीसरा की। राजा से कैसे कहे? अपनी कामना प्रकट करने के लिये उसके पास तक पहुँचे ही कैसे? राजा ने निम्नी की किन्तु प्रशंसा की थी। उसके नाते बाँध को घम्य कहा था। तो उनकी परीक्षा कब हो? यह घोर गँहो को फोड़ने की जगह यदि निम्नी और साक्षी कभी करने या बाहर को फोड़ दें तो क्या बात। और यदि वे भी एकाच बिस्तार सुपर अपने तीर से फटकर सब हा सभी कुछ बन जाय!! उसने सोचा। पुजारी से कहा। विनय सी की। सोचने लगा। उसी समय पुजारी के पास निहाससिंह आया। मन्त्रिने रंग की धिकारी-नोसाक पहिने था।

घाटे ही बोला 'महाराज की आज्ञा है कि उन लड़कियों के सदबसेव की परीक्षा आज ही इसी शिकार में लो जाय।

पुजारी अपने महल की बड़ाने के लिये घोर अधिक विचार मग्न दिखवाई पड़ा। घटन कुछ कहने के लिये फड़फड़ाने ला मचा। निहास सिंह स्मय था। पुजारी ने सोचते हुये ला कहा 'लड़कियाँ हो हैं। शिकार तो उन्होंने खेती है परन्तु एसी बड़ी हँकाई में जोखिम बहुत है।

निहाससिंह ने व्यपता प्रकट की ये क्या कहें। घाप बसकर महाराज को समझ दें। वैसे उन्होंने कहा है कि लड़कियों को कभी उनके भिन्ट ही किसी मजान पर बिठसा दिया जायगा जहाँ से वे बिना किसी संकट के तीर बसा सकें। क्षीय निश्चय करिये।

पुजारी के पहले ही घटन ने निश्चय व्यपत किया 'वे नहीं डरती। बीहड़ बरफ़र जङ्गल में पैर धूमती हैं। उन्हें मजान-मजान नहीं चाहिये।

‘तुम कौन हो जी ? निहाल न पूछा ।

मृगनयनी का आई घटनातिह मेरा नाम है । ये भी सिकार लेलगा चाहता हूँ । घन्स ने उत्तर दिया ।

निहाल उपहास में हँसा । सोचा यह सिकार ललेगा ! राजा और सामन्तों की बराबरी करना चाहता है ॥

पुजारी को कहना पड़ा मन्त्री बात है । जाओ घन्स, दोनों को यही मेज हो । यहाँ से मन्थान पर बनी जायेगी । कइसे महाराज से राजनी कि वे बनी जाती है । पर उनके पास मृगिय रंग के कपड़े नहीं हैं ।

‘मृगिये रङ्ग के तो मेरे पास भी नहीं ह । घटस ने बलते बलते अपनी टीप जमाई ।

निहाल मुस्कराकर ‘मन्त्रा’ कहते हुये बसा पड़ा । घन्स गाँव की ओर सरपट भागा । निन्नी और लाली घर पर थी ।

घपने हबियार लमाओ ! बली करो ॥ राजा ने सिकार के लिये बुलाया है ॥॥ तुम्हारे निछाने की परीक्षा होनी है ॥॥ हबियारों को मौजकर बमकदार बनाओ ॥॥॥ घन्स ने कहा ।

मग की हिलोड़ को बजाकर निन्नी बोली हबियार तो येँवे रखे हें ।

लाली बमरा डेकर मुस्कराई । निन्नी पर बरा सी घाँब बसाई । निन्नी दूसरी तरफ़ बैकती हुई हबियार लठाने घर में बसी गई ।

घन्स ने लाली से कहा ‘तुम्हें भी बुलाया है । लड़ी क्यों रह गई ? मुझे भी जाना है ।

लाली भी घर में बसी गई । निन्नी को पकड़कर भेंडोड़ बाधा ।

बीरे से बोली ‘कहो कैसे रही ?

‘भरी कोरी परीक्षा है । क्यों मेरी देह की मोने बाध रही है ?

‘कोरी परीक्षा नहीं है । भाग्य जायमे जाता है ।

‘यदि परीक्षा में सरी न उतरी ? बाण चूक गये तो ?

‘तुम हारोगी तो भी जीतोगी । पर हारोगी नहीं ।

‘बड़ी ज्योतिषिण हो न । उधर ज्योतिषी भी प्रांगण में लड़े हैं बड़ी छतावली में ॥

‘बड़बड़ बड़ी तो हो ठूँसे दूंगी मुँह में ।

‘बड़ी है न सो करके मनचाहा उत्पात । जो घब राम का नाम लेकर उठायो घोर बाँवो अपने-अपने हथियार । बर्छी भी रखेंगी ।

जम्होंने अपने अपने हथियार उठाये घोर बाँव । जाल मोड़नी को बोली पर कसते हुये तिर को डक लिया । माँठों वाले भदरङ्ग बाईने भी कचड़ा लमायी । द्वार पर बोकड़ों की टापों की आहूट मिली । निष्ठी ने मुस्कान को दबाया । साखी हँस पड़ी । बोली देखा ? राजा का बैन नहीं है छवार जेबा है ।

निष्ठी बूसा ठामकर उस पर झपटी घीर रुक गई । कहा ‘तुम बहुत बुरी हो ।

बोली अपने अपनी बखियाँ सिये हुये घाबन में घा गई । घटल भुगिया रङ्ग के कपड़ों की एक पोटाणी निचे हुये बाहर से आया । वह अपनी समस्त मरी मुस्कानों को सँभाल ही नहीं पा रहा था ।

बोला ‘सिंकार में जाल कपड़े नहीं पहिने जाते । राजा ने ये मेरे हैं । पहिनो इन्हें कस्ती ।

निष्ठी ने बिना किसी मुस्कान के कहा ‘अभी तक तो मैंने जाल कपड़े पहिने ही सिंकार खेती हैं ।

‘अब इन्हें पहिनो नहीं तो राजा को बुरा लगेगा । साखी हँसती हुई बोली ।

घटल ने पोटाणी बोली । अच्छे बुनाव की दो बोटियाँ ली छोटे-छोटे मझासे घीर एक लम्बा कुर्ता ।

घटस ने कहा 'बोटियां तुम्हारे लिए हैं कृता मेरे लिये ।

घटस ने कृता पहिन लिया । निम्नी और मात्ता नर में जाकर
बोटियां पहिनने लगीं ।

मात्ता बोली, 'राजा ने मृगिया रंग की बोलो क्यों नहीं मेरी ?

निम्नी की दाहि पर बरा सा लाल आया । फिर हँस पड़ी ।

'राजा बोली पहिनता होता तो भेज देता ।' निम्नी ने कहा ।

ब दोनों नये कपड़े पहिनकर घटस के सामने आबई ।

घटस बोला भब बचीं ! और देखो मैं भी ठीक रहा ।

निम्नी ने मुँहासे को उतार कर हाथ में के लिया ।

'अच्छ नहीं लगता । उसने कहा ।

'क्यों नहीं लगेगा ? मात्ता बोली 'पुरुषों का सा काम करने बचीं
तो पुरुष जैसा बनना पड़ेगा । रक्खो मुँहासा सिर पर ।

निम्नी ने बैसे ही रस लिया । घारसी भी नहीं जिममें अपने बेहरे
मोहरे को देखती । उल्टा पुल्टा इल्लर-विल्लर सा हो गया । कैशों की
एक लट आगे झँक उठी एक दो कानों पर लटक आई ।

बे दोनों नये कपड़े पहिनकर घटस के साथ मन्दिर जा पहुँची । वहाँ
से निम्नी उन तीनों को बरफ से ओढ़ी दूर राजा के चिदिर के पास
के गया । राजा बस पहने के लिये तैयार था । हाँफ करने वाले अपने
ठिकानों के लिये पहुँचे ही जा चुके थे ।

राजा ने उन दोनों की बेध-भूषा को उत्सुकता के साथ देखा । निम्नी
के मुँहासे पर आँस का घटकी । निम्नी ने एक बार आँख जठाकर मोची
करती । दूधरी बिछा में फेरकर देखने लगी ।

राजा ने पूछा 'बोढ़े पर बड़ना जानती हो ?

'नहीं । उत्तर मिला ।

घण्टा बजो । मैं भी पैदल ही चर्भूना ।

निम्नी साखी की घीर देखने लगी ।

दे सब जङ्गल में लगान के लिये चल पड़े ।

जने पहाड़ी जङ्गल के एक ठीर पर मानसिंह अपने कुछ साथियों सहित रुक गया । मार्गदर्शक साथ था । लगान कहाँ कहाँ है किसीको कहाँ बैठना है सीधे निश्चित हो गया ।

मानसिंह ने मार्ग प्रदर्शक से कहा 'इन दोनों को मेरे निकट बाँधे मचान पर बिठसा दो ।

घरल के लिये जी स्थान तै हो गया था ।

निम्नी बोली 'सब ठीर मेरे देखे हुये हैं ।

'सारा जंगल । मैं नसिंह ने मुस्कण्ड के साथ मार्गदर्शक प्रकट किया । साखी ने कहा 'हाँ महाराज ।

'तो भी —मानसिंह ने मार्गदर्शक को छद्मेत किया 'तुम इनको मचान पर सुरक्षित बिठसा देना ।

दे दोनों मार्गदर्शक के साथ जाती गई । मानसिंह अपने मचान पर जा बैठा । घीर बीच अपने अपने लगान पर छतर्कता के साथ जा स्वे ।

जब निम्नी घीर साखी निवृत्त स्थान पर पहुँची मार्गदर्शक ने मचान पर बह जाने के लिये संकेत किया ।

निम्नी ने झुसफुन स्वर में अस्वीकार किया 'मचान पर नहीं बैठेंगी । यहाँ से तीर के लिये निशाना घण्टा नहीं बैठना ।

'राजा की आज्ञा है ।

राजा की आज्ञा से ही तो बाहर घीर करना बिच कर मिर नहीं पायेगा ।

'भीचे प्राणों की जोखो है ।

चिन्ता मत करो । तुम बाबो ।

‘यबा अद होने ।

किससे ? मुझसे ? चिन्ता मत करो ।

तुम सोचों से नहीं मरू से । बाऊत में पड़ जाऊंगा ।

‘डरो मत । बले बाघो किसी पेड़ पर । हँकाई होने बाजी होपी ।

मार्ने-बर्छक अपना माया टटोबता हुआ बना गया और बोझी दूर एक बड़े झाड़ू पर पड़ गया ।

‘अब ? काबो ने धीरे से पूछा ।

निध्नी ने उत्तर दिया ‘यह पेड़ झाड़ू के लिये बहुत घण्टा है । बलियाँ इससे टिकावो । कमान के ऊपर तीर बढालो । तरकस में दो दो तीन तीन छटपट निकाल देने के लिये तैयार रहवो । एक चिन्ता में मँह करके तुम लड़ी हो बाबो घुसरी में मैं । धाड़ें-भोटें घण्टी है ही । जानवर अब बहुत निष्ठ मा आवेयः तब कहीं देख पावेय ।

‘वैसे धाव कुछ निकलता है हाँ में से या नहीं ।

‘अवश्य निकलेगा । कई दिन से हम लोय खंगल में पाई नहीं हैं । उस पर हो रही है बड़ी खारी हँकाई । चिकार की कमी रह ही नहीं सकती ।

‘बह मुनो क्या बज रहा है ?

‘हीठा धुक हो गया है । सवेत हो बाबो ।

दूर से डोम की घावाज सुनाई पड़ी । दोनों सतर्क हो गई ।

हाकि वालों ने फाँड़ी दूरी से बज्जस को बेरकर हँकाई की । हाँकने वालों की संख्या बड़ी थी इसलिये एक बड़े लैन के पहाड़ और झाड़ू को डङ्ग से बेरने में सुविधा रही ।

सबान दूर दूर तक लने लये वे धीरे इतने बोड़-भोटें घण्टर पर कि छोटा सा भी जानवर निकले तो दिल् बाव ।

गाह्र मासु मरने सेबुये सुधर इत्थादि समी भयकर पशु डोमों
घोर रमयुनों की तुमुल ध्वनि के कारण अपने अपने ठियों पर सुम्ब हो
होकर हिले हुये घोर हूँकैय वहाँ वहाँ होकर उनको निकाल के जागा
बाइते ये निकालन लव ।

निम्नी घोर लासी के निकट से सब से पहले मोरें मरभराठी हुई
निकली फिर लोमड़ी । इसके अनन्तर कुछ समय तक कुछ नहीं आया ।
हूँकने वालों के बाजों घोर हस्के-मुल्के का शब्द एक बड़ा बेच हासता
हुया सा बीरे बीरे निकट आता हुया सुनाई पड़ा था । कमी किसी
दिशा में अधिक सिमटा हुया कमी किसी में बिखरा हुया सा ।

एक दिशा से गाह्र के पर्यने की आवाज सुनाई थी । लासी ने
बहुत से निम्नी का हाथ कोंब कर संकेत किया । निम्नी ने संकेत से ही
उसको बचाव दिया—तैवार हूँ ।

गाह्र दूर जाके किसी लगान से निकला था । उसको तीर लगा घोर
बहु आलस होकर झाड़ी में जा पड़ा । उसका पर्यन वहाँ से आरहा था ।

यकयक लासी के सामने से बड़बड़ाहट की आहट आई । निम्नी ने
मुड़कर देखा । दोनों ने कमानों पर तीर चढ़ा दिये । बड़े-बड़ चीतलों
का एक झुण्ड आया । निम्नी ने तीर चलाने का नियोज किया । चीतल
मायते हुये निकल पडे ।

क्यों ? लासी ने बीरे से पूछा ।

बहुत दूर नहीं । गाह्र का मरने पर । निम्नी ने बीरे से उत्तर
दिया ।

हूँका होता जाता आ रहा था । थोड़ी देर तक उनके पास से कुछ
नहीं निकला—सिवाय दो तीन बल-बिलावों के ।

बल-बिलावों के पीछे फिर बड़बड़ाहट का शब्द हुया । उन दोनों ने
फिर तीर चढ़ाये । धक्की बार सामरों का झुण्ड था । निम्नी ने फिर
लगा कर दिया —

‘इन पर भी नहीं ।

साँधरों का मूँछ भाम गया । दूसरी दिशा के किसी सवान वाले ने उस मूँछ पर तीर चलाया । बिरने की धमाक भाई ।

‘यदि घब कोई न आया तो निराला लगाने को कुछ भी नहीं मिलेगा । नाखी ने बीमे धुस्व स्वर में कहा ।

निम्नी चुप रही ।

किसी घोर लगान से फिर गरज सुनाई पड़ी । निम्नी ने सोचा ‘यह तेंबुवे की बोसी हो सकती है ।

बोड़ी बैर तक सन लोगों के सामने या निष्ट से कुछ भी नहीं निकला । कमानों पर तीर सुनियामे हुये बिलम्ब हो गया । कम्बों में दका बट घोर पीड़ा कवक देने लगी । हाथ नीचे करके सुस्ताने लगी ।

उसी समय निम्नी को अपने सामने की झाड़ी के पीछे पत्तों के पबने की बुरबुरहट सुनाई पड़ी । झाड़ी के गंधके में होकर घाँस बढ़ाई । परछाहीं सी लाग पड़ी । परन्तु साक नहीं दिखलाई पड़ा ।

भानसिंह के सवान की दिशा से किसी जामबर के बिरने घोर बुरों को हमेटने फटने की धमाक भाई ।

निम्नी के सामने वाली झाड़ी के पीछे से एक बड़ी हुई छोटी हुँकार सुनाई पड़ी । निम्नी ने डोरी पर तीर चढ़ लिया । नाखी ने भी मुड़कर देखा ।

एक लण्ड कपरास ही पूरी लम्बाई चौड़ाई वाला बर-बुर नाहर भानसिंह के सवान की दिशा में गरज जरा सी मोड़ कर देखते हुये धावा दिखलाई पड़ा । निम्नी ने तुरन्त नर्न का निशाना बाँधा घीर पूरी शक्ति के साथ डोरी को खींचकर तीर छोड़ दिया । अभिसम्भ दूसरा चढ़ा लिया ।

नाहर की नर्न में तीर बल गया । नाहर ने तड़प घीर हुँकार के साथ ऊपर को उछाट मरी घीर जिस तीर से उछटा या उसी पर पिर कर अपने बड़े नाकूनो से भरती खोद-कादकर मूल उड़ाने लगा । तीरस

हुंकारें तो निकाल ही रहा था। लाली उस पर तीर छोड़ना चाहती थी। निश्री ने रोक दिया। नाहर धर्मिय ससिं कैने सवा। लाली ने हर्षोमय होकर निश्री के सटे हुये वपोज की बन्नी कैने के सिये हान बढ़ावा परन्तु हाथ इतना कांप रहा था कि चुन्नी में गले के ऊपर का ही कपड़ा बका पाया।

मानसिंह ने अपने मकान पर से नाहर की सभी हुंकारों को सुना। उसने मुझ पर तीर बलाया था। वह घर चुका था। मानसिंह मकान पर से उतर कर यहाँ धाना चाहता था परन्तु उसको बिस्वास था कि निश्री और लाली का मकान पेड़ की इतनी ऊँचाई पर बँपा होमा कि वे सड़क में पड़ ही नहीं सकती।

बोड़ी देर बाद नाहर समाप्त हो गया। हाँका बढता था रहा था।

लाली के सामने कुछ दूरी से लकड़ खीर खोर की छाँव का छम्ब मुनाई पड़ा। लाली तयार हो गई। नाहर पर एक वृष्टि बालकर निश्री ने भी मुककर तीर लँका। कमाल पर तीर बढाया ही था कि एक बड़ा पूरा घरना मँसा फुसकारें मारता हुआ सामने से छोटे छोटे झाड़ी को रौंदा कुचलता था गया। लाली ने छिर का निघाना डकर तीर छोड़ा कोई दूसरा निघाना गीक बैठता ही नहीं था। तीर घरने के माथ पर बड़ा धीर पोड़ा था बस गया। घरने न दोनों को देख लिया। मरता।

अब एक लाली दूसरा तीर बलाव निश्री ने घरने के मस्तक के बीचोंबीच का निघाना डेकर तीर छोड़ दिया। तीर अपने निघाने पर तो गया परन्तु इतनी जल्दी में बमावा गया था कि पूरी ध्वनि का डेकर न छूट सका। लाली की ऊपरी हड्डी की एक तह को हो फोड़ सका। ठठ कर रह गया। घरने ने खोर की डिङ्कार लगाई खोर खनकी घोर वृद्ध उठावे हुये धावा। लाली ने दूसरा तीर छोड़ा। तीर ने उसके नखने को ही फोड़ पाया। घरना बोझा सा हिचका। परन्तु धमर इतना कम रह

मया वा किं तरकस में से तीर निकाल कर प्रत्यङ्ग पर बड़ी बढ़ाया
वा मकड़ा वा । धरने की बड़ी-बड़ी साल धाँसों से बङ्गारे से छूट रहे न
धीर फुटकर में से फेंग उड़ रहा वा ।

निम्नी ने कमान को एक धीरे फेरकर बर्छी उठाई धीर धरन की
दिशा में सीधी की ही थी कि वह लपका । निम्नी पेड़ से एक पय साम
बढ़ धाई । बाबा ने बस्रम में कमान की डोरी पर तीर बढ़ाया परन्तु
छोब नहीं पाया ।

धिर को थोड़ा सा नीचा किये हुये उन दोनों को अपने माथे धीर
सीधों की बटु से पीसकर फेंक देने के लिये धरना धीर बढ़ा । उन दोनों
का कबुतर निकलने के लिये एक क्षण ही धीर रह गया वा कि निम्नी
ने धुरे बस धीर बैग के साथ धरने के माथे पर बर्छी ठोक दी । बर्छी
तीर के कुछ ऊपर जाकर गनी । धरना उभेला के साथ बढ़ना बला
घाया । निम्नी एक हाथ से बर्छी की डाँड़ को पकड़े रही धीर पेड़ के
ऊन में थोड़ी सी बसल काट गई । धरना धाई हुई बर्छी समेत पेड़ से
जा टकराया । निम्नी के हाथ से बर्छी छूट गई । मूठ पेड़ के तने पर
घर गई ।

धरन के अपने ही बक्के से बर्छी का फल माथे की हड्डियों को तोड़ता
थोड़ता धीर भी घस गया । निम्नी लज्जत कर पीछे हट गई । उसने
धरना द्वारा निकाल दिया । साली ने तीर कमान की फर कर अपनी
बर्छी उठाई धीर धरन पर हुलसा बाढ़ती थी कि धरना लज्जत कर
धिर पड़ा चौपर हो गया । धिर हिलाने लगा और बस्ती-बस्ती फूटने
लगा । उसका बक्कर वा रहा वा । परन्तु वह मरा नहीं वा ।

निम्नी न उसकी बर्छी को निशाना ठाककर धुरे को फका । वह
झार से निकल गया । लप से धरने की बस्रम में जा गिरा । साली न
धुरी धाँस के साथ उसकी कौल पर बर्छी चलाई परन्तु मरना मर
बढ़ाते परों भी उठ नड़ा हुआ धीर बर्छी एक टाँग को झीमनी हुँ भरती

में बस गई। बूढ़ साखी के हाथ से सटक गई। साखी अपने छुरे को निकाल कर पीछे हटी। उस छुरे के सिवाय उन दोनों के हाथ में अब और कोई हथियार न था। घातुरता में फंके हुये तीर कमानों को उठाने के लिये बाँध में बाधा दाख भी नहीं था। निभी को केवल एक उपाय सूझा।

उसने दबल कर अपनी घोर वाले एक सींग को दोनों हाथों से पकड़ कर धरने को प्रणवद बेग के साथ बलका दिया। धरना मुड़ गया रिज गया घोर बम्ब से बिर गया। निभी भी उसके सींग को पकड़े हुये उस पर बिरो परम्पु तुरन्त सम्मन गई। उसका छोटा सा भूमिया मुड़ाता झटके के साथ कुलकर धरने पर जा बिरा—एक घोर धरने पर, बाकी बचती पर।

पीछे से मानसिंह के मचान की तरफ से किसी के चीड़कर जाने की आवाज आई। निभी धरने को छोड़कर पीछे हटी कि नज़्मी उसबार लिये हुये मानसिंह को घाते बेका। मानसिंह ने उसकी झट घोर धरने के भरजरा कर निरने का दुस्व कुछ दूर से देख लिया था। वह धरने की झड़कर कुलकर मचान से उबर आया था।

धरना फनी हुई बाँधों पलितम फुफकारे के रहा था। कुछ ही दूरी पर नाहर मरा हुआ पड़ा था।

मानसिंह ने मरते हुये धरने पर उसबार सवारी परम्पु बलाई नहीं। बीरे से बोला 'मर रहा है।

नाहर की घोर बाँध फेरी। बीरे-बीरे उसके निष्ट गया। निभी घोर साखी ने अपने-अपने तीर कमान उठा लिये। पैर से झटकर घा लगी हुई। धरना बुरी तरफ था।

मानसिंह ने नाहर का बारीकी के साथ निरीक्षण किया। नाहर ने केवल एक तीर आया था। घातघर्ष के साथ उन दोनों के पास लोग। उनके सामने बड़ा ही गया।

निभी उसकी घोर धमकी तरह देखकर बुरी ओर हेतने लगी।
लासी की दृष्टि कभी धरने पर और कभी जंघन की दिशा में जाने
लगी। धमो ह्रीका समाप्त नहीं हुआ था।

राजा ने पूछा 'गाहर की धरन पर किसका तौर बैठा ?
निभी न सिर झका लिया। लासी ने तुरन्त धायने होकर उत्तर

दिया निभ—सुगनयनी का।

राजा ने बुरा प्रश्न किया—'धरने के माथे पर कहीं किसकी खोसी
टूई है ?
लासी बोली सुगनयनी की।

'आह ! बम्ब हो ॥ तुम दोनों बम्ब हो ॥' धानसिंह के मुँह से
निकला घोर असन धमन मसे से सोने का रत्नवटित झर निकलकर
निभी के मन में डाल दिया। निभी मुँह खेरकर पेड़ की छास को
जंघनियों से कुदेवने लगी।

धानसिंह न जागते हुने स्वर में बीरे-बीरे कहा 'सुगनयनी सुगनयनी
साहस नहीं होता संकोच समता है परन्तु कहे बिना नहीं रहा जाता।
क्या तुमको ध्याह में पा सकता हूँ ? क्या धमनी बम्ब-संयिनी बना
सकता हूँ ?

लासी अत्यन्त कठिनाई से धपने हूबन की बहकन को दबाकर
बामने धाई। निभी पेड़ की छास को घीर धी बत्ती-बत्ती बरोबने-
कुदेवने लगी।

लासी बोली यह तो इनके धाई बतला सकते हैं।

'उनसे भी पूर्णतः परन्तु पहले इनके मन की भी तो जाग नूँ।
राजा न कहा।

निभी बांधी। लासी इसारे को समझ गई। उससे सटकर कड़ी
हो गई।

निध्री ने धीरे से कहा 'गरीबों का धीर बड़ों का जम-अंय नैसा ?

मानसिंह ने सुन लिया । उसे सुनाने के लिये ही कहा गया था ।

मानसिंह बाला 'आदि काल में सबके पुरखे गरीब ही थे । अपने सीने से बड़े । सीने में तुम मुझसे कम नहीं हो ।

बड़े लोग कहते कुछ धीर हैं, करते कुछ धीर हैं ऐसा सुना है कहा कहानियों में उसी ओर से निध्री ने कहा । मानसिंह ने सोचा हमने गल्लुगला की कहानी कही सुनी है ।

बोला 'तुम्हारे बिये तुम उस फूल को पकड़ी म खोस लिया था । अब भी वहीं बाँधे हैं धीर सदा वहीं रहेगा । रंया-रमुना की सीपख लाता हूँ कि अगम-संदिनी रहोमी । मानसिंह का स्वर काँप-काँप जा रहा था ।

निध्री ने क्षीण स्वर में प्रतिवाद किया 'सीपख मत चाहते ।

तो कहो क्या कहती हो मुन्गरी ? राजा ने हठ किया ।

मैं राजाघों की भाषा नहीं जानती । निध्री ने उत्तर दिया ।

साखी-अकलक बोली 'तुम भ्रात्री के पीछे मेरे पीर बने गये थे । बूढ़ साठें । धीर भ्रात्री की पीर भागी ।

'ठहर जा वहीं जाती है साखी ? पीर तो सब वहीं है ! निध्री ने कोमल स्वर में रोका । जाती नहीं मानी ।

राजा ने अपना हाथ बढ़ाया कहा —'इस भाषा को सतार भर समझता हूँ । अपना हाथ मेरे हाथ में दो । यदन माड़े तुमने कनखियों से छत तुमने बढ़ाकर कलेजे और मर्झस्मित के माथ निध्री ने अपना बाँपना हुआ मुल मरा हाथ उसके हाथ में दे दिया ।

बोली 'मैं नहीं जानती क्या कर रही हूँ । मेरी पत रचना ।

मानसिंह ने तुरन्त कहा 'परमात्मा मेरा साखी है तुम जरा मेरे हृदय की रानी धीर जीवन की सीमा रहोगी । समझ गई ?

'समझ गई । बहुत धीरे से उसके मुँह से निकला ।
'क्या कहा ?

आज्ञा का पालन कहेगी ।

'मेरी तरफ देखो ।

'आली उस झाड़ी के पीछे झाँक रही होगी

निम्नी ने अपना हाथ उसके हाथ से छुटा लिया । छुटते समय वंसी
... जो उसको घोर देखा । मानसिंह के नेत्रों से आमा-सी बिजल चली गई ।
बहु आमा उन घीसो घीसों में समा गई ।

मानसिंह बिस्माया — 'आमा रानी जो इधर जायागी । तीर मिल
पड़े होंगे सब एक ही ।

बहु झाड़ी के पीछे से इसरी हुई बोली 'सब मिल पड़े । ध्यान समझ
मिल पय । घोर ठसी को पदेसी से बाँधे हुये थावई ।

मानसिंह ने कहा 'बड़ी है तीर ? हाथ में तो एक भी नहीं ।
'जहाँ रहते हैं वहाँ है । उसम निम्नी की धीरे देखते हुये व्यक्त

क्रिया ।
'गुम्हारी मना बिकट है । मानसिंह हँसते हुये बोला ।

आमा ने मुँह फेर कर पूछा 'महाराज जबतक ठहरेंगे इन पथ में ?

'जब चाहो सब चला जाऊँ ।

'बाह । घसी तो इस जङ्गल में बहुत शिकार है ।

'जीवन का सब कष्ट पा लिया । तुम सब मेरे साथ आलियर बनो ।
'एसे ?

निम्नी मुँह करे हुये बोली 'मुना है आलियर में अस का बडा
कष्ट है ।
सब तो बुये स्वप्न हो गय ह । कोई कष्ट नहीं है ।' मानसिंह ने

कहा ।

घरने ने टीरों पसारीं श्रीर ममाप्य हो गया । मानसिंह ने उसके पास जाकर देखा ।

तुमने अपने हाथों इसके सींग मोड़े और बिरा दिया । घरना बहुत नारी है !! उसने धारधर्म प्रकट किया ।

कीमल पीमे स्वर में निन्नी बोली 'अच्छो स्मरण ही नहीं गया हुआ और कैसे हुआ ।

राजा ने मुस्कुराकर पूछा, 'इतना बस तुम में कहाँ से आया ?

बीचा सिर किये हुये मुस्कान के साथ उसने कहा

'राई की नदी के पानी से । हम लोगो की गंठ में और हैं ही क्या ?'

'राई पाँव तुमको बहुत प्यारा है ?

बहुत । घाँवों में बसा रहता हूँ ।

आलिवर के किले में ठामा है । उसके पानी को देखना ।

'मे अपनी नदी के बिना नहीं रह सकती ।

'तो आलिवर के किले को यहाँ उठा ले आना ।

'ठीक को ही है जलिये वहाँ ।

'कैसे ?

'राजा की क्या पाँव के लोप यह भी बतलावें ?'

पाँव के लोपों को नहीं राजा की रानी को बतलाना होता ।

'तो नहर काटकर से जाइये किले तक । मैं तो इसी का पानी पियूँगी ।

'ये आठेना । बचन देता हूँ ।

'कब तक ?'

'काय का धारम्य तुरन्त करना हुआ । बस वा कुछ और ?'

'मे आलिवर में जाकर नहीं गयी कभी ।

मत करना । कुछ धीर ?

धीर कुछ नहीं ।

हाँके बाँधे पाँच घा वये । उनसे पहले पद से उतर कर मार्ग-दशक
डरता-डरता घा गया ।

जसम लया मार्गना की — 'यद्वाप्यत्र सप्तवक्त्रा मण्डको लया निजे ।
मने बहुत कहा कि मन्वान पर जमो जाओ पर य मही माली ।

निमी ने समर्पण किया हाँ हृष बोधा ने हठ किया मन्वान पर
नहीं बँटी ।

मानसिह हँसकर बोला 'धीर उध हठ का फल यह सामने है धीर
बह नाहर उबर पड़ा हुआ है ।

हाँके बाँधे घा वये । उन लोगों ने घरने धीर नाहर को देखा ।
निमी के यत्ने में रत्न-जटित स्वर्ग-माला को देखकर समझ गये कि
किन्हे पराक्रम का परिणाम है ।

राजा ने पयड़ी में से मोटियों की माला खाली धीर जाबो के मन
में डाल दी ।

कहा 'तुम भी बहुत धीर हो ।

चोड़ी सी ही देर बाद वहाँ धीर चिकारी भी घा वये ।

जिस दिग्गज को कुछ किया धीर को नहीं कर पाया उसको जवा
होने लगी । राजा ने एक सिसारे सुघर को मारा था ।

घटन भी का गया । उसके हाथ कुछ नहीं सका था । घरने नाहर
धीर उन दोनों के यत्ने में मालाओं को देखकर बह पूना यही जमा
रहा था ।

उस स्त्री की आँखें सबल हो गई थीं कण्ठ मद्धम् । बोली 'हमारे भिमे तो बड़ी नेती पाती होरी की रज माग मङ्ग जूम का ताना । तुम गुनी रहो । हमको इसी में सुप्त है ।

साक्षी ने पिनसकर कहा अभी कोई बात ऐसी ही तो नहीं हुई है काफ़ी । हो जाने तो क्या कहना है !

स्त्री न घाँसू पोंछकर यथा साध किया । बोली 'यही माग के मागस जस उठे है सा कहने आई हूँ ।

निम्नी ने हाड़ लिया कि यही सबसे अधिक अभी होमी थीर धन धनतापन समटने धा गई है ।

बहु स्त्री कहती गई,—एक कहती थी निपुती कि निम्नी रानी बनकर बाल बजायेगी थीर लाली बेरी बनकर निम्नी की पीक को मदेसी पर मेरी थीर राजा की सेव को बिछाया उठाया करेगी मुम्बर सत्तीनी है न ।

निम्नी का चेहरा लाल हा गया थीर लाली का एक ।

निम्नी ने समककर पूछा किसने कहा ?

बहु स्त्री पाँव पड़ती हुई बोली 'जनाधु यो कभी । धमी नहीं । गाँव में रहना जो है । मे सब मूल लँगो ता मेरा मुह काला कर दिया जायेगा थीर बाट में से निकाल भी जाऊँगी । हा हा पाती हूँ धमी न पूछो । मे सब धाने वाली ही हावी । उन्हें मानूम न होने पावे कि वेने कुछ बत साया है । राम ! राम !! मेरी भीम कष्ट जाव कैंने निकल गई मुह से यह बात ।

वे बोली टक्की पड़कर सोचने लगी ।

साक्षी ने कहा 'काफ़ी तुम बड़ी भली हो । हमकी क्या पड़ी को ऐसी बुरी बात को पीसाती फिर । इसमें तो हमारी ही माग कटेची ।

उसी समय कुछ थीर स्थिती आई जिनके चेहरों पर मस्कारों की थीर घालों में छिपी हुई थी । उनके पीछे से आसन्न मान प्रगल धा गया ।

घाते ही जाता 'व्याह का मुहूर्त—निभी के साथ महापत्र के व्याह का मुहूर्त—नरनों के लिये घोषा है पुजारी बाबा ने । हमारी गीठ में तो कुछ नहीं है पर गोब बालों की कृपा से बार लव बायें ।

स्त्रियों में एक बुद्धिवा भी पाई थी । वह सबसे अधिक प्रसन्न थी ।

बुद्धिमा ने कहा 'पमा बहुत बड़े । बंयल साथ सजाओ दो । इनक पर में कोई बड़ी-बुड़ी नहीं है । हमी सोमों की तो नेगचार करने पड़ेंगे । अमी मे पाओ कुछ ।

इस बुद्धिमा के स्वर में निभी की उचाई का धावाह मिला । स्त्रियों मन्त्रधार गल लयी । बोड़ी देर बाद अमीर घटल में टोका —वह सब पीछे करती रहना । बहोसे यह बनलाओ कि करना क्या क्या है । एक ही दिन तो बीच में है ।

बुद्धिमा समेत कुछ स्त्रियों न बो बोजना बनलाई उसके लिये धन्य क पर में बन का सोचो भाव भी नहीं बा ।

परन्तु उसने वक्ता के साथ कहा 'हुवायी डॉय में हरे पत्ते मन्त्रिर में कुछ कुछ धीर वर में बोड़ी सी हसरी है । हुम्मी से निभी के हाथ पीके कर हुंवा पूरा राजा पर बड़ा हुंवा और डॉय के पत्तों से मन्त्रिर मन्दनवार और द्वार की घोषा सजा हुंवा । पमा से कुछ नहीं सुंगा बनने पुरबों की नाक रक्खुंवा ।

एक स्त्री बोली, 'सोमरीं धीर नूत्रों में व्याह सम्बन्ध होता है ?

धन्य ने उत्तर दिया, 'ही होता है—हुंवा है । पुजारी बाबा ने बतनामा है । जहाँ ने तो घोषा है मुहूर्त और में ही व्याह को पड़ेंगे ।

'ही राजा है । लव कर लवठे ह । डीक है । स्त्री बहकर वुर हो न धीर गुरम्ह व्याह का एक गीत गाव लयी ।

निभी और लाची की वे स्त्रियाँ बोड़ी देर बाद बार खसल जान गयी । वर ने बहो से नहीं टली । बाव में लिये लिये स्त्रियों का मन लगा

विधोबद्धर घमनीय पीछों में—बैसे—बैसे सगकी जलन और उन बोंनों की कटुता कहीं बचकर जा बैठी ।

मठल जल्लस के ऊपादानों से जपने भर घीर घाघपास के घबबाइों को सजाने के लिये कुम्हाड़ी लेकर बाहर बसा गया । बाँध की सिमरी शायद सामग्री से धाने वाले विवाह विषय की तैयारी करने लगी ।

मिच्री के पान की पीक घपनी बहेली पर सूँधी । राजा की सेज की बेटी झूँधी !! लाली के यममें बब बचकर छठ-छठ रहा बा । फिर भी वह मिच्री के घबिज से मुच्री ली ।

[२६]

राजा ने स्वाभियर से विजयवज्रम को बुलाकर अपना पुरोहित बनाया—उसका मीकसी पुरोहित भी थाया। सड़की के पक्ष का पुरोहित बोधन पुजारी बना। अटन ने अपनी डाँव के पत्तों से बर-डार को सजाया। बाँव बाँधों ने भी साज सजाये। राजा की ओर से काफ़ी भूमि बाम की गई। बाँधी के हठ पर अटन ने अपनी एकमात्र माय बँव छोड़ने के नेत्र में दान की। राजा ने दान लेते समय कहा 'इस गाय का संसार में मूल्य ही नहीं थाका जा सकता।

निन्नी श्राव से मृगनयनी—को इतने बहुमूल्य वस्त्रासकारों का बकाव बकाया गया कि उसका शरीर बुझने लगा।

विवा के समय मृगनयनी साक्षी से लिपट कर इसना रोई कि यमा बैठ गया और बाँधी छो मनेठ हो जाने पर ही थागई।

मे तुम्हें स्वाभियर बुला मूनी' निन्नी ने कहा।

हितक्रिया कैसी हुई बाँधी बोली 'देखा जायदा। एक बीछ धु यमा चिच हाव पर पीक केने बाँधी दामी का—माँधों के भीतर कोंबकर तुरन्त विरोहित होयदा।

मृगनयनी राजसी लकारी में बँठी हुई जा रही थी। जब तक साँक नबी और सुपरिचित डाँव-दू मर दिखसाई पड़े तब धामू पोंध-पोंधकर देखती रही। राजा न बाँव छोड़ने के पहले बाँव मर का एक छान का बबान त्याग करने की घोषणा की और साँक नबी हैं स्वाभियर तक नहर काटकर के जाने का काम जारी करता दिया। इसको भी मृगनयनी न देखा। बहुत मंगुष्ट हुई।

स्वाभियर पहुँचते ही उसको स्वायत्त के प्रदर्शनों का लूकान चरित करने लगा। बाँवे मायन नगर की सभ्यता धूमों और बागों की बरसा ओरस बन्दनकारी की मुरमुटे भारतीयों बबजयकारके हस्ते ने तों उसको

हैरान ही कर दिया। सोचती थी राजा क्या सबकुछ भयमान का प्रबतार होता है ? या क्या वह पूर्व-जन्म का योधी होता है ? योग करने में राम मिलता है ? बोनी कौन होता है ? क्या करता है ? किसी समय राजा से पूछ ली। माखी साज में होती तो वह सब देखकर क्या कहती ? मुझको बार-बार तज्ञ करती। किन्तु मैं पच्छी हूँ वह ! अब बसका व्याह भैया के साथ हो जायगा। अब पाँच बाले भी-बपड़ नहीं करेगा। किसी समय उसको बुलाऊँगी। मृगनयनी सोच रही थी।

राजा का जुलूस दकते-दकते धीरे-धीरे किले में पहुँचा। फाटक से होकर ऊपर का मार्ग छाड़ियों पर से गया था इसलिए सवारी ऊपरी परकोटे के भीतर बाले भवन में ढेर से पहुँच पाई। ऊपर पहुँच कर मृगनयनी ने किले की पहाड़ी के छतवर्ती ऊँचे हुये मैदान को मानसा के साथ देखा। मूर्खास्त होने में थोड़ा सा ही विमग्न था। विस्तृत क्षेत्र की चँबाई-निचाई पर सम्प्रा की मनुहारी किरछें लहर रही थीं। एक पहाड़ी की उत्तमका से जूँ की ऊँची-मतसी रेखाएँ ला रही थी। बड़ा कोई छोटी ही नहीं होगी। किनारे पर कोई छोटा सा गाँव। डोर सुरी से बून उड़ाते हुये नाव को बले घारहे होंगे। पाँच में रोटी बनाने की तैयारी हो रही होगी। बाय के बिये बच्छा रँगा रूदा होना। पाय हँसती हुई कर की घोर बीड़ी बली था रही होगी। जरे नहीं ! वह तो हाग में बच्छे समत मेरे साथ पाई है। कहाँ है वह ? वह तो नीचे ही रह गई होगी। किसने बोधी होगी ? किसने उसकी दर्दन पर हाग फेरा हुआ ? क्या मैं बस प्यारी गाँव को नहीं देख पाऊँगी ?

मृगनयनी भवन के भीतर पहुँची। बाब-बासियों की मनुहारें पर मनुहारें बरस उठीं। जरे तो क्या मैं बोधी ढेर के बिये भी पकेली न जा पाऊँगी ?

नैबवार के बाब पाय-बसायनी इसदुआवि सत्कार की सामग्री नाग प्रकार के भावन सिर धुकाये हुये बासियों स्वच्छ बामु के लिये भवन में

लिवनियाँ। बैठने के समय कालीग मसनव तकिये सेटने के लिये मसनवो यह का चाँदी की पलियों बना पसज्ज।

बहु मसान बहु चाँदनी रात जिसमें लहराते हुये मनाज का सैठ जैसे किसी सलक के साथ बात करना चाहता हो धीमे धीमे की बोलियाँ बरत में रखता हुआ अनुप-बाण लाली की ठोती नया सब सारा के लिये हाव से कन्क धरे ? क्या में का लही सऊँपी ? क्या यही बल होकर रहना पड़ेगा ? महाराज ने बचन दिया था कि पर्व में नहीं रहोमी ! वह निमार्थने धर्मय निमार्थेय। नहर की लुवाई का धारम्य लहने किन्तो लम्बी कर दिया। पर बाहर थी निम्ननी तो सबेरे कहाँ जाऊँगी ?

निमी ने भरोस के बाहर बुष्टि डाली। मनचाहा कि उठे धीरे फीक कर देखें। ये खोज क्या कहेंगी ? मन में कहेंगी पाँव की नैवार है। सब पड़ी निमी होंगी। मैं थपड़ हूँ। मैं कुछ वा लेखी हूँ पर इन सबने रसों धर्म्यात किया होया। अब रात में सबेरे धीरे धर्म्या समय दियाँ बोलेगी धीरे में माना चाहूँगी तो क्या कोई रोक लेगी ? नहीं भी रोकेगी तो मन में क्या कहेंगी ? इन सबसे धर्म्या या सऊँपी सब कुछ नहीं कह सऊँपी। और ये निमानाबाजी कैसे करती होंगी ? इसमें तो मैं सबको पछाड़ चुकी। महाराज को भी। अपने पति को। वह पति है परम्पु लक्ष्यके तो बिधा है, इसमें हारजीत की क्या बात ?

बचन की बीमारों पर निजकारी थी। मगनमनी का ध्याम उस पर क्या। बहुत बार के साथ देखने लगी। कैसे इनकी बनाया होया ? बिधों में केवल प्राण नहीं है धीरे सब कुछ है। बहुत निमाम है। ऐसा तो कभी नहीं देखा कहीं पहले !!! पाँचों जल्लो में कहाँ रखा है यह सब ? मैं अब अपने पाँव में फिर जाऊँगी सब पक निजकर वह सब लीक कर जाऊँगी। लाली को भी तिलताऊँगी। सऊँपी भीजी सीम मुम्मे। क्या कर रही होगी इस समय मेरी बहुत प्यारी लाली ? किन्तो रोई थी वह ! मेने कभी-कभी उसके साथ बोधा ध्यीहार किया है। अब कभी नहीं

कहेंगी। मृगनयनी की आँखों में एक आँसू आ गया। हासियों न भीषी निवाहों ही देख लिया। सोचा देर तक बैठते रहने के कारण घाँव पीली हो गई होंगी।

मृगनयनी सोचती रही—यह सब सीकमे में म जाने कितने दिन लग जायेंगे वर बत्ती बाँटेंगी बत्ती न आ पाई तो साँकी जोर भाई को बुलवा लूँगी उनके लिये गाँव में घब ऐसा क्या रहता है?

बरात के कमरे से बीणा बजाने की छानि सुनाई पड़ी। मृगनयनी को वह विविध जान पड़ी। समझ तो गई कि कोई बाबा ब्रह्म है। छानि बहुत मीठी लगी। मन को जैसे अपनी बाँठ में बाँधती आ रही हो। एक पड़ी पीछे बायन भी सुनाई पड़ा। ऐसा मायन। ऐसा स्वर।। पहले कभी नहीं सुना था। या किसी पुरुष का ही परन्तु कितना मधुर। बीच-बीच में किसी स्त्री का भी कण्ठस्वर सुनाई पड़ा—बाप की भैंसियों को बझाने वाला सा।

मृगनयनी ने एक बाँसी की ओर प्रसन्नमुख बृष्टि की। बाँसी ने बतलाया—'प्रसन्न पावक बीजू ना रहे है। घाब में उनकी बेसी कसा है।

[२७]

गाँव से राजा और मृगनयनी के बसबस सहित चले जाग के उपरान्त बहुत-बहुत एकदम ठंडी पड़ गई । साखी और घटम को घर सूना-सूना प्रतीत होना लगा । साखी की आँखें सूख गई थीं और घटम की मात हो गई थी । वह साखी को खलियान में ले गया । सन्ध्या तक खलियान में काम करते करते समय काटा । घर आने पर व्यास के उपरान्त घटम मारे बकाबट के सो गया । साखी को भी थोड़ी देर के बाद नींद आ गई ।

दूसरे दिन हाथ-मुँह धोकर खलियान में काम करने के निवे होनों पड़े और बाहर जाया में बैठ पड़े ।

घटम ने चर्चा जलाई,—‘अब हमारा तुम्हारा व्याह भी हो जाना चाहिये ।

साखी ज़रास तो थी ही, उसका चेहरा और भी मिर गया । बोली ‘निजी के बिना कैसे होगा ?

‘उसको बुलायेंगे । वह अवश्य आयगी । रानी हो गई तो क्या होपया बहिन तो मित नहीं गई ।

कब बुलावेंगे ?

‘कल ही । सोचता हूँ अभी मण्डप हर है । इसी के नीचे नाँवर पड़वा सूँवा कल ही ।

क्या हो क्या है तुमको ? कल गई है यहाँ से और कल के दिन सौट घायेंगी वहाँ से ? ऐसा तो गाँवों में भी कही नहीं होता ।

‘तो कब तक बिदा करा देने की रीत है ?

‘बहु स्पात ही कभी धारें यहाँ । इतने बड़े राज की महारानी को हमारी झोपड़ी में राजा और उनके सामन्त नहीं आन देंगे ।

‘कैसे नहीं जाने दये ? कोई नहीं रोक सकता । मैं निशा साझ्या । पुजारी से मुहुर्त सुबहा लूँगा और ग्वालियर को चल दूँगा । वह धायवी घोर उसके सामने इसी मण्डप के नीचे गिर पड़नी ।

‘ग्वालियर जाओ तब मोक्षियों की उस माला को कैसे जाना । गुना है हजारों टुकड़े की है । उसमें से कुछ मोठी बेच जाना । थोड़े से कपड़े कपड़े के जाना । बीच वालों को जाना देना पड़ेगा पुजारी बाबा को बलिदान । उससे बहुत काम चलेगा ।

‘हाँ यह ठीक है । उसकी याद ही नहीं रही कहाँ है माला ?

‘घर में छिपाकर रख दी है । पहिली तो बीच वाले बेसकर चलते बाहर के ओर अपाटे भी ठाक लवाते ।

‘तो मैं पहले पुजारी के पास मुहुर्त सुबहाने के लिये ही जाऊँ । वही घर में लौटकर आता है ।

‘ऐसी कील से बन्दी पड़ी है ?

‘हम दोनों पति-पत्नी की तरह रहना चाहते हैं वह बन्दी पड़ी है ।

‘घटन पुजारी के पास चला गया । घटन की माया थी कि राजा का साक्षा होने के कारण पुजारी धर्मिलम्ह मुहुर्त खोज देगा ।

पुजारी ने घटन के अनुरोध पर तुरन्त नहीं की,—

‘मैं राज्य को छोड़कर परदेश चला जा सकता हूँ परन्तु बर्खाश्त बर्म को लाल नहीं भाए सकता ।

‘घटन उसके लोभी स्वभाव को जानता था । उसने धर्म घोर सहिष्णुता की भाव में रखने का प्रयास किया । बोला ‘महाराज मन्दिर बनवाने के लिये तो यह ही पड़े हैं मैं भी आपकी मनमानी बलिदान दूँगा ।

‘मैं ऐसा नहीं कर सकता । कोई भी बाधण नहीं कर सकता ।

‘तो हमारे छोटे घराने की मकड़ी को छपीस कुटी वाले के साथ क्यों ब्याह दिया ?

‘बहु राजा है । राजा किसी बेबता का अवतार होता है वह कर सकता है । उसको सब मुहाता है । तुम लोच राजा नहीं हो । तुम्हारे बिये मनाई है ।

‘पर हम दोनों ने निश्चय कर लिया है कि क्याह करेंगे ।

‘लासी को तुम्हारा गर्भ है ?’

मूठ, बिलकुल मूठ । हम लोच बभारल की तरह बलिय है ।

‘पञ्जाबन की बराबरी करके पञ्जाबी का सम्मान मत करो । तुम यदि हठ करोगे धीर लासी को रख लोगे तो जाति बाहर कर दिये जाओगे ।

‘हमारी धीर उसकी जाति का नांव में है ही नहीं कोई दूसरा घर ।

‘पांव का कोई धी नर-नारी तुम्हारे हाथ का मर-मृदा पानी नहीं पियेबा तुमको सवेगा तक नहीं बोल जान काम-काज सब बन्द हो जायवा ।

‘परबाह नहीं । मैं लासिबर बसा जाऊँगा ।

जिसमें राजा को भी बुझाओ, सारी प्रजा कहे कि राजा का सारा घरमी है ।

कहीं धीर बसा जाऊँगा पर इस धीर सम्याम को नहीं सहूँगा । पहले राजा के पास जाकर इस सम्याम की बात सुनाऊँगा ।

‘मे दाहम हूँ । राजा मेरा कुछ नहीं कर सकते । कठ जाये तो इस राज्य को छोड़ कर कहीं धीर बसा जाऊँगा । मैं तुम्हारी बचकी में नहीं आ सकता । पारलों को बने पों ही नहीं पड़ा है । जाओ कह दो राजा से ।

घटन धीरे की बोड़ी सी ही देर धारण कर सका था । मनमनाता हुआ बसा था ।

सतिपान में पहुँचे ही उसने कहा ‘पानी लाओ । मुटिया को माँज कर जब घर लाओ ।

लटिया जमिहाम में रखी हुई थी। उसमें कई छोटे-छोटे चूड़ों की दोनियाँ थीं। साखी मुटिया को माँजकर बस भर साईं। बारीकी के साथ उसके बेहरे को परखा। सहम गई।

घटन ने बोले थे बबू थे अपने हाथ बोले घीर मुटिया को बोनों हूँ में से लिया।

बोला 'मेरी बगल में बठ जाती।

साखी को सायबर्ब का यह सब क्या हुआ है। घटन ने ऊपर की घोर धाँसे उठाई। घीर कहा 'हे भवधान में कुम्भीरा हूँ घीर साखी मुमारी है। मैं बङ्गाजी की सीबन्ध बाबर कहता हूँ कि यह जन्म भर मेरी हीकर रहेगी। उसने धाँसे बन्ध करली। हिल उठा। धाँसे से माँस टपक पड़े।

'यह क्या कर रहे हो? गरुड कष्ट से साखी में कहा घीर घटन के माँस अपनी जोगिनियों से पोंछ। घटन ने मुटिया एक घीर रखरी।

बोला 'अपना बाबा हाथ मेरे हाथ में थी। साखी ने हाथ बड़ा दिया, घटन ने अपने में पकड़ लिया।

कहा 'मैं सब के लिये तुम मेरी हुई, बाहे जाति मुझको रखते बाहे निकले बाहे पाँच मुझकी पत्थर मारकर बाँध हैं भया है मेरा तुम्हारा सम्बन्ध कभी नहीं टूटेगा। बोली तुम मेरी हुई?

साखी के जबाब बेहरे पर साखी दीड़ धाई होठों पर मुस्कान धायई घीर रेखाओं में सारे मूल पर आँखों तक बिखर गई।

बोली 'हूँ।'

'मे बाबू ही पाँच भर में कह दूँ या कि हम दोनों का क्या होवया।'

'ये लोग माल बाँटेंगे।'

'न माँगे। हम लोग अपना सामान लेकर खासियर चलेंगे।'

‘रुखानियर नहीं जायेंगे ।

‘क्यों ?

‘घपना निर का कुछ करतब कर दिलावाने सभी रुखानियर जायेंगे ।

‘य समझा नहीं ।

सालो न म योग्य बान के निरुत्तर को सुनाया । घत में रुखा कोई मुक्तो यदि किसी को चेरा ५४ व ५५ मेरी निर मत ही क्यों न हो ता म नहीं सह मर्गो घो न यह सह मर्गो कि तुमका राजा का नाम या रोखियार कह । हय सो १ का मतब न म मजाया में बस दिया है और काम करने की समय । कुछ करके ही रुखानियर बलम ।

‘मैं तो माँव बालों से भाव ही कह दूया । बेमोग जल्पम खुसा हमार मयमल नहीं कर सकते । कह बाह्यण तो मूय मया जब हम सोय घाने म एों का होइ सगाकर उमका और उमक पोषा पर्व की रघुमासी करते ये परम्पु नाँव बाँधे नहीं मूय सकेंगे ।

‘जैसा ठीक समझो ।

‘मैं सब तरह की बात भ्रमने को तयार हूँ ।

‘मैं पीछे नहीं रहूँगी ।

‘सो तो पूछ भरोसा है ।

[२८]

घटल में प्रचलित चपगी उमङ्ग के प्रवाह को गीब में बहाया भीर
मुरल उमङ्ग फल पाया ।

'यह नहीं होने पायगा हमारे नाथ में । एक ने कहा । दूसरे ने हमी
नरी — श्रेष्ठ धर्म । हाथर पुष्ट कसिराम ॥

महीर की सड़की गुजर के घर ।

पाव में महीर होते तो दानों को मार डालते ॥

पुजारी बाबा ने क्या कहा ?

'उन्होंने साफ ही तो कहा है कि यह धर्म है ।

घटल का बहुगोई राजा है ।'

नो क्या हुआ ? राजा बाहे जिस जाति की सड़की के साथ रया
कर बाहे जिसकी स्त्रियों को घर में डाल के बह कर सकता है । बड़े-बड़े
गोन कर सकते हैं । करने वाले हैं पर यह धर्म ? राम ! राम ॥
राम ॥

उसकी ऐंठ तो देखो । ऐसे कहता फिरता है जैसे काशी रामेश्वर
नहा पाया हो ।

राजा न उपद्रव कर बैठे कोई ? किसी उसको मड़काने कही ।

धर्म के निष्ठा कोई कुछ नहीं कर सकता । राजा धर्मही हो
नामपा तो राजा निकेला कितने दिन ? ।

भीर यदि कुछ किया तो ?

तो बुद्धिमान पास ही गया हुआ है । मोर्छा के राजा के राज में
जा बसें । यहाँ हमारा कौनसा सोना पड़ा है जिसके पीछे धर्म की
को है ? गोण लेंगे तुर्क फिर है या गय ।

'पुकारो बाबा कितने लम्बे हैं। उन्होंने कह दिया कि राजा यदि यपना बाबा राज भी हमको दे दें तो घटल की भीतर नहीं पहुँचा।

'हाँ कही गाय भीर जैसे का ब्याह हुआ है जब मैं कमो ?

इसने पहले ही कहा था कि लाली को घटल का घर्म रह गया है। उमल मायाकार ल. यहीने में बात घपन घाप घुट पड़वी अमी से कह

'भीर गाय बालों को उल्लू बना कर भीबा कर लो !

'नाकर डालना चाहता है। हम लोगों की अलीस चाहता है।।

अने जैसे बात लो करता। पर कितना निमग्न है। डोल बना क' करता फिर रहा है जैसे याँ की पचापन कोई चीज ही न हा। नम हम लाग किमी गिननी में ही न हों।। गरीब हूय तो क्या हम

यस दुःख तो नहीं है।।

गाने गीत की सामग्री देना है। कहना है लड़कों की पढ़ाना दूँगा।

'मम जार्य एम ल'।।

गाना-गीता सुना उठना-बैठना बोल बात यहाँ तक कि उसकी तरफ हटना तक बन्द कर दो !

बद दूरी से लगे हाथ ग्वालिपर बना जादवा।

'बहुत अच्छा होगा। वहाँ जाकर लाली बरी बनेगी तो उसक पीछे उन-मुक गा न घायंग गाँव को लटन-वाग्ने।

'गिनन बुरे बसत की निकली यह लोकरी।

नाम के गाव के भीरों को खबर दे दो न। वे बात की बात में निबटा लो मारा किता।

'हु टोक रहेगा। याँ घर करे उनके साथ ध्योहार बन्द भीर महीरों को दे दो नबन। राजा लकको तो मार नहीं देगा।

अब बँसा दिवसा पड़न नयगा तो घोड़ा के राज में बात बने।

घन्ट में सही दिन मन्दिर के निरटवर्गों बरगव के पेड़ के न के पंचायन हुई थीर उन दोनों के बहिष्कार का निश्चय हुआ था। पुष्पारी न हम निश्चय पर पहुँचने में पंचायत की पूरी सहायता की।

पोटा बट ने घटल के पास बाहर बड़ गेह के साथ कहा घटल—
विह बी तुम सब बाँव में मत रहा नही तो जान पास क झरीर पाकर
तुम दोनों को मार डालेंगे। सब जानते हैं कि स भी भीर तुम हम
झीरों पर बहुत दबा काँठ है। इस समय हम मोन भी बाँध में पड़
जायेंगे। जो कुछ करना है उसी से या भीर कर डाला।

घटल सोचने लगा।

बाहर बकर बाँवेंगे। बाँव परनेक बाँवों के बाँवेंगे। पचास में
के मामले में आज नही डाल जायेंगे। नट बोला—

तुम ठीक कहते हो। घटल के मुँह से निकला।

क्या सोचा? उसने पूछा।

झीर स्वर में घटल ने उत्तर दिया अभी तो ऐसा कुछ नहीं सोचा
जाया।

नट ने कहा 'तो ही उपाय है—या तो यहाँ से भाग जाओ या
बाँवों का साथ छोड़ो।

'क्या! घटल के कण्ठ से दबी हुई परत सी फूटी।

पोटा ने अनुभव की मैंने राबबी भाग के हित की बात नहीं।
माफ़ी देना। लेकिन कहीं मैंने सच्ची बात।

घटल फिर कुछ सोचने लगा।

पोटा ने बीरे से कहा 'यह संसार बहुत सम्झ-बीड़ा है। किसी
बाँवों जब वह बलकर अपना काम देखो भीर धाराय के साथ रहो। क्या
गामिगर जाने का बिचार है? पर गामिगर पास है भीर घड़ीयों के
वत्ने के जाने राजा को बेरेवे तुमको नैन नहीं लेने देंगे।

साथी भीतर से बोली 'कामियर नहीं जायेंगे।' 'मैंने इनीयिमें कहा' पोटा मे साथी की बाठ को घससाया—'क्यासि

में माक भीचो पड़ जायगी मुँह हिलाने को ठीर नहीं रहेगा।' साथी को घबराते हैं नहीं? धीरे से नट में घुस।

अरे हिष्ट। तान्त्रिक स्वर में घटन न प्रतिपाद दिया। नट ने काम प्रार्थना की 'रावली माक करना। हम लोग जयप के

घाबली हैं। याद बाके कह रहे थे इनीयिमें मुँह से निकल गया। यह कसरी ली करो क्या करना है। हम लोग छोपते हैं कि बसका छठने वाला है इपलिय घनन हरे को यहाँ के उखाड़ कर किसी दूसरी जगह चलें।

कहाँ जाओगे?

हमारा घाबली तो कुछ नहीं। बैसे मरकर दिले के पास मगरोमी नाम के पाँव में हमारी कुछ जान रहिबाव है। बहुत दिन हुये बच गये थे। ऐसे हिलताये थे। इनाम पाया था। बहुत घण्टा लोग हैं वहाँ के। बेबी-पाटी के लिये वहाँ डिमीन बहुत बड़ी है। वहाँ रह जाना। मन न मय तो मामका को चल देता। मामके में तो माव ही माव है।' 'मगरोमी किस लोगों की जाती है?

गुहारों कीट कनेरों की। बनिमें बाह्य भी चोरे से हैं। पर वह! एक कह लो के छानने की घटक ही क्यों पड़ेगी। क्या सोचा?

छोपता हूँ गुम्हारे माव ही चमू। तुम लोगों में लासी वा मन भी बसता रहेगा। मगरोमी चलकर ली करेंगे कि वहाँ रह जाय या मामका में चलें। उनम पूछता हूँ।

साथी ने गुराव कहा 'घाने बाव बोडा ला सामान है तो बोझ नहीं पाड़ेगा।

नट बोला 'हमारे पास बचे काहे के लिये हैं? उन घर हमारा सामान रहेगा घोट गुम्हारा भी। कुछ घर बचायी रहेगी।

पथे पर सवार होकर अपने घीर साखी के बिज ने घटस के भीतर मुबगुदी बरफन की घीर बहूँ छ दिया । पोना सहमा । घटस चीघ मग्गीर हो गया ।

‘भाय्य में जो कुछ सिखा होता है वह होकर रहता है फिर रास्ते की बकामट से बचने के लिये जो भी सवारी मिल जाय सो ठीक ही है । घटस ने कहा ।

बोटा तुरल बोला ‘रावजी, हमारी मायकिन ने तुम्हारी बहिन का और साखी का हाथ देला था । उस दिन कोई भी बर्षा आसिबर के राजा के साथ ब्याह सम्बन्ध की न थी । मायकिन का ब्योसिय कितनी जल्दी घीर कैसा सज्जा निकला । साखी के सम्बन्ध में जो बात उसने कही है वह भी राई-रती सज्जी निकलनी । आज तुमको नहीं दिखलाई पड़ रही है परन्तु बहुत जल्दी दिखलाई पड़ेंगे । तमयकिन की बात कभी झूठी नहीं निकली । उसकी न जाने कितने देवता सिद्ध हैं ।

साखी ने वहीं से कहा ‘इस बात को छोड़कर कहीं भी चलना है । सब जहाँ की बहूँ बहूँ रहे हैं वहाँ ठीक है ।

घटस ने भी अपना निरचन प्रकट किया ‘सज्जा याई पोटा तुम्हारे साथ चल देंगे । हमारे दो बैल हैं । वे हमारी इनकी सवारी के लिये ठीक रहेंगे और तुम्हारे बच्चों पर सामान या जायदा । प्यार की बात हमने कर ही ली है । कब लगेरे उसको उड़ाकर काह लूँगा । बच्चों पर तार लगे । कुछ अपने बैलों पर तार के बसेबसे । है भी कितनी ?

‘ठीक है, ठीक है — प्रसन्न होकर बोटा बोला, गाँव में किसी को बात बालून न होने पाये । कल रात में किसी समय गुपचाप बस देंगे । गाँव वालों को हमारे जाने का पता तब लगेगा जब हमसोय कौनों को दूरी पार कर पावेंगे ।

‘वहाँ से कितनी दूर है मयरीनी ? कब तक पहुँच पावेंगे वहाँ ? घटस ने पूछा ।

पोटा ने चाब के साथ बतलाया—'बहुत दूर नहीं है यहाँ से कुल बीस-बाईस द्यौम होगी। मगरोनी के बसिण में नरवर केवल दो कोन पर है। वहाँ कोई नहीं जान पायगा कि क्या से क्या हुआ। सब अपने अपने काम में लगे रहते हैं। बहुत अच्छा ठीर है।

अन्त में दूसरे दिन अन्न का संग्रह कर लिया। दिन भर उठम और साखी से यात्रा का कोई भी नर-नारो नहीं बोला। कुछ स्त्रियों ने तो साखी को देखते ही बरती पर बार बार झुका। गांव की पञ्चायत का निर्णय सुनाने के लिये कुछ पुरुष पास-पास के गांवों को चले गये।

रात में चुपचाप अपना सामान लादकर, वे लौट चल दिये। साखी ने केवल यह जानने के लिये लौट-लौटकर यात्रा की ओर देखा कि पीछे से कोई आँखों नहीं रहा है।

बज्जस की ओर दृष्टि गई तो उसने एक साँस धरी—इसमें मर कोई पशु नहीं रहता। बज्जस के पशु यात्रा के इन पशुओं से अच्छे।

पैंथिमारी रात के तारों की बुझसी सी क्षिमिक्ष में दूर एक ऊँची पहाड़ी पर घाँव गई—इसी पर आनिमर का किला है। इसी में निन्नी कहीं होंगे मेरी निन्नी। आज यदि वह मेरे साथ होंगे ।। किन्ना हँसती-बसती बसी जाती हूँ दोनों इस मार्ग पर ।।

साखी रो पड़ी। मार्ग की अड़बड़ में किसी ने उसके दशन न। नहीं मुना। तारों की बुझसी क्षिमिक्ष में किसी ने उसके आँसुओं को नहीं देखा।

[२६]

मियामुनीम के माइनानुसार बाराजा बटकर ने मर्गों से सम्पर्क स्थापित करने के लिये जासूस भेज । जासूस भेजने वालों की छंटा मनाते मनाते राई गाब तक था गया और यह पता लगा कर वहां से लौटे लौटे कि मयमयनी का ब्रिहाद् राजा मानसिंह के साथ हो गया और यह राई दिन दूरे जब गव बिसर लगी मर्ग दुम । माग नहीं दे गट भी कही लगे पस हूँ । जासूस जैसे पावे व लगे ही पाह जा मोन पड़े ।

गरबर पर खड़ा करने की तैयारी हो चली थी परन्तु दियामुहीम ने कब नहीं दिया। उसही रात सभी हि बपराई सांड पर हमला करने के लिये घड़महाबाद को छात्रन बागा है।

म कृप कञ्चो क। मिशगुहान मे यन हो मन उनको नाबियां ही।

साठे दिनों का समय बहार मिखा कि बरसा दिलाग में ज नये के
मुम्मान का समय करने के लिये निकल पड़ा है क्योंकि स नये का
मुम्मान पदगत को प्रपीठना न लही दग्गा बाहता था । गुाश्यां धीरे
धीरे की बगमरी हुकुमत की कमर दूर चुली थी धीरे उनको जगह
बार पांच सत्सन्तों बनकर उभर गयी थी । मानकेस भी गहन पर से
पदगत के जूते को कद रन का प्रमाण रख सटा था । बरसा के दिलाग
की धीरे जाने का कारण यही हुआ ।

मित्रागुरु न बर्षा न चिन्तित दयाता वा । संसा न हो कि म ह तो
रिये वा न हो दानाध भो विद्या में और धर्ममय वीर । वो पलट के
मोड़ की ओर । अब तक माधु की सीख से शिष्ट म क फो दूर न बना
जाय तब तक माधु की साहज वा के धनमय-सुख हाथों में छोड़ देना
बुद्धिवाणी न हाथो इसलिय मित्रागुरु न वा कूटित होना पड़ा ।

मटरक मोटा निवास कर साहूकारों से एकान्त में मिलता ।

साइबाबा मसीर ने बचपन में ही मरक से पूजा श्रद्धा से बहुत मुसी और मसी जाती है फिर सोच क्यों वीते हैं ?

‘जान घालम’—मटक नै कूक कर कयम रखता—

‘बुद्धों न जमाने हैं इसको बुझा कहा है मगर लोग नहीं मानते हैं इसमिय पी सेते हैं ।’

‘बूढ़ी कहते हैं तो पीने में भी बूढ़ी होती होगी ?’

‘जान घालम बूढ़ी बीबें कब बावसाहों के हथपट्टी सेती हैं तब जतनी बूढ़ी नहीं रहती ! बच्चा तो मुठाम है कइ ही क्या सकता है ? लेकिन हाँ सुना है कि बाबू लोग वसा के तीर पर कमी-कमी पी सेते हैं ।’

‘तुमने कमी पी ?’

‘जान घालम के सामने बयान करने में मुस्ताखी होगी ।’

‘तुम थोड़े घाये ?’

‘जान घालम बावसाह सलामत की छिर मौजूदगी में माँदू का बन्दोबस्त करेंगे । मुझ बुझाम की याद बनी रहे घोर दरबार की परबन्धि होती रहे यही प्रज्ञा करने प्राया था । जान घालम का कमी कोई हुजम बगै के निग हो तो भावना में और छिर कटबाकर फिरवाये ।’

‘जी चाहता है कि मैं भी कुछ दुनियाँ को देखूँ । किताबें तो बहुत थी वह भी मगर दुनियाँ समझ न नहीं आ रही है ।’

‘जानघालम जियाबाद । मे क़ान्नाम जाटो हुजूर तो इतना देखेंगे कि न तुर घबाये न दुनियाँ भवायनी ।’

‘वेधूँ कब बचन घाता है ।’

‘भावना बस्त हुजूर और घमी गया हूँ गया है । हुजम होने की बेर है कि बजा लामा बायबा । निर्फ़ छिकिर नर्बन की है क्योंकि मुस्ता मौलवी यलाम से कुछ पों ही छिरे रहते हैं ।’

‘मज्जा मौलवियों को लखर न होगी । प्रकेला हूँ रहता हूँ पत में कमी-कमी हूँ बाया करो ।’

[१०]

महमूद बमर्री मौज की सीप के बाहर निकल कर दक्षिण में धान-
बेघ की ओर बढ़ गया। विद्यामूर्ति ने न सघाटे के साथ नरवर पर बढ़ाई
कर दी। माह का प्रबन्ध नाम माह के लिये मछीर के हाथ में छीप
दिया। बावर्तनिक प्रबन्ध मछीर के पास रहा।

नरवर मौजू के उत्तर-पश्चिम में है। माहबा के मगन की पार
करके पहाड़ी ओर आगला को लीचता हुआ विद्यास एक बड़ी टेला के
छाव नरवर के निकटवर्ती जंगल में पहुँच गया।

बहु विद्यास जंगल नरवर के दक्षिण धीर दक्षिण पश्चिम में था।
विद्यास नदी सर्र की गा जीर बनाने हुई पश्चिम पश्चिम से धार नरवर
को पश्चिम की ओर से घेर कर उत्तर पूर्व की तरफ बसी गई है। नरवर
बाग़ी छवकी पश्चिमी कुण्डली के भीतर स्थित है।

जंगल इनका विद्यास जंगल धीर मरकर का कि हाथियों के बड़े
पड़े भूख इनमें मौज के साथ बिचरते थे। गहरों घरनों धीर यहाँ
तक की तो कोई बात ही न थी। उत्तर से दक्षिण सघा को मार्ग नरवर
के पश्चिम दक्षिण हाता हुआ निम नदी की कुण्डलियों को कई पटों पर
काट कर बना था। जंगल का लम्बा चौड़ा विस्तार नरवर के पूर्व में
भी था परन्तु कुछ दूर तक सीमा।

उस सीप से पूर्व दक्षिण में फिर बहुत सघन हुआ गया था। पहाड़ियों
पर पहाड़ियों के तिमसिल। धाने बड़ी नदियाँ मीरा जलो धीर जंगल
के वंशान बीच बीच में शुरू पूर्व तक। जम्हेरी तक सघन बागीछ
कोस तक, यही जंगल बना गया था। विद्यास ने जम्हेरी के भूखार को
मौजू के ही प्रादेश भेज दिया था। जम्हेरी का भूखार जम्हेरी के पश्चिम
द घनवर्ती पहाड़ी के काटन में बना हुआ था। घनको काट कर बहु
जम्हेरी का माहवे के लिये मार्ग मीरा कर देना चाहता था। भूखार में

इस काम को सामू रखना और नरवर के लिये जब लिये । इधर-उधर के छोट-छोटे से हिन्दू राज और राज अपनी बड़ाबारी प्रकाश करने के लिये मुशायक हुये । शिवासुहान क मार्ग में जो छात्र-छात्रे राज और राज बड़ व इन्होंने उभरी निभाई । प्रभा—जनता—छानी आन-गान पंचा वन जेनी-विमानो और जेवन को धन्य कहिवाइयों में उभरी हुई बी समय धान मित्त के क र्ये कम को प नी रखा । जब शिवासुहान एक टाफ़ से और चंदरी का सुबेबाइ इमरी त फ मरवर की बड़ इ क लिय खावियर राज्य का सीमा के भीतर या गय नव भो ग वा में मड पकने की कम नहीं जागी चित्ता अवस्थ बहन बड़ गई—बव बना हुआ है । शिवास या चने के मुखशर ने मीन नहीं उबाइ और खना भी उठना ही मर को शिखरी समके भाडों का खरन क लिये बाह्यि बी ।

शिवास मरवर से अपनी कुछ दूर था । पश्चिम दक्षिण में कुंआवन का समन ऊबड़-काबड़ और बड़ा कम उनके और नरवर के बीच में था । बड़ अपने सुबहार के समेय या मित्तने की प्रतीगा में अङ्गुल से घिरी हुई एक लमी अङ्ग में छुर कर विधाम करने कहा ।

नरवर के छिन्धार को शिवास क धान की उन समय सूचना मिली जब समन नरवर के चारों ओर आन जाने वालों की बिलकुल रोक देने के लिये जाँकियों की अङ्क लवाबी । छिन्धार खावियर को समय पर समाचार न भव सका । छिले के पत्रक बन्द कर लिये और जूम जाने की तयारी में लग गया ।

नरवर क उत्तर में था कोस पर ममरोनी नाम का पर्व है । वहाँ के बने हुये लोहे लाम्हे इत्यादि क वर्तन भारत में दूर दूर तक टीकों पर ल कर बिक्री के लिये जाते थे । ममरोनी घरे के भीतर कर लिया गया । या मीन घरे के परिसर में न लाये गये थे उनके निवासी माग कर दूर क बाँचों या पास के बङ्गलों में अपनी अपनी बुनिया के अनुसार बने गये ।

छतरले बनहन की घाबे पास वाली चादनी पश्चिम के खिच्छि की मोद में लीन होने वाली थी । शिवासुहान की सेवा का प्रधान लिखि

मजबूत था। बरह-जपहू मरकड़ों के घसाव बल रहे थे। छिबिर के चारों
घोर घाटों धोले पहर, बहल-बहल। बीच में सिपायुहीन की धामीपाम
राकटी। रावनी के एक भाग में हरम। दूसरे भाग में दरबार भवन
धीर उससे मना हुआ गिमास का बैठक-खाना।

सेना के सोरगुस घोर बज्जस के काटे जान के कारण हाथी मड़े
घरने कुछ दूर पहर में हट गए थे। परन्तु हाथियों की बिपाड़ हवा के
झाको के साथ कमी कमी छिबिर में सुनाई पड़-पड़ जाती थी। बीच
बीच में माहुर की घरब थी।

छिबिर के जो सिपाही छिर पर थे। उनको वे आवाज अधिक स्पष्ट
सुनाई पड़ रही थी। घमावा में लकड़ पर लकड़ डाल कर प्रत्यक्ष
मणि छिप्राका में ब घपन डर को मिटाने का प्रयत्न कर रहे थे। दूर
के पहाड़ बूमने बू बक भावनों को छाड़ी-छिरछी रेखाओं से बिन्न-दिख
जते थे। दूर के पड़ माने की टट्टियों जैसे ओर पास के ऊँचे मोटे पड़ों
की झुरझर में हवा में हिन जाने वाले पत्ते कुछ बमकी छी दिखमान
गते। जब भी बहुत ठंड हो जाती तब बेचबस बमक में मुकते-छिपते
में दिगते। सी सीमी पड़नी तो उनके टेढ़े-मेढ़े बिच्छु आकार खड़े मुकों
के जैसे। छिर को ठंड हुई धीर गुरगुर गन्ध तो जैसे पत्तों के प्रथ बन
गये हों। दूर से हाथी की बिपाड़ या माहुर की घरब सुनाई दी तो
सिपाही घमाव के घोर मजबूत या मजे धीर हविमारों पर बार-बार
निमाहू डालने लगे। इनके छिर पर कवच आकाश का तम्बू था।

सिमास की रावनी के बैठक खाने नाम लण्ड में एक पीढे पर झेंबोठी
बन रही थी बूमर पर प्रथमरी मूराही घोर रत्नबटित स्वयं प्याके।
गवासिन बिदा कर दी गई थी। गिमास के मसनरी तस्ते के बीच माटे
घोमटी कासीन पर खवावा मटक बैठा हुआ। हाथी की बिपाड़ धोर माहुर
की गरज बहुत भील होकर कमी-कमी सुनाई पड़ जाती थी। कुछ देर
पहुँचे से बागबीठ ही रही थी। राई नाम का भजे मजे आसूखों ने खाने
में ही समाचार दे दिया था कि उस नामी हुई लकड़ी धीर गटों की तलाम

को था रही है आपसों ने समाचार में इतना धन्य समाचारों के सप
यपनी मरछ से मिला दिया ।

मुस्तान को निश्वास था कि वह भागी हुई सुन्दरी गटों के बीच में
है और गटों को जामूस बूझ पावे या न बूझ पावे गटों को नरवर की
बढ़ाई का हास अभी भी होंवे मामूम हो जायवा और वे गिरि में
स्वयं या ओपेने । इसके सिवाय मांडू से इतनी दूर निकल जाने के बाद
यह सौगता घसम्मव था ।

मन्त्र बोला 'अहोपनाह घवर मनासिब सुनभें तो बन्देरी के मुखदार
को नरवर का घेरा डाके रहने के लिय छोड़ दें और खासियर को जा
वें । घायब मदनयनी क पास वह भी पहुँच गई,हो ।

मुस्तान ने उबट्टा सा खाये हुय स्वर म कहा 'बाब से उनको म्यानि
यर जाना होता ता जामूस यह कबर क्यों लाते कि वह और न सापना
ह ? मगर यह कुछ ठीक मामूम होता है कि नरवर का घेरा मुखदार
डाके रहे और हम सोच यहाँ से चलकर खासियर का घेरा डाल द ।
मबाउ का राना इस लड़ाई में किसी तरह से शामिल न होगा । बीनपुर
का कोई डर नहीं है क्योंकि मुस्तान भाग कर बङ्गाल चला गया है ।
मुन्द एक ग्याल था रहा है मदक । बाह ! क्या कहना है ॥

'अहोपनाह ।

य म्या खासियर को छतम करके कालपी और फिर कालपी म
दिस्ती । बाबिद मरूम को नहीं कर पावे वह बन्ना कर गुबरे को नाम
हो जायवा । क्या कहते हो ?

कितना बड़ा ग्याल है अहोपनाह ! मदक ॥

हाथियों को एक पलभी सी बिपाइ गुनाई पड़ी । तियाउ के मन में
नूदगुदी उठी ।

बोसा 'किन्नी मुहाबनी मामूम होती है यह बोसी राज क दस सवें
वें । पना अंपन बाड़ों की रुबनी बाबनी मुनसान दियावान में हायो
बोस राज है । बोड़ा बेर पहले और की परम भी गुनाई पड़ी थी । मीका

मृगनयनी

बुरा घसर पड़ेगा । इसके बलाबा बन्देरी से बस्ता घाता ही होमा फिर
शायद खामियर की तरफ बल देना पड़े ।

‘राजपुत्र नट बनकर शायद न भावें जहाँपनाह ।

‘मैं तो तुम तो बुरा हो ! बुरा घसाबहीन बिम्बी को बिम्बी के
राजपुत्रों ने कितना बड़ा बोझा दिया था जो जोतियों में बैठकर घा
मसे बे ।

मरक ने सहमकर समर्पण किया । शियास के संकेत पर उसने घबमरी
मुण्डी में से एक प्याले में कुछ हाबी । उसन पी घोर सरक का मजा
कैन लपा ।

हाबी की बिबाह फिर मुनाई पड़ी ।

किमलते रिपटते स्वर में शियास बोला कितनी प्यारी बोली है !

[३१]

‘लाखी धीर घटन गटों के साथ ममरोनी चार पाँच दिन में मागय ।
ग्वासियर धीर ममरोनी में घम्टर बाईस ठेईस का ही था परन्तु
बनको पहाड़ों बज्जुमों नपिबों को पार करने में समय मया धीर गटों की
मर्जी पर इनकी यात्रा निर्भर थी ।

ममरोनी में बटों ने यात्र के बाहर अपने धम्मास के अनुसार करा
बाल लिया । वहाँ घटन धीर लाखी को मागय लेना पड़ा ।

लाखी सोचती थी इससे तो ग्वासियर ही धम्मा का कहीं सा मई ?
पर मई तो कबसे पाई तक हाड़ भी नहीं के पार्वेय ।।

घटन के मनमें छठा मेने ध्वर्ष ही वह जज्जाल बिछाया ।

जब लाखी के मुँसे बेहरे, धरे हुये से नेत्र धीर कपहते हुये से स्वर
को सुना तब उसने अपने को बिचकारा—इसका वहाँ सा कहीं भी कील
है ? बंताजल की लचक केकर में कोई बचन द्वारा था ? बचवान को
लाखी करके इसका हाथ पकड़ा था ।। जब क्या वे अपने बचन से धुँह
मोड़या ? कभी नहीं ।

वरन्तु क्या गटों के बीच में रहकर गट बन जावें ? बैठा वह पीटा
है धीर बैठी उससे बड़कर पिस्सी है । पर जामें तो कहीं जावें ?

वहाँ मोझे धीर लाम्बे का काम बहुत बजता है धीर मजदूरों की सदा
घटक बनी खूटी होवो—पैठ भरने लायक मजदूरी अवश्य मिल जायगी,
हूँ ना ?

दूसरे दिन घटन मजदूरी धीर निवास-स्थान की ओर में नाब में
निकल गया ।

पिस्सी लाखी के पास था बैठी ।

बोली ‘हाय ! हाय ।। कितना कुछ हुआ तुमकी इस यात्रा में ।।।
हम सोच तो इस तरह चलते-दिलते ही रहते हैं तुम्हारे निबे मई बात की ।

हमें तो एक दिन मिल गया पाराम के लिये छो मुस्ता लिये पर तुम तो बीती ही दिख रही हो जैसी बड़ी कम दिखलाई पड़ रही थी। घागे दिन बहुत धपसे या गेहे है चिन्ता मत करो। नायकिन की बात कभी मूठो नहीं पड़ी।

जाखी ने छवि बरके कहा 'जैसे भी दिन घागेने भूयलूनी। म्रियान मजदूर के बन्ध करे दिन गया।

'तुम्हारी यही मित्री है रानी मुखमयी हो गई। हाथ देखने की बात लज्जो निकली न ?' पिल्ली ने स्वरस कराया।

पिल्ली और नायकिन अपने बाबू टोने के बस भीर हाथ की रैपामों को देखकर मरिप्य की बात बावन छोले पाव रती बतलाने की सन्धि का घाना में भी कई बार बिकर कर चुकी थी। जाखी को भी कुछ विश्वास भी था।

जाखी न प्रतिवाद नहीं किया — 'ओ तो जानती हूँ। परदेस में तुम्हीं सब का मरोसा है।'

'नायकिन क्यूटी है कि एक गहरीने के भीतर तुम किनेदारिन का किनेदारिन छो गया कहीं की रावरागी बनोसी।

'यन्त्री मजदूरों मिल जाय भीर बात-बात बाकैरंग न करें तो हमारे लिये यही सब कुछ है।

'माई बनकर देखना तुमको दिन रात कितना दुख बन दिखेता।'
'माई कितनी दूर है यहा से।

'ओ यों ही भीड़ी दूर। पहाड़ जंगल कुछ कोस भीर निर्जन है। हाथ-बरा बालवा यहाँ माई के सुत्तान का पाव है। बड़ा घमण्ड है। यहाँ ऐसी मुखमयी बोई ही है बीती यहाँ छवि हुई है। यहाँ का कुछ है बेजोनी ? मैं मुझे कुछ बिरालाऊँ ? नरक मामूम न होय पावे।

‘ऐसी क्या चीज है ?’

‘बरी धर्मी पिछताती हूँ । पढ़के मेरे तिर की सीगम्ब छापो कि किसी को बाहिर नहीं करोगी ।’

लाकी के रक्त होठों पर मुस्काह आई जैसे गरमियों के सूखे माते में पड़नी छिल्ली गयी की पतली पार हो । कहा ‘पातो हूँ सीगम्ब बतलाओ क्या कोई रोम है ?’

पिस्ती ने अपने बरतों में से सोने और मोठियों के पढ़ने निष्कासकर ससक सामने रख दिये । उसने अपने मोठियों के हार से मन में उनकी तुलना की । वह उनकी अपेक्षा अधिक बरफ वाले थे । अपने मोठियों को वह समस्त सुरक्षित रखने लगे थे ।

पिस्ती बोली ‘एक छोटे से रजबाड़े के बराबर ही मोस इनका । ये तुमको मिल जायें तो एक रजबाड़े की मानिक ती यों ही हो गई ।’

‘कैसे ? लाकी को कुतूहल हुआ ।’

पिस्ती ने लाकी के कुतूहल को धीरे धीरे बताया ‘धरी यह तो क्या इनसे कई गुने और मिल जायेंगे मोस भी इनका इतना कि गरबर का फिला करीब सा ।’

गरबर का फिला मगरौनी से दो फोस था । सिग्न नदी बीच में । ग्वातियर को न बेस पाया तो इसी को देखूनी किसी दिन । साखी के मन में एक लहर बीड़ी ।

‘कैसे मिल जायेंगे ? कतने फिर पूछा ।’

‘मोहू बनकर । पिस्ती ने उत्तर दिया ।’

लाकी के मारी-हुपय का सबह भी का ।

उधनें उसी प्रश्न को तिहराया ‘कैसे ? कितने ?’

परन्तु पिस्ती नट-मारी थी । कतने लाकी की पानि के कोने में सदेह की फाव की परत मिया ।

बोली 'आयडिन ने अभी इतना ही बतनाया है । चार स. दिन में वही बतनावैगी । अभी इतना तो मैं कह सकती हूँ कि इनको तुम मे सो धीर समझ सो कि ऐसे बिले और ममते मिले ।

पिस्ती ने मुस्कानों के साथ गहनों को उठाकर उसकी धीर बड़ाया । सुलभ घसकुर-मोह नाकी के भीतर पठ लड़ा हुआ धीर वह गहनों को पहण करने के लिये हाथ बढ़ाना ही चाहती थी कि नारी-सहज संता फिर आके था गई । यदि ये गहने पीतल धीर काय के नहीं हैं तो नट सरीख लोगों के पास कहीं से आये ? धीर ये इतनी सरस-सरसकर क्यों बों ही किसे डाक रही है ? बदले में मुझसे क्या चाहेंगी ? घटन की ओर बाँकी ठिरछी निवाहों मुस्का-मुस्काकर देखा कछी है तो क्या सीत बनना चाहती है ? घटन से बात करके सब इन गहनों को सुंगी बैसे ह बढ़िया ।

कहा, अभी रखो रहा । उनके आने पर के लूनी । तुम मुझे बहुत चाहती हो ।

पिस्ती ने सोचा पानी बिलमा । बोली 'अब बढ़िया सहीमे पर सुम्बर चुन्हरी मोड़ोकी धीर उसमें से ये गहने बिलसाई पड़ेंगे सब मामूम पड़ेबा कि कहीं की रानी या बयस हो । माँह के बड़े-बड़े लोग आह सर कर रह जायेंगे ।

पिस्ती नखरे के साथ हँस पड़ी । नाकी उसकी उसकी सिद्धिनी प्रकृति को पहिचान गई थी इसलिये बात बुगे नहीं लबी परन्तु उसको लगा इस सरह की चुन्हरी को पहिचानने से बाँझो का एक एक रोम बिलसाई पड़ना धीर देखने वाले समझेंगे कि मैं भी कोई नट बेड़िनी हूँ ! सि॥ परन्तु य गहने यदि सच्चे हों ? मझोले मोट कपड़े के मोचे पहिने आये और जियाँ देखें तो बस तो बकर कठेंबी ईर्षा के मारे धीर पुस्य देखेंगे तो अपना मन मारकर अपनी नील पकड़े लके धारेंगे । कल्पना में अपने को बिजयी पाना उसे अच्छा मामूम हुआ ।

परन्तु घटस का बिज बाँकों के सामने झूम गया ।

'बूढ़ी तो हमारे बहाँ जैसी पहिनी जाती है बीछी ही पहिनी ।
साखी ने कहा ।

पिस्ती ने एक चोट की—'रानी सृगमयनी क्या म्हासियर में बीछे ही
कपड़े पहने होंगी जैसे बाँध में पहिनी थी ? और तुम यदि म्हासियर
समके साथ जाती तो बाँध जैसे पहिने हो बीछे ही पहिनी फिरती ?

साखी को बटुता के साथ धपने बाँध की रस्सी की बात याद आ
गई । निन्नी की पीछ हाथ पर लेनी पड़ेगी और राखा की—'उसने
बिचार की घाम नहीं बड़ने दिया ।

बोली 'महीं यदि बनी रही या मीठू बनी जैसा तुम कहती हो उस
देखा बाबना । मनी तो ये ही बजल ।

'मीठू तो बतना ही है । बड़ा मगर है । यहाँ बसा बरा है ?

'जैसे । यहाँ तो हमारे बहाँ से भी बड़ पहाड़ और जंगल है । मुम्ते
है हमी तक है यहाँ के बजलों में ।'

'हाँ है । बूढ़ा देख है यह । पर रास्ता मीठू के बिये लीजा महीं
होकर पड़ता है । तुम्हारी और कुँवर की के बात के कुछ बीछ तो होंगे
ही यहाँ पर उनको कुछ मामूम न होने पावेगा

साखी खोजने लगी—'मामूम भी हो बाबना तो बूढ़ाभी ।

'मीठू में स्माए बाति के बीछ न हों ?' उसने पूछा ।

पिस्ती ने उत्तर दिया 'हो या न हों' मामूम नहीं । पर इतना बड़ा
मुस्तान तो है । बच्चे उसको देखोही तो बचरण करोगी ।

~ 'देखनी किसी दिन । मीठू के सारे बीस-समासे देखूँगी ।'

'बीस-समासे तो बहाँ डेरों है । हाथियों की कुस्ती घाबमियों की
कुस्ती औरतों की कुस्ती बाना बजना नाचना मामूमों के नाच और
न जाने क्या क्या ।

‘हाथियों की कुशती ! कौसी होनी होगी वह ?

‘बढ़ते हैं बिचाड़ते हैं मझाबत उनकी यदन पर बैठकर मझाते हैं धीर सुस्त्रान एठ बढ़े हाथी पर बैठकर जब देखता रहता हूँ । प्रजा एठ तरफ खड़ी घामन्द में झूमती रहती हूँ ।

‘बड़ा बिचित्र होवा वह तमाशा जकर देखूँगी ।

जुम बढ़िया-बढ़िया महुनें धीर रेशम के रंग बिरंग कपड़े पहिनकर जब वहां तमाशा देखने जायोमी तब भीड़ की भीड़ औरतें तुम्हें देख-देख कर बल-बल बैठेमी । कहूँगी हे जगवान यह पण्डरा कहाँ से आ गई यहाँ ।

‘हूँ ! हूँ ! ! हूँ ! ! ! हाँ हो तो सकता है ऐसा । दूमायों के महुने कपड़े बहुतेरों को घण्टे नहीं लगते ।

साथी हँस-हँसकर बात कर रही थी धीर उसकी कल्पना हाथियों की कुशती से उलझ रही थी ।

पिस्ली ने घबरा घाया हुआ सन्नद्ध कर कहा ‘एक बार इन महुनों को पहिनकर देखो तो कौसी बिलती हो ! मन को न जाने तो लोटा देना । सच्चे धीर मनमोल हूँ इतना तो मैं कह सकती हूँ ।

पिस्ली ने गहने बढ़ाये धीर सामो ने छे लिये । पहिनने धुरु कर दिये ।

पिस्ली उत्साह के साथ बोली ‘इनके ऊपर रेशमी बहूँवा धीर चून्हरी भी पहिन कर देखती । देखो तो । फिर उतार डालना ।’

जरा देख भी नूँ कौसी बचती हूँ साथी ने सोचा । पहने पहिन लिये । उनकी घामा से वह बमक जठी । उस बमक को उसने अपनी घाँवों में घबगत किया । पिस्ली बीड़कर गई धीर लहूँवा चून्हरी उठा माई । साथी ने सल्लो भी पहिन लिया । जब माई की भीड़ में सभी-मुरप देखेंगे तो नटिमी नहीं नहूँगे क्योंकि मैं जायजामा नहीं पहिने हूँ धीर नटमियाँ ऐसे ओवर नहीं पहिनती होंगी । तमाशों की भीड़ में

रही पुरुष मुझको देखते रहेंगे और मैं हाथियों की लड़ाई को देखती रहूँगी। कोई भी देख तो क्या यहने कपड़े तो देखने के लिये ही बनाये गये हैं। वह मन ही मन प्रसन्न होकर सोच रही थी।

पिस्ती ने मृत्यु का एक नमूना काटकर धोज के साथ कहा।

‘रानी सी भग रही हो बिलकुल महारानी सी। कोई कह सकता है कि किसान मजूर हो ? खरी धपरा काय तो करता ही चाहिये पर ऐसे यहने कपड़े कहीं से मिल जायें तो उन्हें क्यों न पहिनी ?

बाजी के मन में धावा धब उतार कर के रखदू परन्तु अपने हीन्दर्य और उनकी धाना का मेम बोड़ी देर और बसना चाहती थी।

जसने पूछा माँह में क्या बहुत स्थियों के पास होंगे ऐसे यहने कपड़े ?

पिस्ती ने बताया बहुत थोपों के पास कहीं रखे हैं ? प्रजा में किसान कारीगर मजदूर पयादा हैं। मोटे मॉटे कपड़े पहिने हैं। कहीं की मेले टेलों में रंग-बिरङ्गा कर लिये हैं। बीड़े से सेठ-साहूकार और घरदार हैं उनके यहाँ भी ऐसे न निकलेंगे। तुमको भीड़ में देखते ही सुस्तान हाथियों की लड़ाई पर से जाँक हटाकर तुमको देखने लगवा।

‘हो सकता है।

‘हो सकता है नहीं ऐसा ही होगा। वह तो इतना भट्टू हो जायगा तुम्हारे ऊपर कि हाथी पर से उतर पड़ेगा और पास आकर पुछने खयेगा कि कहीं से आई हो ?

पिस्ती हँस पड़ी। बाजी को भी हँसी आ गई। हाथ और गले के बमकटे हुये धलकुरों पर जाँक बार-बार गई। ने लड़कों मज्जे लये। उनकी धावा भी वह धातवसात्-सा कर रही थी।

पिस्ती ने सोचा धब धमय धा गया।

बंसी 'मुस्तान तो तुमको पास से देखाकर बेहोश हो जायेगा ।

क्यों ?

'घरी तुम अपने कम खीर मुन को क्या जानो । वह तो देखने वाले ही बाप सजते हैं ।

हूँ—ऊँ—हूँ ।

मैं कहती हूँ य सोना मोटी है किन्तु वह तो बरसा देगा तुम्हारे कम-मुँह के ऊपर डरों के डर । तुम्हारे हाथ जून केना और कहेगा मइलों में रहो । वहाँ छसकी रानी बनकर रहोभी तुम करोवी और वही कुँवर जी उसके डीवान बनकर रह्ये । हम बरीबों को न मुन जाना ।

क्या ।

घरी मेरी रानी भूठ बोड़े हो कहती हूँ । उसकी महापत्नी बनकर रहोभी । वह तुमको गर्वहा जी का पानी पीने के लिये बँवचाया करेगा घरम बोड़े ही केना तुम्हारा । अपने साथ हाथी पर बिठनाकर अऊँसों में सिकार बिसबायमा और तुम्हारे बरी की बून को अपने माप पर बसावेगा । यहाँ से माँहू जमी तो वो दिन में हो जायेगा यह सब । न हो जाय तो मेरा छिर काट कर फेंक देना ।

न जी के बियाम में एक लुफ्तान सा उठा । राई पाँव साँक नहीं पाई के बहाड लोहँ अऊँस सिकार निभी मानसिह और हाथियों की लड़ाई एक साथ बककर आ गये । य सब घोर बमक-दमक वाले पहने और ठड़क-भड़कदार कपड़े घाँबी के बखरर में जंगल के मूखे पत्तों की तरह एक दूसरे के साथ बिपट कर उड़ने लगे । निभी घोर मानसिह कुछ अधिक स्पष्ट हुये तो पहिने हुये बहने-कपड़ों की आभा पर घाँब के बाँठे ही फिर छसी बखरर में पड़ गये ।

पिल्ली न सोचा साखी निरनय में है ।

बोली 'मन में रखते रहो । किसी से कहना भी जरूरत नहीं है । जब बेसा मोका घाबे तब तैसा करना ।

लाखी के विमास की बोली कुछ हलकी पड़ी । परन्तु उसके माँह से कुछ नहीं निकला ।

रिस्ती ने कहा 'अरी रानी तुमको बोड़े ही कुछ करना पड़ना पपनी तरफ से । किसी समासे में जान की तुमको उकरत नहीं पड़ेगी । बीछे ही सुस्तान को खबर लयी कि तुम सरीखा हीरा किसी कुटिया में छिपा पड़ा है कि वह खुब हाथ बोझता हुआ बायबा, हाथी पर बिठला कर महल में के जावेबा और जाती हैं बवा कर अपने घास को बन्ध समझना ।'

लाखी के मन के बीजर की बोली छटका लाकर सकामक बन्ध होवाई और उसको कुछ साफ सा दिखलाई पड़ा । उसने सकामक प्रश्न किया 'वे पहले कपड़े तुम्हारे पास कहीं से घास ? क्या सुस्तान ने दिये व ?

मेरे कहीं ऐसे मान ? उसने सावधानी के साथ उत्तर दिया, 'मुझको तो तुम सरीख लोगों का ही भासता है । कपड़ बोरी के नहीं है इन बात की बड़ी से बड़ी सीखना ला सकती हूँ ।

'कहीं से घाबे ? उसने फिर पूछा ।

रिस्ती ने बारीकी के साथ लाखी के चेहरे की भाँपने की चेष्टा की ।

'घब्ररा बतला हूँ पर मेरे छिर पर हाथ गूँथकर सीखना खासा कि किसी से कहोनी नहीं ।

सीखना लाती हूँ ।

बीछी घाबी और सवन्धि नहीं छिजती बीछे ही तुम्हारे रूप का नाम नहीं जिन सका । सुस्तान ने ही तुम्हारे निम लगे हैं ।

'किसके हाथों ?

'हमारे ही एक गट के हाथों ।

'या उन सवारों के हाथों जिनमें से दो को हमने मार बिराया था ? उसने घास मन में प्रश्न किया ।

मासी बुर रही । कई धण । पिन्नी ने सोना तीर का बीठा । बोली श्रीर धनिक मत पूछो । सुस्तान जब गुमको पके लवाकर घपनी बीठी बड़ियों की बखानेवा सब सब मामूम हो जायगा । उसने निन्नी के बारे में भी गुना गा । जाहूता होया दोनों लखियां खान ही रहे । अब प्रकेलो ही राज करना ।

सासी ने कनखियों देखा—कहीं से घटत न था जाय । फिर मइनों कपड़ों पर ध्यान गया । वह सबको एक एक करके उतारने लगी ।

विन्नी बोली पहिने रही । तुम्हारे ही तो हैं । कुंवर साहब भी तो देखते कौसी ऊब रही हो ।

गड़ी, दूध स्वर में लाबी न कहा । उसने सब उतार दिने सोन अपने मोठ छोटे कपड़े पहिन लिये । अस्तर पर ध्यान गया । कहाँ से कहाँ से ? उनमें कितनी लड़क भड़क थी । देखा जायगा । फिर कभी पहिनुं भी पर लगे कहकर । क्या सब बतलावू ? आज नहीं पर एक दिन धनस्य घोर यही भगरोनी में । उसन निश्चय किया ।

चौड़ी बेर में घटत चबराया हुआ जायगा । घाँटे ही लपने लबधे कहा 'माइ का मुस्तान नरवर पर लड़ जाया है । बीकिया पड़ती या रही हैं ।

'माइ का मुस्तान ! हमारा राजा ।। लोग के मुँह से निकल पड़ा — तुम्हें कैसे मामूम ? किनने कहा ? कहाँ हैं ? कितनी बुर ?

अदम ने उभी बबराह में गुनगा दी — पाँच में गुन जाया हैं । हड़बडी मच गई हैं । जोय नरवर नगर में भाग जाने की तैयारी में जुट गये हैं । लो हय सब नरवर चल रहे ।

बट एक डुमरे की ठरछ बेचने लगे ।

मायकिन बोली 'अपुन लोगों का लड़ाई भाँटे क्या करेंगे ? नरवर के कोट में बिर जाने से तो बड़ी मुश्किल पड़ जायगी । यहाँ से निकल लो

‘जङ्गल में सिकार के समय जो बचन दिया था वह अचानक धीरे धीरे है ।

‘क्या फिर कभी माहुर धरने इत्यादि का सिकार करने को मिलेगी ?

‘अबस ! जब चाहे तब । कहीं तो कम प्रयत्न कर दूँ वहीं राई के पीछे की ओरों की ओर पठारों में ?

‘नहीं । अभी नहीं । बैठे ही रहा । पाँके कुछ सीक मूँ तब जाऊँगी राई की ओर । मैंने प्रण किया है कि सीककर सापी को तिसमाऊँगी ।

‘वहीं कुमासी न । कुमा को घपने से मिलती-जुलती पाकर उसको पचरब होना ।

‘वह अभी नहीं आयेगी । साऊँगी कभी उसको । मैं चाहती हूँ पटना निरना गाना-बजाना धीरे बिचकारी बहुत पीछे सीक न, पर घापके नारे जब मौक पाऊँ तब तो ।’

‘धरी महाराजी, मैं बिचार करता ही क्या हूँ ?

‘बिचारे । बड़े बिचारे हूँ न घाप ।। अब मुझको घसब बैठ जाने बीजिये ।

‘मैंने तुम्हारा बोलना तो बन्द किया नहीं ।

‘एक बात कहूँ ?

‘एक नहीं बस ।’

‘मैं चाहती हूँ घापका धीरे जलसाह बस धीरे घुरमापन दिनहुँ दूँ धीरे बमलकार से मरा हुआ बना रहे ।’

‘जिस राधा में मैं भुण्ड न हो बसकत राज घापकत हो महीने भी नहीं टिक सकता ।

‘घुप ठीक कहती हो मैंने गाँठ बाँधी ।

‘नियम-नियम के साथ रहिये धीरे मुझको रहने बीजिये । मैं चाहती हूँ कि उन कुर्बों के घाप मेरी देह में भी वहीं बस बना रहे जिसको राई में

छेकर बाई हूँ जिसके भरोसे भरे हुये सुपर को पीठ पर लाद कर मौज तक लाई थी जिसके बूते बरने मैंसे को—

मानसिंह ने जगको धाग बात नहीं बहने दी। बने से समाकर उसके होठों को अपने कपोल से छटा लिया।

बोला 'मैं बचन बैठा हूँ प्राणुप्यारी मृगनयनी। समझ गया कि मन में तुमको जीवनपर्यन्त बसाये रखने के लिये नियम-संयम ही बल दे सकेगा। तुमको कलाओं के सीखने के लिये पूरा पूरा समय दिया करूँगा और तुमको सब अपने निकट सम्भला हुआ इतना काम करूँगा इतना कि काम को पूरा करते करते बनी उमर बनी रहे तुम्हारे धर्म प्राप्त करने की।

आप मेरे स्वामी हूँ।

'बस। स्वामी ही॥

'प्राणुनाथ मेरे प्राणुनाथ। बहुत बीमे रिपण्टे हुए स्वर में मृगनयनी ने कहा।

मानसिंह बोला, 'तुमको क्या ध्यान रहेगा—मैंसे तुम बहुत दूर रहते भी मेरे काम में कूट रही हो 'मानसिंह, सावधान।

'हूँ मैं। ऐसा तो मैंने कभी नहीं कहा।

'घरी महाशयनी जो मेरे हृदय के भीतर इसी तरह बसोयी।'

'आप कलाओं के साधक हैं तो न जाने बात को कैसा उमेठ-उमाठ कर कूट लेते हैं।

'तुम जोड़े हो समय में सारी कलाओं को धरने धरन के धोर में बाँध लो तो मुझ पर विश्वास है। फिर कभी कभी बात करोगी उसकी कुछ कस्यता ही कर सकता हूँ। अच्छा यह तो बतलाओ कि यह बात तुमको किस सिखाई? नियम-संयम इत्यादि बानी बात ?

‘किसी से नहीं छिपताई । सब रिश्ता जानती हुनी । मरती न हों
या कह न पाती हों यह धीर बात है ।

‘सुमन बहुत बड़ी बात कही । आज की संझा से ही तुम्हारी रिश्ता
का सफा प्रबन्ध करता हूँ । कला धीरे बैजनाय नायक-बादन बिनकारी
छिन्नतम्ये । विजयचन्द्रम न कहे देता हूँ पदार्थ व निय । बर बर
कारन कर देवे ।

‘मेरे शाशुनाथ !

‘तो यह उस सुवास का बचाव दो ।

हूँ — किसका ?

‘कितनी कम तुम्हारे घल पर धीर भी छा गई हूँ । तुम्हारी मुस्मान
में जो बचाव है उसने से निजना का से किरणों से-सेकर भावती
पारही हूँ ?

‘मेरे प्राशुनाथ !!

सध्या के उपरान्त कला धीरे नायक बंधू का सवे । सनका प्रतीक्षा
नहीं करती बड़ी । भुवनयनी ने वसन्तिन होकर सीपना धूर कर दिया ।

कला धीरे जाती के बीच के साधुय में भुवनयनी को बहुत
सचम्मा नहीं हुआ था । वह बहुत है — भुवनयनी की भावना थी ।

उसी दिन ही होमया कि कला धिक्कात समय उससे निवृत्त रहा
करेगी । विजयचन्द्रम को निजाने-पड़ाने का काम सीप दिया गया धीरे
उसी पाठभवन में बीला-बास के सम्भासकी और भी बढाने का । वह
बुट पड़ी ।

भुवनयनी के शिष्य-समय में नागतिहूँ बड़ी राजी के पास गया ।
नाम सध्या सुमन पोहनी था । बीना नाम उससे सन्धा स्वभाव—
प्रकाश ।

उसके भवनलक्ष्य में जैसे हो मालाधिहू मूषका देकर पहुँचा रानी
न रीति के अनुसार पारखी जगरी धासन दिया और हाथ जोड़कर
बढ़ी हो गई ।

धीरे से बापी बढ़ी हृषा की । महाराज कुछ भूम से बढ़ इस
दिशा में ।

‘नही हा एक प्रायना करने आया हूँ ।

‘आता ?

मई रानी—सूगनयनी—का मन नहा लपटा होगा, सो मैंने संयोज
एखादि कलाओं के सीखने का प्रबंध कर दिया है । आपका समयन है
न हममें ?

‘मेरा क्या बाग्य या महाराज मुझको इतना धारर द रहे हैं । मन
उनका कैसे यही इतनी जल्दी सनेया ? कहीं राई के बहनों का मुक्त
पवन घरने जैसे मुघर, माहर, नीरकमान धर की पाय धीर कहीं
गालिवर के किसे का एकाग्र ! यही न गरी है न गाँव है और न गाँव
के दिवान !’ न गाय न गोबर !’

‘अच्छ दरज या । मानसिहू मुझकर कुछ कहना चाहता या परन्तु
उमने सोचा इमने कदुना ही और बढ़ेगी ।

क्या मान ठीक कहती है । वह लज्जब एसा बख्शा करती ह कि
बड़-बड़े धनपारी लज्जित हो जायें ।

सुननमोहिनी न अज्ज को आरो रक्ता ही महाराज आप सलीन
पुरवा को जो गरी पराबिन करने उसके मामने नगार नर के पुरवों को
निर नृकाना पड़ेया ।

महारानी आप भी किसी दिन उनका लज्जब देखियगा ।

‘अब न पाई हूँ निन्द प्रनिशग्य आपका धीर हम सब का लज्ज
बपना रहनी हूँ । और कुछ देना पड़ेगा देखूंगी ।

‘महाराजी उन्होंने एक ही बाण से एक बड़े नाहर को माथे धीरे धरने मुकबल से धरने में से को मोड़ दिया ।’

‘शुना है महाराज धीरे यह भी शुना है कि एक दिन जब बर में खान को कुछ नहीं था तब सुघर के एक चिटखे को मारकर अपनी पीठ पर बाँध लाई थीं । उनमें बहुत बल है बहुत शक्ति है ।’

‘वह क्षत्रिय कन्या है । सब को एक दिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है । माथे सेलना वह पड़-बिसकर धीरे विविध कक्षाओं में पारङ्गत होकर, हमारी आपकी सबकी कीर्ति-ध्वजा की ढँचि पहरावैसी ।’

‘महाराज वे बिलकुल ठीक कहा जहाँ की नये-नये बहुमूल्य रेशमी बदन पहिने को मिले है, जहाँ की ध्वजा को अपने इस छोटे से कर्ण महल के कँचूरे-कँचूरे और छिछर-छिछर पर कूबली-पुलकटी फहराती फिरती है ।’

यह जब मानसिंह को मड़ गया । सीतिया डाह ने बिचारी सीधी ठाड़ी मृगनयनी को, जिसका प्रमोद-श्रेय धामी तक जयसं धीरे छेद क्षमियाग वा जीरे अब संकुचित सीमाओं से बिरा हुआ छोटा-सा कर्ण महल रू बना था, बन्दर बनाया है । इतना अधिक न चलने कूरे तो कोई हानि होगी ? उसको प्यार के साथ सावधान कर दूँगा । जिसने दुमममोहिनी इस प्रकार का आक्षेप न करें । मानसिंह ने सोचा । उसकी ओर सात रानियाँ आभाचारिणी पतिव्रतायें थीं । उन्होंने अपना बसल धमन कर लिया था । परन्तु सीतिया डाह एक बूझरे के प्रति जन सख में था । मृगनयनी के घाँसे ही उन जाठ का परस्पर डाह एक बारा में प्रवाहित होकर मृगनयनी से जा टकराया । डाह का नेतृत्व गुमममोहिनी के प्रचर स्वभाव को अपने साथ प्राप्त हो गया । मानसिंह को समझने में जरा भी देर नहीं लगी । उसका अभिमान कहता था—इतने बड़े राज्य की व्यवस्था करने वाला क्या घात स्थितियों का जी सामन नहीं कर सकेगा ?

उसके विवेक ने बतसाया एक स्त्री का आसन ही पुरुष के सिधे कठिन काम है, घाठ तो घाठ व्याभियर राख्यों की समस्या के समान है। फिर क्या करें ? कहे क्या विनम्र दीन और मृदुसता से काम लो—अप्यक्त यानी कटुक्रियाएँ सब हंसी के साथ सहो। इसी में अस्मय है मानसिंह ने सोचा।

एक दो क्षण चुप रहने के उपरान्त मानसिंह बोला 'आप मरके सिखण अनुसासन और आदर्श से बहु भी अपन को डामती रहबी जैसा मेने अपने को हाल लिया है। मानसिंह हँस पड़ा। सुमन मोहिनी को भी हसकी सी हंसी आयई।

बहु मनही मन प्रसन्न थी—यह भेष तो मानते हैं।

'अब मुझको अनुमति मिले आकर बीजनाथ से कुछ बातें करसूँ। मन्त्री घाने वाले होंगे। दिन में सन से राज-काज की चर्चा नहीं हो पाई थी। मानसिंह न कहा।

यह अनुमति माँगना नहीं था। आदेश देने का धर्म रखता था।

सुमन मोहिनी ने फिर अप्यक्त किया 'महाराज को आजकल सब काय ही कहा मिस पाता है। बिचारा मन्त्री राज्य की चिन्ताओं के भारे सिर झुनटा रहना होना। यहाँ तक धान का आपने प्रबन्धन न करने कैसे निकाल लिया।

राजा ने परवाह नहीं की। हँसकर बोला 'अबकाग मिल जाय करेया बहुत मिलेया। भुजरा करने आया करेया।

समाचार पाकर बाकी सातों रानियों ने आकर आरती जनारी। एक-दो चलतू बातें करके मानसिंह उस अन्त-पुर से आता आया।

मृगनयनी को उम दिन की धिला देकर बीजनाथ घसप बैठे हुमा था। कला मृगनयनी के पास हमरे कक्ष में थी।

मानसिंह ने आते ही पूछा 'अहिमे आचार्य आपके नये शिष्य का प्रपति का क्या हाल है ?

बैजू ने उत्तर दिया—महाराज बहुत पूर्व जन्म में सङ्गीत का प्रवर्तार रही होंगी। मुझको अपना धार्मिक-पद बनाने रखने के लिये विमर्श ध्यास करना पड़ेगा।

बैजू के होठों पर मुस्कान की परन्तु उस मुस्कान के भीतर सच्चाई की छाप की धीरे धीरे धाँसों में छसका सम्बन्ध था।

‘बोला के बावन पर अधिकार करने में समय कुछ अधिक लगेगा ? मानसिंह ने पूछा।

बहुत कम। इतना कम कि मुझको आश्चर्य हुआ। महारानी ने धाम ही कहा कि जाने और बनाने की ऐसी कोई बरिपाटी निकालों जिसमें समय कम लगे।’ बैजू ने बतलाया।

मानसिंह हर्ष-मग्न होकर भीतर गया। सुगन्धनी कसा से बोला के सम्बन्ध में बड़े उत्साह के साथ बात-चीत कर रही थी। उसको देखते ही मानसिंह के मन में उमड़ा—क्या यह बँदूरोँ और सिखारों पर बन्दर को छल्ला बँधती-मुँहकती होगी ? यह ! किन्ती सरल मुँह पर और विषय है यह !। मैं इसकी स्वतन्त्रता को हथकड़ी बड़ी नहीं पहिनाऊँगा।

मानसिंह के बाते ही उन दोनों की चर्चा बन्द हो गई। कसा की धाँसों पर पट्टी नहीं की सम्बन्ध धक्की हो गई थी। दोरे कुछ लाल थे। सुगन्धनी के होठों पर मुस्कान आई थीर गई।

‘कसा’—मानसिंह ने कहा — महारानी का ध्यास लगातार चालू रहे। देखूँ यह बकती है या तुम। तुम्हारे बरबरी पर आज्ञाकारी तभी इसको कुछ बैंग मिलेगा। कब तक इतना ध्यास कर लेगी ?

कसा बिना के साथ बोली—नम्रता में काफ़ी बनावट थी—‘मेरी बरबरी पर तो महीने दो महीने में ही आ जायगी। फिर धार्मिक भी कुछ बतलाते हैंगे उसको मैं कितना सीख पाऊँगी गीब भी पाऊँगी या नहीं इनमें शक्य है। क्योंकि महारानी भी तो बहुत जल्दी जल्दी सीख लेंगी

में पिछड़ जाऊँगी। स्वर भी मुझमें बहुत घण्टा है। मम्मीको सेवा करने का पुण्य मिल जायगा यही बहुत है। ठीक बिजकारी का कम धामेगा।

मानसिंह को घण्टा लगा।

घीर बिजकारी का भीगला कब मे कराओगी? मानसिंह ने पूछा।

‘बहुत धीमे’ कमा मे उत्तर दिया।

दासी द्वार की ओर से आई। मानसिंह ने बुझा लिया।

‘क्या है?’ उसने पूछा।

दासी ने उत्तर दिया — श्रीमन्महाराज मम्मी जी घीर घाघाई बिजकारी कम धामे हैं। मम्मी जी ने गुरुनानक की प्रार्थना की है। बहुत लाभकर धार्य है।

‘मम्मी घाघाई हैं। कदा?’ मानसिंह ने कहा।

दासी बत्ती गई।

मृगनयनी बोली ‘काम इकट्ठा हो गया है। निराला धार्य।’

मानसिंह हँसा ‘जुम्हारा समय पड़न मम्मी जी घीर बिजकारी सीखने में लगना। ‘समय मेरा समय मम्मी जी बाटेगा ही। थोड़ी देर में बिजकारी कम धार्य बजायेगा उनका भी मुनता।’

‘मुनमी — मृगनयनी बोली — ‘घाघाई को कुछ सोला ह कम मे भी आपकी मुनाऊँगी। पहले मम्मी जी का बात मुन धार्य।’

मानसिंह उम्मास के साथ उम लाल में गया जहाँ मम्मी बिजकारी कम धार्य घीर दंड बैठे थे।

घाघे ही मानसिंह ने बिजकारी कम धार्य मे कहा, ‘घाघाई आपकी गई मम्मी जी के पढ़ाने-लिखाने घीर धार्य का नाम कराने का काम सौंपता है। मम्मी जी बहुत उम्मीद हैं। कम मे धार्य कर दीजिये। धार्य धार्य ना बीगा धार्य हो जाय।’

वे तीनों मूँह खटकाव बैठ ने । मन्त्री व्यग्र था ।

विजय पहले बोला 'महाराज, बीणा की मरहम का मही मनुष्य की दृष्टार का समय था गया है—

ज्या ! यामनिह के मुँह से निकला ।

मन्त्री ने बात पूरी की 'माँह के सुम्मान शिवायुहीन ने नरवर वर चाक्रमण किया है ।'

'यह समाचार कब आया ? यामनिह ने देव के साथ प्रसन्न किया ।

मन्त्री ने उत्तर दिया 'मन्त्री घड़ी भर पहले । घातपात के बाद जबड़ बने हैं । मन्त्रीनी मष्ट कर दिया गया है । नरवर के चारों ओर घेरा बढ़ गया है ।

'सिकन्दर मोदी कितने हैं ? कितने हैं ? कहाँ ?

सिकन्दर मोदी दिल्ली में अपने मरहमों से उलझा हुआ है ।

जुमला का मधरी ?

मधरी सीराष्ट्र के ठाकुरों और पुर्नगालियों में व्यस्त है ।

'बिस्तीर के महाराजा रामनस की सन्धि माहू के सुम्मान से है । हम महाराजा को हम अपना मनुष्य मानते हैं । महाराजा की सुम्मान का निवारण नहीं कर सके तो कोई बात नहीं मयों कि सुम्मान बर स्वयं सन्धि-यत्र की मायता नहीं हैता' तब कोई सबसे निबाह भी बीते करा सकता है ? मैं कम कुछ कर देना चाहता हूँ । तुम महाराजा की को समाचार भेजो । माहू भी सिक्ख को कि दिल्ली के बाबघाह सिकन्दर से सम्मान उन्हें । यदि हल बीच में माहू सिकन्दर से मत्र भाव्य तो हमारा उद्योग भीम सफ़लता की ओर बढ़ेगा । मन्त्र की सीमाओं को धतर्क रखना । ये मरवर का छठार करके भीम लोर्टूना ।

मन्त्री की व्यग्रता बनी गई । येहरे वर सन्ताह छा गया । बोना सेना की तैयारी कर इसी समय दिखोरा पिटवाता हूँ । रात भर में तैयारी हो जायगी ।

राजा ने स्तब्ध की ।

बैजू भिगाई सी बुरा रहा बा । राजा ने बेला ।

कहा 'भाचार्य बैजू तुम कुछ कहना चाहते हो ।

बासने की हथ्था न रखते हुये भी उसके मुँह से निकला 'महाराज जन्देरी में मुल्तान का सुबेदार शरणा भी दसबन सायना । मानुभ नहीं वह गरवर पर ही था दूटेगा या ग्वाभियर की ओर घायला ।

राजा बोला मैं जानता हूँ । जन्देरी के राजसिंह का सोम गरवर पर है । वरन्तु मैं सावधान हूँ । ग्वाभियर की पूरी रक्षा का प्रबन्ध करके ही कूच करेंगे ।

कल से मैं अपने कार्य का धारम्भ कर दूँगा । युद्ध उसमें कोई बाधा नहीं आस सकेगा । विजय में कहा ।

'नहीं टाल सकेगा । राजा न समर्थन किया ।

'तो कुछ शक घायकी बोला और भाचार्य बीजनाथ के यत्ने का लाभ ही आय । मानसिंह ने अनुरोध किया ।

मन्त्री ने उन दोनों की ओर निहोरे के भाष धान्न फेरी जैसे क्लिप्त कर रहा हो कि टाल दो ।

विजय बोला 'महाराज अनुषा की प्रत्यक्षा का निरोक्षण करिज बाणों की मोर्के टटोलिय कहीं मायरी तो नहीं पड़ गई । बोला के बाघ की ध्वनि और भाचार्य बीजनाथ की लालों की भौंई सैनिकों के कान में भी पहुँची फिर ने कल कूच करने की तैयारी न करके बिना न किसी बाजे की केकर अपने राजा का अनुसरण करेंगे ।

मानसिंह ने हठ नहीं दिया सुरक्ष मान लिया । वे तीनों बल गज । मानसिंह मृगनयनी के पास पहुँचा । मन्त्री के धाने का कारण बतलाया । युद्ध की बात को सुनकर मृगनयनी को अपने तीर कमान और बछे का स्मरण हो आया ।

बोली 'महाराज की आज्ञा मिल जाय तो मैं भी युद्ध में अपने लक्ष्य-
व्यय की परीक्षा बैरियों पर करूँ ।

नागसिंह ने सक्तास के साथ कहा 'अभी नहीं । युद्ध तो धावे दिन
हाने रहते हैं । माँह के मुस्तानों को गरवर की ही चाटियों में तोमरों ने
कई बार हराया है सो आज्ञा है अबकी बार भी मुस्तान का मुँह मोड़कर
घाँऊना । तुम्हारी स्वर्ति बकड़ों बिगनी छभि देसी उतना तुम्हारा
जाय न देवा ।

भूगनवनी को धज्जा हुई—राजपूठ स्थियाँ युद्ध में लड़ने नहीं जाती
वरन उनके बाँहर करने के बिचे घर पर तैयार रहना पड़ता है । मुँह
बीचा कर लिया ।

मेरी एक प्रार्थना है —उज्जा ने विनय की —'तुम अपने कार्यक्रम
को जारी रखो । माकन-माकन इत्यादि सब चण्डी लड़ चमता रहे ।
जम्हना हैं अब मोड़ू तुमको बूब मोल-यमन पाऊँ । कला तुम्हारे लड़
बाब के लिये है ही । काम में लड़ी रहोमी सो उदासी नहीं धामेमी ।
माकन विषय काम को ही सब से ऊपर मानते हैं ।

भूगनवनी को लाली का स्मरण हुआ । उत्कट कामना हुई, कहीं
आज लाली प्राप्त होती ।

माँह को न दबा सकी भरकर बोली 'लाली को घीर भाई को राई
ने बुलवा लीजिये ।

नागसिंह ने तुरन्त हामी भरी 'अभी लो साँझिनी सबार घीर उनके
साथ लड़ ऊँट भेजे देता हूँ । रात में ही दोनों आजायेंगे ।

नागसिंह ने बविलम्ब साँझिनी सबार घीर ऊँटों के भेजने का आग्रह
जल कर दिया । फिर कृष की तैयारी में लग गया । रात भर तैयारी
करके सुपौरय के उपरागठ सेना बल पड़ते के आदेश की प्रतीक्षा करने
लगी ।

एक बड़ी विन बड़े राई से साँझिनी सबार लौट धावे । एक ऊँट पर
उनके साथ केवल भोजन पुजारी पाया । उसने नागसिंह को उन दोनों के

विवाह बाँध के जाति-बहिष्कार धीरे धीरे के साथ कहीं भाव निकल जाने को कहा सुनाई ।

ग्रन्थ में कहा महाराज ने दोनों धनहीनो कर दये । बाँध बाँध नहीं मट सके । कुशल हुई कि वे जले दये नहीं तो बाँध में उनकी बड़ी दृष्टि होती ।

‘आपने रहते ! बड़ कष्ट के साथ मानसिंह बीता ।

बोधन कुछ विचलित हुआ महाराज ने क्या कर सकता था । शास्त्र-बचन के सामने ये छोटा सा पुकारी असमर्थ था ।

‘आचार्य विजयजन्म भी धारकों में पारङ्गत हैं । वह तो विष्णुस-इसरी बात कहते हैं । जातपाँव की इस कठोरता की वह बहुत निन्हा करते हैं ।

‘वह भय में ह । मैं उनसे धारार्थ कर सकता हूँ ।

‘कन ?

‘यही । बुला लीजिये उनका । मैं बिना पुस्तकों की सहायता के ही उनसे यही धारार्थ में दो-दो हाथ करने को तैयार हूँ ।

‘हूँ ! मौनियों धीरे मुस्काओं से भी कभी धारार्थ करन की कामना हूँ तुम्हारे या तुम सरीने पुरातन-मौनियों के मनमें ?

‘हूँ दीनबालु, धीरे कभी धक्कर मिला तो पैर पीस नहीं खाँसूँगा ।

‘तुम्हारे पैरों का ही सबकुछ बिललाई पड़ता है या धाँधों को भी ?

‘महाराज समा करें हिन्दू मान की धाँध बाँधल ही है । वह ग दल-तो सब मन्त्रे हैं ।

‘तुम्हारी भाँधों ही राई बाँध के किसान-मजदूरों ने धटल और पाँचारागी के ध्माट-सम्बन्ध को परचा होगा ?

‘धीरे धिक्की भाँधों बेलते महाराज ने ?

‘तुम सरीखे मूढ़ ही मिले राई के उन धर्मों को !

महाराज क्रोध करें तो घोर न करें तो भी संन्या ब्राह्मण घोर प्राचीन काम के शास्त्र-पुराण घटल है घोर रह्ये ।

हि मजबूत क्या हमारे समाज के इन अन्ध-बहिरों को कभी सुझा सुनता करोप ? या हम सबको डूबोकर ही रहाने ?

‘ये जानता हूँ महाराज को यह सब भ्रम उस अधर्मी विजयजयम ने बिना है । बुद्धा सीजिये उसको घोर कर सीजिये अपने सामने मेरा घोर उसका शास्त्रार्थ ।

‘किन्तुना समय लपटा शास्त्रार्थ में ?

‘एक दिन दो दिन चार दिन जितना समय जाय । यह उसके कृष्ट घोर हम दोनों के शास्त्रज्ञान पर निर्भर है ।

‘तो ये तुम्हीं रम्भट, बोंसि घोर बोझों की हीसों को बरबर पर घाय हुये बैरी का सामना करने के लिये पुकारों पर पुकारें लगा रही हैं उनको बन्द कर दूँ ?

‘शास्त्र तो महापद्म शास्त्र ही है । प्रायः चाहे बड़े धार्मिक परंतु शास्त्र की बात नहीं जा सकती ।

‘तुम्हारे मन्त्रविश्वास ने सब हो सुन्दर प्राणिमों का विध्वंस किया ! उनकी हत्या तुम्हारे ऊपर है ॥

‘महाराज की जय हो । बर्म के लिये यह गिरिह ब्राह्मण अपना प्रायश्चित्त को तैयार है । सीजिये बन्ध ।

‘मूर्खों को बड़ा भी नहीं समझ सकते । ये सीधी बात कर रहा हूँ तुम डस्टे बोझे जा रहे हो । धर्मी तो मैं जा रहा हूँ । बरबर से लौटकर तुमको घोर तुम्हारी बात को समझूँगा ।

बोचन पुजारी के कृष्ट विचलित मन में समझाया राजा ने बन्ध को स्मरित कर दिया है पर दिया बन्ध अपने साके घोर समझिक का पक्षपात करके ।

स्वाय-उपस्था की वृत्ति से प्रेरित होकर जाता 'तो मे रहुँ क्यों राई में ? क्या बाँटेंगे नहीं बिरेह ।

राजा खुरम हो गया । तीव्र स्वर में कहा 'बन्ध बाधो वहाँ जाता हो । एक मूर्ख तो कम हो कामया इस राज्य में । फिर कुछ भीमा पड़ कर बोला 'तुम रहो या बाधो राई का मन्दिर तो मैं बनवाऊँगा ही ।'

बोरोन के विमाम की बढ़ती हुई सनसनी कुछ उतरती । चुप रहा । राजा को जाने की बस्ती थी । बाधन बाधोबाध का हाथ उठाकर जाता गया । राजा को उसके बाँधे ही अपने काब पर परिताप हुआ । साथ ही नासो का बिज्र घाँवों में भूम गया—यके में मोतियों का हार जाता या सुगनयनी के प्रथम-विसन के समय मृत श्रीर निस्संकोच माव से सामन भाई की धीरे घटव कितना सीधा अस्तुष्ट यवक था ! मरवा दिया इसी पुजायी की करतूत ने ।। कितना हठो मूल ई वह ।।।

पुजायी धौल की घोरम हो गया श्रीर परिताप पल गया ।

मानसिह सुगनयनी के पास बिना केने के निय गया । घटल श्रीर नास्ती का बुतास्त सुनाया । सुगनयनी की उन बड़ी घाँवों में से दो बड़े बड़े घाँव समझकर टपक गये । मानसिह की बिदाई ने उसको संभाल दिया ।

बहुपद् कष्ट से सुगनयनी ने याचना की 'यदि उस धीरे बनका कुछ पता सब जाय तो आप अपने साथ लिवा लायें ?

मानसिह ने बुद्धता-पूर्वक उत्तर दिया 'अवश्य । उस युद्ध के बाद ही आसपास के इस प्थ से भी सङ्गुया ।

सज्जन-मन सुगनयनी ने धारतियों के साथ मानसिह को बिदा दिया ।

सबकी भारतियों धीरे धमीलों में मानसिह ग्वाभिवर से उभी दिन मोर्चों की योजना बनाकर नरवर की दिशा में चल दिया ।

[११]

द्विमासुरीन प्रियार्थी ने नरवर के पश्चिमी घोर दक्षिणी बाजुओं पर चौकियाँ बिछा दी थीं और अपनी मेला के बहुतांश को उत्तर घोर पूर्व की ओर लेजा लिया। पश्चिमी घोर दक्षिणी दिशाओं में सम्ये और ऊँचे पहाड़ विज्ञान जंगल और बड़ी बड़ी पाटियाँ थीं। नरवरपड़ का एक ही फाटक—अवसपीन—दक्षिण की दिशा में था। नरवर की बस्ती परकोटे—से विरही हुई, किले के नीचे पूर्व से अवसपीन नामक दक्षिणी फाटक तक लेबी हुई थी। किले का से सेना टेढ़ी ओर था परन्तु नगर के मिटाने में कम बाधा थी।

नरवर के दक्षिण-पश्चिम से बहती हुई सिन्ध नदी उत्तर का करबट लेती हुई पूर्व की ओर बगी बई है। नगर और किले का सिन्ध ने जैसे हीन घोर से घेर रक्खा हो। नदी की पूर्व वाली मोड़ पर द्विमास का शिविर था। जन्वरी से सुबेदार एक बड़ा बस्ता लेकर उसी दिन आ गया था। एक ही दो दिव बाद द्विमास ग्वालियर पर आक्रमण करने के लिये आये की था। नरवर का नया जन्वरी का सुबेदार आके रहता। जहाँ व्याघ्रपद पब्लिकर में आया कि नरवर तो वैसे ही हाथ जोड़कर सामने आ बड़ा हीना। द्विमास उसका बड़ा भला जन्वरी का सुबेदार और मटरक रहन ही इस निष्कर्ष पर पहुँच गये। उस समय तक सुराही और व्याघ्र निवास के सामने नहीं आये थे। बगी सज्जा होने में कुछ देर भी थी।

मुस्ता ने मुझसे येण किया 'अहापनाह' बाहर को जन्वों में करके वहीं मन्दिर और कुतों को छोड़ थे। इसके बाद सुबेदार के हाथ में धेरे को छोड़कर ग्वालियर की तरफ बृच करे तो बहुत धन्य होमा।

द्विमास को यह बात नहीं रची। बोला 'नरवर के मन्दिर और कुत तो हमारे बुजुर्ग पहले ही छोड़ चुके हैं।

कैफिय नये तामीर हो गये हैं अहापनाह।

‘क्या आशय इस बकार काम से ? हम छोड़ते बायें से बनाते बायें मज्जा बना रहा ।

‘जहाँपनाह हिन्दुओं को धरमी रसनामी का यकीन बुतों पर है । बुतों को छोड़ दीजिये, इनका धरमीन टूट जायगा फिर कीड़ों-मकोड़ों की तरह बिमबिलाते फिरने लगेंगे और पनाह माँवने लगेसे ।

‘यह सही है कि हिन्दुओं का बीज-ईमान धीरे बकीन सीकड़ों हजारों देवताओं में बटा हुआ है इसलिये पेड़ों-गल्बों को पूजते हैं मगर बुतों के मिटा देने से उस यकीन को कंठे खतम किया जा सकेगा ?

‘इसका असर पड़गा जहाँपनाह किसी भी धाकड़ के शिर माने पर से बुतों की पनाह पड़ते हैं । बुतें टूटें यकीन बजड़ा और पनाह नई ।

और मोट्टा पाते ही फिर चिपट पड़े मन्दिर बनाने पर । मुस्ला बी, यों ही घाम हिन्दुओं को चिढ़ाने से क्या आशय ?

‘जहाँपनाह से मैंने सब कर दिया है । दिल्ली के मुस्लाओं का यही प्रत्यवा है ।

पियास हुआ कुछ कर रहा गया—दिल्ली के मुस्ला मुमते भी बड़कर हैं । काम बने जाहे बिपड़े इनके प्रत्यवे के सामने शिर की झुकाना पड़ेगा ॥ कठमुस्लों के सामने ॥

पियास ने कहा ‘मैं रात में और कहूँगा । कबरे कुकुम बुँधा । इतना बमी तँ फिरे देता हूँ कि सहर पर औरदार हमला किया जायगा । सहर को काबू में कर देने के बाद किले की क़वाह या बेट पदाहा साधान हो जायगा । मगर सहर को जल्दी हाथ में न कर सके तो मूबेदार को यहाँ छोड़कर ग़ालियर चल देंगे ।

बन्देरी का सूबदार टाभी प्रकृति का धाधमीवा । बोला ‘जहाँपनाह सहर के हमले को कम रात के लिये तँ करवें ताकि मैं धरमी से बसकी जगत में लय जाऊँ । राजनिह के पास एक बस्ता राजपूनों का है । वह हमसे के लिये तड़पता रहा है ।

‘उसका बर्फीन किया जा सकता है ?

जहाँपनाह पूरा । उसका भाग उस चीन न लेने देना ।

माट ।

‘जहाँपनाह माट दिन रात उसके कान में भरता रहता है कि दुश्मन से बापदाहों के बीच का बरफा न चुकाया धीरे बापदाहों से छीनी हुई बिमीन को दुश्मन से बापित न लिया तो राजपूत ही नहीं कुछ धीरे है ।

क्याका मटर धर्म मरी दृष्टि से सुस्तान की ओर कई बार देख चुका था । सुस्तान की निवाह गई ।

बोला ‘क्याका तुम कुछ कहना चाहते हो ?

‘जहाँपनाह ऐसी तो कोई बात नहीं है — मटर ने कहा — एक छोटा सा क्याज कठा था उसको छुड़ूर कम ही कर देने । गुनाम की समझ में मभिर धीरे मूरतों का छोड़ना बेबस्त होना यों ही घाम हिन्दुओं का दिन दुस्ताना क्रिन्म है ।

बिबास बोला ‘वही मैं सोचता हूँ ।

मुस्ता ने बेबस्तक छल किया ‘जहाँपनाह घाम हिन्दुओं की हिम्मत को पस्त करने की वही तरकीब सब से अच्छी है ।

मटर ने फिर धर्म मरी जाँच पुवाई ।

कुछ धीरे कहना चाहते हो ? बिबास ने पूछा ।

मटर ने उत्तर दिया,—‘कुछ नहीं जहाँपनाह बर्फी छरीब-करीब सभी ही हो चुकी है । नमाज का बहुत धा रहा है ।

बिबास समझ गया कि एकाम्त में ही कुछ कहेगा । मन्सिप्त लतम कर बी गई ।

दो बर्फी के बाह मुराही धीरे व्याले के एक को बीच होते ही मटर धीरे बिबास राबटी के उब लण्ड में धकेले रह गये ।

'कूँस कइना चाहते थे तुम ? शिवाय ने मस्ती के स्वर में पूछा ।
'हाँ जहाँनाह — मटर मे उतर दिया — 'मर्ब घोरत — वो गट —
उस विरोह के घाय है । लाखी नरवर में है ।

'हाँ ! क्या सब ? इतना नजदीक ! यहाँ से घाय कोस पर ही ! !
कमाल की खबर ही तुमने मिमी मटर ! !

'उबर सही है जहाँनाह । लाखी घाने के भिय क़रीब-क़रीब तैयार
हो गई है । वे गहने धीरे कपड़े उसने बड़े छोड़ धीरे बाब से पहिने
थे ।

भाई बाह ! भाई बाह ! ! हसी बड़ो हमला कर दो नरवर पर ।

'मस्ती म की बाय सरीब परवर । दोनों गट कल घाय तक नरवर
घहर में फिरी ठरकीब से कुस जावेंगे । वहाँ उनके बाक़ी सामियों के
बीच में होनी बह । वे गट वहाँ पहुँच कर कल रात एक बेंबा हुमा
इसारा करेंगे । समझ लिया जावगा कि लाखी उन लोगों के साथ
उस मक़ाम पर है । फिर घहर पर नज़्मा करने की बसी वल पूरी
कोसिदा की जावे ।

गाबाघ मेरे मटर ! मजलिस में जाहिर करने लायक न थी यह
बात ।

'घहर को स मेने के बाद मन्दिर मूर्तियों को हाथ न सपाया जावे
जहाँनाह । हिन्दुओं को पुसलाने का यही तरीज़ा छायद, सबसे पञ्चा
एहवा । लाखी बाक़िर हिन्दू ही है । अगर मुस्लावी को समझ में यह बात
नहीं आवेगी ।

'भया है । बेचकू है ! ! गालायक है ! ! जाहिल है यह मुस्ला ! ! !
मुस्ला नहीं कठमुस्ला है । निकाल दो उसको छावनी में से । माँह से भी
करदो उसका कामा बह । सुस्तगतों की बरबारी की जड़ में ये मक्के ही
रो रहे हैं ।

'अर्हापनाह कमर माछ करे घोर युनाम के छिर को बर्यो । यह मोझा मुल्ताबी के निकालने का नहीं है । छिपाही नाराज घोर बरिस हो बायेने । माँहू बलकर बहर हुजूर शुभ समय करे ।

'मे कतम सावा हूँ, बवाजा कि माँहू लौटने पर इन सरका काबी मुल्ताघों को निकाल कर ही बय नूँवा ।

मटक मन ही मन बहुत प्रसन्न था । छिर नीचा करके प्रसन्नता को छिलाने का प्रयत्न करने लगा ।

निवास ने कहा तो फिर कम की रही ।

चटक ने बड़ी नम्रता के साथ विषय की अर्हापनाह ने जो तै किया है बड़ी होना । मे गटों से सारी सरकीब घोर फियरत को धोरेबार तै करके नीचे पहर के करीब धर्रा कर डूँवा ।

निवास बोला 'ठीक है । खीब तैवार रहेगी । घाम के पहुँचे ही मोर्चों की बाय तै हो जायगी । खीरन नम्रता बनाकर काम शुरू कर दिया जायेगा ।

हुजूर ।

'अच्छा मे नट कैंसे था वयें यहाँ तक ?

'उसकी समयका गुन्हाकर माँहू भिने था रहे मे कि हुमले की खबर नाकर रुक बने । सम्यें से जो खबर देने घोर महर लेने के भिने हस्ते की तलाश में खबर पाने खबर लालची बाकी मर्गों के साथ सहर में खबी गई ।

अपों ?

'अर्हापनाह इस बात का पुरा पता तो उन लोचों के मिलने पर ही लग सकेगा ।

'तब बेवकफ हूँ । काम करने का संय नहीं जानती ।

'अर्हापनाह ।

‘तुम भी बरबिसास हो ! मयर लैर ।

मटरू ने छिर मीचा किये हुये बाँध भीचे ।

दियास एक क्षण बाद बोला ‘छिर कल का काम बहुत होछियारी
के साथ किया जाय ।

मटरू ने कहा ‘जहाँपनाह ।

[३४]

नरवर के नगर-कोट में तीन फाटक थे एक उत्तर की धोर धोर वा पूर्व दक्षिण में । बीचारें ऊँची भी धोर फाटक मजबूत । हाथियों के कबज-रक्षित नामे की फोड़ने के लिये फाटकों के बाहरी और बड़े मोटे लूकीले लोहे के कीले बड़े हुये थे । छाव-सामग्री नगर धोर डिसे के भीतर कम से कम एक वर्ष के लिये वर्षाण्य थी । स्वच्छ पीठे पानी के बहुत से घण्टे कुये नगर में और घनेक ठानाव किले के भीतर । रक्षा के लिये लड़ने वाले धीरे आक्रमणकारियों का मुर्ता कर देने के लिये फाटकों की दुर्गों धीरे कोट भीनारों पर भारी-भारी चट्टानें जिनको नीचे डकेंन रिवा जान तो नाक की टूटे । नरवर वालों को विरवाह वा कि लाम मर एक छो घबु लकका कुछ बियाड़ नहीं सकता फिर पचा मानसिह सहायता के लिये म आ पहुँचेंगे क्या ?

सुल्तान की सेवा को अपने पुराने अनुभवों के आधार पर बिस्वास वा कि हिन्दुओं में लड़ने वाले बल प्रतिघट से भी कुछ कम होते हैं । ये बल भी भापसी लड़ाई लड़कों के कारण एक दूसरे की बर्बन काटने में व्यस्त ।

पर उन बल में से शत्रुओं को बर्बन वा में अपने ही घबु को मार भयाईना, अपने लपोत्री की सहायता क्यों न बिचसे अपने पुरखों की बायोली बापिठ केनी है और ऊपर की किली मठारभी पीड़ी वाले पुरखों के अपमान का बिचसे प्रतिघोष करना है ?

नरवर के इस बलान्ध में लड़ाई की समग को घबु का भावाहन करने लक्ष पर टूट पड़ने धीरे मार कर मर मिटने का मोल धीरे कलाह वा । वह अपने पुराने करतब धीरे नई देखस्वी बहर की भापा में बाडी के मन्ने को स्तुति साहस धीरे दीर्घ देने का प्रवाह पर प्रवाह कर रहा वा । रम्यत, योंतों धीरे पुरहियों के बहर-बहर कर होने वाले भारों द्वारा जनता की स्लाधुमों को प्रबलता औरस्पन्दन दिवा बारहा वा ।

जमजमाते हजिबारों मूँषिया रंग के कपड़े पहिने समझते हुये जोड़ों पर सवारों घीर इट्टे-कट्टे ऊँचे पूरे जवानों को देख-देखकर जनता को स्फुरण मिला रहा था ।

परन्तु साधारण जनता के मन में खिपा बैठा हुआ कोई कमी-कमी कह देता था—पहले भी तुर्क भाग्य है यहाँ जिनका सामना इसी तरह के योद्धानों से किया घीर कट मरे मकर मुटा पिटा घीर मिटा घातकी बार भी बैसा ही हो सकता है । पर हमारा राजा मानसिंह तो दूर नहीं है वह धायमा—हाँ यदि मये ब्याह की मस्ती में न भ्रम गया तो !

फाटक बन्द कर लिये गये थे बाहिर भीतर से लोगों का घामा निपिट कर दिया गया था । नगर की जनसंख्या बोड़ी सी बड़ गई परन्तु इतनी नहीं कि घात के लिये कोई विषय चिन्ता करनी पड़े । फिर भी दो दिन के भीतर ही घात का भाव बह गया । बुबुने मोल बिकने लगा । व्यापारी माघे को ठोक-ठोक कर बर्देन हिमा-हिमा कर कहते थे सब ब्योपार चीपट हो गया ! जनका मन भीतर ही भीतर खुसफुसाता था 'जमता रहे बेरा दो बार महीने तो एक-एक के सो-सो बूँद पर बह है ! घीर समर घनु भीत ही गया तो ब्रह्म बरुन इत्यादि सबको भी बाहिये बहुत सस्ता भी खरीदेगा तो बुबुने में तो कसर सयने की नहीं ।

नगरपाल और डिमेन्डार के पास धिकायत पहुँची । उन्होंने समाधान किया लड़ाई के युग में ऐसा हो ही जाता है बीरज से काम लो स्यादा मजबूरी करके कमाओ लाओ । वे दोनों बीर धासकबर्ब सोचते थे बैठ ताहूकारों को नाराज किया नहीं कि भूतों मरने की नीयत पाई ।

सासी घटल घीर गटों के पास धपने निज का धम बरुन था इसकी चिन्ता नहीं थी । कम से कम कुछ दिन । जब कुछ धायमा तब गया होया ? कब तक इस जनजानी जगह में धिरे रहना पड़ेगा यह समस्या घटल घीर लाखी को प्रसमंजस में डाले हुये थी । परन्तु उस समय प्रसन्न बर्तमान का था ।

वे दोनों गटों के साथ ही मगर के एक जुके स्थान में पैरों के नीचे बा टूटने लगे । उनके घास-पास हजर-जबर से भागे हुये कुछ घीर मोम टूटने लगे थे । यह ठीर बलिछी फाटक के निकट था । मगर मोमों की बस्ती में इन मोमों को खान नहीं मिल सका । मगर घीर लासी गटों के समूह में होते हुये भी जगह कुछ बिना एक धमक सी इकाई बनाये थे ।

घास के टूटने हुये मोमों ने जान लिया था कि यह समूह गटों का है परन्तु मगर घीर लासी की धमक इकाई ने उनके मन में समझ उत्पन्न किया—वे कोई घीर है । प्रचलन घीर धमका के अनुसार एक ने इन दोनों की बातचीत सुनी ।

मगर ने बतलाया 'मगर ठाकुर है ।

नामकिन के दोनों पर बरबस मुस्कराहट कीच गई घीर मोमों की पुनर्निर्माण हुई । उसने भागे का बातचीत विवेक संचक हुआ ।

यह बड़ी शीनता के साथ बोला 'दोनों जने गूजर ठाकुर हो । गट नहीं हो । यह तो मैं पहले ही समझ गया था ।

गटिनी ने पीठ घेर सी मानों असह्यति प्रकट कर रही हो ।

बोली 'कोई सही गट नहीं है जैसी बात के है । क्या करोये पुछकर ?

कुछ न बतलाकर यह बहुत कुछ कह गई ।

प्रचलन ने मगर के साथ कहा 'आई टी मुझसे क्या करना है । पर यह तो पूछा ही जाता है । सब पूछते हैं । कठिन समय में जान कैसा पड़ता है कि किसके हाथ का जुगा पानी पिये घीर किसके हाथ का न पिये । मुझे घीर करना ही गया है । मैं पूछ लिया तो कौन कुछ बुरा किया दूसरे लोग पूछेंगे ।

नामकिन पीठ घेर ही बोली 'यह गूजर ठाकुर है घीर बनी भी जैसी बात की है । जाओ अपना काम देखो ।

बहु धन का काम देखने लगा—अर्थात् उसने अपने सहचरियों से यह सिखा कि दोनों जिस जिस जातियों के हैं और कुछ साल में काला है। युद्ध का काम था। लोगों को अपनी-पानी कठिनाइयों को सुलझाया पहले मुसलमानी थीं। बेला आयना। कहकर वे अपनी चिन्ताओं में डूबने उतराने लगे।

नगर की बनी बस्ती की तरफ वे कुछ रोरे की आवाज आई। सही और धन में काम आया। कुछ मोव भागते हुए आये।

‘मृग मये ! मर दये !!’

‘मायो ! क्षिप न यो !!’

‘तुको मे मार जाला !!’

‘धायन कर दिवा ! तुन की नदी बहायी !!’

मर्दों ने बस्ती जल्दी एक दूसरे की ओर देखा और हस्तीमान के साथ अपने लुने सामान को छुट्टा लगे। नायकिन न बीरे से एक मट के काम में कहा ‘इन लोगों को देख रहना कहीं मुक क्षिप न आयें।’

मट ने सतर्कता का छिर दिखाया।

मटल का चेहरा बिह्वल हुआ। लाली न होंठ छटाय और कमर में पड़ी हुई छुरी पर हाथ डाला। सोचा ‘यहसे भी बहुत सी राजपूतनी बिता कर बस्य हो चुकी है। मगवान की दया से मैं छरी कर पकड़ना और बलाना भी आसानी है। तुम्हें मुझको नहीं लु सक्ते। मटल के निकल बहरे पर उसका ध्यान नहीं गया।

चौटा पुकार करने वाले जैसे ही निजट धाय लगे स मटल न और कहनों व प्रश्न किये

‘तुम्हें किस फाटक से लुन आये है ?’

‘वहाँ लूटमार कर रहे हैं ?’

‘किसी दूर है वहाँ से ?’

भुम कहाँ जा रहे हो ?

‘घर कहाँ जिये ?

परन्तु वे मिठी भी प्रश्न का उत्तर नहीं दे पा रहे थे । बड़ी रात को राजपूत खमार बीकते हुये घाये ।

एक चिस्माया ‘कबराबो मत । तुम्हें नहीं घाये हैं । तुम्हें हूँ ।

लोभों के भी में भी घाय । सबों ने उन सवारों को जर लिया । घटक घाने का ।

अन्त में पूछा ‘क्या बात हुई ? किसने किसको घायल किया है ?

सवार ने उत्तर दिया कुछ भी नहीं हुआ । बाड़ी जरा सी बात का बयान ही मया । कितने निकम्मे हैं ये लोग । धर्म की नाम-बीड़ बिस्ल-मुकार मचा दी ।।

फिर भी ? क्या बात थी ? अटक ने प्रश्न किया ।

सवार ने बयानाया ‘बात यह हुई कि बीच बाके फटक पर अकाल की घार से एक स्त्री घोर दुख्य रोते चिस्माते घाय । उनको तुम्हें ने पीटा-माटा होगा । घायल है । फटक अलबाल के लिय हाड़ा-ईला की । बिचारे निहत्थे हैं । हम लोगों ने फटक ओसकर बनको भीतर कर लिया घोर फटक ज्यों के त्यों बल कर दिये । वे भीतर घाने पर भी रो रहे हैं । कहते हैं मर रहे हैं । यहाँ कोई मर आये है ?

अटक ने संक्षेप से बिखनाया । नायकिनी भीड़ भीर कर घाने घाई । घाँवों के कोइलापन जला गया बा । बिहारे पर मुर्बनी थी छा गई थी । पुचबिया निकल मकाने को ।

कहाँ है वे लोगों ? नायकिनी ने भराने हुये गले से पूछा ।

‘अस घर की घोट में दिवाँलिये पर बैठे हैं । उनको घानी पिला दिया गया है । सवार ने उत्तर दिया ।

नाथकिन मोर कट उसी विद्या में बीड़े बने ।

सवार ने घटल से प्रश्न किया 'तुम गट नहीं हो क्या ?

घटल बोला 'मैं मूजर ठाकुर हूँ । उसके स्वर में भविष्य था ।
'कहाँ से आये हो ?

'मयरोनी से ।

'मयरोनी से ! मैंने तो कभी पहले नहीं देखा । मैं भी मूजर ठाकुर हूँ । यहाँ मूजरों की बड़ी बस्ती है । हिके के भीतर बलिछी भाग में तो मूजर ही मूजर रहते हैं । तुम मयरोनी में कहाँ से आये ?

'नामिदर से आये मे मयरोनी ।

'किर नटों में कैसे ?

'साब पड़ गये ।'

सवार ने अपनी नातेदारियों का बखान शुरू किया और घटल की ची पूछता परन्तु उधर ने मड बो जायलों को अपने बीच में आने दिये थे आये ।

घटल का समूह उन दोनों के भिड़त आने पर घुट हो गया—
रिस्ती धीर पीटा ने । मूज में तर ।

जब है तब अपने डेरे के पास आ मय रिस्ती ने नीची निवाहों एक घाँस की कनली को भिड़का कर संकेत किया । नाथकिन का चेहरा खिल गया परन्तु उसने अपने हथ को सुरक्षित रखा लिया । उन्हें घास-पास के लोगों की सीढ़ि घेरे जमी आ रही थी ।

नाथकिन ने दृढ़ स्वर में प्रतिवाद किया 'हम लोगों के पास दबाइयाँ हैं धीर जन्म-मन्म । जल्दी टीक कर लूँगी । अपने अपने डेरे पर जाओ । लोग हट गये । जाओ को देखना चाहते थे परन्तु न देख पाये । बोधा दूर से हो देख लेंगे ।

२७४

नायक ने एक और पोटा को लिग दिया और दूसरी ओर विस्ती को। पट्ट बटे पुराने कपड़ों की छाया ओर धाड़ कर ली।

घटन पोटा के पास जा बैठा और लाली विस्ती के साथ। नायक ने ओर घन्ट गटों ने उन दोनों के रक्त को बोबा-पोंछा। बाबों का वही कोई निदान न था। दूर से देखने वाले छाह और धाया के कारण घपना कुतूहल घण्ट न कर सके।

एकान्त पाकर लाली ने विस्ती से ज्येष्ठ के स्वर में पूछा किघने माय ? बोटे वही लाली ? कहां की तुम ? कहां रह गई थी ? विस्ती बरा ही मरकनई। डगर दिया 'कोट पोटा को लगी है मुमको नहीं लगी है। उनका मुन मेरे कपड़ों में मिश्र गया।

पोटा को कट कैसे लगी ?

'एक पारर से फिसल पड़ा। जीव में वेह का मुन्हा दूँ मुन गया। वस इसनी ही तो कोट है। लेकिन मुन बहुत निकला है। फिर तुमों के हाव नायल हो जाने की बहानी। वह सब क्या है ?

बैठे घटक जसते नहीं इसलिये मकर बनाना पड़ा। लाली ईश्वर का हुई। विस्ती ने हाव के संकेत से बरब दिया। लाली ने पूछा 'तुम दोनों रह कहां बय न ?

दरी रानी मय बननादेवी। बोड़ी देर म बसनादे देती हूँ। बरा लहर पकड़ो।

कोई और काम था नहीं। लाली मुमने के निचे धबीर हो गई। विस्ती स्वमित कर रही थी। उद्यम विपयान्तर किया।

बोली 'यहां कोई कष्ट तो नहीं है ?

लाली ने कहा 'मुनी जगह ठग के दिन। बीये कोई बात नहीं। रास्ते में महा घब तो मयर में ही है।

‘यहा जातगित तो नहीं पूछी किसी ने ?

‘पूछी थी । उन्होंने कह दिया घुबर है ।

‘और तुम्हारी बात ?

‘मेरी किसी न नहीं पूछी । पर कुछ लोगों को समझ हो गया । तो
हर की कोई बात नहीं । यहाँ घुबर बहुत है ।

‘कैसे मामूम हुआ ? क्या तुमने पूछ-छाछ की थी ?

‘नहीं । उनको एक सवार से बातचीत करते हुये मामूम पड़ा । मैंने
सुन लिया ।

तुम्हारी बात कै थी होने लोग यहाँ ?

हो सकते हैं ।

‘बिम्बा मत करो । मैंने पक्का प्रबन्ध कर लिया है ।

कैसे ?

बतलाऊँगी । घपुन को यहाँ नहीं रहना है ।

‘न जाने क्या कह रही हो । सोलकर सब बात बतलाओ ।

‘किसी से कहोपी तो नहीं ?

‘नहीं कहूँगी ।

‘तुम्हारे साहब से भी ?

‘हाँ—कहो भी मैं तो तुमने को धकला रही हूँ ।

‘तुम घमर बाहिर कर दोनी तो तुम्हीं को मुकसान होवा ।

कैसे ? मैं किसी से नहीं कहूँगी ।

‘कह दोनी तो यह बात फैल जायगी कि तुम धीरे तुम्हारे धीरे घमर
घमर बाहिर के हो । पर से भाव निकले हो । पार किया है इतलिये बंद
के भावी हो । सड़ाई के दिन है । डिनेहार धीरे नगरपाल किसी घंघेरी
कोठरी में बाल होने । फिर घागे की नव घाघायें मूनी यह आर्यनी ।

‘कह दिया कि नहीं कहूँगी । वैसे ही करवा रही हूँ । उसी समय उसकी पाँखों में यानसिंह और मिश्री का चित्र बूझा । घटस राजा के मातेभार है फिर भी हम सोनो के छाप मर्यापार किया जावेगा ? राजा ने भी इसी तरह का बाहर जात व्याह किया है । पर वह राजा है और हमसोय बरीब । राजा ने किया तो पाप नहीं हुआ हमने किया तो पाप बन गया । इस विषय पहाड़ी किले की किसी घन्टी कोठरी में जाके बार्से । क्या पिस्सी सच कह रही है । जातपात के नियम कठोर होते हैं सच कहती होगी । माखी ने सोचा । मनमें फिर कुतूहल उठा । कहाँ रहे वे दोनों इस बीच में ? कौनसा पक्का प्रबन्ध किया है जिसका प्रती-प्रती इसने संकेत किया था ?

पिस्सी चुप थी । माखी उसका मुँह निहार रही थी ।

‘बरा हम डेजू फिर बसाऊँगी । पिस्सी ने कहा और पाँखें बन्द कर लीं ।

चोड़ी डेर के बाव घटन भी पिस्ती को देखने के लिय आया ।
घिप्टाबार बर्तने के उपरान्त वह धीमे ही सीट जाना चाहता था ।
पिस्ती एक बाहर को घोड़े हुए बैठ गई । उसके चेहरे पर बकाबट भी
परन्तु पीड़ा का कोई चिह्न न था ।

बोली 'येन साखी को सारी कहानी बतला दी है । जैसे नगर भीतर
जा नहीं पाते । पीछा को बिरने से चोट लगी है । मरुको कोई चोट नहीं
लाई है । किसी से कहना मत ।

'मुझे क्या पड़ी है । घटन ने कहा ।

'सारी बात समी कहाँ बतलाई है — साखी बोली — कहती भी
बतलाऊंगी । यह बाहर कुछ कर-बर पाई है, पर अभी बहसाया नहीं है ।

घटन एक पया । मुमने के लिये उत्सुक था ।

पिस्ती ने साखी की धोर मुँह करके कहा 'नायकिन को किसी
बहाने से चुपचाप बुला लाओ ।

साखी के पीठ फेरते ही पिस्ती ने बघ पर से बाहर को बीचे
बिसकाया धोर घटन पर धीमे बघाई । घटन ने मानि के मारे बिर
नीचा कर लिया । साखी की धीमे में करके के बिसकने की भाई पड़ी
धीर उसने घईन को बरा सा भोड़कर कनबियों देखा — सब देख लिया ।
बली गई ।

पिस्ती ने कपड़े को जहाँ का तहाँ कर लिया । मुस्कराकर बोली
'यहाँ से बस देना चाहिये कुंभरजी । बहुत बड़ी आश्रय जाने वाली है ।

'जो जो बिसलाई ही पड़ रही है ।

'जहाँ जो बिसलाई नहीं पड़ रही है मत ।

'कौन सी ? कौसी ?

'मुम हमेशा कभी-कभी ही बोलते हैं ।

नहीं था। विषय-व्याप्त है न।

अच्छा अच्छा। यही से निकल जमें तब कभी बात कहेंगे।

कुत्तान कुत घाया है। हम लोग पता लगा पाय है। बहुत बड़ी जीव माय हैं है। हाथी बाड़े घावमी घनमिलते। घाव नहीं तो कम बाहर घोर किले पर चारो तरफ से बहाई होनी घोर हम सब कतर हाके बावें। इसी बीच में बाठपाठ के बिस्स को बसाइ-गछाइ हो गई तो न नगर के रहे न उबर के। यही से निकल जलो।

साक्षी नावाकिन को लेकर आ गई।

कैसा बी है बटा? हमने कुत्तार के साथ पूछ।

विस्मी न बचने घन की कवा मुनाई घोर नगर बाहर हो जाने की योजना को बतलाया—'बलिष्ठ फटक के पास बाजार से जमें हम ऊंचे ऊंचे पेड़ चले गये हैं। इसी घर होकर बाहर निकल जचना चाहिये। बलिष्ठ की तरफ पहले बीकी नहीं है। रात में चलकर छंदे तक साफ जवह पर पहुँच जायेंगे।

घटन ने पूछा, 'तुम्हारे इन जानवरों का अपने घनाज का क्या होना?

उसने उत्तर दिया 'अपने पाछ महने घोर टंके हैं बहुत से खरीद जेंदे। वो दिन के जाने घर के लिये घन ले लेंगे। बहुत हैं। प्राण तो बच जायेंगे। इस नगर में अपना क्या रक्खा है जिसके लिये अपने को बलि कर दें?

घटन के मुँह से निकला 'घोर यदि हम लोग न जायें तो?

नावाकिन प्रबलम्ब बोली 'तो हम लोग चले जायेंगे।

'तुमको यहाँ जोड़ जाने में दुख होया। घोर कोई बात नहीं। किसी से कहना नहीं मुँबर बी नहीं तो हम लोगों को यहाँ के सिगाही मार जायेंगे।

घटन ने कहा 'अभी हम नहीं कहेंगे। सोचता हूँ हम ही नहीं क्यों पड़े रहें ? पर निरुक्त जैसे कार्येंगे सो समय में नहीं धामा। दूसरे पोग इतना बायत है कि वह कैसे बायता ? उसका क्या यही छोड़ बायोवी ?

अभी बायकिन ने उत्तर दिया — मेरे पास ऐसी जड़ी-बुनियाँ थीर मन्त्र है कि सौम्य-सौम्य तक उसको चङ्गा कर दूँगी। हमारे पास रखे हैं। कोर के कंगुरों से एक छोर बाँधकर पास बाळ किसी पेड़ प पुनरे छोर का फन्ना बाँध दिया बायता और उसके सहारे उतर जायन। भीतर-बाहर कोई भी न लख पायता। कोर के नीच यदि नाहर बूम रहे होंगे तो पेड़ पर पहुँच जाने के कारण वे भी छड़छाड़ नहीं कर पायेंगे। दूसरे ऊपर से इतर उतर की टटोल करके छिर उतर कर बाग बह बायेंगे। य दोनों जगहों को और रखे को अच्छो तरह दल धामे हैं।

घटन सोचने लगा।

एक लल बाइ बोला 'बड़ी ओगिम का काम है। रात में होया। सोचकर सौम्य तक बतलाऊँगा।

पिस्ली न कहा 'उमत्रक जकरी सामान की पीटमियाँ बाँध तो नायकिन बितमें रात में खड़बड़ न करनी पड़े।

घटन ने पुछा 'रात में क्या बतला है ?

पिस्ली ने उत्तर दिया 'समाटे में बाबीरात के लयलय। बाज ठण्ड है नायकिन ईचन कुछ प्यासा इकट्ठा कर लेना। इतना कि एकदम बहुत खबेला होजाय और थप्ते-भाथ थप्ते में जलकर खम्बेरा छा बाय। सोय तो बायमे बाँरनी दूध बायवी और हम सोय चुनचाप बल होंगे।'

'कहीं बीछे में गहरे बाळ बायय तो ?' घटन बोला।

'पहरे बासे बुबों और बीनारों पर रहते हैं। बिच तो रहे हैं। बाजामेंगे तो कह देंगे कि हम सोय बाहर बालों की बाहट छेने के लिये कोट कर गये हैं। जब वे जछे बायेंगे तब हम सोय बिसक देंगे।'

नाशकिल धीर घटल नहीं से चले धारै । पिम्प्री में नाकी को रोड
मिया,—‘बोड़ी देर यहीं बैठो । मार्तें कर्कसी ।

बहु मम नई । बेहरे पर बहुत जबासी भी ।

पिम्प्री बोली ‘बबरामो मत धीर न मम को बिरामो । मम्मे दिन
धारै हैं ।

नाकी का बेहुरा तमतमा गया । ‘आव लये इस बात-पात में ।
जानती नहीं भी मैं । उसने कहा ।

‘मान छो कुंघार भी हम लोभों के साथ न गव धीर तुमको नहीं रह
जाना पड़ा, फिर था पड़ी घड़ीर पूज्यों की लड़ाई तब क्या करोगी ?

‘मर बाळीं धीर क्या कर्कसी ?—पात बाकों या तुकों के हाकों
माटी जाने स तो अपनी घुरी से मर जाना बच्छा ।

‘राम ! राम !! कैंसी बात कटती हो ।।। य विल तुम्हारे मरम
के हैं ।।।। मर पारै तुम्हारे बीरी । जियो मीर्जे करो धीर किसी बड़
राज की रानी बनो ।’

‘रानी बनना जिसके नाम में लिखा था सो बन गई ।

‘तुम्हारे भाव्य में धीर साफ सिखा है । ऐसी रानी बनोगी कि
बाठपाठ बाके वीरों की बूत बाटके-बाटके निहारे करेंगे ।

बाकी के लभने फूल मये । स्वास प्रस्वास के पैरों के बीच में छली
कठने-दिरने लगी । लगे की लगे जगर धाई । बाकों में धीसु था बने ।

पिम्प्री ने बड़े प्यार के स्वर में कहा ‘कैंसी जम्पा-जमिनी ली हो मेरी
नाकी । तुम्हारे रोने से मेरा कलेजा फटा जा रहा है ।

नाकी के धीसु भर गर्भों के पीठर पुतलियों में स चिनगारियां ली
झूकर नहीं पिघील हो गई ।

पिम्प्री कहती गई, ‘यहाँ से लक्ष्मी देना चाहिये आज ही रात में । न
तो यहाँ बाठजिन्नी धीर न जान बच पायेगी । हम लोभों को कतल करायें

जायेगी तो हमें भी सब सोनना पड़ेगा । फिर बात वाले पीस जाने में ।
उपर तुर्क सिपाही बूत पड़े तो कुपति हा जायेगी । मुल्तान बड़ा घम्मा
है पर जाने के समय वह हर एक सिपाही के साथ तो रहेगा नहीं ।’

विस्मी ने उसकी घोर देखा । कुछ खण्ड चुप रही । माछी धीरे-
धीरे घान्त हो रही थी ।

विस्मी मन्दायक बाकी शुम्हारै रानी बनने में दो तीन दिन से
अधिक की देर नहीं है ।

साक्षी ने मांसु पोंछ । सहज प्रश्लसूचक दृष्टि से विस्मी की घोर देखा ।

विस्मी ने अवाधपति से कहा ‘तुम इतनी सुन्दर समोनी हो कि माह
ना सुल्तान तुमको अपनी सोप में बिठमाने । मिले पलक-माँवड़े बिछा
देवेगा । वह तो तुम्हारे ऊपर प्यार बरसाने के लिये मानता है मना रहा
होना ।

साक्षी के कानों में समसनाहट छा गई । पाँचों विस्फारित हो गई ।
देह हिल गई । विस्मी ने सोचा बार बार कर क्या । पोंछी ‘ये झूठ नहीं
कह रही हूँ । यही बात तो बतलाती थी जिसको अभी तक मैं अपने मन में
रख चुके थी ।

साक्षी के बैठे हुये पले से निकला — क्या ?

विस्मी ने समझ के साथ कहा ‘शुद्धरदार सब तक किसी से न
कहना जब तक कि काम पूरा न हो जाय । कह देना तो हमारा कुछ
भी नहीं बिगड़ेगा । कुँवर भी तुमसे माया हो जावेय । जाति में यों ही
न रह जायागी । मरना तुमको चाहिये नहीं । निम्नी मौज के साथ
प्रातिवर की रानी बनी रहे धीर तुम मारी-मारी करी ।

साक्षी ने अनुरोध किया ‘पूरी बात कहो । अभी तो कुछ भी समझ
में नहीं आया ।

‘पूरी ही गुप्तानी हूँ — विस्मी बोली,—‘पूरी मुझको । मैं धीर बोल
जब मुझे बिछो तो एह बीबी पर पड़त लिये पय । बीबी जाने मुल्तान

के सामने से बये। उनको हम लोगों ने सारी कमा चुलाई। तुम्हारा हाथ तुमकर सुस्तान को बढ़ी बसा आई। जब तुम्हारे रूप का बखान सुना तो वह छछन पड़ा। बोला, ये ऐसी रूप वाली को छाती से लगा लूँगा और अपनी राखी बनाकर रखूँगा। हम कह धाये हैं कि वो तीन दिन में लिये जाते हैं। रात को यहाँ से बाहर होते हो जंगल में सवारी के लिये हाथो मिलेना और बात की बात में सुस्तान के सामने पहुँच जाओगी जहाँ सोने मोतियों के डेर और मकमली पर्वत तुम्हारी बात ओह रहे हैं। हम लोगों को तो अब यहाँ रहना नहीं है। न भी जा पाय ता सुस्तान के सिपाही हमको नहीं सता पायेंगे। जैसे ही उनको बतलाया कि हम कौन हैं हमको छुपेंगे भी नहीं। तुम्हारी तुम जानो। सारी बात बतलादी। जल्दी से ले कर ली वो कुछ करना हो।

साखी ने पीठ फेर ली और कुछ क्षण तक नाच और गाने को साफ करती रही। जब उसने पिल्ली के प्रति मुँह फेर दिया तो साखी ने और बेहतर कोशिश की।

साखी ने कहा 'तुम्हारा क्या होना?—कुँवर को का ?

पिल्ली ने उत्तर दिया 'सुस्तान के दोस्तान बनने और क्या होना?'

साखी ने बहुरा नीचा कर लिया। होठ हिल रहे थे और घोंघें फड़क रही थीं। पिल्ली ने इतना ही देख पाया। लोड़ी के बाद अब सिर उठाया उसका बेहतर साखी का और साखी भुकी हुई।

इधर-उधर देखकर साखी ने और से कहा 'अलूनी तुम्हारे साथ। और उनको भी ले अलूनी। आज ही अब हो। एक बात पूछ ता बतलाओगी ?

पुछो।

'मैं तुम्हें चाहते हैं ?

'ठीक नहीं कह सकती। बायद चाहते हैं।

'तो तुम उनके पास बनी रहना, उनको कुछ पहुँचाना।

ये तो यही चाहती हूँ । उनसे इस समय की कोई बात अभी मत कहना । बाहर निकल चलने पर सब मरने प्राय कुम जायगा । यहाँ से रस्ते के सहारे जैसे ही पेड़ पर पहुँचे थूँह की सींगे हो कि हाथी सवारी के लिये घा मये । उभर हयमोष मुस्तान के पास पहुँचने इधर उठी पेड़ घीर रस्ते के सहारे मुस्तान की सेना का एक बड़ा भाग नगर में कुछ घायेगा । फिर सुन लेंगे कि मुस्तान नरवर का भी राजा हो गया और तुम माँह घीर नरवर की महारानी । विस्मी का उत्साह खोर पर पा ।

माखी के होठों के एक कोने ने घूरकी ली । घाये खग म वह घूरकी इधकी ली मरकान में पकट गई । S in D. 111

माखी न बहुत धीरे से कहा — 'मैं उनको चलन के लिये तैयार कर लूँगी । अभी अब की कोई बात नहीं बतलाऊँगी । पक्की रही ?

विमकुल पक्की । विस्मा न माखी का हाथ ठोका ।

माखी ने बर्न भोड़ी । गुलपुसाते हुए स्वर में बोली 'अब सब बातें ठीक ठीक होनी चली गई तो नरवर का घाया राज तुमको ।

हय की हिलोड़ को बड़ी कठिनाई से दबाकर विस्मी ने कहा 'हम घरीब न राज का क्या करेंगे ? माग में राज कहीं बसा है ! पर हाँ, दो बार पाँच अभीर में सिन यय घीर लूँवर जी तो राज ही जिनासमयमें हम सब ।

माखी म पीठ पट ली । विस्मा को लया न केवल लूँवर घीर यमोनी है वरन माखाली भी—कहाँ वह निघी उठनी होठ ।

बड़े पाय के पाय बोली अब बहाँ चलो तब हाथी पर सवार होने के पगले से सब गहने पहिनकर यमना यमली से यमली घुमूरी घोरकर, गई दुमहिन लो बगकर ।

'अब माग विहार-बाह्य सब घीर बाग मन करो । माखी ने पीठ पेटे हुये ही कहा ।

[३६]

घटस प्रतिद्वन्द्व में था । नाबी निरुपम कर चुकी थी । लम्बा के
हथरास बट बटोरे हुये ईशम का चुन-चुनकर जेबा डेर करने समे बैस
होसी बबाने को हों । नाबी घटस को एक धोर हटा ले गई ।

‘यब डीस-हाल का काब नहीं है । नाबी ने कहा ।

घटस बोला ‘यपर बुरता हूँ तो बाबड़ी है उबर छँवता हूँ तो
गुपी है । लोहू में पहुँचने पर आतपीत के बाध क्या पीछा छोड़ देंगे ?

‘जो कुछ होना होना देखा जायगा । बिम्बा सट करा । अब स्त्री
कुर्से में कबकर या पिता वर बैठकर शालू देने का निदयस कर केती है,
तब वह कोई घाना पीछा नहीं छोपती । तुम तो पुण्य हो । जो कुछ होना
जाया है उसके बिने मन बन्हा करओ ।

‘क्या होने वाला है ?

‘तब कुछ जीस छः बंटे के नीतर हो जायगा । हाथ-पैर काँप बने तो
हाल में घाना हुआ रससा छूट जायगा ।’

‘वहीं हाथ पैर नहीं कपिने । मैं डरपोक नहीं हूँ ।

‘तो मनमें से डीस को निकाल दो । अब जो कुछ होना तब जायगा
ही होना । घाने सामने जो कुछ भी घाने बरको कहीं घाँवों पीर पजेया
बक्का करके देखने में ही मुशस है ।’

‘रस्ते को मैं भडबुटी के साथ पकड़कर कोट से बतर बाँझ्या । फिर
क्या होया कुछ नहीं कह सकता । पर वह डीक है कि वहाँ घनिक ठहरना
अचित नहीं है । बास बैर-समेर उभरे बिगा न रहेगी । सोपों का घाबूय
हो जायगा कि मैं पशा का कोम हूँ पीर तुम कोम हो । होसी होसी पीर
बुपई होसी व जाने क्या क्या न होया । परदेस में निकल जाने पर फिर
जवनी घाफ्त न रहेगी ।

‘अब जो कुछ होना सा सामने थावेगा । बिम्बा मत करो । अब घोड़ली लोई तो क्या करेगा कोई ?

‘ये मट बने जायें धीरे हम दोनों यही बने रहें तो ?

‘अब लोगों ने बिचार बरस दिया है कहने हैं कि वे बिम्बा हम दोनों के यहाँ से नहीं टसोने । इस तरह बने रहने में अब सिवाय कुछाई के धीरे कुछ नहीं दिखनाई पड़ता ।’

‘हाँ हूँ मैं जानती हूँ ! तो अब हँसी-मुँसी के साथ उन लोगों से बात-चीत करो । मैं रोटी बनाकर सामान बाँटूँगी ।

घटब नदों के पास बना गया ।

कुछ रात बसे बनों ने चुने हुये ईशान में आब लपारी । हवा नहीं चल रही थी । बसे का एक ऊँचा खंभासा धाकाध की ओर गया । फिर धाम बेटी उठकी लो बुँसे को धीरे धीरे कर धाकाध की धूमने लगी । इतना उजसा हुआ कि मुहल्ले के मकानों के चररे मिन लिये जायें । बट्ट से मोप तापन के लिये या मये धीरे ताप-ताप कर धीरे के कारण पीछे हटने लगे । ईशान सुखा धीरे पड़ता था, इसलिये धीरे धीरे का प्रभाव डेकर धाकाध कम होने लगा । घोड़ी डेर में हलदी-हलकी लपटें डेरी राख धीरे डेर के बीच में अङ्गारे रह गये । तारने वाली धीरे धीरे-धीरे कम हो गई । मट, भापी धीरे धाम अंगन विस्तरों में जा डेते । एक पहर रात बीते ईशान के स्थान पर राख से बड़ी हुई कुछ बिलबारियाँ ली रह गई । लोय ऊँचने धीरे लोने लगे । मट बसे धाम रहा था ।

धापी रात के पहले ही सम्राटा धा गया । केवल बसत भयाने बाँके डिपाहिबों की धाकाधे मयर की लकड़ों धीरे कोट की बुँसों भीमारों पर मे सुनाई पड़ रही थी । कोय ऊँची भीमारों का धा धीरे पहाड़ी की टकड़ियों पर । नरनर बानों का बिरसाध था कि धामु काटकों की तोड़कर ही प्रवेश कर लटता है भीमारकों बाँधकर नहीं । भीमार के बाटों धीरे लटती गाई थी ।

कुछ नट ठाकते-ठाकते उठे धीरे धक नथेनी को कंठ से बा टिकाया । नथेनी खोल नाभे बाँधों के योग से बना ली गई थी । नथेनी के उन्धों का काम रस्सियों के बँधों से लिया गया था । नट धनरा के जाने समक नामान ऊपर चढ़ा घाबे फिर चढ़ रस्से को भे मये । एक एक करके सब डोट पर पहुँच गये ।

पोटा की चोट चपली हो गई—कभी कभी ही न थी । रस्से के एक निरे को कंठ के कंधे से बाँध दिया और दूसरे पर सरकसुँद का बड़ा फन्दा बनाया । लिफ्टवर्गी ऊँचे पैर पर जो पहने लकड़ी साई के बार की डी पर जा बैठा । उसको खींच कर देख लिया । बकड़ पकड़ी थी ।

वहके काने बाबे इसका बिलुप्त गुरम्व हो गया ।

नाथकिन ने कुचकुच की,—‘बे जाती हूँ पहुँच जाने पर रस्से को हिलाऊँगी तब पोटा घाबे ।

मटल ने पूछा ‘ओ हो नहीं का लकन ?

नाथी ने कहा ‘एक एक करके ही जाना चाहिये । रस्स! मंटा नहीं है ।’

पिल्ली ने धनरोब किया ‘ठीक है ठीक है । पोटा के पहुँच जाने पर बाकी बाबे । फिर हम सब धन में सुँवर ली थीर न । बहुत हम्मी हूँ मैं । इनको रस्सी का काम मानूँ नही । अपने साथ लिया थाऊँगी ।

‘बे तो जावती हूँ रस्सी का काम कैसी घाऊँगी घाब’,—नाथी बुद्धता के साथ बोली—‘पर रस्सी हथनी मजबूत नहीं है कि उस पर-ओ हो का लकें । न होना तो मैं धीरे पिल्ली धन में काम को बँध लेंगी ।

नाथकिन चली गई । वे एकाग्रता के साथ लकड़ी किया को देखते रहे । बोले से समय उपरान्त रस्सी उस छोरसे हिलती हुई मामूम लकी ।

पोटा गया । पैर पर पहुँच जाने के साथ रस्सी फिर टिकी ।

उनके चर पार पहुँच जाने पर पिस्सी बोली 'तुम जाओ साक्षी पब ।

'ये नहीं तुम । साक्षी ने कहा ।

कह बोली, 'अच्छा मैं ही जाती हूँ । वहाँ पहुँच कर मैंसे ही रस्सी दिखाऊँ गुरम्त या जाना फिर कुँबर जी ।

साक्षी बोली 'बिन्ता न करो कुँबर जी की । बाक्य के अन्तिम शब्द इतने धीरे से कहे गये थे कि पिस्सी ने नहीं सुन पाये ।

पिस्सी ने स्वरस्य बिनाया 'घाने की बात याद रखना । मर तैयार मिलेगा । धीरे चलने को हुई ।

साक्षी ने कहा 'नहीं मूर्खगी जायी । पिस्सी बस पड़ी ।

साक्षी धीरे गढ़ाकर देखने लगी । पिस्सी बस्ती-बस्ती जा रही थी ।

साक्षी ने गुरम्त छुरी निकाली ।

बटम बिना कुछ सोचे ही निवारण के लिये हाथ बढ़ाता हुआ एक कदम आगे बढ़ा । 'क्या कर रही हो ? धीरे से उसके पैर से प्रश्न पड़ा ।

साक्षी ने दबे धीमे स्वर में डाँटा 'पीछे हटो । धीरे ढँगूरे पर मे मुड़कर सबकर, भरपूर बस के साथ रस्सी पर छरी को छोड़ा । बटम ने छारों के झुंझके प्रकाश में छुरी की चमक मर देख पाई ।

रस्सी धस्त से काँ गई । दीवार के नीचे छाने में किसी के गिरने का धम्म से सारा हुआ । एक तीव्र धाह निकली । छाने पर क पैर ने 'धाह ! हाय ! ! की आवाजें धाई । पैर की कालियाँ लड़खड़ा उठीं । पैर की पीछे की मुरमुटों में बसने फिरने की धाहटें धाई । धीरे एकदम बढ़ी । छाने में चोड़ी सी छटपटाहट सुनाई पड़ी धीरे फिर—पिस्सी समाप्त ।

'यह क्या किया तुमने ? बहराये हुये स्वर में धम्म बोला ।

साड़ी के बूँद से धरीमें हमें स्वर में विकला, 'आमन ! बुईस ! !
मुस्ताल की मोह में बिठनामा बाहरी की ! ! ! धब के के , नरवर का
धामा राज ! ! ! !

'क्या कह रही हो ? जटस ने मबरारुट के साथ पूछा : बास की
बुँद पर जङ्गल की भुरगटों से घाबे वाली घाघाओं पहुँचीं । पहुँचे वाली
ने बघकाय धीर बघाईं हाव में सी ।

'जलो नीचे सब बतलाती हूँ । सतर पड़ो संसार में कमर कसकर
धीर छिद बठाकर निम्बाधारे का साधना करो ! वह बोली ।

वे दोनों मधेवी घर से नीचे उतर गये । इतने में मसार्ने तिनके हूँ
पहुँचे वाली सा बने ।

'क्या है ? क्या है ?' उन दोनों ने प्रश्न किया ।

बाकी ने उत्तर दिया जैसे किसे की रानी हो, कोट के नीचे एक
ईँटी फाँव फाँटा धेकर सा बाव धीर तुम्हें पता न लगे । बाबे बजामो
धोर टीहार हो पाघो ! ! बुँद हमला करने बाबे है ! ! !

पहुँच्यों ने मधेवी की तरफ बैसा धीर गटों के सजदे हुने डेरे को.
त्रिहने बकटे, घबे धीर बन्वर मसार्नों की फूझती ली के कापड़ कड़कड़ा
रहे थे ।

बाकी न कहा, धोर होतै ही सब प्रकट कर दूँगे । धमी कम
देखो ।

बाबे बघ पड़े । दीड़ बूँद हूँ । सारा नरवर बाव मया । किसे की
बेसा सावधान हो गई । नवर के मोबा मुझ पड़ने के तिनके टीहार हूँ
बने ।

बाकी धीर जटस की एक बुँद के भाव में स्थान दे दिया गया । वे
उभर के बाँरे छिदुर गये थे ।

बाकी ने बके हूँ स्वर में कहा 'ये जीव फाँव फाँवकर क्यों नहीं
नर पाये ?

'तुम क्या मानो —सम्झरे में नहीं आया मारा जातिवत्ता है ? फिर में बैठकर लड़ना मज्जा रहता है ।

साक्षी को यह बात नहीं लगी । परन्तु उसने विचार नहीं किया । रात भर बहल-महल मची रही । साक्षी घोर घटस भी नहीं सोये ।

घटस के मन में कुतूहल की बाढ़ सी छा गई थी उसने कहा कीरी घमस से नहीं आया कि यह सब क्या हुआ ? सुल्तान की गोदी में बैठ जाने की बात क्या थी ?

भूल बने क्या राई में पेड़ के नीचे खलियान के पास किछके हाथ को अपने हाथ में पकड़ कर क्या कहा था ?

कभी नहीं भूल सकता ।

उसी को घुमाने और बिटाने के लिये इस बुद्धिमान घोर उम मूठा ने यह सब आस रखा था । तुम्हारी साक्षी में झगड़े बनकर विस्वी भाटी घोर मुझको राख बनाकर सुल्तान के वीरों में आस दिया जाऊ । लापी हिस्सियों रोने लगी ।

फोड़ । यह बात थी ॥ घटस ने कहा ।

घाम्त होने पर साक्षी ने पूरी कहानी सुनाई ।

मन में बोली, इससे तो जातिपात का अपमान क्या ।

[१७]

प्रातःकाय के उपरान्त बहुत-बहुत धीर भी बढ़ गई। किले में
 क्रिये के नीचे मरकर मर म धीर बाहर मुस्लाम की छावनी में। पिस्ली को
 की साथ रस्सी के टुकड़ को जो कँचूरे से बंधा हुआ था धीर मरने को
 मर बाधों ने देखा। मर मुस्लाम के काबुल व धीर उसके दस्ते को
 किले के भीतर खाना चाहते व कहा का बड़ी भाव उन्होंने काम पामा।
 काशी के प्रति उनके मनमें बाधर का भाव उत्पन्न हुआ। केवल कुछ
 स्थितियों ने सोचा ही नहीं बल्कि कहा भी चली है चली।

मुस्लाम की छावनी में बहुत-बहुत धाकपण करने की तयारी की
 थी। चमेरी का धुंधला काटकों के तोड़ने का प्रयत्न करे धीर ब्रिग्यापुरीन
 आसिधर की ओर प्रयास। मर बेबर डार से छावनी में रो-डीप रहे
 थे।

मुस्लाम कुछा हुआ था।

मटर से कहा मटों ने सारी तरकीब चीपट करली। बिलकुल
 पचे हैं।

‘बहापनाह उन लोगों को शक है कि किसी ने रस्सी काट ली।
 मटर डरते-डरते बोला।

‘बिलकुल पसत — ब्रिग्या ने मार्शना की — ‘बह धान को तैयार
 हो गई, सब बातें मान लीं मरालों की रोशनी बहुत दूर बाध हुई, इस
 पर भी कहते हैं कि किसी ने रस्सी काट ली। बहुत ही हो। उन
 मालायकों ने सभी रस्सी से काम लिया। कमबलत कहीं के। मना हो
 छावनी में से निकली।

बाधा पामन क सहेत में मटर ने डिमीन तक धिर नीचे झुका
 दिया।

‘राम राजसिंह को हुजूम हो कि खोर-भार क साव सहर क बिलनी फाटक पर हमला करे। बाकी के खातारों को भड़ाई की तरकीब समझम देता हूँ।’ गियास ने कहा।

‘वा हुजूम बहापनाह। मटक बोला।

गियास ने आका री — ‘वै ग्यासियर की तरफ धाव बच नहीं करनेना शायद मही मेरी बकरत पड़ पाय। फौज मही तैयार रहे।

मटक छाप्राघों को लेकर खावनी में जाता गया। राजसिंह के साथी बहुत नहीं व परन्तु उन सबों ने अपना एक बसस जिरिर बना रक्खा था। जैसे ही मटक ने सुस्तान का आदेश सुनाया राजपूत जुम जाने के सिमे फड़क उठे।

घाट में राजसिंह से कहा ‘धीरसिंहदेव सोमर ने आपके पुरखों से नरवर को जीता था। अभी सी ही बरम हुय है, जैसे कस की बात होई परखों के सममान का बयला कुनाघो धीर नरवर को वापिस लो। नरवर कछबाहों का है, सोमरों का नहीं है।

घाट सोमरों के छपके छटा हुआ’ राजसिंह ने आरवासन दिया।

माट ने उत्तरित किया ‘वा तो छिर, को फाटक पर बटबाकर पुरखों में जा मिलिये ह्य नरवर के किले पर अपना भ्रष्टा कछराह्ये।

राजसिंह धीर उसके सावियों से धमत्—तसा—किया धीर सुस्तान की सेना के बाय हो गये।

नरवर के दीनों फाटकों पर एक साथ ही आक्रमण किया गया।

राजसिंह उत्तरीय फाटक पर था।

नवर के नकानों में जलती हुई मछानों के तीर छोड़े गये। कबल दलित हावियों ने चिपाड़-चिपाड़ कर फाटकों पर छिर दे दे माघ। भीतर से तीरों जलती हुई मछाली धीर चट्टानों की बपों की गई।

हाबी थोड़े पैदास मरे धीर बायल हुये परन्तु एक भी फाटक न टूट सका धीर सीसरा पहर होने को धाया।

सिम्य जब बार छतार में नगरोली घीर पूर्व की घोट भूल के बारन से छड़ते हुये विनमार्द पड़े ।

बौद्धो बालों ने सुस्तान को रसुसोन में समाचार दिया । शानतिबर से घबरा मानसिह एक बड़ी प्रीति निय बना था रहा है । सुस्तार ने बेरे को हटाकर पीछे बल पड़ने को साक्षा ही । राजसिह न नहीं माया ।

घाव या तो मैं अपना छिर बुना का नरवर को बुना ।

घीर वह फटक पर घम-बुन लड़ता रहा । पायन होमया । परन्तु बमी छिर बड़ से घमग तो नहीं हुआ था । तीरों से छीर बनसना रहे न बीर नघामों से मसालें सड़ रही थी । राजसिह का हावी उनी सुस्तोमाह में-आन पड़ता था । मोहनुहाण हो जाने पर भी फटक को टनकरें पर टनकरें से रहा था ।

सुस्तान न फिर कर्मनाया मानसिह तोपर घाववा है सुरम्य घाकर सबको मतकारो घीर सामगा करो ।

सब प्यटक को बनती हुई पाकों देखता हुआ राजसिह सींग ।

म्यातिबर की सेना सिम्य पर था गई घीर-तीरों का मूख मुरु हो बवा । राजसिह मानसिह के निकट पहुँचने के लिये पायन हो सटा वा पर मानसिह को न पा सका ।

दोनों सेनाएँ जलभ गई । मानसिह की वाकी सेवा की ठोकर को मानू की सेना पी-पी का रही थी ।

नरवर बामों को मानुम हो गया कि सगगा राजा घानया है घीर मझाई के बसड़े में बिजय अपनी घीर भुझाई का सफती है । फटकखोल पर बुने हुने पांज हजार सवार नरवर से निकल पड़े घीर उग्योंने भादू की सेना के पिछले बाजू पर प्रवण्ड वेव के साथ घाकमस कर किया । जतर बीर पूर्व से म्यातिबर की सेना बवाव पर बवाव डाल ही रही थी

मुस्ताफ ने देखा केवल शमिल-मूर्ख के कोने से निकल जाने का मार्ग है। तब सबकर मड़ते मड़ते वह पीछे हटने लगा।

राबनिह के पनकी लगभग ही यह गई। मुस्ताफ के साथ बठको भी फोटमा पड़ा।

‘फिर देखूंगा बहुत वाली बैजूना’ रात भीचकर मुस्ताफ ने अपने साथ कहा।

सूर्यास्त के पहले ही माकू की सेना अपनी छावनी से काफ़ी सामान ओढ़कर कोसों पीछे हट गई।

फिर के मुख्य घटक से मार्गतिह और सेना का एक बड़ा भाग भीतर आना। काफ़ी सेना बाहर छोड़ दी गई, यदि माकू की सेना सीधे वही से मुठ में किसी प्रकार की घपुविषा न हो।

निबन्ध स्थान पर पहुँचते-पहुँचते मार्गतिह को लग्ना हो गई।

हमादों की बैजमाल,—सैम्य—शिविर की व्यवस्था बीपी की सुकनी से पाये सब मात्र की गिन्ती और बंमाल तथा धाकमाल से रक्षा की योजना संवलिष्ठ करते-करते काफ़ी रात बनी गई। तब निहाबतिह, मार्गतिह के पास आया।

निहाबतिह बका हुआ या परन्तु जल्दा ही में कोई कभी नहीं आई थी।

घाते ही बोला ‘महाराज, जरूर नष्ट होने से बालबाल ही बचा है।

‘हाँ हमलोग ठीक समय पर आ गये। सम्भव है मुन्जाल कम लौट पड़े। रात भर विभाव किने मिले हैं सैमिक। कम फिर भिड़ धार्ये। कोई चिन्ता नहीं।’

‘नहीं महाराज मैं आज के मुठ की बात नहीं कह रहा हूँ। नगर के भीतर आकर मामूम हुआ कि एक लगी ने अपनी योगता से नगर का महानशुट से कम शान बचाया।

कमी मे ! कौन ?

'मगर में गुस्ताग के भेजे हुये कुछ गट भा यवै मे । तन्होंने कोट के कोनरो से रस्सी बाँधकर माँहू की छगा को भीतर बढ़ाने का प्रयत्न किया । उस स्त्री ने मटो को सार बिनाधा धीरे रस्सी को तसबार से काट दिया ।

कौन है वह स्त्री ? कहा है ?

'वही कहती मगर में है । ओर पता सब जायगा ।

कौन है वह ? उसने बहुत बड़ा काय किया है ।

तोनों न बतलाया कि युवक है । पति-पत्नी मचरीली से धावे हु, कहा कहते है कि ग्वालियर के रहने वाले है ।

'ओह ! अच्छा ! ! वे ही होंगे वे ही दोनों होंगे । बन्धन बंधन यहाँ है वे दोनों ।

कौन महापन्न ?

'साक्षारानी ओर घटनसिंह इतना साहस साखो बँही हु सफता है ।

'परन्तु साखी ठी महापन्न बहीर है ।

'तो क्या सुधा ? किस ठाकुर से कम है ? ओर होठे ही दूँको जन दोनों को । मे मँट कबेगा ।

[३८]

माखी घीर घटल बर्ष के खंड से छूटकर एक निजटवर्ती मन्दिर के शानाम में धा गये। उस पर जगता की मढ़ा कु पड़ी। घुबर की नारी एक कितनी रिलेर होसी है। यह मिष्ठा साधारण जन के मन में धा गई। दिन भर फाटकों पर जाने होते रहे। सैनिकों का विरवात था कि फाटकों के लोड़ने वाले ने जमी जग्य नहीं मिषा है—नगर निवासी घीर किके वाले भूखों मर कर ही शरमसमर्पण कर सकते हैं। साधारण जनता के मन में घटनी आस्था नहीं थी। भाग्य में जो बचा होगा इसी कुटे पिसे आसरे में सन्तोष था।

जब उत्तरीय फाटक पर राजसिंह कसबाहा ने पापनों की तरह बार पर बार किय सब सधके साहस घोर धीर्य को देखकर नरवर रसकों का हुरब बुल-बुल कर उठता था। परन्तु मानसिंह की सेना के धा जाने से वे सुस्मिर ही गये घीर सब की पराजय में छिड़े न रहा।

फाटक के खुलते हो माखी घीर धगल को मानसिंह के प्रवेश का हाल मामूम हो गया।

हृद को उबासी के छवि में हलने का प्रयत्न करते हृद साखी बोली 'यव क्या होगा ?

घटल न कहा 'होमा क्या ? जो होगा था वह ही बुका। नरवर को बचा लेने का मुख्य लुम्हें मिलना चाहिये। पर हम जनते मांगने बहो कार्यने घीर न बसनाजये कि हम लोग यहाँ है। बुलाया तो सामने जा खड़े होंग बस।

'राजा हम लोगों को चाहते होंग। अब कोई बाधा भी नहीं रही— गट सब समाप्त हो चुके हैं। माखी बोली।

माखी जानती थी कि कार्यकिन ने कुटिलता के साथ कहा था कि घटल घुबर है घीर यह भी ऊँची जाति की है परन्तु जिनसे कहा था वे

छोटे छोटे से किसान मजबूर है बात उससे आगे न गई होगी और न वा
सकेयी ।

जो बात उसके मन में जलड़-जलड़ पड़ रही थी पुछ डाली क्या वह
पिस्ली पर कुछ मन बना गया था ?

घटन की बरतन झटके के साथ ऊपर उठ गई और घासें मिझन
पड़ी ।

‘ऐसी बेसमझी की बात क्यों कही ?

‘अरे तो कुछ क्यों मान लये ? ऐसा तो होता ही रहा ही । पुस्त
को चुक ही जाते हैं ।

‘क्या बकती हो ? अब बाबू आया तुमने रात में कहा था । पिस्ली
देरी पोह में आगारे बनकर जाती । उस समय समय में नहीं आया था ।
तुमने क्यों कहा ? ऐसी सीमा-न है बरसाओ ।

‘यों ही सीमा-न बरत बी । क्या कोई स्त्री बिना छॉट-पाँठ के अपनी
छाती किसी पर पुसप के सापने उपाड़ेयी ? मैंने कम बेस किया था ।’

‘वह स्त्री थी । घुरे पर मँडलाग वाली छिछरी को स्त्री कहा जाया
है ? बहुत से मन्दिरों के द्वारों पर अमान स्त्रियों की जो बेंहूरी मूर्तियां
बनाकर लड़ी कर दी गई हैं वे क्या किसी बेसता के लुकुम से बड़ कर लड़ी
की गई हैं ? मे क्या कोई मजबूत हूँ जो मैंके पर था किसी ? मे क्या—

‘अरे यों ही बरत पड़े । मे कभी सोच भी नहीं सकती थी कि स्त्री
इतनी निर्लज्ज ऐसी मुर्झ हो सकती है ?

‘और मे क्या कोई मुठ हूँ या पसीठ हूँ ?’

‘अरे तो मुझको माफ करो भुँवर बी । अम में पड़ गई । पर बकती
मार दिया तो अच्छा किया न मैंने ?

‘अच्छा नहीं बहुत ही अच्छा किया । मुझको सब बातें मामूम हो
जाती तो मे दिन में ही उन सबों की मार डालता ।

‘उनके भाग में मरने के सिमे बिन नहीं गया था रात ही बड़ी थी । दिन में कुछ कर सामने स सब काम बिपड़ जाता । अच्छा तो तुमने समा कर दिया न मुझ बेसमझ को ?

‘बेसमझ तो नहीं हो—समझ तो तुममें मुझसे अधिक है । तो बचन दो कि ऐसे बात भाग कभी नहीं कहोगी ।

‘कभी नहीं कहूँगी कभी नहीं कहूँगी । बस । वा कुछ घोर ?

वे दोनों एक दूसरे से बिपट गये—घोर रोये । दिन बड़ निस्तार के उपरान्त दोनों उसी बालाग के एक कोने में घा बैठे ।

‘अब क्या होगा ? मनमें यह प्रश्न था ।

पड़ोस की एक छबेड़ स्त्री मन्दिर में बस चढ़ाने के सिध धाई । देवार्चन करने के उपरान्त उन दोनों से कुछ प्रश्न पर घा बैठी । मस्कान घोर बूढ़ की सम्मान के साथ उसने कहा तुम्हीं हो न वह मृदर ठाकुर जिन्होंने रात में तुम्हें को कोट पर से मार मपाया ?

बटम ने उत्तर दिया वे मृदर ठाकुर हमी लोग हैं तुम्हें का नहीं पाने वे घान को ही वे नटों ने उनको बुलाया था । नटों की मार मपाया तो वे भी मार गये ।’

‘मुनसे हैं इन्होंने बहुत से तुम्हें मार दिये । नटों को मार होना कौन जानें । नट बेइस्ये तुम्हें से कुछ कम बड़ ही होते हैं । तत्तबार बताई थी इन्होंने ?

‘हाँ—हाँ उँ ।

‘वेचने में तो दुबली दूरेरी है पर बड़ी बिकट है । राजा इनाम देगा ।

‘देगा तो कैनेगे ।

‘आह ! बाह ! ! माँय न लो जाकर । घर बैठे बड़े ही कोई आजीर नवाने पाता है । कहाँ के रहने वाले हो ?’

‘मुर है ।

‘यहाँ गातेबारी होगी ?

नहीं तो ।

‘पूबर तो बहुत है यहाँ । बहीर भी हैं ।
होंग ।

‘उनकी बात के बाहोर तो यहाँ पड़ोस में ही रहते हैं ।
‘उनकी बात के ?

उस स्त्री ने बात निकाल कर ताखी की घोर संकेत किया । ताखी
ने उसको ठिरछी कछारी बुष्टि से देखा । वह सहमी नहीं ।
घटस के मुह से प्रकल निकला तुम्हें कैसे मानुम ?

उसने कहा ‘तुम्हें कैसे मानुम ! ताखी बात कही जिसकी है भैया ॥
घपना बरल क्यों जियाते हो ? बस्ती भर में खबर है कि पुम पूबर हो
घीर—

मे बहीर हूँ ताखी ने कड़वे स्वर में कहा किसी बहीर के यहाँ
या तुम्हारे यहाँ गातेबारी करने नहीं चाहें हैं हम यहाँ ।

स्त्री उठ खड़ी हुई । बोली राम । राम ॥ तुम्हको क्या करना है ।
यैने तो बस्ती की बात सुनाई । तुम्हें वह अकुर रक्ते हैं तो रक्ते रहें,
हमको क्या पड़ी ।

‘रक्ते नहीं हैं बाई ब्याहण है वह मेरी । भावर खेरे ताखी
ब्याहण । घटल ने कहा ।

स्त्री बतने को हुई । बिरबिराई — ‘मयबाग कैसा बोर कलजुम जा
पया है । पूबर बोर बहीर का ब्याह ॥

भीड़ के टाँगों का उम्र सुनाई पड़ा । स्त्री रुक गई घीर के बोगों
घाहट की बिधा में देखने समे । एक बाण उबरान्त आने-आये यामसिंह
पीछे-पीछे निहासतिह बोर कुछ सवार आ रहे थे । उनके पीछे नगर
निवाजियों की भीड़ । उन बोगों पर निवाह पड़ते ही ताखी भीर घटल

उठ खड़े हुये । तिर नीचे कर लिये । सोचा मानसिंह बाहर जा रहे हैं एक क्षण में निकल जायेंगे ।

मानसिंह मन्दिर के सामने भाटे ही थोड़े से नीचे कूद पड़ा । निहास भी कूद पड़ा । सबारों ने दोनों के थोड़े बाद लिये । मानसिंह सामान के सामने धाकर खड़ा हो गया ।

मुस्करा कर लाली से बोला ऐसा दिखाया धरने को जैसे किसी की चोटी की हो ।

लाली ने गर्वम भीषी करली ।

‘गरबर को बचाने लाली तुम्हीं हो या कोई देवी यहाँ जानई थी ?

लाली ने ऊँची छाँव को धीरे धीरे बचाया । मन्दिर के सामने भीड़ इकट्ठी हो गई ।

‘तुम वैसे थोड़े ही तिर उठाने की हो ।

लाली ने नीचा तिर तिर हुये ही धाँखें ऊपर उठा कर भीषी करली । कुछ गीली हो गई थी ।

मानसिंह ने अपने घने से सने मोतियों का कण्ठा निकाला दोनों हाथों से पकड़ा धीरे बोला तिर ऊँचा करो ।

लाली ने धीरे धीरे तिर ऊँचा किया । होठ काँप रहे थे । धाँखें धाँसुओं से भर गई थी । राजा ने उसके घने में हार डाल दिया । धाँखों से धाँसू बहकर गले में पड़े हुये हार के मोतियों पर टपकने लगे । रईह को नदेतियों से डरकर लाली सिधकने लगी । घटन अपने मुँहों हुए होठों पर भीम फेर रहा था ।

‘लालारानी थोड़े पर बड़ना जानती हो ?

लाली ने कोई उत्तर नहीं दिया । लाली का तिर दिखा दिया ।

‘हाथी पर बैठ कर ग्वातियर जानोमी । कहकर मानसिंह घटन के लग्न हुआ ।

हँसकर बोला 'भीमान कुँवरजी घायली यह सब क्या सूझ ? बिना किसी से कुछ नहे मुने ही बच दिये ! धीर यों ही मटकते छिरे !'

घटम कुछ उत्तर देने के लिये उनके को संभालन तथा धीर मुलें होठों की मोला करने में धीर भी प्रयत्नशील हुआ ।

जब समय बोधन पुवारी का बिध मानसिंह की घोड़ों के ठाकने छिर गया घन्स की घोड़ों में ला जा ही ।

मानसिंह नम्हीर हो गया । निहास से रहा 'हाथी ५ मवाया । रापते हुये दूटे घोमे स्वार में लाची ने प्रतिपाद किया 'एते ही बनी पाऊँगी ।

जबका प्रतिपाद नहीं मुवा गया ।

बोड़ी देर में हाथी आयया । बड़ने के लिये महारत ने हाथी को बिठला दिया । लीड़ी लगायी गई । लाची नीचे नीचे इधर-उधर देखने लगी जैसे बचलें भांक रही हो ।

राजा ने कहा 'बहु नसेनी कहीं है बिध पर होकर मट तुकों को मरवर के भीतर आना चाहते न ?

बोनों ने बतलाया छोड़ छोड़ खाली गई है ।

राजा बोला, 'बैठो लाकारानी हाथी पर धीर बचो मेरे डेरे पर । तुम भी बैठो कुँवरजी । मरवर को निस्तकृत करके छिर म्मानियर बलेंगे ।

लाची ने अपने मीले-कुचैले मोटे कपड़ों को देखा । एक बाण के लिये ध्यान सग रँव-बिरँवे कपड़ों की धीर क्या जो जतने मररोनी में कुछ समय के लिये पाँहने थे । बड़ने के लिये जबका पर नहीं बठ पा रहा था ।

मानसिंह ने हँस कर घटम से कहा 'उठवा इनको धीर बिठलाओ हाथी पर । म्माह किस बिध के लिये किया था ?'

घटम ने भाई हुई हँसी को रोका । बलने के लिये लाची को हाथ का हलका सा संकेत किया ।

साधी का चेहरा साज के मारे लाल होमया । कांपते हुये होठों पर मुस्कान आई । एक आँख से मानसिंह को देखा—कतलता टफ़क गई उस चितवन में—धीरे हाथी पर जा बैठी । घटन भी ।

उपस्थित जनता ने मानसिंह का जय जयकार किया । वे सब मानसिंह के साथ उसके डेरे पर चले गये ।

उमासा देखने वालों स्थानों में से एक न हसी से कहा

‘घपना राजा है बहुत अच्छा । बड़ा पतिवा है । है न ?’

‘पतिवा न होता तो उसको हाथी पर कैसे चढ़ा देता ? समझ है उसकी । साके को भी हाथी पर चढ़ा दिया । अच्छा तो रहा ।’

‘हाँ ! रूप-अरूप ने बिठवा दिया हाथी पर । क्या सचमुच तुकों की सेना को रस्ते धीरे उस नसेमी पर से गट सतार साधे नगर में ?’

‘जी तो साधी ने बहादुरी । इतना तो कहना पड़ेगा ।’

‘इतनी कि राजा थोड़े पर धीरे वह छोकरी हाथी पर । पर हाँ रूप मुनाई है उसमें । तुमने सच्चा या नहीं, जब हाथी पर चढ़ने को जाने लगी तब किसी आँख उठाई थी राजा पर ?’

‘राजा उसको खालियर से जा कर मइलों में बाँक लेया ।’

‘राजा जा ठहरे जाहे जो करे । पर है अच्छा । ठीक समय पर सावधान नहीं तो नरवर राज हो जाती । उसी ने बचाया ।’

हाथी पर चढ़ा घटन सोचता जाता वा धिरे बीत वहाँ होंगे । मुसीबे में बुधबाप कीज करवाई परन्तु पता नहीं बना ।

मानसिंह कई दिन तक नरवर में रहा । जब मामूम हो गया कि सिमासुरीन माँदू पहुँच गया तब खालियर की ओर चला । खालियर जाने के पहले उसने नरवर नगर के कोर बाहर जयतिखम्म की चिन्ता पर माँदू के मुस्तान की पराभव की बात सुनवाई । यह खान बही वा जहाँ से माँदू की सेना के पीर उखड़े वे धीरे हार कर पीछे हटी थी ।

नरवर से स्वासिधर जामे के पहले मार्गसिंह बादेश दे गया — 'नरवर का टिका घोर नगर कुँवर घटलसिंह की जानीर में समझ जायया । किलेदार सेनानायक सब है ही रहेंगे यम्य भी बही रहेया । कानूनों में बाबीर पर नाम कुँवर घटलसिंह का लिखा जायया । यह मेरे साथ स्वासिधर में रहेंगे ।

स्वासिधर पहुँचने पर नाबी को मृगमयनी से जो प्यार स्वायत और आह्लाद मिला उससे बड़ अपनी सब व्यवाधों को भूल गई । कमा को अपने से मिलता-जुलता पाकर आश्चर्य तो कम हुआ कुछन प्रतिक हुई ।

घटल से अकेले में कहा 'किर कही बीसे त बीससा जामा बीसे कमा को मेरे में देसकर हो गये थे ।

घटल हँस पड़ा,— मे वना मर्ख हूँ जो तुम्हारे उलके अन्तर को न पहिचान पाऊँगा ?

नाबी को कुछन विनीत हो गई ।

घटल ने अपने मनमें कुछ पहिचाने बगानी और फूँक-फूँक कर पैर रखता हुआ जा चलने लगा ।

कुछ दिनों यह सावुस्य मृगमयनी के विनोद का आरख रहा । इत दिनों में कमा उन सब क निकटतर सम्पर्क में जा गई ।

[१२]

माई पहुँचने के बाद शिवासुहीन ने नायबिन के बर्ग को अपनी सत्यवत से बाहर निकलवा दिया ! मटरको कोठों से पिटवा दिया !! घोर अपने घरबार नबीस—दीनिकी या इतिहास लेखक-को धमका मिलने को दी—मुस्ताफा शिवासुहीन खिलजी ने मानसिंह तोमर को नरवर के मैदान में हराया और उसे ग्वाभियर की घोर खेड़ कर खुद माँड़ बना धाया । किसी किसी दूप्ते चुप्पे ने लिखकर रख दिया कि मुस्ताफा शिवासुहीन नरवर को जीत नहीं सका और बचकर जीन् धाया । नरवर के जयति सम्म में जो कुछ खुरबाया गया वह कुछ और था ।

राजतिह कसबाहा चामस होकर चम्पेरी मोटा । स्वस्थ होने में उसका बहुत दिन लगे । और प्रसिद्ध घोर नरवर के पुनः प्राप्त करने का हठ और भी पक्का हो गया । उसको मालूम होपका था कि कत्ता घोर मायक बैजू ग्वाभियर से नहीं मोटे । वह उनकी प्रतीक्षा में था ।

मटर के घरीर ने कोठों की मार चुपचाप सहली । जोश के चले जाने पर शिवासुहीन ने अपने हुजूर में उसके घाने की लुसासी करदी और मटर फिर उसी हँसी खुपी के साथ शिवाश के पास घाने जाने लवा जैसे पहले घाता जाता था । मुक-छिपकर वह शिवाश के बटे नसीरहीन के पास भी हो घाता था ।

‘मानमानम के लिए न मालूम कितनी परियाँ तरसती तड़पती है । कमल म नहीं घाता कँसे यहाँ तक था पावें । मटर न एक रात लम्बी घाह भरके नसीरहीन से कहा ।

‘माई स्वाभा इन नीमवियों के मारे तो बहुर परेघान हो गया हूँ । कमबक़्त दिन रात पीछे बड़े रहते हैं । मुदिकल ने घाब तुमको धकते में बना पाया । नसीर बोला ।

मुम्मा पीपकी काजी बहौरगाह से भी मुड़े हुये ले हैं ।

४
'इन सबको मरना है तो मरना रहेगा।'
... करमाया मगर

३०४

‘इन सबको मरवा दें तो चक्का रहेगा।
‘जानघानम ने ठीक करमाया मगर मुनासिब नहीं है। घाम
सिपाही तो इन्हीं लोगों का मुह ठोकते हैं।
तो ? कैसे हो ? घबराजान को पूरे तीस बरस हो गये हैं
करते ।

जानबानम में ठीक करनी है।
 सिपाही तो इसी लोभों का मुह ठोकते हैं।
 फिर क्या हो ? कैसे हो ? घबराजान को पूरे तीस बरस हो गये हैं
 राज करते करते गीर हल मुम्सों की बुझाया करते करते।
 जानबानम में सम्बन्ध कायम करना चाहे या क़ायम
 नहीं होनी, य

‘‘को कोई भी हिन्दुस्तान में सस्मृत कब्र बनाना चाहे या कब्र बनाना चाहे उसको मुस्लिमों की दुआ घपने साथ रखनी होती, वरना जहाँनाहू ने हमेशा मुस्लिमों को पालिया हो ।

नसीर उल्लह पठा ।

नतीर जलक पड़ा ।
'पालियो तो मे यी होना चाहवा हूँ । मेरी जान लोखत में दबी
रखी है ।' मेरा जवाब कसर है ? किसी के हुक्म पर ही तो मैं

बिचारे मन्त्रों का क्या कसूर है ? किसी के हुक्म पर ही तो वे बसते हैं ।

‘तो जब तो बरबाद की हूँ तो यह हो गई।’

मटक ने नीची चरम सीर भी नीची करली।

मटक ने नीची वर्षम घीर भी नीची करली ।
 'आनआनम बन्दा छहू पुताम गया घब कर सक्या है । सुनते
 है घुर के भी कभी न कभी शिग फिरते हैं ।
 ... नीचे भी नीचे कमलियों घाँसे बनाई । नसीर के ठमठमा

मनक ने भीवे ही भीवे कमलियों घाँसे

मैने भी सोचा ।
 जिसीम पर माने को टेरकर बोला 'आज प्रातः कभी कभी तकदीर
 से तकदीर बढ़ी हा जाती है ।'
 मैंने भी सोचा कि यही तो है । मरक माया टेके हुए था ।
 मैंने भी सोचा कि यही तो है । मैंने भी सोचा कि यही तो है ।

नदीरसिकों से निष्करकृप्य होकर लभा । मटक माया टेके हुये था ।
मटक बैठ जायो मटक । तुम यन्त्रे पावनी हो ।

मटक फिर ज्यों का त्यों बैठ गया ।

नसीर ने कहा—तकदीर धीर तबदीर की बहस को मने भी पड़ा है ।
मगर किसी हुई बहसों से तो विमाध सड़ने लगा ।

बहस नहीं बहोपनाह तवारीख देल में । तबदीर की मिसालों पर
मिसालें मिलेंदी । दिल्ली की बादशाहत की गुजरात की सस्तनठ की
बहमनी साम्राज्य की ।

‘मुझको कमबस्तों ने यह सब कभी नहीं पड़ाया । तुम एकाध
सुनाओ ।

‘आनघालम मुनाम तो चाहिये है धीर बवान कट कर बिर बाम
अपर कोई बेजा बात मंह से निकल बाब ।

‘तुम बोलके कहो । मैं धीर के साथ सुनूँगा ।

‘आनघालम ने गुजरात के पहले मुस्तान मुअफकरशाह का हान तो
सुना ही होगा ।

‘सुना है पड़ा नहीं है । मुअफकरशाह को उसके पोते महमदशाह ने
जहर देकर छतम कर दिया था ।

कुछ ऐसा ही गुलाम ने भी सुना है । धीर बुलावा मुहम्मद तुबसक्त
बादशाह दिल्ली का भी हान आनघालम ने सुना होगा ।

‘सुना है कुछ ऐसा ही उसने भी किया था ।

‘तवारीख बरी नहीं है आनघालम मगर भूखी भी हो सकती है ।

नसीर तन्जिमा पर से धिर उठाकर धक्काकर बैठ गया ।

अपर तवारीख चलत हो सकती है तो मुस्लों ने मझको जो कुछ
पड़ाया है वह सब विमाध पच्ची ही रही ।

दोनों जोड़ी देर चुप रहे ।

नसीर बोला—परियों वाली बात जो तुमने सुनाई थी वे कहाँ है ?
कैसे घाबें मझ तक ?

‘आनघालम’—मझ ने बतलाया—‘सोना-बादी धीर हकूमत
मस्तिफार हाथ में हो तो जाहे बितनी परियाँ हाथ जोड़कर सामने घा

पकी होंगी। यही है बहुत ही लो। एक से एक बढ़कर धीर मातये की
उत्तमता में बहुत कम है। बाहर भी है। सोमा बाँधी धीर बहादुरता
उनको बात की बात में हृदय के कर्मना में ला सकते हैं।

मेरी सलाह में शामिल होने को तैयार हो ?

‘जान प्रताप युनाय की बोली-बोली को घपना समझें।

‘देखो घपरा मेर कुल गया तो तुम्हारे दुकाने-दुकाने कुत्तों को बिना
दिय बाधे धीर मे-माता तो नहीं बाँझा मगर एकलौत मुपतनी
पढ़ी। लेकिन जिसकी मुक्त रहा हूँ उससे शायद ही क्या हो।

मेरा दिन जानता है बीसा कुछ बरबाद किया है जालघातक।

मटक रोना गया। नसीर ने घाल किया।

‘तुम्हारे दिन भी फिरने को है मटक। घपरा जबसे नरवर को जीत
कर भागे हैं तब से जकन पर जकन मनाये जा रहे हैं। मैं भी जकन
करूँगा।

‘हाँ जालघातक जीत तो करके म म है मगर नरवर के घहर में
बाधित नहीं हो सके। तबारीक में बाकया लेकर दब कर लिया गया है।

‘अस्तिवत क्या है ?

‘अस्तिवत तो हुआ, मानसिह के साथ रही धीर बाकया घबराह
नवीत के कापड़ों में घा गया है। यानी वह परी हाथ नहीं लयी।

‘मैं ही महुकम रखता था रहा हूँ घबेला में ही बुनिया के घाराम
से। मेम कसन बाँझ है कि जब मैं मुस्तान ही बाँझा तब —

नसीर चुप रह गया। मटक उसकी तरफ नीची निपाहों टाकने गया।

‘एक पछवारे मैं कितने दिन होते हैं मटक ? नसीर ने पूछा।

जकनकाहट के साथ उसने उत्तर दिया ‘जानघातक कभी बीरह
कभी पगह।

मेरे पल्लवारे में पन्द्रह दिन होंगे । एक-एक दिन के लिये एक एक हजार पत्तियाँ । तब तीन मूँघा जब पूरी पन्द्रह हजार हों चारोंपनी । इसमें घाली है माँदू को घालीघान परित्तान बनाम की । क्या कहते हो ?

'आनघालम सब कुछ कर सकते हैं धीर करेयें । माँदू का तत्त दिलने भर की बेर है । सब आसान हो जायगा ।

'तुम मेरी मदद करोने न ?

'आनघालम से पहले ही गुबारिस कर चुका हूँ कि बोटी-बोटी हाजिर रहेगी ।

मुट्टी को कसकर नसीर ने कहा 'एक घालमी के लिये तीस बरस के राज का बमना बहुत होना है । तत्त अब मुम्की मुता रखा है धीर घालाजान को बहिसल । मेने ठी कर लिया है ।

मटक ने अपने हूँ को पी लिया ।

बोला 'आनघालम होपियाटी से काम ले । मुम्की को नापक न करे ।

'हमिज नापक नहीं कर्केया । वे भी बहियाँ मिल रहे होने । उनके मन की सी करता बाळमा धीर मीके को हाव से न जाने हुंता ।

'मल्ले परेघान है हुजूर का साथ दें ।

'मैं तुमको कभी-कभी सप्ताह के लिये बुला लिया कर्केया ।

'आनघालम की खिदमत में आज हाजिर रहेयी मगर मुनाम को ठीक मीक पर ही बुलाया जाय तो मिहरबानी हायी ।

'मीके की सभाघ बरान में ही कर्केया ।

'हमियार न जलाया जावे आनघालम ।

मुमने घमी-घमी कहा था कि गुजरात के मुजकदरघाह पर उसके पाले ने हमियार नहीं जलाया था कुछ धीर जलाया था । वही बेहतर रहेगा । धीर फिर जैसे अहमदघाह न अहमदघाह बलाया इमारतें बनवाई में भी कुछ कर-बर मूँघा धीर तबारीख में नाम कर मूँघा ।

साथी घोर घटन को प्यामियर के झिले के भीतर कर्णमहल के—
बिचको कर्ण-मन्दिर भी कहते थे—एक बाग में मिठास स्थान दे दिया
गया। मानसिंह ने एक नये महल का निर्माण धारम्य कर दिया था
परन्तु धनी भूमि के नीचे का केवल एक लम्ब कुछ घाकार प्रकार का
सका था।

मुनमोहनी सोचती थी मृगनयनी भी रहेगी इस नये महल में घोर
साग में कसकी लाकाउनी।

मृगनयनी संवीर सीकरी है। मिथना पड़ना बिचकारी घी न
जाने क्या क्या सो क्यों? राजा उसके पास घबिच नहीं बैठते-उठते।
तब प्रणवा लपटा है। परन्तु उस बीच में कहा रहते हैं, क्या करते हैं
यह नहीं मालूम हो पाता है। मृगनयनी के धर्म-पुर में कम बाते हैं
तो मेरे में घोर भी कम बाते हैं। एक नहीं कई लड़ाईयाँ जीत चुके
हैं इससे महल की सोमा छितनी बड़ी है? जब जागते हैं तब लपटा है,
मेरे विषाये वह घोर किसी के नहीं। तभी तो बार कजल सुना देती
हैं। न चुनाई तो राजा किसी बाँव से एकाब सुन्दरी का संपन्न घोर कर
बावें। क्या ठीक है इनका। ब्याह के बाद जब वे घाई तो कितना प्रेम
बरसाते थे। घल्लु। जब तो इस तगड़ी बाँव वाली की लकाना है। एक
से दो हो गई। तो क्या हुआ हम बात है। नया महल इतना बड़ा
घोर ऐसा बनवाना चाहते हैं कि हम सब उसमें रह सकें। कैसे निमाव
होपा? मुनमोहनी घोर साथी की जबड़ जबड़ चकेरी। कहाँ तक
छुड़ी? कितना बड़ा बनेना यह महल बाहिर? क्या मेरे धर्म-पुर से
दूर रहेगा मुनमोहनी का धर्म-पुर? कितना भी दूर रहे रहेगा तो
भीकों घोर कानों के निष्कट ही। राजा से इसकी क्या बाते होती है?
मेरी दूरी मृगनयनी के पास ठहर नहीं सकती। समाचार देने वाला कोई
तो होना चाहिये। इस लड़की-जना को—साधू-साधू तो कैसा रहेगा?

वह मृगनयनी को बेरी या बूती नहीं है। कदायें सिखताती है। मैं भी क्यों न सीखने लूँ ? और यदि राजा ने किसी और सिखाने वाली को मेरे लिये भेजा तो ? तो मैं कदापि नहीं मानने की। राजा को मेरा हठ रसना पड़ेगा। साथी को भी सिखाने लगी है। तब मैं क्या बससे भी परी बीती हूँ ? जाने वो घाज राजा को देखूँगी। परन्तु वे घात भी तो बरतते हैं। मैं तो धार्यवे। नहीं धार्यवे तो मैं कुलघातकी। कला मेरे निकट भी उसने ही समय तक रहेगी। बितने समय तक वह मृगनयनी के पास रहती है। साथी और वे सज्ज में सीखती है। परन्तु मैं तो उन के आवाज में जाकर नहीं सीख सकती। कला मुझको सिखाने के लिये धकेली ही धावनी। सुमनमोहिनी ने निश्चय किया।

राजा मानसिंह ने हृष के साथ स्वीकार कर लिया। कला सुमनमोहिनी को भी संवीत की पिछा देने लगी।

मानसिंह ने एक दिन प्रस्ताव किया। बीजनाथ संवीत का आचार्य है। उससे सीखो।

मैं सीखूँगी पुरष है संवीत ? क्या हो गया है महाराज आपको ? राजा मृगनयनी को और बात है। नाथ की छड़ी। कुछ दिन पहले तक नाथ और जंगल में सबके सामने निकलती थीं पर मेरे बराने की रीति यह नहीं रही है।

राजा के बिगैदी लगी परन्तु उसने उपेक्षा की।

बोला 'आपकी बेसी हृष्टा हो। आप कुछ परिश्रम करिये बीजा के तारों पर और अपने नक़्के के स्वरों पर। कुछ समय के लिये कला ही कायरी है। फिर देखा जायगा। कई घण्टे नित्य परिश्रम करेंगी तो आप भी आप निकल पायेंगी।

सुमनमोहिनी ने चटकी काटी, 'कई घण्टे परिश्रम करें आपको इतने धाने की उतने समय तक चिन्ता न रहे ! आज कितने दिन उपराज्य पचारे हैं बाद यहाँ ! !

‘महाराणी जी मैं धाककल व्यस्त रहता हूँ।’

‘हाँ सो तो मैं जानती हूँ। महल जस्ती-जस्ती बन रहा है। दिन भर इसी की बेच मान रहती होगी?’

महल नहीं उसका नाम मानमन्दिर होया।

बहुत बड़ा बनेवा क्या?

‘बहुत बड़ा बने या न बने बहुत सुन्दर व्यवस्था बनाना चाहता हूँ। आपके उसका मानमन्दिर बिलसाऊँगा तैयार हो रहा है।’

‘मूम कये क्या? आपने बिलसाया तो था। परन्तु वह ग्याह के पहुँचे की बात थी। अब कोई नया बन रहा है?’

हाँ उसमें बहुत परिवर्तन कर दिये हैं।

‘क्यों न करें परिवर्तन? कुग का ही परिवर्तन हो गया है। नाम बदल दीजिये उसका। उसका नाम रखिये सुमेन्द्र मन्दिर।’

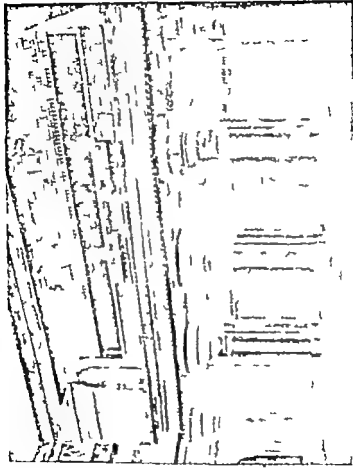
‘या सुमेन्द्र मन्दिर? मानसिंह हूँत मका।’

सुपनमोहिनी ने घाई हुई मुस्ताम को दोठों की चिकुङ्गन में समेट लिया।

कहा ‘इसी उस्ता-मुन्गी ने बहुत समय लगा रक्ता है आपके। लयक कई में।’

मानसिंह बोला केवल यही बही है महाराणी जी। रिस्ती का तिकन्दर लोधी ग्यालियर पर फिर चढ़ाई करने वाला है। उसका सामना करने की तैयारी में अधिक समय लगा रहता है।

‘अह! उनके बाप को हराया उसको भी हरा चुके हैं और हम में मौजू के मुस्ताम को ठोकराट कर घाये ही हैं। आपके लिये वह लहज है। अब तो महल बनाने में अब रहिय बेसा गई रानी कहें।’



[४१]

सरसी घपने योग्य पर थी । धस्ताफल की घोर जानें वाले सुप को
 किरणें लीम्लता पर । उन किरणों से नग्मी पाने की बाज्ज्हा करने वाले
 को ठिठुरन घोर भी अधिक मिल रही थी । घपने कस की छत पर
 झरोखे के सहारे मुखयनी लड़ी हो गई । साथ में लाठी । सूर्य के
 कृत्रवे में घमी सो पड़ी का विमल्य था । मगनयनी की दृष्टि पश्चिमी
 पहाड़ियों के पीछे की किसी पहाड़ी किसी नवा घोर किसी बाँध की
 तरफ़ गई । राई में क्या होरहा होना—बड़ सोच रही थी । फिर महम
 के उत्तरवर्ती बगीचे पर धाँक जा पड़ी । केले के बड़-बड़े पत्तों की पहरी
 हरियानी पर किरणें कमोमें सी कर रही थीं । उसको नवा पत्तों की
 बाँछा सी बब रही है ।

हुमास के साथ बोली 'बनो न जाती बगीचे में घूम पायें । वहाँ
 पहाड़ियों के पीछे का कुछ दिक्कनाई पड़ेगा । उस कोने से देख लेते हैं
 बड़ी महारानी का कोई घोर तो नहीं है वहाँ ।

'मे देखे जाती हूँ । जाती न कहा घोर जानें लगी । मगनयनी ने
 उसका हाथ पकड़ लिया ।

निवेष्ट किया 'को काम में स्वयं कर सकती हूँ तुमसे नहीं कहा
 जायगा ।

'बह तो कोई बात नहीं पैर बिस्स बोड़े ही जायेंगे देरे ।

'देरे तो मन्द फुन्द पड़ जायेंगे ।'

मुनयनी लपड़ कर चली गई । देख लिया । बगीचे में कोई
 नहीं था ।

वे दोनों बगीचे में चलो गई घोर घूमने लगीं ।

मुखयनी ने राई के जवत में रिशाल मूल देखे थे वरन्तु केके के
 छोटे से पैर का मोल-मटोल सुडील चिकना-गला घोर बड़े-बड़े नहरे

हरे भूमते पते कहाँ कहाँ ? य उसको लडा बाक्यक धीर बिषमालु लवते ब । वह उनको कबतर पाते ही बैसती और कभी ब घमाती ।

केमे की इतारें समका सबी-सहेलियों सी लगीं । भुसुराई, सस्मतिव हुई भर्तों में लहर दीड़ी और मन बाह । कि पत्तों की हिनमुस की तान में लाने लई ।

सूर्य बीने-बीने क्षितिज में सुमाने जा रहा था ।

एक पहाड़ी की ओर झुझत करके मयनयनी बोली 'यह होया राई का पहाड़ ।

'कह नहीं सकती । नहीं बिबलनाई पढ़ती है ?

अहीं तो ।

'तो समझ ला होया वह राई का पहाड़ धीर बही-कहीं साक नही होनी । बङ्गल में घरने लाहर, सुमर सोमर इत्यादि जानवर भी होग । पर जब तक बही बाकर न बैसने तक तक कैसे भागने ?

'जी तो बाह्या है अपने उन ठीरों को बैसने का पर जब बिची योग्य हो बाळीगी तभी बाळीगी बहा । है न ठीक ? तभी तो तुम भी बाभायी ?

'मे तो कभी नहीं बाळीगी । जब बली भी तक लीट कर भी /नही रिया था ।

'यब कोई कुछ नहीं कहना ।

मुँह से न लड़े । उन लोपों की साँज तो कहेगी । बरा भी क्या है बहा ? नरवर की पाटियों में चलना हाथियों धीर लाहुरों के भुङ के भुङ है ।

'नरवर तुम्हारी बापीर है न, इतलिये ।'

'जायीर तो बेरी बिभी धीर—

‘निध्री के भैया हैं ।

वे दोनों हैं पढ़ीं । दोनों के हाँठ मोठी जैसे । हूँसी जैसे छरदकालीन
बड़ा की निर्मल बारा । धाँधों में धन्यद्वयन । धन्यों की धिरकन जैसे किसी
राग की सीधी सच्ची छान हो । धीमी भूम वाले कदमी वस्त्रों पर से
सुगनयनी का धाँध साँधी के वस्त्रालंकारों पर गई । गंगम वे वस्त्र मोने
घोर मोठी क पहने । साँधी छिन रही थी ।

‘क्यों बसो सुलोनी लगती है मेरी साँधी । भैया न जान मन में
छिठनी कविता बनाते रहने होंगे ।

साँधी ने चुन्की ली — ‘कविता तो नम्केल राजा बनाते रहेंगे जो
कवि है । वह बतमायो उन्होंने बनाई है न कविता ? पायल बंधू से कभी
बनायने तुम्हारी मुनाई का मुमुमान ।

‘भरत द्विज । मैंने जो जान सुने है उनमें एसा मया कि राजा घोर
पाशियों पर दास-दासकर सब कुछ जड़ा कर लिया गया है । उन भीतों
को मुनकर कभी कभी मन साधने को चाह बैठता है । क्रमा जाननी है
साधना भी । उससे हम तुम दोनों साँधी ।

‘मीनूपी । साँधी बोला और उसकी दृष्टि सरन पर्वों पर गई । वह
पर्वों में बाँगे के गहने पहिन थी ।

सुगनयनी के पर्वों में सोने के गहने थे । वह रानी थी पर्वों में साम्रा
राजिनी ही पहिन सकती थी या राजा जिसकी बरदान स्वयं धन्यद्वि
देने वह । नरवर का पिता घोर नगर भागमाय के लिए घटन की बायोर
में मिला था । घसल में नरवर नगर की धाय का एक धंज उसको दिया
जया था । रजा को व्यापार नहीं मिल सकती थी । ‘मसिय घन्य क नाम
रही । साँधी को पर में सोना पहिनने का बरदान यमी इसलिय भी नहीं
मिला था कि वह बहोर जाति की थी और सार्वजनिक मठ का सम्पूर्ण
बहरेसता भले ही वह प्रकट नहीं थी मार्गतिह क वन की नहीं थी ।

साजी की दृष्टि मृगनयनी के पैरों के स्पर्शमिहकार पर भी नहीं धीर
 फिर तुरन्त घने पर । उसको कुछ भी नहीं धँसा । मृगनयनी बके में
 बाँधी की पतली हँसुनी पहिने की जिसको व्याह के पहने एक दिन घटन
 मोम के घाँव था ।

मृगनयनी तुरन्त सम्झीर हो गई ।

बोली मैं जाने मंझे पैर रहूँ कम है जाने के पहने नहीं पहिनुँगी ।
 तुम बाँधो के पहिना धीर में मोने के । यह नहीं हो सकता ।

जागृत हो गई हो क्या ? —उत्तरे कहा —बहु खोना मिमी क पैरों
 में बड़ी है पैसा की घनी के पैरों में है ।

‘मैं म्हापन है कहीं’ । उसको सीमा प्रदान करना पड़ेगा ।

‘रानियों का बीसा बर्तन तुमको इतना तो सिखाया गया, पर घावा
 कुछ नहीं । बिरवा हठ कर रहा हो । बड़ी म्हापनी धीर है साठ ठी जो
 धीर है । उनकी बीठ सराव पर वह बावनी ।

‘मैं नहीं जानती की कि महल में घाठ पहले से हैं नहीं तो—

‘बहु बात तुम्हारे मुँह के सामक नहीं हैं मन्त्र म्हापनी । अब कहा
 तो कहा जाने कभी मुँह से न निकले ।

‘नहो कहीं कभी नहीं नहूँगी । यह सब होते हुवे भी म्हापन का
 धट्ट धीर पूरा प्रम है । परन्तु कभी न्हापनी । क्या तो नाम है धीर
 बीसा स्वभाव है ।।

‘अरे हा जज़्जम में कम्बई करौसी जरबेरी धीर खीर के कानों से
 पङ्क मुखवाले-करोवचमे हैं तो वह धम्याव कभी काम घावेगा वा नहीं ?’
 छपमा पर मृगनयनी हँस गयी ।

‘बोली ‘बीसा का मन कविता करता हो या न करता हो पर तुमको
 बीसी सबकुछ कवि हो ।

माझी के मन में कुछ और बढ़ा हुआ था

‘तो देखो मेरी नन्ही निन्ही मेरी महारानी सुगनयनी की मेरी नजर की तुम्हारे हाथ ओढ़नी हूँ पर पड़ती हूँ हा हा बाती हूँ—

सुगनयनी ने तुरन्त टोका — ‘बुप बुप ।

बात तो सुनी पूरी — वह कहती गई,— ‘पैरों के बाँधी-सोने के पहनों के बारे में कोई छद्म-छाड़ मत करवा । इतना सब जो मान लिया गया है वही बहुत ही । जल्दी मत करो । फिर कभी देखा जायगा ।

सुगनयनी बोली ‘मुझको बुरा लगता है, बहुत खटकता है । मैं नहीं कहूँगी तुमसे बिना पूछे नहीं कहूँगी वरन्तु एक दिन तुम्हारे पैर में मोना देवना चाहती हूँ ।

तुम्हारे नख में बाँधी को हँसुमी हूँ क्यों है ?

य सपनी राई को, धारने उन जिनों को अब स्मृति थी धारनी उत सौम्य को जब भैया वहाँ से लौटकर इधर के धारने, कभी नहीं भुल सकती । महाराज ने उनार डालने के लिये कहा पर भैने नहीं माना ।

‘तो मेरे पैरों में जो बाँधी है वह भी अनिष्ट नहीं है । वह इन बात की याद दिलाती है कि जागरण के नृत के साथ बहुत अधिक खड़ाऊ नहीं करनी चाहिये ।

आचार्य विजयराज्य जातपति के विनम्र विरह है । महाराज बलवान्ते थे । आचार्य को बहुत मानते हैं ।

‘यह सब ठीक है परन्तु विजय महाराज की जातपति को कुछ न कुछ तो मानने ही है । और, एक विजय महाराज के एवाम के लिये न पान और पिउने विजय का कहेंगे ।

चार-पाँच शक्तिवा दूर एक वेद के पास आकर गड़ी हा गई । सुगनयनी ने देग लिया । भाक यों निकोड़ी ।

माखी से कहा 'घोड़ने के लिये मोटा कपड़ा इतनी वासियों साई है। मुझको तुमको सर्पों जग रही हांती तो क्या साव न से था पाती ? या ठिठ्ठान लगी होती तो कमरे का सीट न पड़ती । इनकी मीड़-भाड़को देखते ही मेर ना काँट उठ आते हैं ।

माला बोली 'उनका काम है क्या किया जाय ?

'मुझको तो विषय भी की जान पड़ती लगती है । वह कहते हैं सबको अपना अपना आवश्यक काम अपने हाथ से ही करना चाहिये । वह स्वयं ऐसा ही करते हैं । उनका कहना है कि हम देश का भिलमयों और निकम्मों ने बुझाया है ।

ता इन विचारियों को बड़ी बड़ी रहने दें ?

'बड़ी रहें किसने बुलाया था ?

स्वात् कुछ बात कहने आई हों ।

बात माखी होयी कपड़े साई है पाड़ी भर । मझको बूझते हुए सूर्य की घामा पच्छी लगती है, पश्चिम की पहाड़ी पर सानी की छिन्की उसको देखती हूँ पीठ फेर कर । बड़ी रहें सब तक बे । मुझको नहीं घोड़ने हूँ कपड़े ।

एक दासी कुछ और के साथ जाती ।

माखी ने कहा 'जमी ऐसा बोग तो तुमने साथ नहीं पाया है कि वे पीठ पर सवार रहें और तुम आनन्द के साथ बूझते सूर्य का दर्शन करती रहो ।

हा बुलाये लेती हूँ जोबी रागी कौल बीते तुमसे ।

मृगनयनी ने वासियों को सज्जुत से बुला लिया ।

उन्होंने कपड़े दिये । एक ने हाथ जोड़कर कहा 'एक पहर पीछे समा जवन में आचार्य वैजू का गायन और आचार्य विश्व का बीमुरा बानन महाराज करना रहे हैं । बड़ी महारानी और सब रानियों को भी विमलम्ब है । आपकी भी पधारना है ।

मृगनयनी बोली अच्छी बात है ।

बासियों नीचा सिर किब काड़ी रही ।

घोर दुख ? मृगनयनी ने पूछा ।

बाबी ने उत्तर दिया ठिठुरान बाबी बायु चल रही है । भीतर
ठिकड़ी में कोपसे बला दिये गये ह । वहीं चलकर तापता होब ।

सुन लिया । बाघो । सूर्यास्त के उपरान्त घामेंगी । मृगनयनी ने
कहा ।

बासियां बनी गईं । हसी रोकने के लिये मृगनयनी ने होठ को
दाँत से दबाया और बाबी ने बूतरी घोर झुंझ कर कर घण्टन मूं पर
रक्त लिया माना ठंड से अपनी रक्षा कर रही हो ।

बासियों के चमकाने पर वे दोनों निश्चिन्ताकर होम पड़ी ।
मृगनयनी बोली 'इनको बोली बौली सौं-मुठी है । इनके भी निश्चिन्ता
बाये होंगे रही । सूर्य की घोर देखने लगी ।

बाबी ने सूर्य की बार मंह करके कहा न रही सीपों हागी तो
काम ने निश्चिन्ता ।

कुछ क्षण बाद बाबी ने निश्चिन्ता प्रकट की—मन नहीं लगता
बनो न ।

'मन भी नहीं लगता । बनो । फिर कभी सही ।

[४२]

एक पहर रात जाने के पहले ही कर्ण मन्दिर के सभा मण्डप में
नायक-बादन का आरम्भ होने वाला था। ऊपर के लड़कों की शिखरियों
के पीछे मुमनयनी और छाबी या बैठी। बसमनाली हुई बसभूषा में।
मननयनी को मन रहा था जैसे उसके बगलाल-द्वारों पर कोई धातु
प्रकट करने वाला हो और वह अपनी परिस्थिति का पथ समर्थन करने
पर धातु हो, जैसे कोई कसछे तीक्ष्ण की स्तुति भी करने वाला हो
और वह उस स्तुति को धरना सहज अधिकार समझकर एक मुष्कल
द्वारा कपेला की 'देह' का क-क टाकन वाली हो। नेहने पर मुलावी
रंग नहीं था कुछ पीलापन था। छाबी मोर पल्लवी।

उन दोनों के जाने के बाद सुमनमोहनी और अन्य सात राजिनी आईं । सुमनमोहनी ने पीति के अनुसार सुमनमोहनी का पह-भर्ष किया । उसकी सिर पर माछीबाँह का हाथ केगते हुये लड़ी रानी ने बारीकी के साथ उसका वैषम्य को निरखा । काशी की हँसुली मुटि से न मुकी । वे माछों एक ओर बैठ गईं । सुमनमोहनी और साखी कुछ दस्तर पर । शशिनी का ठठ इन सबके पीछे पड़ा था ।

मीने छमा मजन में माननिहु एक बोड़े उंचे मञ्ज पर जा । जय
मीने एक मोर निहायनिहु मोर पुमरी मोर अटल । छायने बैजू किमय
कदा मोर पम्पयमो इत्यादि ।

बैजू ने प्रयाग की गायत्री धुन की। विजय ने बीछा बवाई और कदा ने तम्बूरे की रसम स्वर से साध दिया। नानसिंह पहले ही घामाघ और बीछा की कछुआर कर भुग्न होने लगा—उमने धुन होने के तिले ही उल्ट रात बसाव किया था।

बालक के आरम्भ होते ही सुमनमोहिनी की हल्का कुछ बात करने की हुई। बालक प्रथम रातियाँ लीपत के आरम्भिक जग्राहक की मम

में भर रही थीं इसलिए बड़ी पानी कुछ समय तक भोज रही। फिर जलसे न रहा गया।

पाठ बंदी हुई एक रात्री से कहा हजने सोने धीरे मणिमुक्ताओं से सृष्टि नहीं है गई दुःखिन को।

छोटी रानियों ने कनकियों देखा करछा मुस्कराई बड़ी पानी के धौल मिलाकर बाह की हँसी हँसी धीरे नीचे समामवन में होने वाले सङ्गीत के प्रति सम्मुख हो गईं।

सुमनयनी और साजी ने नहीं देखा।

सुमनमोहनी ने निकटवर्ती छोटी पानी के बुटकी काटी। वह करा सी बिहरी।

बड़ी पानी बोली अरी यह भीत तो घाबीरात तक बसता रहेगा। उबर देखो गई दुःखिन मके में चांदी की पतली पञ्चोरिया किस तपाक के साथ आते हैं। मणिमुक्ताओं वाले हार उस पञ्चोरिया को निरन्तर हाथ जोड़े बिलबिला रहे हैं।

छोटी पानी ने देखा। कुछ मण देखते रहने के उदरान्त चांदी का वह पहना धौल की पकड़ में आ गया। मुह बावकर हँसी।

साजी ने देखा सुमनयनी ने भी।

बड़ी पानी ने छोटी की हँसी को उत्तमिग लिया हँसुनी को बिचागी छोड़े भी कंठे। जब मिट्टी के बर्तों में पानी भर कर नदी से फिर पर पर कर लाती होती तब यह हँसुनी गले में हिलनी डोलनी होगी गाय जन दोहने के समय धीरे मट्टा भावने के समय हँसुनी माचना होगी जपन बापने के समय गले से टपानी-जपानी होगी धीरे खेती को खाने के लिये पचान पर से जब लम्बी घारी मुखाओं से बुपने जपान-मुमाङ्ग बिड़ियों को मपाने के लिये 'हरिया ! हरिया !!' कहती होती जब हँसुनी जट से कभी छोड़ो को और पट से कुमी गले की गर्मों को गांव के मोठ मुनाली होती।

बड़ी रानी अपनी कल्पना पर हँस पड़ी। छोटी रानी कमड़े को घोर भी अधिक मुह पर रगड़-रगड़कर हँसने लगी। दूसरी रानियों की कुतूहल हुआ। बड़ी के बरिहास को सुना मृगनयनी की घोर देखा घोर हँस पड़ी।

मृगनयनी घोर जाड़ी ने यह सब देखा बात का कोई भी धम्य गुनाई नहीं पड़ा।

हमारे ऊपर कबतो कती आ रही है, हम हो ह हम हूँती का कारण उन दोनों ने तुरन्त समझ लिया। ठठोभी का विषय यह है। बातपात के मन्त्र को ज़ेया करके मैं व्याही गई हूँ मिथी के व्याह सम्बन्ध के कारण राजा के साने—मरे पति—को जायीर मिली है पहले जूनों मरती भी घोर बराती भी अब खोल-बाँधी पहिने को मिस बया है पहले पाड़े के कमड़े से अब रेखमी बरत है घोर पहले गरि के गीत मुनती घोर जेंडे रसिय माती भी अब बैजू और बिजय तरीने धावामों का सज्जीत मुनने को मिस रहा है। पहले—घोर माने साक्षी नहीं सोच लकी। खरीर में पाह हुआ। कान तक जल उठी। मृगनयनी की घोर घाँज पेटे। उसका बेहरा समतमा बया बा परन्तु बह नया मन्त्र के रूप को किमरी में से दकली जान पड़ी।

मृगनयनी देखकर भी कुछ नहीं बैक बा रही थी। मेरी बिस्मयी की आ रही है। मैंने ऐसा क्या किया है? पूरा मिष्टाचार किया बा फिर भी वह सब क्यों? क्या ये हमसे कम सुन्दर हैं? क्या मैंने कोई महाना रिताबदी तरह पर पहिन रखता है? नहीं तो। क्या किसी मन्त्र को समेट समेट में होकर मेरा कोई धम्य मोंडेपन से मोंक रहा है? मृगनयनी अपने पहिनाब का निरीक्षण किया। एक पैर बोटा सा खुला हुआ बा जैसे किसी सरीबर के नीचे जल पर एक बड़ा कमल बिस्म हो घोर जलपर मोड़ की बूँदें प्रातःकासीन रवि रसियों के धाम मन्त्र-मन्त्र भुल रही हो। मृगनयनी ने रत्नबद्धि स्वर्ण गुणों को धिक्की से ठक लिया। हूँती का कारण शान्त है। सोनाम्य बिन्हीं को जोड़कर बाकी सबको पतार कर

रख डूयी— फिर जब जानी पहिनेगी तब पहिनुमी धीर तब य सब होंसेगी नहीं । धपने का तुम्ह सम्मकर अप रह जायगी । उसने निश्चय किया ।

पल में पड़ी हुई बाँधी की हँसुसी पर यकायक उँगली गई धीर किम्व धाई । मेरी यह पतली हँसुसी इनके सब धामूपलों की धपशा धबिध धम्बवान है । उस समय इसी की पहिन थी जब बाहर का एक तीर से धार बिराया जब खरने को सीव पकड़कर मोड़ने का प्रयास किया जब राजा ने पहिनी बार देखा जब उन्होंने इसी हँसुसी के ऊपर हीरे सान का जड़ाऊ द्वार यम में हासा जब वह प्यार के साथ बल में बाहे खालकर धम्बसे न जाने किस कबिजा में बोसबे समते है । सोचते हा ध्यान धमामवन में मम्भ पर बैठे हुए प्रसन्न मानसिह की धीर गया । जब उसको सब कुछ स्वप्न दिखलाई पड़ने लगा । यह है मेरे राजा मेरे ।

मृपमयनी ने कमसियों उन रानियों को देखा । उनकी हँसी धमी समान्त नहीं हुई थी ।

भुवनभनी ने होठ ऊपर से सिक्काड़े धीर धनमें कहा 'बैह ! रानी हुई तो क्या गंधारों से भी गई-बीठी ह । धरे !! मैं इनको प्येवार क्यों कहूँ ? गाँव की तो मैं हूँ । हँसे बाधो हँसे बाधो किसी दिन मैं तुमसे कहीं धबिध हँसूँगी । धीर धकेली नहीं हँसूँगी तुमको भी हँसाऊँगी । धपनी धाय का दूध धकेल धकेले नहीं पिऊँगी तुमको भी पिखाऊँगी । धाम मे मेरे ऊपर न हँस रही हों । संबीत को किमी बात पर हँस पड़ी हों । य तस्लीन होकर मुन रही थी मेरी समझ में कोई धारीक बात नहीं धाई इनकी समझ में आ गई, धापस में कुछ बर्बा की धीर भुम्बको यही मृति की धँसी देतकर हँस पड़ी । बाह ! नहीं हो सक्ता है । परन्तु मेरी धीर नैन कर-करके क्यों मूह का इतना दाब शबकर होन रही थी ? बैह ! बोड़ी हस्की है न ।

नभामवन में मानसिह के कण्ठ से निकला मुनाई पड़ा 'बाह ! बाह !! बाह !!! बाह !!!!

मृगनयनी ने देखा भायक बीजू बीछा-बादक विजय की घोर देस-देसकर मुस्करा रहा है उस मुस्कराहट में विजय का तीक्ष्ण घोर चिनीसी है । विजयमङ्गल को भी देखा — उसके चेहरे पर खोम घोर घाँव में बीजू की विजय की प्रतिभिया घोर चिनीसी के स्वीकार करने की बुद्धता थी ।

कसा बीजू के उस बिचक-प्रदर्शन पर प्रसन्न थी घोर विजय की मुस्कराहट को अपनी मुस्कान का सहयोग दे रही थी ।

सङ्गीत के किछ बाधेप पर यह हर्ष घोर खोम हुआ ? मैं ध्यान दिये होती तो क्या समझ में वह बाधेप था जाता ? क्या इसके पहले कोई एकाध ऐसा ही हो चुका है ? क्या ये रानियाँ उसी पर हँसी थीं ? परन्तु कोई बाह बाह तो नहीं हुई थी । घोर प्रसन्न थी उस पहले ही प्रसन्न को निवे हुये हैंव रही होंगी । छेह ! होवा । सङ्गीत के बाधेप सबके सब न समझ वाले तो मेरा नाम पसंद दिया बाध । बाहें बितता भी समय क्यों न सब बाध । तब मैं होता कबोमी घोर ये रानियाँ मँवा करेरी ।

पोड़ी हैर बाध बीजू की फिर बीछ हुई । फिर बीजू के चेहरे पर विजय की मुस्कराहट घोर कसा के झोठों परसहयोग की मुस्कान । विजयमङ्गल की धाकृति फिर खोममयी घोर मानसिह की फिर बहो 'बाह ! बाह ! !

मृगनयनी की समझ में नहीं आया । अन्य रानियाँ नहीं हस रही थीं । लाली की दृष्टि में प्रसन्न का लक्षण था ।

प्रसन्न ये रानियाँ क्यों नहीं हँस रही हैं ? कदाचिन् सत्त समय में ही हसती चर्चा घोर हँसी का प्रसन्न थी । कोई बात नहीं देखा बाधन ।

उसी एक प्रसन्न का साधन दो-हाई चट्टे चमत्ता रहा । मृगनयनी सफ़राने अपनी परन्तु अपने को समझाने लगी, जबस्य इस साधन बाधन में कोई बिचप बात है तब राधा अपने सज्जन घोर हर्षमन्त्र है । मैं भी ध्यान के साथ मुनती रहूँगी घोर किसी दिन इसने बहकर बाँडे बजाव्हेगी ।

लाली भी मैं लेने लगी थी । बड़ी रानी सो गई थी घोर अपनी पड़ोसिन के कन्धे पर सिर सटकाये हुई थी । पड़ोसिन रानी भी सोना

बाहरी भी पर बड़ी रानी भार के कारण मन को पीछपास कर संजीत को मगननाहट को मग रही थी और अंद-अंद मान बासी घाँघों को कोल-कोल दे रही थी। छप रानियाँ तक्रियों के सहारे सुराँटों और बीमी निस्वाँसों के बीच में स्वप्न लोक की छैर कर उठी थी। दासियाँ बैठ गई थी और सो गई थी।

मगनयनी ने साँझों के कच्चे को धरा हिलाकर धीरे कुछ ऊँचे स्तर में जैसे घम्व रानियों को फटककर बेना बाहरी हो कहा प्रती देखो कैसा अन्धरा चल रहा है।

भासी उचट कर देखने-सुनने लगी।

मगनयनी बोली 'फिटना बारीक काम हो रहा है नीचे।' बड़ी बड़ी सुन्दर रानें झड़ी सी लमाकर बरस रही हैं। दोनों दासियों के बीच में संजीत बिछा का दुद चल रहा है। जरा देखो मेड़ बकरियों की तरह बल सोरो।

बाबू का अन्तिम भस्म उन रानियों की धीरे धीरे फेरते हुए मगनयनी ने पुरा किया। भासी को अन्धरा लगा। वह हँसी।

'तुम बहुत जल्दी समयन लगी हो। बासी ने कहा—'अम्माच कटो-कटो मुम्मा भी कुछ न कुछ भा जायगा। कान को अन्धरा बन रहा है। ध्यान क साथ तुम रही हैं।

बड़ी रानी की नींद नहीं उचटी परन्तु जिस रात्री के कच्चे से टिको हुई वह सो रही थी उसने इस बार्तालाप को सुन लिया और कुछ नहीं।

तभी भवन में अँधू का बायन और बिजयबन्धन का बायन एक भस्म धीरे जाता। इस बीच में पीत हार के कुछ बायन धीरे धीरे बिजयबन्धन खोज पड़ा। बोला को भीच रख दिया।

बोला 'मम मे माँझा। बायक अँधू बोला बजारें।

बागडिह ने कहा 'यवस्थ। अभी समय ही फिटना हुआ है? बिहार के बायें का समय तो अब आया है।

‘आचार्य बङ्गल गार्ने’ — बँजु बोला — ‘परन्तु यात्र एक होइ है ।
‘नया ?’ राजा न पूछा ।

बँजु ने उत्तर दिया ‘मेने इनको अपनी अपनी सीख-बादल में कई
बार बुलाया है । यदि इनके यात्र के समय मेने इनकी अपनी सीख का
यहाने पर हरा दिया तो इनकी सीख की छीन नूना । सड़ियल ही ही
है जोड़कर रख नूना ।

‘नया बँजु पापन है ?’ भगनयनी न सोचा ।

उन रात्री ने अपनी सोझ बुर करने के निवे बड़ी रात्री को भटका
दिया । बड़ी ने जोर के साथ पर छुकारा । पैर का एक स्वर्ण-मणि
आनूपरा भगनयनी की बैठक की दिशा में का पिरा परन्तु किसी ने
देखा नहीं ।

छोटी रात्री ने बड़ी से कहा ‘महाराणी भी यहीमे बड़ा यस्त-मुज
हाने वाला है ।’

बड़ी रात्री ने हड़नडाइठ के साथ धाँसे नहीं । सोचा भगनयनी
अपनी मन्त्री पुष्ट सशक्त मुलापा से किसी को पीछे धामने के निवे
दूट पड़ी है । उल्लुका का नाम उल्लुकी धार देखा । वह धामनूबक
सब मन्त्र की ओर देख रही थी ।

बड़ी रात्री न निराश होकर छोटी से पूछा ‘नया बाग है ?’ छोटी
न प्रसन्न को बतलाया ।

बड़ी धीपड़ाई कैकर बोली ‘मे छोड़ी धर के निवे छोड़ी थी । धव
धामती रहूँगी ।

छोटी न सोचा ‘छोड़ी धर के निवे छोड़ी थी । दो बन्त तो मेरे ही
कन्ने छोड़ी रही ॥

नवीत का पुनरागम हुआ । एक घड़ी के अनन्तर ही बँजु को विश्वास
हो गया कि मित्रमङ्गल की सब नारा धव पछाड़ा । राजा ने भी समझ

गया। सोचा ऐसे दो बड़े कसाकारों का परस्पर छिरकटीमस बरकाया जाना चाहिये।

बापा 'बोड़ा ठहरिये। बिजयजङ्गम रुक गया। बीजू नाता रहा। कुछ क्षण उपरान्त पछानब बन्द हो गई। कसा ने भी अपने महयोग को जागृत कर दिया। परन्तु बीजू धाँसों सीधे माता रहा।

मृगनयनी ने पल लिया था कि बड़ी राप्ती बान पड़ी है। उसको सुनाते हुये साबो स कहा 'बाह' क्या बात है !! कँसा क्या है ! घोर कमी घायकी है !! कितना तन्मय होकर वा रहे हें पाचार्य !!। इनको अपने घमसास की बिलकुल ही मुधि नहीं। कसा धीर कसाकार इनका कहत ह।

'घोड़ो यह बड़ी जानकार है। बड़ी राप्ती ने सोचा बहुर का रेताघों की मन्गवा बड़ावा परन्तु रूप रही।

राजा कुछ क्षण चुप रहने के बाद अरु ऊँचे स्वर में बोला 'बाह' 'बाह' !! बाह !!! बाह !!!!

दासियाँ आस पड़ीं धीर सावधान हो गईं।

बीज क बहुरे पर बिजय की मुस्कराहट घाई। धीर होठो पर कप्ता छोटा सा अवराप छोड़कर आ बर्न। धाँसों लीनकर बिनीजी भरी दृष्टि है बिजयजङ्गम की देखा। यह मुस्करा रहा था धीर बीजा नीच रक्ती थी।

तो क्या यह बीजा को बजा नहीं रहा था ?। कब बन्द कर दिया ? धीर कसा का तम्बूरा नीच रक्ता था। उसने कब रुक लिया ? पत्ताबज भी गयी पड़ी है ! कब रुक गई ? बिजय मुस्करा क्यों रहा है ? क्या यह हारा नहीं ? धीर में क्या वा रहा था ? तो क्या कर रहा था ?

बीजू ने माना बन्द कर दिया।

मानसिंह ने उमङ्ग जरे स्वर में कहा 'पाचार्य बीजनाथ बन्द हो ! कितने तन्मय ! गये थे गुन धरने रस में !! हम सब भी तन्मीन हो गये।

हमोंने तुम्हारे रक्त का पूरा स्वाद लेने के लिये अपनी बीणा ही रक्त की कला में सम्भूषा कीर कम्होंने बजावज । हम सब बूझ नये तुम्हारी रक्त बार में ।। ये तुमको नमस्कार करता हू ।

बीजू पकली कारण बूझने की विमता में नहीं पड़ा ।

बोला बहादुर धात्र में सब पा गया । जीवन का सब कुछ पा गया । कलाकर्म की भीर चाहिये ही क्या ?

‘परंतु हमको तो तुमसे सभी बहुत कुछ चाहिये है ।’

‘लेते बात है ही क्या । जो कुछ है बहादुर का है ।’

‘तुम सभी जिस ध्यान में धात्र थे उसमें से कुछ हम दोनों को भी दो ।’

‘हू । हू ।। हू ।।। सो कैसे ? भीर में तो गा रहा था, ध्यान तो लभेरे के समक करता हूँ । सभी क्या में सो क्या था ?’

‘सोने तुम नहीं ब । हम दोनों के भीतर बाँके को बना रहे थे ।’

बीजू कुछ अनुपनाता सुपा भूमने क्या ।

एक झल बाव बोला ‘आरम्भ करता हूँ । बाव होव को भीतर ही पहुँचा ।’

विजयबल्लभ ने बीणा को बढा लिया, कला में तन्दुरे को । बजावजी में बाव थी ।

भारविह में कहा ‘लेर एक धनुषीय है ।’

सब स्थिर हो गये ।

भारविह ने धनुषीय सुनावा — ‘प्रबल भीर सख की बावकी को भी पछाव बहुत विनों से विमता आरहा है उसकी पोड़ा सा कबेट भिन्न फावे भीर काज बाँदकर भीर भी अधिक सुन्दर बना बिना बावे तो बैठा रहे ?’

मूकपक्ष तो है । विजयबल्लभ ने अपनी आनकारी प्रकट की ।

मार्गसिंह बोला 'हां ही पसर जाती वह भी क्या है। मुन्दर है परन्तु उसको सुन्दरता की घोर भी ध्वजक बढाने की निवारने की आवश्यकता है।

विजय ने कहा 'महाराज जो कुछ नार-नाद पहले से क्या धामा है, वही दुर्लभ है उसमें क्या-कही छत्र कीव कर सकता है ?

चिनौड़ी के स्वर में बुढ़ा के साथ बीजू बोला 'तो सकता है, हुषा है घोर होया। मभवान धंकर की क्या से मैं करूँगा।

विजय को मभवान शंकर का नाम धज्जा मया परन्तु बात बुरी लगी। लटकी।

देखा जायगा। विजय के मुह से उमेछा के साथ निकला।

'हां हां देख लेना करके दिखना हुआ।

बीजू ने अपने हठ का समझ लिया।

विजय ने सोचा बीजू पामल है।

राजा ने कहा 'समय मतीत हो गया है। इस विषय का पहरा बितन हम सबको करना होया।

बीजू ने तुरन्त कामना प्रकट की — 'मेरा घोर आचार्य विजय का मलाहा ठी इसी समय हो जाय।

यही नहीं — राजा ने टाला, — गिर कभी।

बाँठ बीसठे हुये बीजू ने विजय पर बुलियापन किया। राजा ने सोचा उत्तान बरक गया।

बोला 'तो मैं वह चाहता हूँ कि गायन की कोई नवीन मयूर घोर चमरझापूर्ण परिपाटी निकाली जाय।

उमेछा घोर प्रतिकार में होठ निकोकर विजय न फिर भीका किया। कसा मूँकराई। जणुहाई घाने को पी कि उनको छोटी सी धँवड़ाई में

परिवर्तित कर लिया कम्बे हिस गये। निहालसिंह ने देखा घोर कबा ने भी निहालसिंह की निरक्ष को।

बैजू ने कहा 'मे' सज्जन बना। निष्कामूना परिपाटी। ऐसी कि जिसके द्वारा भूवत्स मनहो धारम्भ से अन्त तक अपनी कोमल फाँतों में पकड़ रहे घोर समय इनका ही समे कि मन चाहता रहे कुछ घोर कुछ घोर भी होता।

कर चुके। धीरे से बिजय के पुद्ग से निकला। कला ने बैजू के समसमाये पैहरे को देखा। बाँध मानसिंह पर से किसलती हुई निहाल सिंह पर का घटकी। वह नीचे ही नीचे उसको कुछ धमिक पड़ाकर देखा रहा था। कला ने अशुचन के अवाप्तर से फिर निहालसिंह को देखा। फिर दोनों की दृष्टि मिली।

बैजू के सटे हुये होठ फट्टे और गरम निश्वास के साथ धीरे से राज्य निकले 'किसी दिन तुम्हारी बीछा को न फोड़ा तो मेरा नाम नहीं।

राजा ने नहीं सुन पाया परन्तु बिजय ने सुन लिया। राजा की हज्जा समा विमर्जित करने की भी परन्तु कलावन्त घटाड़े को नहीं सोचना चाहते थे।

मानसिंह ने समस्या का समाधान निकाला,—अन्तर का एक छोटा सा मृत्य हो जाय और उसके अपराध समा विमर्जित हो।

कला ने बैजू के गाये हुये प्रवन्ध को सार्नक करने वाला मृत्य किया। बीच बीच में कला और निहालसिंह ने एक दूसरे को कई बार जिने लुके देखा।

मृत्य के समय तक अन्ध कई पानिर्वा भी जान चुकी थी।

उन सबको सुनाने के लिये भृगनयनी ने साक्षी से कहा 'महापद्म ठीक कहते हैं। बड़ी बात को बोले में कहना ही तो बहुतार्थ है। बैजू का कहना सही है कि ऐसा हुआ है और जाने भी होना। बड़ी चट्टान के

होके से नाहर को कुचलने की प्रपेक्षा छोटे थोले तीर से सुना देना ज्यादा अच्छा । धम्यास किया जाय तो सब हो सकता है ।

बड़ी रानी ने हँसकर मुँह फेरा । दूसरी रानियों ने दोनों की धोर देखा । हँसने की चेष्टा की परन्तु हँसी कोण मुस्काह का रूप लेकर ही रह गई । वे सब मृत्यु को देखती रहीं ।

ये वर्य भी सीन्धुनी मुगनयनी ने नाखी के काम में कहा ।

उसने नी उड़ी तरह काम में फूँका — हाँ हाँ सब हो सकता है ।

एक बड़ी पीछे मृत्यु समाप्त हो गया और समा विस्मृत ।

घाटों रानियाँ जाने को हुई । मुगनयनी और नाखी ठिठकी रहीं । उन दोनों का नमस्कार लेकर वे सब चली गईं । उनकी बासिन्दा भी साथ । ये दोनों अकेली रह गई । मुगनयनी की नियाह मुगनयनीहिनी के उस गहने पर गई जो उसके पैर से उतर कर पिर गया था और जिसकी वह मूल गई थी । मुगनयनी ने उसको उठाकर परखा और जोर के साथ फट देने की इच्छा हुई । समा-विस्मृत के उपरान्त मानसिंह की दृष्टि ऊपर झिझकी की धोर गई । चिल्लाई तो वहाँ से कुछ नहीं पड़ता था परन्तु उसने नपस्कार किया और जाता गया । वा घिष्ठाचार ही परन्तु मुगनयनी को वह बहुत कुछ लगा । उसने समझा कि धौसी यमको ही राजा ने नमस्कार किया है । उस कहने को निय हुय वह अपने कंध में बसी गई । अब हाथ में गहने को देखा तो धुरख हुई । एक ऊपर के सहरे घाटे में फेंककर हाल दिया और पतङ्ग पर जा लेटी ।

बड़ी रानी क्या है । एक विहम्बना है । । कबाबित वह मेरा ठरहास करने के लिये ही हँसी थी । और वे साठों घपना कीई निबल ही नहीं रलती । हर बात में उसकी धनहार करती है । परन्तु महाराज मेरे और उनके मरी सम्पदा है । मैं उनकी वह मरे । कितने सहरे हैं । मैं भी ऐसी हो बनूँगी और इतना हीनूँगी इन घाटों के ऊपर कि हा । नाहरों और मरनों की परवाह नहीं की तो ये किस रात की मूनी है । । कैसे

३३०

हो मेरे जल से वे धीरे कैसे बड़ा और हल बरस ॥ मरान, धानका
 बेट धीरे कलियान । तोते मोरे धीरे नीलकण्ठ । यह धाया यह नवा ।
 न वे पकड़े मोर न म बकरी । मरान पर कैसे हिलोई सेती हुई हवा
 घाटी भी मोर ये फिटना गाती भी । बैरू सरीखा ही याने लगूनी मेरे
 बससे भी कुछ सबिक मिठास मरा तब जाको भी कहेगी तुमने ठीक
 कहा वा सब हो सकता है सब हो सकता है—बहु सो यई ।

[४३]

स्वर्ण-संघ की कामना मारकाट की धाकीझा स्थियों के अपहरण की वासना राज्य स्थापित करने के लोभ और किसी भी प्रकार अपने मबहुव के विस्तार के मोह को लेकर पठान और तुर्क धाक्रमक भारत में चुने थे। इन सब का एक सामूहिक नाम पाठनका बहिस्त। इस बहिस्त की तत्प्राय में ही सरसाह के पहले भारत में अपहृ बगहृ सत्तनतें कामम हुईं—विस्ती मायका युबरात बीनपुर बीनकुशा बङ्गल इत्यादि में। सत्तनतें कामम होने पर बाप ने बेटे को और बेटे ने बाप को, सत्तनत के तबत और भुलुट का मार्ग-मंडक समझ कर उहूर के बहिरें या किली और सुनम उपाय से समझ किया। उस बहिस्त की प्राप्ति ने सुकशों को और उनके सरदारों तथा मिराहियों को निर्बल और निरुत्था बना दिया। हिन्दू यदि परलोक मय निरासा-बाद घापसी बड़ाह्यों के कारण उतने बुझें न बड़ बने होते तो या तो वह स्वर्ण उनको मिलता ही नहीं और यदि मिल ही जाता तो बर्बरता उनको बहुत समय तक उसमें रहने न देते।

परन्तु उस बहिस्त को भी बहुत क्पाश मुप्तबोरी बरदास्त न थी। मौबबी और मुस्ले लगातार बेताबनी बने रहते थे। मुस्ले-मौबबियों ने इस्लाम को बीता और बिठना समझा या उसके धनुसार वे अपने इन बेले-बाटों को बग या डेकसाया और भड़काया करते थे। मुस्तान न सुनता तो सरदारों को सरदार न सुनते तो सिपाहियों को वे मुस्ले मौबबी बर्ष-मुठ जिहाज के लिये भड़काया करते पड़ग्यों में भाम कैने और अब तक कुछ कर न गुजरते तब तक दम न मारते। परन्तु इस जिहाज का अनिवार्य परिणाम बही स्वर्ण हो ही जाता था—बिठको पा पाकर मुस्तान सरदार और सिपाही धनबरात गति से बसे जाते थे। यही उनका सबसे बड़ा खोर और सबसे बड़ी कमजोरी थी।

मानका सत्तनत के मुस्लों ने शियासुदीन के मदके को घपना हपाराब और भविष्य की घापाओं का बेग्न बनाया क्योंकि शियासुदीन

मपने स्वर्ग की तलाश में इन मुस्ली-मीसियों के बतसाये हुने स्वर्ग की परवाह नहीं करता था ।

गरबर से भीटे हुये शियास को छः महीने हो गये । बाक धाये बसन्त ऋतु धाई यई धीर अब नमियां समान्त होकर बरसात लपने वाली थी परन्तु शियास न मरा न मरा ।

बहीर ने मरुओं की हिंसायतों पर धमन किया — बसन्त मनाये बहर्षत किन्तु सभी तरह के धम्यास किये — परन्तु बूझ-बूझ गया । सबके निचे बना इतना ही हुया कि शियास को उसके किसी भी धम्यास का पता न चला । यन्त्र उसका सहयोगी था इसलिये सावद तरीर बार-बार चला । फिर एक दिन चड़ी या हो गई ।

शियास को एक कबासिन बटक की कोखियों से महीर के फेर में था यई धीर काम बन गया । वो दिन से यन्त्रायक बादल धीर सीतल समीर । संध्या के उपरान्त का समय । महल के मरुओं से ठण्डी हवा के झोंके धाये धीर इनकी बूँदें भी । खराबिन बान के धाई । बटक तब के नीचे बैठा था ।

‘मुस्तान सिकन्दर मोबी ने खासिबर पर बसाई करने की जो ठानी है वह मेवाड़ के राजा के खरिये बहों की बहों ठर क्यों न कर दी जाय ? शियास ने चुसकी फेले हुये कहा ।

मोबी बर्बन को बीर भी मोपी करके बटक बोला ‘बहोरनाह । वो मूबी धावठ में जलक आयें तो इससे बिहतर धीर कुछ नहीं ।

‘मेने राजा राममल भी को खैशा भेज दिया है कि सिकन्दर खासिबर का बहाना करके बसन्त में मेवाड़ की तरफ कबराता हुआ पहुँचना इतलिये वह उसको धाये बहकर रोक भें ।

— लड़के लाला की भेज दें तो वह सिकन्दर को बही के बही

शुभ तो हो यथे ! राणा धपने डङ्ग से लड़ेंगे तुम्हारे बतलाय डङ्ग से जोड़े ही लड़ेंगे । मेने उनके एक भाट को हुस्का दिया है वह उतरना देना बात को ठीक घाट पर ।

‘बहापनाह यह बहुत सही रहा ।

‘जीर जहर सिक्कर धीर राना जूझ कि इधर मेने काशपी के रास्ते से ग्वालियर पर बाबा बास दिया । पक्षी बार नरवर होकर मही जाऊँगा । मैं पहुँचूँया ग्वालियर उत्तर की राह है धीर जनेरी का सूख बार घाबेरा ग्वालियर पर बनिखन से । क्या सयभे ?

‘सही छरमाया बहापनाह ने । उत्तर से बहापनाह धीर बनिखन से बाबेरी का घुबेदार सरली ।

बस फिर बन क्या काम । वे दोनों ग्वालियर में ही हैं जानते हो न ?

मरक ने लस-बध के निवे प्रांख ढँबी करके नीची करली । उसने देखा पिपाठ की पुतलियां कुछ अधिक फेस गई हैं ।

क्या ‘कौन बहापनाह ?

प्याके को डामकर वह बोला —सुराही में से प्याके को भरता रहा —‘यथे बहमऊ इतनी जस्वी भूल गया ! मगनयनी धीर लाची—वे दोनों । इनको बबड़ी बार मोड़ लाये बिना रैन नहीं देने का ।

दियात की प्रांखें फेसकर कुछ और भारी हुआ ।

‘आज मैरा हाथ इतना क्यों काँप रहा है ?

बहापनाह हवा में कुछ सही है ।

तो अब राना राममल या उनके लड़के साना को सिक्कर से उ—स—स—ने में जितनी दे र—है ?

‘बहुत पोड़ी थी बहापनाह ।

‘दोनों लड़ जायें ‘क म—ब दत ।

तिवास के हाथ से प्यासा घूँ पड़ा। अबासिन किनाड़े की धोई में पड़ी हुई थी। जरा धीर धोझल हो गई। तिवास तक्रिये के सहारे पड़ गया। मटक अड़ा हो गया।

धीरे से बोला, 'अहाँपनाह।

तिवास ने कोई जवाब नहीं दिया। मुँह से फूँक खाने लगे। मटक ने छाड़ी बजाई। अबासिन तुरन्त भा गई।

मटक ने धीरे से कहा 'आहुआरे के पास इतिमा मेंबो कि अहाँपनाह की तबियत बकायक पुराब हो गई है। किसी धीर को खबर न होने पावे।

अबासिन बसी गई। मोड़ी ढेर में तियासुहीन लड़पने लवा धीर नसीर के धाने के पहुँके ही उसका प्राणाम हो गया।

नसीर आते ही बरते-बरते तिवास को तरफ़ इश्टि करी। फिर मटक की तरफ़ देखा। मटक ने फिर धीर हाथ के हलके से सकेट द्वारा सब कुछ बतला दिया—मानो कह पड़ा हो योगना सक्कल हो गई, समस्त हो गया।

काँवटे हुये स्वर में नसीर बोला 'आहूर खबर यह ऊँबाई बाप कि सुस्तान सलामत बहुत बीमार है। जसल बात किसी को न मानून होने पावे।'

स्विर फँड से मटक ने कहा 'अहाँपनाह सुस्तान नसीबहीन बिन्दाबाब। तिबास बस्के-मोलबियों के धोर किसी को नहीं मानून होने पावेगा। हुजूर सुस्तान जरहूम के जानकीन है हुकूमत करें। बरगार कर घबहार नसीब इतकाब की बात को नहींनों बाब तबे कर सकैया।

'अबासिन कहाँ है? नसीर ने पूछा।

अबासिन नीचे ही खड़ी थी इनाम के खोल में घाबे घा गई। नसीर ने तुरन्त सबवार निकलकर उसका फिर काट खाला। मटक प्रवेत होने को हुआ। नसीर ने तनवार ग्यान में डाल ली।

मुगलपनी

बोना 'होशियार क्यादा मटक ! होशियार ! !
मटक सम्मना ।

मैंने इस बयान को इमतिह लाने कर दिया कि वही
इस उबर सकनी न शिरे । पहर राख छल गया कि मुस्तान घब शिदा
मही है तो मक और तुमको कहन का ना होया कि इन बदकार घोष
ने मुस्तान का किसी रजिज को बगल से बगल दिया इसी व से इनको
मका दे दो । इनके मार दिए जान न हमारा तुम्हारा शमी वा राक्ष
झाक हो गया । यह व में क्यों इन घोरन को नक लिय जाने की हुमा
तो प्रचउ होया । मक बुराव घरा-घरना काय देतेनो । क्या समझ ?

सब समझ गया अहोना सब समझ गया ।
'अमी अहोनाह नही बहकक सिर्फ जानबोसय जैसा पड़े
कहना था ?

'हो न मानम जानम लम ।
घोरी देर बार मुन्नी-मोन्नीघों घोर सगलनों को भी मानम हो
गया । इठ के नाच प्रियम को मोमारी सु समाचार साबागु बना
घो तिर दिनों में फंग मका । माध तेन में रन भी गई । बनीर के हाथ
में हजमउ थाई । पहरा नबीमन शिपास के प्रणाम के बल को
कापड़ों में बहुत दिनों बर्त नही दिया ।

बनीर बनीर प्रचउ मुन्नी दिनों की मक—कामकासना—की लपट
में जू पड़ा । क्यादा मटक और न जाने स्थिने म क बगली सहायता
के बिप पट पड़े ।

[“]

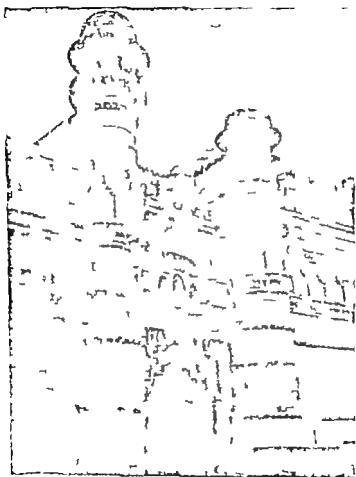
सिकन्दर सोही सेबाहु नरेश राणा राममन के राजकुमार साँदा—
 मंगार्मसिंह—की एक छोटी सी मुठमेड़को छोड़कर ग्वासियर की घोर मुड़
 छाया । घोंसपूर पर हमला किया और जरे के लिये अपनी विद्याम सेना
 का एक भाग छोड़कर बम्बल को पार करके ग्वासियर की दिशा में उन्मुख
 हुआ । बीसपूर उस समय एक सोमर बड़ी राजा के आधिपत्य में था जो
 राजा मार्मसिंह का सहायक था । परन्तु सिकन्दर सेबाहु की ओर से
 घोंसपूर पर इसी तारी के साथ यह बोझ था कि ग्वासियर से सहमता
 न प्राप्त की । धाकधम की छोटी-छोटी टुकड़ियाँ जाग-जाग चलती थीं का
 समाचार देने के साधनों को नष्ट करती जाती थी । समाचार देने के
 साधन इतने हीसे धीरे स्वल्प हो गये थे कि प्रायः बिसम्बर के साथ पहुँच
 पाते थे । ग्वासियर जो समाचार छाया उसका सार यह था कि सिकन्दर
 सोही बीसपूर पर एक छोटा सा बार करके सेबाहु की दिशा में बढ़
 गया है । सिकन्दर बम्बल की बाटियों और घरों में होकर ग्वासियर
 पर आ रहा था ।



मार्मसिंह अपने नये महल के नीचे बाक हो लम्ब बनवा चुका
 था । मुगलमोहिनी की शाह के कारण वह नये महल को बहुत जल्दी
 बनवा रहा था । जानता था कि कर्ममहक में भस्म स्थान होने के कारण
 नयी रानी के साथ मुगलमोहिनी और साथ राजियों की बढ़ती हुई खटपट
 अधिकारिक होती चली जायेगी मय महल के बन जाने के बाद उनके
 सम्पर्क कम हो जायेंगे और अधिक शान्ति स्थापित हो जायेगी ।

ऊपर के कुछ किस प्रकार के बने वह बहुत नी ।

विजय अजय ने सुझाया शैलज्ज सेही के बंधाह्वये । ऊपर के दोनों
 बगइँ में बन-उपवन की विधत्तापूर्ण विपुल छातीपता छोटी-छोटी
 पहाड़ियों की प्रतिमाकप मढ़ियाँ बड़े पहाड़ों सरीखी घाटें विचिर और
 घाटें चित्तों पर पहाड़ों के घनेक लुहों के प्रतीक मन्दिर के चारों पार्श्व



मान-मन्दिर, म्वाहिय का गज-दण्ड

निम्नोक्ताकार इन कमल-सुजित विनयों के गियर पर भूय का मोल
मग्न ।

मानसिह स्वयं नहीं समझा ।

विजय ने व्याख्या की 'ऊपर के पहलू यह से घुमने लड़ को समोने
के नियम पर यह से ही बागों निम्नोक्तों में विमान विमल बनने जाय जो
ऊपर आकर दा ममानात्मक पदियों का बनावट होने सिध जायंग । अपने
क्रम में सीतल नैत्र-अशिश में जैसा समझय रहाइ गिनिर गुम मन्त्र
महिमा घाय के वेद की गत्य गुम्फ और नन्दी-नाथा का महरों तथा
निध के विमल का हुमा है बैसा ही बर पीनान पर । अब इन बके नव
नय उसका रक्ता जाय मान-मन्दिर ।

यही उत्तर के गिनियों की समझ में यह नहीं आयेगा क्योंकि
इनका परम्परा कुछ सिध है ।

तैम-मन्दिर का इन्हीं मोर्चों के पुर्यों न हा बनावट जाया ?

'यही बर से उत्तर हागये जब स्वामिदय के राजा न एक तमय
राजकुमार के साथ व्याह किया । स्वामि के कुछ गिनिया नव राजकुमारों
को प्रणाम म आय । उनमें और उत्तर के गिनियों के महामय म
बने मन्दिर बना । तैम-मन्दिर का गिनिर नैत्रय राजकुमारों का बाग्या
का प्रताक है और गिनिर के मोर्च का मारा लय उत्तर का परम्परा
का मनि है । अब से कायग नही है ।

हा तैम-मन्दिर विजय के राजा बने मारा पद के मन्दिर
और निध के उच्च मन्दिर मन्त्र विमान तथा नन्दी की महाना का
ममम्प है ।

हाक कून हा व्यापार मन्दिर के बागों जाय गत्य मारा मयूर
-वाभा कागिकय की मूर्तियों भी है ।

महाराज यह बैंगनी का व्यापार है ।

परमपुत्र यन्दिर को उठार के वैष्णव और शक्ति के धर्मों में मिल कर बनाया हुआ ।'

आप भी क्या कुछ इसी प्रकार का मिश्रण अपने जीवन के निर्माण में करेंगे ?

‘‘तो टीकी के हवीड़े की कविता और संगीत के तान और ठाल का मूल काता चाहता हूँ इन भवन में । शिव उपासकों और साधनों से जो यह पाप सरीक विहास बतलावें, मैं भी कुछ सोच रहा हूँ परमपुत्र विर्लुप नहीं कर पाया हूँ ।

‘‘मिली और कारीगर बतलावेंगे नहीं के ?

‘‘मिली और कारीगर निर्माण क्या के लक्ष्य और आकांक्ष हैं । उसी सोचना समझान पदमानित्य और अनुवाद की कविता तथा संभ्रम-संशय की कुकुरी देना हुआ । आपका काम है ।

सोचना । आप क्या किसी काम्य को परपरी में साकार करने का प्छे है ?

‘‘आज ही तो बतलाते रहते हैं कि जीवन की वास्तव्युत्पन्न और सुन्दर बनान से ही मनु को सम सम मवती है, मैं जीवन के उसी आस की पत्थरों में उठार देना चाहता हूँ ।

‘‘मैं महाराज मुझ जीवन की ही तो बुझाता रहता हूँ । परमपुत्र मुझ-जवन में जानक—अम—पर अधिक बल दिया क्या है । उसी जवन मिम लु में कैसे व्यक्त दिया जायगा ?

‘‘उनकी विद्यालता से कायक नर्व का घरे प्रकट हो जायेगा ।

‘‘उसकी विद्यालता बैचने वालों को पातझिल न करेगी ?

‘‘पीरव की विद्यालता सीधे जम्मे ताड़ मुख की सीनी विद्यालता नहीं ।

देवन वाले को जीवन में धम को घोरता का पहरे की प्रेरणा भी मिलेगी क्या उनके सामने न ?

‘साहसा तो हूँ कि हम सब घोर जाने जाने वाले लोग भी अपना वेला ईश्वर पाश्चात्य हों जाने के लिये सहग उठें घोर उन महर से कमठ बनने की स्फूर्ति घोर शक्ति को पाकर जीवन को अपने धम से भर दें ।’

सोचना कि प्रसार यह करना परवरों की योजना द्वारा प्रकाश हो सकेगी या तो सोच ही रहा है ।

साथ में ही बाबस बिर भाय । बिबली की कड़क ठडक हुई घोर
घरबराहट के साथ पानी बरसने लगा । बग़रमा ऐसा छिपा कि जोर
घमाबराबा की रात प्रतीत होने लगी । मगनयनी और मानसिंह बग़मबरा
के एक ऊमरी बरा की छिड़की के सामने मञ्च पर बैठे हुये थे । मानसिंह
कुछ बिम्बित सा था । मृगनयनी हुर्यमान घोर प्रकृम्भ ।

मानसिंह ने कहा 'इस बर्य बरसात नाम ही नहीं है रही है घन
होने का ।

बली पाती के बिपड़ जाने का दर लग रहा है क्या ? मृगनयनी
हँसकी हुई बोली ।

उसके बातों में बिबली का कुछ साम्य देखकर मानसिंह की बिम्बा
कट पड़ी ।

'राज्य के बिबानों की छोटी-प्राती घरनी बली-पानी के ही समान तो
है । परन्तु उस समय बिम्बा मगन-निर्माण के काम में बाधा होने के
कारण हुई ।'

बब राई बाब में भी एक रात कुछ मने भी मोचा था ।

'तुमने मगन्य कोई बिम्बा या तान साची होगी मुझको बतलाओ
क्या सोचा था ।

'न बिम्बा थी और न तान । मे घन बिनों जानती ही क्या थी
बब सोचा मगन्य था कुछ ।

'बतलाओ न ? मे मुनने के लिये बहुत नरमूक हूँ ।

मृगनयनी ने बड़ी-बड़ी घाँलों सजाते हुये कहा । मुस्कराई ।
बब रूप रही ।

‘तुम ऐसे नहीं बतलाओगी । कहीं भूमनागे का कोई उपचार ?
ममको धनैक पाते हैं ।

ममनयनी हँस पड़ी ।

‘वैसे ही बतलाये देती हूँ’—उसने कहा —‘एक रात मेरे मन में
चाह लगी थी कि बावनी में जमकती नदी की बगल को समेट कर घंघस
में बाँधलूँ, लट की ऊँची हुई बालों और पहलू की उस ऊँचाई का
लकड़ी की छोर पर झकड़ा कर लूँ बड़े-बड़े पेड़ों के समनवार बनाऊँ और
हामियों पत्तों के झरोखे सजाऊँ उन झरोखों में होकर मोतियों के हार
सी पहिने हुये नदी की लहरों को पीत सुनाऊँ और फिर एक ऐसा घर
बनाऊँ जिसमें यह सब था था । मैंने और बावनी ने मिलकर एक
बरोड़ा बनाने का प्रयत्न किया । वह बावनी बड़ी में कुछ न बनकर बियड़
मरा । बावने तो बहुत बना लिया है और बहुत बड़ा । एक दिन बुरा
भी हो जालेगा ।

‘वह पीत कौन था है जिसे नदी की लहरों को सुनायी थी ?

घरे यों ही सा कुछ—भूल गई ।

‘बतलाओ जल्दी नहीं तो फिर हाँ’—

पीत का बाव नदी में पिया के बगल ।

ममको सुनाओ ।

सुनाया तो था पहले ।

‘घाब फिर सुनाओ । उसने हट दिया ।

भूमनयनी ने सुनाया । उसने पीत की इतना सुनीला पाया कि वह
स्वयं घाव-विघोर हो गई । बावनी ही लाने उसको कभी पहले ऐसी
पीठी नहीं लगी थी ।

मावतिह बोला ‘ममन-निर्माण के सम्बन्ध में इसी समय ममको
कुछ नहीं मूर्जे मिली है ।

कायब फट गये घोर चाँदनी बूनी बूनी क्षिप्त घाई । पायी कुप्र
हृदय रुक गया था । प्रकाश में निष्कट की पर्यन्त-धरणा स्पष्ट दिख गई ।
र क पहाड़ भूमिज ऊँचते छोटे से ।

धामनिह ने कहा 'सबसे को भी दर्द साभित्य घोर सात्वा का
मिदर बनाऊँगा । कायब भावनाओं का सदन तुम्हारी चाह मजि
रों उद्वेग का प्रसक्त । तुम्हारी वक्रता क बदनवार ऊँचे बस
नहीं क झोप मर का समकत । हुई लहरे लहो को समने लेंगे
'वा । उस मरिह को प्रदम उच्छ्वसता धावा रात की चाँदनी में साक-
माकर कहूँगे—आव परी मैं दिया के अणाय ।

शरदर मार्ग कौन ?

जैसे तुम्हारे गाँव के पेड़ पहाड़ जैत की ऊँचनी हुई बालों और
चाँदनी में समकती मरी को लहरे बाली है ।

समनयनी के मन में उठा मैं हूँ तो समन एक कक्ष में जाती रहेगी
सुमनमाहिनी मा आया करेगी घोर छोट मी कसा करेगी । कतने हो ।
म कल लहरे कर लूनी अननुनी करती रहूँगा लह गया करेगी बस ?
रस्तु उनकी बाँके ? घोर लह उच्छ्वस । समन हो जाता हूँ । लहनी ।
आ लु दर मजि बनेगा बस घोर हम सब समने घावे बनकर रहूँगा ।
म कीन्हा लही कल्ला लह धरने अण मर जावमी । घरे । उच्छ्वस
ह अणकूर ।। उच्छ्वस एक धावे म फेककर म बिलकुल ही मनवाई ।।
म) मन गई ? इनने दिन क्यों बूनी रही ? धर उच्छ्वस कीन्हा हूँपी ।
उच्छ्वस उच्छ्वस ही क्या था ? हाथ में क्या बना रहा ? येने उच्छ्वस
माके में क्यों डाल दिया ? लह छोटा हाथी येने या मरी किसी बाक-
रेम ने बोरी की । घोर ।। बहुत बुरा हुआ । समन कहीं फेक हूँ ?
लही कमी नहीं । क्या लह उच्छ्वस माके में पड़ा हुआ ? देखती हूँ मरी
लहा हुआ । ममी छोटा हुआ ।

'क्या बोध रही हो ? येने ठीक कहा म कि लहलह इसी प्रकार

भुवनयनी छठ जाड़ी हुई। बोधी में खनी जाती हुई। मानसिंह प्रश्न नहीं करने पड़ा वह घातुरता के साथ खनी गई। जिस घासे में खसत भुवनमाहिनी क यहने को फड़ खाता था वही मिल गया। वह छसको उठा लाई।

उसने कहा 'भुन से घासे में पड़ा रहा यह बड़ी महागनी का यहुना।

'मे समझ नहीं। यह क्या है ? मानसिंह बोला।

भुवनयनी बे महीनों गहरे की बहानी बतलाई।

'कैसे समाए हो आया ? मानसिंह न पूछा।

'मैं ही उसने उत्तर दिया।

एक क्षण चुन रहकर मानसिंह न कहा 'यह क्या करोगी ?

'म इससे लो। बना चाहती हूँ।

'बड़ी भुन करोगी। घमर्ष हो जायगा।

'यह तक स्म ए नहीं आया इसलिय कोई बात नहीं परन्तु यदि रखे रहेगा तो थोर घमर्षी बाढगी।

'ता क्या तुम समझती हो कि वह उधारता बतेंगी ?

'कुछ नी हा मे इसको नहीं रखूंगी।

'न रखो तो वहीं फेंक दो परन्तु सीटायो मत।

'मेरे ऊपर बोध दीखिये बिन्ता मत करिय।

'वह तुमको थोर नहींगी।

'मे हा न वहीं की घपन को थोर। वह कहेंगी तो छह लूनी।

'तुम आधी मेन सावधान कर दिया है।

'अब वापर उठ प्रकार बाजेंगे तो क्या हम कुछ भी न गा सके ?

[८१]

दूसरे दिन मालीसिंह को समाचार मिला गया कि सिकन्दर सोयी अपने मित्रास बना सहित पश्चिम-दिशि की दिशा से ग्वासियर पर प्रारुह है। बरसात के कारण जल निर्माण में बाधा पड़ ही चुकी थी सिकन्दर की चढ़ाई के समाचार ने उसको भीर में विपन्न कर दिया। सज्जीत विनकापी भीर निर्माण के काम को युद्ध के कारण न जाने बिठने समय तक स्थगित किमं रहना पड़गा यह उसको बहुत गढ़ रहा था। चढ़ाई के साधनों को प्रचुर प्रबल और उत्तम बनाम की प्रेरणा उसका ध्यान कलाशों के मार्ग पर अधिक कारका था।

नगर में लसकमी पड़ गई। सम्पत्ति वाल लोग अपने सामान और वासवस्तुओं को लेकर किले में आ गये। किसान भीर पड़दूर कुछ नगर-कोट के भीतर रह गये और कुछ आगकर पास भीर दूर के जंगल-पहाड़ों में छिपने लगे।

सिकन्दर इसके आठ-नी वर्ष पहले एक कछरा बाक्रमय ग्वासियर पर कर चुका था। सिकन्दर के पहले जलका बाप बहसास भी चढ़ाई कर चुका था। मालीसिंह ने लोग प्रवस्यों पर आक्रमणों को विफल कर दिया था। नगर के बावने वाले लोग प्रवकी बार विराध थे।

‘रुका नाच-गाय में क्याका उत्तम गया है। जल बहु उत्तम नाचबाल नहीं रहा। कुछ सोच कहते थे।

दूसरों की प्रिकामय भी ‘उठ उठ नर जानेगा दिन दिन भर सोयेगा तब तुम्हें की पीछे हटाने का समय कब और कहीं से निकलना ?

ग्वासियर की गीमा को विलकुल प्रगायमान कर दिया। भीक्षियों सब डीमी हो गई ॥

रहने के लिये एक गहन गया कम था जो दूमेरे के जंगल में उठता दूब गया ?

बन्धे अनुमति नहीं रह अब आसियर में !

तुम्हें का राज हो आसिया क्या अब ? वे गुलाम बनावेंगे ।

'तोमर राजपूत अफीम खाने मग ह ।

'जब से यह नई रानी आई, तब से उन्हें का दीर्घ जीवन होगा ।

निहाससिंह सायब कुछ कर सके ।

'जब राजा हठी बीसा है तब सामन्त क्या कर सकेंगे ?

अब अब सिर पर सायब है, तब राजा कुछ न कुछ प्रयत्न करेगा ।

तुम्हें जैसे पहले मैं ही जाकर मीठ गये थे मैं ही अब भी सोच जायेंगे ।

'राजा को सबक कैसे दिया था ?

किते के भीतर बहती हुई भीड़ में मानसिंह की पट्ट भवना पर उत्तेजित किया । किते में बहतीही अस्त्र-शस्त्रों की व्यवस्था की सैनिका को समझ दिया था जाने से जितने साव नगर में अब वे उनको बर बर बाहर आसस्त किया । सिकन्दर की सेना को दूर ही घटकाते स्तर ने क सिये निकटवर्ती पहाड़ों और पानियों में सैनिकों की टुकड़ियाँ मगायीं ।

सन्ध्या समय मृगनयनी को संध्या का सब समाचार आ मनाया । बह गया था तो भी उसके मनमें निश्चिन्ता नहीं थी ।

'समय पहले पर मे भी लड़ूँगी मृगनयनी ने कहा ।

तुमको सड़ना पड़ा तो हम पुरण बाहे के लिये ह ?

भीर स्त्रिया काह के लिये ह ? क्या वे जान्ना और कामना का अङ्गार मात्र ह ?

नहीं जीवन की प्रेरणा प्रातःकाल की ऊषा जैसी सत्रग करने वाली ।

'मे कहिता नहीं जानती परन्तु मैं पूछनी हूँ कि क्या यहो ऊषा बापहर की प्रवण विरग नहीं बन जानी ? बड़ी रानियों न एक समाचार भया

या कि यदि कुरी से कुरी पड़ी पायई तो हम सब बीहूर करेंगी । क्या ऊँचा प्रयत्न फिरण न बनकर पगल से ऊँचा न उठ कर, फिर नीचे पड़ जायगी ?

‘जल र नियों को यह संवाद नहीं भेजता था ।

यह सब के उत्तर पश्चिम से वो बीहूरताक है उसने यह सम्वाद भिजवाया है । नियों को ऐसे समय में बहोमार थाता क्योंकि उनको वहाँ न हीर कमाल और तनकार को कभी धाना सप्ता नहीं बनाया । पहले की सतियों ने आय धीरे चिता को बिनाया धार किया उसके बराबर और जो तनकार के साथ भी कभी चाहिये था । धाने राजिये बेरी को दिने के निष्ठ फिर देखिय मरा और बाकी का काम ।

पक्षी जिसके है वास्तु से चाहता है दिखर दिन भर भी लड़ाई से बचकर तुम्हारे कक्ष में बाऊँ सब तुम्हारी बहुत-से जान और भीठ स्वरा को मन्त्रि-दान को धन भीतर भरकर फिर क्यों का त्यो सबन हा बाऊँ ।

‘और हम रे कबाये तीरों को सगुन-हूँ क्या धाकी नुशायों को कम फड़कन देवी ? माफका जवन बन कर लड़ा हुआवा होता तो क्या वह जाने के निज ही धारका स्वादा देता या यह भी कहता कि मरे बाहर से लड़ो और भीतर बैठकर लड़ा ?

‘बन जायता सब यह यही समझा देता परन्तु बन नहीं पा रहा है । कोई न कोई विघ्न बीच में था जाता है । चाहता है तुम्हें की मत्ता किसी तरह हम आय तो बिना बिना के जवन की बनवा कर लड़ा करनू बन् के ठाण संगीत में लड़ा प्रयत्न फूट नू बिजबापी, साहित्य स्तम्भ को पूरी जीवाई पर पहुँचा नू ।’

‘तुम्हें की मत्ता किसी तरह से हम आय । कौन लड़ेगी ? कौन जीरी देकर टाल बीजिये ।

‘मेरी कोकरहा हूँ ।

‘क्या सचमुच धार नहीं सोच रहे हैं ?

‘क्यों ? राजनीति में नाम काम बण्ड में—चारों का क्या व्यवहार काम में लाता रहता है । सोचन में क्या बुलाई है ।

‘कलाओं की बहुत अधिक पूजा न ही क्या आपके ध्यान को राजनीति के नाम काम धाड़ पर अधिक जो बिठनाया है ? बण्ड की बात आप क्यों नहीं सोच रहे हैं ?’

‘सभी धर्मों को सोचना पड़ता है ।

मे राजनीति को नहीं जानती । रिमान की लड़की ठहरी । केवल हलता जानती हूँ कि मराम पर लायते-लाते धर्म ह्रा भोर की लानी को देगा कि मर में लहर सीधी विधियों की चमक को मुना कि क्यहूँ एा यई और दिन के काय पर दिन नहीं । जब धार की लानी विधियों को चमक, लगी की धार का कमक पहारों को ऊँचाई धीर लहर-लहने से । की हलियाली धीर अगोली बन्दनःः । के मिट्टा के बरदे म नहीं उठार बाबा लर उठ पर से ध्यान को हटाकर धान काय म लय गई ।

‘अम्भु मिट्टी के बगोदे, धीर बाहे लयल पत्थरों के बनाव धमूरे बदन में तो बड़ा भारी अन्तर है ।

बीछा को बजलते-बजलते काम पड़ने पर यदि तुरन्त लचकार न उठ पाई, कोमल लम पर सोते-नोते लहर लने पर यदि तुम्हारी उठकर कम न कमी ध्रुवपर की लते-लते लम के लामने ला कहे हलने पर यदि तुम्हारी बरज कर बिनीली न हे पाई दिन कानों में नीठ लरों की लस-धार बह-बहकर ला रही धो जन्ही कानों में यदि ललुवालों धीर कड़वा की बुन न लमा पाई तो ऐसी ल एा लम धीर ध्रुवपर की लामों का काम ही क्या ?’

भृगुनयनी उत्तमिण हो लई थी । लालहिह की रोमाञ्च हो धाया । लमकी धाने धंर में लर लिपा ।

‘छोड़िये मुझको — मृगनयनी ने कहा — क्षत्रिय के लिये इस समय
जो उचित है उसी के करम में झूट जाइये । राजास की रक्षा की विन्ता
को दूर कर लीजिये — ये उसकी रक्षा का प्रबन्ध करेंगी ।

मानसिंह बह्यद् हो गया ।
बाता ‘सचमुच जब मन्त्रको घपने भीतर बहुत बल प्रणीत हो राजा
४ । विजयलक्ष्मी घोर प्रचण्ड । पशु को सोना चांदी दे दिवाकर टाम देने
की बात मैं घपने मन से विलकुल निकाल दी । सचमुच वह कत्ता गया
जो कत्तव्य को लंबा करदे और घोर वह कत्तव्य भी गया जो कत्ता का
मन-मन हो जान द ?

मृगनयनी ने मानसिंह के ऊंचे मरे बस पर पड़ी हुई मणिमाला को
उपलिया में झिंझाते हुये मस्कान के साथ कहा घनी कैवल्य कर्तव्य की
बात का सोचिय ।

‘यही होना यही हुवा प्राणघन । पहले कर्तव्य कत्ता की बात
पाँछे । मानसिंह के मंह से दृढ़ता के साथ निकला ।

[६३]

बन्नी रानी से भालसिंह का एक पुत्र था । नाम विक्रमादित्य । वह मन्दाकिनी में पर रहने वाला था । भालसिंह ने अपने हाथ उसकी कपूर में लकड़ार बांध कर भिकरार का मकाबला करने के लिये बिल्के से बाहर भेज दिया । निहालसिंह को दूसरी जिंदा से धाकमग करने का आदेश दिया और समझाया मुझको आता है भिकरार का लोग दिया जायगा । जब वह लौट पड़ तब तुम जैसे बने उसका सामन जाना और जिंदा रह सकि की बर्बा करना । कहना मासिक के मुन्तान का हाथ गंज करने के लिये ग्वातिपर ही है । यदि भिकरार अपने किर्या मन्दार में लहाई में उभरता तो हम उसको सहायता करेंगे । केवल मन्दाकिनी अपवाद है । यदि मन्दाकिनी उसका बुद्ध हुआ तो हम उसकी कोई सहायता न करेंगे ।

कुछ देने बिना की बात क्यों ? निहाल ने पूछा ।

भालसिंह ने उत्तर दिया ना मन्दाकिनी पुछ कुछ न मन करता । फिर देना जायगा ।

उसके सामन मन्दाकिनी की गिरा हुई पोंडा का चिर लिप गया । निहाल बसा आया । भालसिंह तब और किस की रक्षा के लिये भीतर रह गया ।

वह धारण लकर कमलमण्डप में बाहर हल का ही था कि एक मोड़ बाग में के एगल में क्या भिन्न था । क्या मन्दार । निहाल छिड़क गया । क्या जिन्दा लहा हुआ नदी में मग न पा गहो ही ।

निहाल ने कहा 'कहने दिनों में कुछ कहने का मोल रहा था ।

कमा ने उरा सा जगद्विषा और बोली 'मन्दार ही नहीं मिला । सब का पीछिये ।

क्या करती रहती हो ?

विनकारी और गायन बाधन ?

‘किसको बिचकारी ?

‘किसके कं मन्त्रि में की धीर को कोई बनवाने उसकी ।

‘बिचकारी से बड़कर तुम्हारा संगीत ह ।

‘जागकी कृपा ।

‘उस र त तुम्हारा मामन धीर मृत्यु न जाने मन में क्या क्या छोड़
पया ।

‘माया तो नहीं था मैंने ।

‘अज के साथ में तो काया था ।’

मेरे मन्त्र न घाप मन में क्या छोड़ा था ?

तुम्हारी मृत्यु न बिचवन धीरभीत क यन्त्रिय को बिचने कभी
भाव नहीं छोड़ा सपनों में भी नहीं छोड़ा

‘ता प्रव जगहने मनवान फिर मितायेवे । ●

‘तुमको एक बार हृदय स समा कैता — बड़ी साथ है ।

‘मेरे वा एक प्रसू है जब तक के पूरे नहीं दूने देख को नहीं पूरे
दूँदी यदि छुवा ता वास्तवजान कर भूयी ।

एमे के कौन मे प्रसू है ?

‘इस बड़ाई को आप निरन्तर ही जीतकर धारेंदे ।

‘आशा तो है ।

‘जीनकर जाने पर नरवर की आभीर आपको मिलनी चाहिये । इन
सबने मुन मिया था कि नरवर को आरके पराक्रम ने ही जीता था ।
नरवर आपको मिलना चाहिये था ।

‘हैं और । नरवर राजा के सारे के हाथ में है ।

‘बिचकृत अकारण आपको मिले नरवर मैं तो यह चाहती हूँ ।

'नीटकर देखूंगा। लड़ूया बिफट सड़ाई लड़ूंगा सिक्कर को पिछेड़ूया महाराज बसत होंगे तब नरवर को बागीर में मारूया।

'जैसे लड़ाई की बात साप कहत है वेंसी मझो तो मझी नहीं लगी। इर के मारे कसेजा बसकने मगा है। राजकुमार धीर इनने सामन्त बाहर मड़ने के लिये जा रहे हैं। किले में बकेले महाराज रहेंगे। साप उनक साप ही बने रहें तो बहुत धम्मा होया।

'महाराज कहते ब कि गई महारानी भी किले के प्रबन्ध में उनके साथ रहेंगी।

'रुनो ही तो है कितना कर पार्यकी ?

मेरे मन में बात उठी थी परन्तु मैंने अनुचित समझकर मुह नहीं निकाली। तुम गई महाराजनी से कहकर मुझको बक्या लो बड़ा धम्मा होया। यदि मे कित्ती प्रकार बक बाईं तो धान गत को कहीं एकान्त में मिल सकोपी ?

मैं कहते ही कह चुकी हू कि साप मेरी बेहू का स्पर्श उस समय तक नहीं कर सके थे जब तक सापको नरवर की बागीर नहीं मिली।

'नरवर की न मिले, धीर कोई बागीर मिले तो ?

'धीर कोई बागीर मिले तो उसको नरवर की बागीर से बदलवा लेना।

'नरवर से इतना मोह क्यों है ?

'क्योंकि उसको धारने बीता बा बीर मेरा बर बन्धेरी नरवर के निकट बैठता है। बस यही मोह है।

तुम कड़े धक्कर पर मिली। मन नहीं चाहता है कि किले को छोड़ू। इच्छा है किमरात सामने तुम रहो धीर तुमको देख-देखकर सब काम करता रहूँ।

'यह तो क्याह हो जाने पर ही सम्भव होया।

‘ज हो म्हाह तो क्या ? हमारी तुम्हारी भावि भिन्न-भिन्न है ।

‘ये तो आचार्य विजयवज्रज्ज के सिद्धान्त को मानती हूँ । आपका साथ तो घीर भी बहुत पहले से है क्या आप नहीं मानते ? उषा तो मानते हैं ।

‘ये भी मानूँगा ।

‘तो अब किते में रहकर ही युद्ध में भाग लीजिये । मुझको कभी कभी दर्शन मिल जाया करेंगे ।

‘तुमको महापत्नी मगनबनी से कहोपी नहीं ? कहोपी म ?

‘नहीं कहूँगी । उसको समझूँ ही जानना ।

‘अच्छ तो मे ही कुछ प्रयत्न करूँगा ।

कसा मार्ग छोड़कर बली गई । निहामसिंह ने प्रयत्न किया परन्तु नानसिंह ने अपनी योजना के किसी भी अंश में हेर-फेर नहीं की । निहामसिंह बाहर बसा गया ।

[४८]

मुममयोहिनी ने कहा से जो कुछ भी चीसा हो और न चीसा हो, कहा उसके पास घकेले में घठने-बीठने खराब लगी ।

‘तुमको मूजरी रानी बहुत अधिक चाहती हूँ । मुममयोहिनी न पूछा ।

कहा जानती थी कि मृगमयनी को बड़ी रानी रसी घर नहीं चाहते ।

सावधानी के साथ होती थीरे ऊपर तो साथ सभी की हवा है, घातकी बिघेव कर ।

उनका प्यार जाघी पर, बा घब जाघाघमी कहुमाने लगी है अधिक है । क्या तुमको उतना ही चाहती है ? बड़ी रानी ने घाल मझा कर प्रसन्न किया ।

कहा ने मोक्षपत्र का नाट्य करते हुये कहा ‘आधारानी से बड़कर तो मूजरी रानी हिमी को भी नहीं चाहती ।

तुम मुझको चाहती हो ?

‘मैं तो महारानी की भावर बहुत करती हूँ । शैविका के मुह से उठती बड़ी बात कैसे निकल सकती है ?

‘मैं तुमको अपनी लक्ष्मी बनाया चाहती हूँ इस उद्देश के बताने कहेंगी कि मृगमयनी को नहीं मान्य पड़ पावेगा ।

‘घातकी इन कृपा को अग्य घर नहीं भूलूंगी ।’

‘अच्छा तुम जो क्रिमे के विष-निषाध भाषों के इनने विष बनाया करती हो, उनसे तुमको क्या मिल जावेगा ।

‘कुछ नहीं कहाघनी जी, कुछ नहीं । मन्दिरों के ही बहुत के बनाये हैं ।

‘उनके भी बनाये हैं ? मृगमयनी के ?

‘रुई बनाये हैं । महाराज के भी बनाये हैं ।

धीर मेरे ?

‘घायली घाजा केने की कामना बहुत बार मन में उठी परन्तु भय के मारे नहीं कह सकती ।

‘बस बगाना ।

बहुत से बगायेंगी ।

‘कुछ धीर भी करना जानती हो या ? बस चिन्तकरी धीर पानन बगाना ?

कला रानी का मुह ताकने लगी ।

बड़ी रानी ने बूढ़ मुस्कान के साथ कहा मेरी घाजा का पालन करोगी ?

‘सिर के बस । कला ने उत्सह के साथ उत्तर दिया ।

गङ्गाजी की सीबन्ध साकर कहोगी ? रानी ने भीमे स्वर में पूछा ।

कला ने आश्वासन दिया धीर सीबन्ध आई ।

कला के मन में अपने धीर सपने के बीच में एक घाड़ पहले ही खड़ी करसी थी — वह विषम रावसिंह के धीर किसी के लिये सपने का निर्वाह करने की अभ्यस्त न थी ।

रानी ने हसर-ठसर बेखबर कहा काम बहुत टेढ़ा है चतुराई के साथ करो तो बहुत पुरस्कार लूगी ।

‘कसोगी’ कला बुढ़ता के स्वर में बोली ।

ये तुमको एक धीपन हुईनी । उसको किसी प्रकार चुपचाप मृगनयनी को खिलाओ । बरा मल धीपन से प्राणहानि नहीं होगी उसके खिलाफ से मृगनयनी के कोई छान्दान नहीं हो सकेगी । रानी न कहा ।

कला बोली ‘वह तो मैं कर लूँगी । मृगरी रानी को नानूम नहीं हो सकेगा ।

मुमनमोहिनी ने एक छफ़र भुग कला को दिया। कला लेकर चली गई।

निसामुद्दीन की पीपल नहीं हो सकती यह। बहुत करके बिप होया। मुमनयनी को मार देने से कोई लाभ नहीं। यदि कही बात उबर गई तो व्यर्थ ही मारी जाऊँगी। मानसिंह की क्यों न किसी तरह बिसावू? यदि बिप ही हुआ तो राजसिंह का काम बन जायगा और न हुआ तो कोई बात ही नहीं। परन्तु यदि यह प्रालम्बाच्छ बिप है ही नहीं तो व्यर्थ के जंगल में क्यों बड़? छिमे के बिचो को तैयार कर लिया है राजसिंह के काम में या न करने दें। देर-मंदर गवानियर का चेरा पहने जाना है जब गवानियर में और अधिक बचना निरर्थक है। परन्तु यदि वह पीपल बिप ही हुई तो मानसिंह को समाप्त क्यों न कर दूँ? राजसिंह को बचन देकर धाई की। और वह बिप न हुआ तो? कई बार प्रयत्न किया छफ़र न हो पाई। जब की बार? यदि छिमे के बिचों से काम बन जावे तो जब इस प्रयोग के निये और अधिक न ठहर्कें। मानसिंह जैसे भी मारा जावेगा। मेँ क्यों यहाँ और अधिक ठिड़ी रहूँ? निहामसिंह होता तो इन सबकी धापस में कटकना देती। कौन जाने लौटेगा भी या नहीं। लोग और करे के भीतर में भी पड़ गई तो सभी तक का दिया कराया सब यों ही रह जायगा। कला खोज रही थी। उसने एकान्त में जाकर छफ़र भुग कला दिया।

[४१]

मन्तबेर में लड़ाइयों पर लड़ाइयाँ मची रहती थीं जम्बल के परिषदी छतरी किनारों का भी यही हाल था। बीमपुर की धर्मी सन्तगत समाप्त हुई तो छोटे-छोटे जागीरदार और बङ्गाल के मुस्तन दिस्ती की बुद्ध के लिये आवाहन देने लगे। बोधन पुकारी राई को छोड़ने का मुहूर्त न पा सका। सोचा था बोड़ी सी धान्ति स्थापित हो जाय तो अयोध्या या काशी पहुंच जाऊँ। इतने में सिकन्दर खोबी ने जम्बल के छतरी किनारों और बाटियों को धा बरा। सिकन्दर के ग्वालियर की विद्या में बढ़ते ही राई और धान-पास के गांव सज्ज गये। धनिष्ठा होत हुये भी बोधन ग्वालियर नगर में आत्म रता के लिये आ गया। राई के पड़ोस के पहाड़ों पठारों और फरराओं को उसने धरमिष्ठ समझकर यही निश्चय किया। राधा मार्गद्विह को जैसे ही मामूम पड़ा कि बोधन ग्वालियर नगर में आ गया है उसको बाहर के साव किसे के भीतर बुला लिया और धान्ति स्थापित होते ही राई में मन्दिर बनवान के बचन की पूरा करने की बात कही। राई से ग्वालियर को गहर बनती बसी आ रही थी इसलिये बोधन को विश्वास था कि मन्दिर भी बन जायगा। राधा अपना ही है, बरु के मामलों में उसकी समझ नहीं रहता किसी बिन सुमार्य पर ॥ धाऊँवा कोई बात नहीं बोधन ने सोचा। किन्तु में सझकी एक साझ-मुपरा बर रहने को भिन पया। मगनयनी का बीबन अब कैसा बनता होला ? रानी बेसा। ठीक भी है। और साखी का ? वह भी बही आ गई है। यह बुझ हुआ। देखा जायगा। ससार में न जाने कितने पापी घरे हुये हैं। किस-किस को बिन्ता की आय ? बोधन ने जपेला की। यही वह विमयमङ्गल भी है जो राधा को नास्तिकता भर बढ़ाता रहता है। विजय से कभी छटकी तो धक्की बार उसकी धक्क ठिकाने गया हुआ।

बैजू को भी राधा से किले में एक बर दे दिया। बैजू का मुझ के समाचार से कोई छरोकार न था। उसके लिये मुझ छटमस और मन्दिर के

देव के समान था। कटा, कुम्हारवाला घोर पीछा छटा निभा। लड़ने वाले बाल पर खेल जायेगे घोर मालमिह रत्ता के मियं कुछ उठा नहीं रखेगा इतिहास वह सुबह की गायत्री में किसी मनोहर परिष्कार की अपेक्षा में लगा हुआ था। यदि वेने किसी मोटी मञ्जुल परिपाटी को बना दिया तो मानो सब पुष्प बैकुण्ठ में पहुँच गये घोर मेरे मिय तो सुरपुरी के द्वार खुल ही रहेंगे। बैजू एक धुन में था।

रात का समय। बादल दिन में भी रहे थे। धध तो बयाब समझ जाये घोर कड़मकाकर बरकने लगे। घर के एक बाग में दीनक टिमटिमा रहा था। बैजू एक मोटी बरी पर बार-बार बीछा की उठा कर बजाता घोर एक देना। एक घोर पसावत रखी हुई थी। बीच बीच में उसपर पुनःपुनः हुये किनी ताल को बजाता। कला पोरी में लम्बुरे को लाने लुन बैठी थी। वह कुछ कहने के लिये उठक थी।

‘या कि किट या या किट या किट या बैजू के मूँह घोर बजावत से एक लाल निकला। फिर वह उठ कर कुछ सोचने लगा। बुनमुना नहीं रहा था।

कला बोली ‘यह समय था गया है, महागम।

उसकी तरफ देख बिना ही बैजू ने कहा ‘अभी नहीं गया। बस है।

‘बकिट बकिट या लकिट या किटया उसके मुँह से निकला घोर हाव से लाल देने लगा। फिर कुछ धरा लुप रहा। मकामक बीच बीच घोर मुट्ठियाँ कसी।

बोला ‘लोप बहते हैं माना रोना सभी जानते हैं। मुर्ग बही के। बयाव व तो टीक कड़ से रो लकते हैं घोर न था लकते हैं। बाने को तो रंकर ने घोर भी बहूत कुछ बना दिया है।

‘यह समय था गया है। कला ने दुहराया।

बैजू ने एक लागू रीती कृत्ति से उतकी धोर देखा । मस्तरा कर बोला 'बहु पाय । बहु पाया ।। घब की बार पकड़ छर ही गूँवा ।'

कला ने प्रथमीत कृत्ति से उधर देखा । वही कहीं कोई न था । उसने चैन की छान ली ।

बैजू ने बोर के मन्त्र फिर हिनाया धीरे गुनगुनाने लगा । अचानक कहकर उसने बीछा उठा ली और आमाप करने लगा । कला तम्बूरा छोड़कर उनके स्वर का साथ देने लगी ।

'ठहरवा । बैजू बिस्माबा । कला ने तम्बूरे की एक धीरे रस दिया धीरे टफ्टकी लगाकर उसकी धोर देखने लगी । बैजू बीछा को नीचे रख कर धीरे नीचे हुवे कुछ गुनगुनाने लगा साथ ही चुन्ने धीरे हाथ का हलका ताल देने लगा । किसी गीत को राग धीरे ताल में बिठला रहे हैं कला ने सीखा ।

एक बड़ी गुनगुनाने धीरे ताल देने के उपरान्त बैजू विरक कर यकायक खड़ा हो गया ।

'अहाहा । धा हो हो ।। उनके मुँह से निकला और वह किलकिला कर हँस पड़ा ।

घाब बाधलेपन की भाषा कुछ अधिक है कला ने निर्धार दिया ।

'बनित बन्धित की कित घहा हा । हा ।। अहाहा ।।। ह ।।। कला बात है । कम धाँकर मनमान की । कम मरगाय की । बैजू ने कहा और बीछा कर पाया—'मान खोले होरी राजा मान खोले होरी —' उसके बाद उतने पखावज भी धीरे गुनगुनाते हुवे लगाने लगा । पखावज को रसकर फिर बीछा को हाथ में लेने ही वाला था कि कला अचानक के साथ बोली 'गुरु श्रीमहाराज अब समय धारहा है ।

उसने हर्षमग्न होकर कहा 'धारहा है नहीं धारया है बुर्र खोकी । मुरपर से होरी की गायकी की कपरेला बगानी धीरे ताल की तैयार हो

बया : बजार ठात में बाई जावनी होरी । पीठ के कोन भी बसा निचे
हूँ । पानी दूध काय हो राजा को धमी जाकर सुनारूँ । घर उब कपड़े/वा
में रज्ज घोर भररूँ सब कहूँ । ही यही ठीक है । ठीक रहेवा न कता ?

‘ही महाराज बहुत ठीक रहेवा । मैं कुछ घोर कह रही थी ।

जकर कमी वह लेना मुझको प्रवर्ण्य नहीं है धमी हो ।

‘धमी ही सुनाता बच्चा । बहुत महारज की बात है ।

‘मुबारक घोर हारी से भी दइकर । छिर तुने सीखा क्या हाने
दिनों में ?

‘महाराज को स्मरण होगा जब बन्देरी से हम लौब बसे ।

‘ही बन्देरी से बसे व घोर सब ग्वातियर में हूँ । क्या मैं बच्चा
हूँ जो इतनी सी बात भी न जानूँवा ?

‘बन्देरी छिर कोटना होमा ।

‘काहि के तिये ? बन्देरी के पत्थरों से छिर मारने के तिये ?

‘बन्देरी से बसते समय राजराजा राजसिंह में कुछ कहा वा ?

‘ही कहा वा कि ग्वातियर के मति में सब बरौयों-बरौयों को परास्त
करना और बन्देरी का नाम रखना वा होयवा- सब ग्वातियर के नाम
को बझावेवा ?’

‘उन्होंने कुछ और भी कहा वा ।

‘कहा कहा वा बलसाधी । मैं राज राजसिंह की बात को बाम्यना
देता थावा हूँ ।

‘उन्होंने बहुत कुछ कहा वा और यह भी कि जब ग्वातियर को
कोई बरने के तिये घावे सब उनके सैन्यबल आदि पर घड़ी पठा बजावर
सुरक्ष बन्देरी कोट पढ़ना और बलनामा । इसके के बिना मेरे क्या
तिये हूँ ।’

होये बिज बिज ? क्या करेंगे राव रावबिहू यह सब जानकर ?

ठीक समय पर नगर पर चढ़ाई कर देंगे और अपनी अपनी जगहों को ले लेंगे । बिज बरा जालमें बाले के हाथ पहुँच जायेंगे ।

धीरे राजा मानसिंह को धुक्कर का इतना घबड़ा समझता है और इतना घबड़ा गा केता है खुपचाप बीठा रहेगा ?

‘वह करने देने की बात नहीं है ।’

घबड़ा बी—बार दिन ठहर जाया । सब तक होरी की स्मरेला में समोने सुझाने पूरा करे केता हूँ । फिर पूरे राव—बिहार के राव इस होरी को राजा मानसिंह को सुमाड़ेंगे । उसके बाद राजा से पूछेंगे कि तुम बन्देरी जाओ या यहीं बनी रहकर कुछ और चीखो—दिलमाओ ।

कता ने अपने को कोना—किस बड़ी इस पापस के साथ बन्देरी से जाती थी ! परन्तु इतना पावसपम इनको सदा नहीं रहा है जब दिन में कुछ अधिक लगेत दिखलाई पड़ेंगे सब सावधान कहेंगी ।

[१०]

निहामसिंह और युवक विष्णुसिंह सिन्धु की इरादत से जा मित्रे । निहामसिंह की इरादत राई के पीछे की विस्तृत दूरी तक फैली हुई बजारों और बाजारों में नहीं घुस पाई थी ।

उस दोनों के दोनों ने हाथियों की सहायता से इरादत की मार मचाया । वे और भी धाये बढ़ते परन्तु निहामसिंह ने राई का लक्ष्य मारा । कुछ रुक गया ।

राई बरस-बरस जाता था । सूर्य ऊँची हरियारी और नदरे कीबड़ से भर गई थी । सिन्धु के तिर एक-एक पल बढ़ता हुआ हो रहा था । उसी समय दिल्ली के समाचार आया कि कुछ सरदार पलायन में बढ़वड़ गया । वह ह और पूर्व में बीनपुर के निहामसिंह की माई कातास तिर उठा रहा है । रातियर की प्रेरणा दिल्ली को पश्चिम महारक्षक समझ कर सिन्धु लौट पड़ा । राई की राई के बिये उसने उस दोनों को मार मार का दिल्ली भुजाया । निहामसिंह ने विष्णुसिंह को रातियर लौटा दिया । उसकी कातास थी कि कुछ और राई की विजय का मय पकेले उसकी दिके । इन्हीं रातियर को समाचार बजकर वह एक छोटे से दल के साथ दिल्ली जाता गया ।

निहामसिंह को प्रपन्न गिरा बहानों की एक बात पाई थी । उस बड़े और साहीर के प्रपन्न का मुँहदार का सब दिल्ली का सिन्धुसिंह गुना हुआ । बहानों बहानों कातासों को लेकर दिल्ली की ओर बग पड़ा । दिल्ली के निहामसिंह उसको एक ऊँचीर मिया ।

ऊँचीर ने बहानों से कहा 'दिल्ली की बादशाहत बादले हो ?' बहानों ने सोचा प्रपन्न क्या चाहे दो प्रपन्न ।

ऊँचीर ने बजसाया, 'मैं बेक सकता हूँ दिल्ली की बादशाहत की । रातियर मुझसे ? वो कोई भी ऊँचीर बादे बेक हुआ । वो कोई ऊँचीर ही रातियर पर आ बैठेगा ।

बहुलोत्त न बादशाहत के बाग पहुँचे ।

ऊँचीर बोला 'वा हुजार टट्टे । बस । छरीद तो धीर भीज करो ।

बहुलोत्त न ऊँचीर को दो हुजार टट्टे दिये । इधर-उधर के बागी सरदारों से जड़ाई सड़ी धीर दिस्सी के तल्ल पर जा दीछ ।

सिकन्दर ने सोचा दिस्सी में ऊँचीरों की कमी नहीं है अगर किसी असक्त सरदार ने किसी सालची ऊँचीर से बादशाहत कुछ पचादा बागों पर छरीद ली तो सिपाहो वही से जा बिरहोंय धीर में नहीं काम गूँया । इसलिये वह धविमम्ब दिस्सी पहुँचा धीर बागी सरदारों के मुतोब्बेन में लय गया । जलाल दूर था इसलिये सरकी धबिह बिन्ता न बी ।

बागी सरदारों को उसने बहुत खीछ नज़्ज़ कर दिया । इसटे बाद ग्वालियर के दूत मिहानबिह ॥ पूछा 'तुमको अपने राजा की टरछ से सब सबासों के से करमे का भरनचार है ?

बी हाँ है उसने जतर दिया ।

'तुम्हारे राजा पर हमारा अस्सी लाख टट्टु निकसता है ।

कैसे ?

'अस्सी लाख टके ठो ठो बजन का निकसता है जब पहल बादशाह ने ग्वालियर पर जड़ाई की । उसक बाद मेंन जड़ाई की बार सास पीछ । एकम पुनबी हो गई । फिर धबकी बार बमूषी के लिये मुम्हको लुह जाना पड़ा । इनका छर्च चलप है ।

'पहली बार हमारे राजा के समय में जब बादशाह बहुलोत्त ने जड़ाई की तब वह हार कर भीटे । दूसरी बार जब थापने हमसा किया तब थाप भी हार कर बरित्त गये । धबकी बार कौन बीता कौन हारा इतका भिरण्य होने को धवरय बाकी है ।

विधवा भी मत करी सरदार । हमारे फाँसों में सब बिगा-भड़ा रहता है । यों रहते बारहाह घातमग न ज्वाभियर में क्या किया था ?

‘मुझको पार नहीं है ।

आ सी साल के करीब ही मरे मरु हमारी तबारीत में घसी बाँधवा लाया है । घातमग ने ज्वाभियर को फँसा दिया । सिपाही सरदार, राजा—सब—मारे मर घों राजपूतानियों में जोड़कर दिया । मुझारे किले के एक तापस का नाम जोड़कर—तासाह “सीमिय है । घब म भूमता ।

कैसे मृत पड़े हैं ? मगर धरकी बार—

हो मरका बार ज्वाभियर के किले के लारे तासाह जोड़कर—तासाह कर्तापस ।

‘मर को बार मुम्तान जो दिल्ली के तासाह धीर कुपों को जोड़कर का नाम विदेवा ।

राजपूत भुज गया कि जानसिंह ने क्या रहने धीर किन तराह बतने को कहा था । निजपुर सोरा का जून सबस पड़ा ।

‘जायता है नगर दिमसे बात कर रहा है तिवर दुर्गर में गड़ा है ?

घायलो भी जानवा जाहिये कि घायल जिमी छरे-तरेसे बात नहीं कर रहे हैं सोनर राजपूत से बात कर रहे हैं जिन्हें पुरखों ने हसी दिल्ली में लोहे की दीप लगी की घों जो फिर उसने भी बड़ी कीर घातने की दम गता है । जिन्हें राजा ने कमी बरी ने सामने फिर नहीं भुजवा घसी का सामन सामन गड़ा है । जिमी की घायल पुरख ने दो हजार टनों में धरीन बिगा होत करोड़ उनके कुडिन हैं पण्ण ज्वाभियर को समूचे जिम्मावत की तीस सोने के बन्ने में भी नहीं मोन कि लरोसे ।

‘कृप करजवान !

‘सन्धि की बर्षा क लिये बाप ही ने बुझाया था ये घरने धार नहीं बनाया ।

‘के बापों इसको धीरे भेज दो ग्वातिनर लहर कि में तोमरों का होछ ठीक करने आता हूँ । कहला दो कि एक बार दिल्ली के किसी भी बादशाह ने किसी भी गुजरे खान में जिस किसी विमीन को फट्टा किया वह उससे धीरे उसके जानकीनों की हथपा के निज हो गई ।

हरबार के कुछ रसक निहालसिंह को पकड़ कर के यों । बादशाह ने नहीं कहा था तो भी के जानते थे कि यह इसका क्या करना है ।

राजपूत ने अपनी धर्मन उन समय भी नहीं नबाई । जब बड़ से निर प्रसव हो गया तो भी उस तोमर का बड़ एक खण के लिये सीधा बड़ा रहा । बबिकों को आश्चर्य था इस तरह तो किसी को मरते नहीं देखा । मोर मारे जाने के पहले मिमिवाले-पठियाते धीरे रोने-चिस्तात देने पड़े हैं पर यह ! यह तो बड़े धीरे को कुलहिन समझ रहा हो !!

बादशाह को जब निहालसिंह के निपन की बात मालूम हुई तो उसने राजा मावसिंह के पाल छिमत धीरे कुछ चौड़े भेज दिये माता दूर मावसिंह ही गया !

[५१]

बैजू ने गम्भन की घपनी परिपाटी को दो-तीन दिन के भीतर बाब सेवार लिया। शिकार को हिस्सी की रिवा में हटता हुआ सुन्दर मानसिंह की व्यस्तता कुछ कम हो गई। परन्तु विस्मात् नहीं था कि वह फिर न पीट पड़ेगा। कई दिनों के अपराध बैजू ने उसको घपनी गई परिपाटी के सुनाने और उस पर सर्व-वितर्क करने का बदलत हूँ निकाला। उसी कदम से मायन-बाबन का सामोना हुआ। उमा-बबन में और सब से केवल निहानसिंह नहीं नहीं था। ऊपर के खण्ड में हिस्सीयों के सामने रातों रात स्नान था बीठी। घपने स्नान पर मृगनयनी और वाली थी। बैजू ने बड़ी लवण के साथ घपनी गई परि पाटी को व्यस्त करना शुरू किया। बिजय ने बीछा रख दी।

बैजू ने कहा 'बजाइये। बजाइये।'

बिजय बोला 'बजाइये नहीं सुनूँगा। उठान बिजलर है। पहले कभी नहीं सुना।'

बैजू मानो बिना किसी प्रयास के जीत गया। स्वरों को मधुरता में मोल मोलकर जाने गया। पीठ में मोल मोले से ही थे—

मान होरी खले री राता मान' होरी खले री—
मेम प्रीति की बाँठ बरी है बी मन भावो सो खेले री—
—री राता मान होरी—

पीठ की पूरी ठावों को लयबद्ध हो पाईयाँ लगी। पीठ ठेके स्वरों में हुआ।

मानसिंह न मुकाब दिया, बीच-बीच में नीचे के स्वरों पर भी बोली देर टहरा पाय तो जान नईसा मानो रंग की बिजकरी को फिर से करने के बिना कोई बहर गया हो।

बैजू ने सुरम्भ मान लिया और मलबिह के मुखवाच के अनुसार पन दिया ।

उमाश्रित पर बैजू बोला 'इस परिपाटी को छोटी की बगकी के नाम से बिस्मिल किया जायगा ।'

'किस किस रूप में माई जायेगी ? विषय न प्रथम किया ।

'किसी भी मधुर आकर्षक रूप में । बैजू ने उत्तर दिया : और उसने सगरी बोलों को कर्द रूपों में बाँकर सुना दिया ।

मानसि ने उस्ताद के साथ कहा 'आज से आचार्य बीजनाथ को नायक बीजनाथ का पद दिया गया ।

आचार्य ! बोधन ने आश्चर्य प्रकट किया — 'नायक तो इस युग में कोई भी नहीं हो सकता । नायक तो बहू कहलाता है जो किसी नव रूप का दर्शन करे ।

विषय ने विवाद उठाया — 'आपकी बात में तो इस युग में क्या कुछ भी नहीं है । उस्ताद ! आपकी क्या संकीर्ण पर भी अधिकार है जो बीच में ही बोन बैठे ?

बोधन ने कहा 'संसार एक आत्म है । गाथा व आचर्य वाला जो सर्वनाम्य बिस्मिल की बात तो कह ही सकता है कि प्राचीन भूविमों न को कुछ किया उसकी पक्ष न तो कोई बरन सकता है और न उन्हें किसी नई बात को उत्पन्न कर सकता है ।'

'आरके बिस्मिल तो ही है ।' बैजू ने टोका ।

बोधन ने हठ किया 'ऐसे नहीं माना जा सकता । बापत जर क समीक्षात्मक दृष्टि हो, उनसे साबने यह परिपाटी प्रमुख की बाय और वे सब कह दें कि आचार्य बीजनाथ मुझमें भूविमों के साथ निकल गये हैं सब मला जायगा ।'

मानसिंह को घरबार गया। बोला 'तुम तो पुत्रापी संवीर का एक घरबार भी नहीं जानते।

विजय ने धक्का किया समय कुसमय कुतर्क तो कर सकते हैं।

बोधन ने दूढ़ता के साथ कहा प्रायः किसी दिन मुझको निरन्तरा है। पर्यं घोर शत्रुओं के सम्मुख मैं भाग्य जितना घम और असह्य प्रस्त रचना में उतना दराजित हूँ इसो ने चेनाया हो।

'यही विवाह बन्द रखो। किसी दिन घरबार और समय दूना। कर मना जाहे जितना व्यापार तऊ घोर विचार का। बापक और बाबायं मेरे धात्र से भायक बंधू कहनायें।

घात्रों के किसी भी बिजव पर राजा की प्राप्ताभात्र निरोपायं नहीं हो सकती बोधन ने मनमें कहा घोर घोर से बोला 'ये तो नहीं कहूँगा।

राजा ने गुन विना। काब क माग काय गया। परिस्थिति की सीने कड़ेपन से बचाने के लिये उसने विजय से कहा 'घात्र बीछा पर निरन्तरा के प्रयत्न करिये आजाय।

विजय प्रयत्न करन भया। मानसिंह बोध क दायन के प्रयत्न में बन गया।

ऊपर के कण में प्राय रानियां सदा की प्रांति ऊँच रहो थीं। मृगनयनी घोर लाघी सजव थी।

मृगनयनी ने उदा सद्यस्त स्वर में कहा 'म सम्मद गई गमन की इस रीति को। महाराज से कहूँगी कि इसको थोड़ा सा संश्लिष्ट और करवा दें। दीर्घ काल तक बाँट रहने में जमान बहुत मग आता है, उसका बाँट बन जाता पता है घोर राग खण्ड हा आता है।

ऊँपती हुई रानियों की घार घाँव पुत्रापी हुई लाघी बापी घोर मुनने पाके ऊँच ऊँचकर मोने लयते हैं।

भापी ने यह बात रहने ऊँचे स्वर में कही थी कि बड़ी रानी के बान यें बनक बड़ गई। लग्ना दूत यें घोर बहुत जाग पड़ी। उसने उन दोनों

की कुछ धपने ऊपर सा हँसते हुये देख लिया। उसने ही पगिलास से बड़ी रानी का रोम-रोम खन गया। वह धपन निकट ऊँपती हुई गानियों के बचाने का प्रयास करने लगी। उनको बाप पकने में देर नहीं लगी।

‘सुमने को बाई थी कि सान को ? देखती नहीं यहाँ एक से एक बह कर आनकर बैठे हैं ? बड़ी रानी न धक्का किया।

सुमने बाई ने झङ्गाई की घोर हँस दी।

बड़ी रानी ने एक तीर धीरे छोड़ा ‘एभी सोया करोपी तो यहने बराबर लौटने। बाई की बार मिसव भी नहीं।

यह तीर मृगनयनी के कलेजे में बिज गया।

ये क्या यहनों की चोर हूँ ? क्या मैं चोरी की थी ? कुतूहलवश वह निष्कण्ट यहने को हाथ में जटाया फिर वह हाथ में ही रह गया। जब निराश में छाया मन में ग्लानि हुई धीरे उसको बाँके में फेंक दिया। फिर उसके बिपय में निबकुल भूल गई। क्या यह चोरी हुई ? सुमनमोहिनी ने चोरी ही का धागेर किया है। क्या मैं चोर हूँ ? हे भगवन् ! जब धूलों मरने की भी धारी कर्मा-कामी धाई तब भी किसी की बीज पर धाँच ठक नहीं पकारी तो अब क्या उस पुण्य यहने की चोरी करती ? इसने कभी बड़ी किसान की होती तो जानती। किसानों की प्रकृति की है वह ! महाराज ने ठीक कहा था इस यहने को छोड़ना नहीं चाहिए था, किसी कुर्ब में फेंक देना चाहिये था। क्यों ? तब ही मैं धपनी ही बाँकों में बार बन जाती। छि। छि।। नेने न तब छोटा किया था घोर न यहने को छोड़ाकर चुप किया। पर अब धीरे अधिक नहीं सुनूँगी।

उसी समय समा-भवन में बापन बन्द हो गया।

किसी ने समा-भवन में समाचार दिया था — गीताबाई की मार खाया गया। तिकन्बर सोरी ने लिखत धीरे भोई नेने हूँ परन्तु यह गानिवर पर फिर चढ़ाई करने वाला है।

समा-अवग में ससाटा छा गया ।

मानसिंह धमक उठा । भरिय हुये स्वर में वाता 'बूढ़ का बंध कर रहा गया ! लीलात जैसे पर नमक सिक्कने के समान है । इसका बपता गया जावया ।

ऊपर के पथ में मगनयनी न बीरे से कहा 'अबो माकाशनी जाये छी कभी नहीं आवेंगी ।

हे दोनों बसी गई । मुमनयोहिनी सन्तुष्ट थी ।

बैजू ने सकारक प्रश्न किया क्या खासियर का बरा पड़ था ?

कहीं पठ पायेगा मानसिंह ने बुढ़ता के साथ उत्तर दिया 'हमलोप सिक्कर से बम्बस की बाटियों में खड़ेये ।

बैजू बोला, 'बरा पड़ भी सकता है । ऐसी बपत्ता में कमा रहा नहीं रहेगी । बहु बन्देरी जाना चाहती है ।

कमा करका गई ।

मानसिंह ने बिना किसी बात के पूछा क्यों ?

बैजू ने मोसेपन के साथ बतलाया बहु बन्देरी जाकर राब राजसिंह ने कह दी कि खासियर बिर क्या है आप बाहो तो मरुज बर बहार्द करदो और अपनी बपत्ती को बापित ले ली । बस ।

'क्या !

'क्यों ? इसमें मरुज की क्या बात है ?

'ओह ! बहु राब राजसिंह की बीन है ?

'कोई नहीं । बड़ोस में रहती थी ।

'अच्छा ! ओह ! !

कमा बसीने-बसीने में होवाई । मानसिंह उसको धीरे बढ़ाकर देखने लगा ।

बसा के बाँधते हुये कष्ट से निकाला 'अठ बिमकुल अठ । नाबक या बावत है ।

मार्गसिंह की भयङ्क हसकी हो गई । नीचा तिर करके कुछ सोचने लगा ।

श्रेष्ठी बोला 'किसने कहा मुझ से पागल ? इसने कहा । इस सोझी में ।।' राव रावसिंह का हतना भयङ्क है इसको ।।।

मार्गसिंह ने तिर छड़ाकर निष्कण्ट स्वर में कहा है बीरे-बीरे कहा 'तुम अपने घर जाओ । कम ही तुमको रक्तकों के साथ आराम की नवारी में खेद दिया जायगा । तुमको हतना द्रव्य है ईश्वर कि जीवन वर्णन जेष्ठके रहो । राव रावसिंह बड़ा मूर्खोर है परन्तु मूर्खोरी का उपयोग अनभिज्ञ करता है । कह देना ।

कमा तिर मुकाय रही ।

श्रेष्ठी बोला —जैसे किसी सपने से जाग पड़ा हो —'यह मुझने जाना कहनी है । इनने दिनों की पिता से इसने यह सीखा ।। या सब मुझ जावनी । पावन तु मीर सेरी साथ पीछी ।

समा विस्तारित हो गई ।

कार के सभ में बड़ी रागी ने जगती संमिलियों से जाते-जाते कहा, 'भरो यह नीचे-नीचे देखने वाली बड़ी विकट निजकी । समझ गई उस रावसिंह की यह कील है ?

कील है मा को स्पष्ट ही है । है बड़ी चतुर्मुख । अपने मुँह को पालन कहती की । भरी समा में ।।

'कितनी बदमाशिन है राव ।।।

'मसल में पुष्पों के सामने इनका चुनकर जाने-माने वाली स्त्रियाँ पूरक हो ही जाती हैं । जहाँ को देखने छोड़ो ।

हैं हैं ।

जैसे बिचक क गई यहाँ से । कितनी बड़काती हुई ।।

बड़ी रागी में मोचा कमा यहाँ से टपों सी भण्डा ही हुआ ।

बुधरे रित कला को मार्गसिंह ने सम्मानपूर्वक जमीरी खेज दिया । बः जिनके के बिच जाने छाक नहीं के जा पाई ।

[५९]

मिनाट घंघेरी रात । सगंधा के अगम्य ही ग्वालियर का बाजार बन्द हो गया । सड़कों पर बहून-बहून शान्त हो गई । बरों के भीतर बरतारब का पर बाहर सुनसान था । दो घण्टा रात गये ही घंघेरे में एग मगना का जैसे छापी रात होने वाली हो । नगर के टोंग पर एक भोपड़ा म दिमा टिमटिमा रहा था जिनका तेज तम लाल होन को था फिर बत्ता बड़ी घाबी बरी दिग्मिवाते-दिग्मिवाते मुझ पक पासी । भोपड़ी क भीतर एक कोने म घण्ट बहक रही थी । ऊपर के पारे लिफुड़ी हुई, कगी घंती कुबंती कबगी म डर सी बनी हुई एक हवा घाय के पास पड़ी पड़ी काह रही थी । क- बच्च उनके निकट बैठे पड़े रो रहे थे घोर उतरती घमण्डा का एक पुनप बिम के टिमटिमाते हुवे प्रकाश में सूर में रस्त हुवे घन्ताव को बीन रहा था ।

एक सगंधा-तड़प्ला मनुष्य भोपड़ी की टटिया की बसत में घाबर छाया हो गया । बागी बसती इतनी बनी घोर लम्बी थी कि सीधी तरफ घोर बड़ी घांसे हो दिखलाई पड़ती थी । माना बड़े साझे से इतना डरना हुआ था कि मोलों के कुछ ऊपर का भाग भाग दिखता था । कपड़े मोन कई जगह बिगड़े लप हुए । हाथ में बटुत माटे पोके बांस का डण्डा लिए था जुते पड़े हुये पहिने था ।

भीतर अनाज का ढुङ्गा बीनने वाले पुनप में कराहनी हुई स्त्री से कहा अनाज तो बीन लिया पर बचकी पर हाथ नहीं चलेगा । इतना बक गया हूँ कि कहते नहीं बनता । तुम भोड़ी हिम्मत बाँध कर पीम ला तो गोटी में बना दूँगा ।

स्त्री बोनी 'मुझ तो घाज ऐसी ताप बड़ी है कि खान्हर बैठ तो नहीं लगती । पीसना मेरे बस का नहीं है ।'

'मुझा हूँ और ये बच्चे बिलबिसा रहे हैं । सब क्या होगा ?

‘जनमान से पूछो । मैं क्या बतसाऊँ ।’

‘तो पीस तो मैं सकता नहीं । ऐसे ही सेट भाऊँगा ? सबेरे मजूरी किसके भिरसे करूँगा ?’

‘न चायो एक चुन । ताबू-सम्पासो कैसे उपास प्राप्त करते रह्ये हों ?’

‘ताबू-सम्पासियों की क्या कुछ मजूरी-किसानी दूरनी पड़ती है ? जन्होंने अपना वह भोक बना लिया फिर चुप चपे दूसरे भोक के बनाने की बिता में । वहाँ तो इसी भोक में गिल-बई कसर नम जाती है । उठ बैठ । देखा नहीं तो इन बच्चों का तो मुँह देख ।’

‘मुझको दे दो भिर धीर देखते रहो बच्चों का मुँह ।’

‘अरी आपन छठती है या नहीं ? अनामिन ।’

‘मार जानो मुझको । ताप बुला-बुलाकर धारेवी गुप बैठे हों क्या बोट हो । दुखों से वार तो पा जाऊँगी ।’

‘बच्चे धीर अधिक रो पड़े । दटिया के पास से किसी के जाँचने का जख्म पीतर भाया ।’

‘पुन बिस्ताया ‘कोन है रे ?’

बाहर से उत्तर मिला, ‘मेया नैक दटिया खोल दो परबसी हूँ ठग्न लप रही है ठिगुड़ पया हूँ बीस मूल क्या पोड़ा सा तापकर धीर कैल पुसकर बना जाऊँगा ।’

‘राजा के बराबर पर क्यों नहीं चले जाते ? कहीं यत्नाव नी कम पड़ा होया तापने के दिने ।’

‘मेया मुझे माफूम नहीं है । पायी चड़ी तापकर धीर तुमसे बल करके क्या जाऊँगा । मजूर मैं यी हूँ ।’

‘राम ! अपनी भाव्य से पीछा नहीं भूँठा गुप पामे कहीं से पा गये ।’

‘मेया, मेया ।’

भीतर बाँसे में कौनसे झूठने उठकर टटिया खाल की । बाहर वाला भीतर आ गया । उसक सम्बन्धनों दरीर धीर मारी मरकम साँके को दबकर भीतर बाँसा डर गया । सम्बन्धनों में टटिया के पास बूते लोल हिये धीर पास के पास या बैठा । उसन भीरही में नजर पवारी । एक कौने में बरिया, हजर उधर मिट्टी धीर काठ के बजन पीतल की एक बानी एक साँके धीर कुछ नहीं ।

मजूर निडरताकर बोला बाँके 'मरी पाठ में कुछ नहीं है । मरीब है । त्वी बर पर को ताक ल ।

'डरो मत । मैं जोर डबका नहीं हूँ ।'

'कौन हो ? कहाँ से घावे हो ?'

'राई-नामका बाँके से घाया हूँ ।

'नामका तो डबड़ गया है । राई में क्या करत हो ?'

'मजुरी किसानी । मजूर हूँ ।

'मजूर छकुर तो हुकारी रानी भी है । कहीं के पास बाँके हो क्या ?'

'मोकरी बँदुने घाया हूँ । रास्ता भूल गया हूँ । जिने में कैसे जाऊँ ?'

'बतलावे देता हूँ । बलो बाहर, बहीं में दिगमावे देता हूँ ।

'कुछ जाने को है ?'

'बलो तो कुछ नहीं है । हमारे निवे ही नहीं है । हलसे कड़ा नि पीत दे तो मजूर बहुत बीमार है । मैं पीन नहीं पाऊँगा क्योंकि बल मूसा हूँ ।'

कराहते-कराहते रानीने कहा तबे पर मूलसो घनाम को । लपके निवे बोझ-बोझ हो जायगा ।

घायलुक बोला 'राया के बलाकन से क्यों नहीं ले पाँके कुछ बाँके-बाँके ?'

‘घरे हट्ट ! स्त्री के कण्ठ से निकला ।

मजूर ने ठिरस्कार के स्वर में कहा ‘बाह ! हम क्या निबर्तने हैं ?
सदाकर्त पर तो कोई-अपाहव, सामु-बीरामी जाते हैं । हम तो मजूर हैं ।

आमन्तुक न बिते की जाती हुई रोशनी की तरफ देखकर प्रस्ताव
किया, ‘अच्छा तो हम पीछे बैठे हैं तुम्हारा जगजग । इसके बड़े में तुम
हमको बैस बतला देना बस । ठीक है न ?

उसने स्वीकार किया बोका सा बना सा पी लेना । सदाकर्त या
तो बन्द होकर होया या बन्द होन वाला होया । या-याकर बही एक
कोने में बैठ जाता ।

‘अच्छा’ — कहकर ठंडे ने बरकी पकड़ी धीरे बिते हुये घनाब को
पीसने लगा । स्त्री कुतूहल के साथ देखन लगी स्वर की कराह कम हो
गई । स्त्री को प्रतीत होकर कि आमन्तुक को बरकी पीसने का बिसकुस
प्रत्यास नहीं है क्योंकि वह बार-बार इस हाथ से उस हाथ को बरकी
को डाँढ़ी से बरा रहा था परन्तु बस रहा था हाथ उसका टेन् ।
स्त्री धीरे से सठ बैठी ।

बोली ‘मैं ही पीस देती हूँ । आमन्तुक ने फिर हिलाया ।

बरकी पीसने में आमन्तुक को मारी भरकम मुड़ासा बहुत बाधा
गईया रहा था । उसने अच्छे क साथ मड़ासे को फिर पर से हटाया
धीरे एक धीरे स्वरक वैसे ही तेजी क साथ बरकी को बलाया कि
मन्त्री दाढ़ी एक ओर से बिछक कर ठोड़ी के नीचे लटक पार । जैसे
ही घमने दाढ़ी के इस ओर की संभालने का प्रयत्न किया कि बूझते
धीरे का धीरे लटक कर हाथ में धायया ।

मजूर की पहिचानने में देर नहीं लगी बनेक बार उस चेहरे को
देखा था । उधलकर बड़ा होया ।

चिस्तरकर बोला, ‘अपने महाराज ! अपने महाराज ! !

स्त्री की कमकराह बिलकुल बन्द हो गई । कुछ बच्चों का रोना रुक गया कुछ सिसकते रहे ।

मानसिंह एक हाथ में बाड़ी लिये हँसते हुये बोला 'यह बाड़ी बड़ी धर्मागिन निकसी । काम पूरा नहीं करने दिया ।

मजदूर पैरों पर पिरने को हुआ । मानसिंह ने दृढ़ता के साथ बर्तित किया ।

मजदूर ने हाथ जोड़े हुये कहा, 'महाराज मुझको क्षमा लिये । आपने यह क्या किया ?

'कुछ भी तो नहीं कर पाया । बिचकार है मुझकी ओ से तो मरे दे' को बाढें धीरे तुम मूर्खों-रोमों मरो । ये महलों में रहें धीरे तुम हम झोपड़ी में मूर्खें ठगें मरो ।।

'हमारा माय्य है महाराज ।'

बिलकुल भ्रम की बात । हमारे माय्य के आधार तुम्हीं सब बन हो । तुम्हारा माय्य बुरा रहा तो हमारा तो मरूँ ही खोना हो चुका ।

स्त्री ने फटे बरत का लम्बा धूपट डाल लिया धीरे पीठ देकर बरछी के पास घा बैठी ।

'ये पीछे देता हूँ बाई ।' मानसिंह ने धमकीय किया ।

स्त्री ने हाथ जोड़े धीरे जुड़े हुये हाथों निषेध का संकेत किया ।

दिया बुझने की आ रहा था ।

मानसिंह ने कहा 'ये अभी तेरा मित्रपाठा हूँ और अगर भी प्रीति भी । मजदूरों के लिये अच्छे मकान बनवाऊँगा प्रीतिपाठ्य सोलूँगा धीरे देखूँगा कोई भी मजदूर भूखा न रहे ।

स्त्री की धीरे देखकर बोला 'ये आग भिन्नताये देता हूँ । बीमारी में पीछोपी बाई तो डेर हो जाओगी ।

धीरे से स्त्री ने प्रतिबाह किया धन खर नहीं रहा ।
 पुस्त ने लनर्जन किया 'मेरी सारी मकामद बसो गई । मैं सारी
 पीछे बालवा हूँ । बठरी बैठवा । महाराज की आज्ञा मान ।

स्त्री नहीं बठी । मानसिंह जाने की हुवा ।

पुस्त ने धनरोप किया 'मैं मार्य दिखना हूँ महाराज ।'

मानसिंह हँस पड़ा । बोला 'किसे से माया हूँ पाई से नहीं माया
 हूँ । अपने ज्वाभियर को ही न पहिचाना तो फिर किसको पहिचानूया ?'

मजदूर हिस गया था । मद्धस् स्वर में बोला, 'मुना था कि मज-
 दूर श्राद्धगुणों, पण्डितों धीर सेठों के हैं याज जाना कि मजदूरों-कितानों
 के भी हैं ।

मानसिंह बसा गया । एक पड़ी पीछे ही ओपड़ी के बिने बसा देव
 घाटा हरपादि था मये ।

मानसिंह ने बूझरे ही बिल ज्वाभियर के बरिह मजदूर-कितानों के
 लिये रहने योग्य बटों के बनाने की राग्य की धीर से व्यवस्था की ।
 जयह-जयह दीपजालय बुलवाने का प्रबन्ध किया ।

[२१]

‘एक बड़ा काम अभी करने का बड़ा है । भूमनयनी ने मोक्षेपन के साथ मार्गसिंह को स्मरण दिलाया ।

‘झिंके की प्राचीर, मौजीघाबर भीष सामान्य कुबे इत्यादि सब ठीक हो गये हैं । मार्गसिंह ने धारवाहन देखे हुये कहा ।

भूमनयनी ने प्रसन्न-मुखक वृष्टि की ।

मार्गसिंह बोला ‘हाँ की नहर धारें से ऊपर बन चुकी है । बुयाव छिदाव के साथ भाई का रही है । गर्नों के साथी के ऊपर हाथि को बना बनाकर सामने के कारखाने ही बिलम्ब हो रहा है । नहर को हककर सामान्य इतिहास आवश्यक है कि कोई उतकी का-कू न लके—सो तुम जानती ही हो ।

भूमनयनी ने नीचे-नीचे मुस्कटाकर फिर उसकी ओर प्रसन्न-मुखक वृष्टि की ।

उसके सम्ये पकड़कर मार्गसिंह ने पूछा ‘कौन सा है वह बड़ा काम तुम्हीं बतलाओ ?

‘साही का व्याह । ईस्वर के सामने उसका व्याह भैया के साथ हो गया है परन्तु सभी समाज के सामने नहीं हुआ है । उसने बतलाया । मार्गसिंह ने उन्हाह के साथ कहा, ‘हो लावना ।

‘कब ?

‘अब कही ठक ।

‘ईसे दुष्टों के बीच-बीच रहितों के निम्ने निवासगृह बनवाये जा रहे हैं औरवालय शीले जा रहे हैं । ईसे ही एक काम यह रही । हनी प्रवक्तु सामने की रहित अमकरी है अब तक उसके सम्बन्ध में समान माग्यता न दे । हनी प्रवक्तु में कोई मूर्ख निजमका लिया जाने ।’

‘अभी तो : बहुत सीधे भासों की धपने यही कोई कमी नहीं है ।’
मानसिंह ने विजयजङ्गम से बहुत का सोचन करवाया ।

मृगनयनी ने बतलाया कि उसके कुल घोर नाब का धाधार्य पुरोहित
बोचन है इसलिये ध्याह को बड़ी बड़े घोर जावर पड़वाने ।

राजा ने अपनी सक्ति की सीमा को ध्यान दिये बिना ही हाथी बर
ही । बोचन को बुलवाया । उन आठ रातियों ने जब सुना, तब उनके
विनोद का ठिकना न रहा ।

इतने दिनों क्या जाकारानी कुमारी ही बनी रही ?

‘बड़े मुर्ख उलझना इसी को कहते हैं ।’

‘महाराज को क्या घब घोर कोई काम नहीं रहा ?’

मृगनयनी को कुछ न करवाने लो पोड़ा है ।

बोचन ने घाटे ही राजा के प्रस्ताव पर मेल लाव लिया । राजा
को जब भी अपनी लज्जता की सीमा नहीं दिखलाई थी ।

दूसरी घोर देखते हुये बोला ‘तुम्हारे मन्त्रि का जीर्णोद्धार इसी
घठनारे में करता हूँ ।’

‘घाबकी कृपा हो । बर्य ही है महाराज का ।’

घाबके रहने के लिये भी धन्यता ला गृह बनवा दूँगा ।’

ने लो धनोप्या इत्यादि की तीर्थयात्रा के लिये घटका हूँ । बहुत
दमों से संकल्प है । न मानूम कम मीटू लीट भी बार्ड या नहीं । मेरे
मेरे महाराज कष्ट न उठाये ।’

‘अभी नहीं जाने दूँगा । इस बर्य-कार्य को पहले करवालो ।’

‘महाराज जमा करें, वह बर्य-कार्य नहीं है । पहले ही निवेदन कर
दूँगा हूँ ।’

‘तुम घटनसिंह के धाधार्य पुरोहित हो । तुम्हें करना चाहिये । धन्यता
मिलेगी ।’

‘महाराज एक बहिष्कृत परम्परा निष्ठा से बात कर रहे हैं।
वर्म सेवा नहीं आ सकता।’

‘क्या तुम यह नहीं सोचते कि कितने हिन्दु तुम लोगों के इस
व्यवस्था के कारण वर्म धीरे-धीरे समाप्त हो जा रहे हैं?’

‘सड़क में फोड़ा या कोड़ होने से फिर वह पक्का काम का नहीं
रहता।’

‘तुम्हारी कमी फोड़ा या कोड़ हुआ।’

कमी नहीं।

‘होगा तो क्या करोगे?’

पक्का को काट कर फेंक दूँगा।

‘विशेष में क्या तो दास्यी।’

‘महाराज से मैं क्या निवेदन करूँ? इनका तो भी कहना पड़ेगा कि
क्षत्रिय ब्राह्मण को उपदेश देने के लिये नहीं बनाये गए हैं। वर्म धीरे-धीरे
नो-ब्राह्मण की रक्षा के लिये बनाया गया है।’

‘बनाया गया है और फिर बनाया जा सकेगा। अनेक महावीर यौवन
बड़ा कौन थे? राम कृष्ण धर्मपूजक इत्यादि कौन थे? परम्परा दास्यी में
इस विवाद को व्यर्थ बना देता है। इस विवाद से परस्पर कत्तह
फैलेनी। मैं धार्मिकता को धरने पुरखों की भाँति प्रबल बनाना चाहता
हूँ। मेरी सहायता करो।’

‘महाराज धार्मिकता बर्णायाम वर्म को स्थिर रखने के ही बच बनता
है। अग्यता नहीं।’

‘दास्यी सोचो, इस प्रकार का व्यवस्था बर्णायाम हिन्दुओं की फिटनी
रखा कर सका है। रक्षा के लिये बाल धीरे-धीरे समाप्त होने की प्रतीति
से वास्तविक है। आन्तर्गत बाल का नाम तो कर सका है और कर रही
है परम्परा समाप्त का काम न तो नाम के मुख में उठने कर पाया है और
न कमी कर सकी।’

‘महाराज के भी मुक्त से यह बाणी घोसा नहीं देती । इस प्रकार की व्यवस्था देना पंडितों का काम है ।

‘मे वह नहीं कहता कि बर्णव्यवस्था को नष्ट कर दिया जाय परन्तु उसमें सुधार की आवश्यकता अवश्य है । इसको तो मालोने न ?

‘मे नहीं मानता । पंडितों ही पूछिये ।

‘विजय बङ्गम भी पंडित हैं । उनसे सफाचार्य कह्यो ।

‘इसी समय टीकारा हूँ और धनन्त काल तक टीकारा रहूँगा । विजय जिस क्षात्र या पुण्य को बाँध-बाँध कर अपने सिद्धान्तों की पुर्खा देता है, वह प्राचीन नहीं है । जनमय तीन सौ वर्ष हुए हैं उस बना बा । सो वह भी काफ़ी या मधुरा में नहीं बना बल्कि ब्रह्मिष्ठ देश में ।

और उसी ब्रह्मिष्ठ देश में हम सब को भयवान् धाकूपचार्य और भयवान् रामानुजाचार्य द्वारा ही महात्मा दिये । उसी तो कहता हूँ तुम अपने पढ़े-लिखे होकर भी कभी-कभी बिबेक क्षम्य हो जाते हो ।

बोवन कोम के मारे कोपने लगा । चुप खड़ा रहा ।

‘क्या कहते हो ? मालतिह ने ठप्पक के साथ पूछा ।

कनिष्ठ स्वर में बोवन ने उत्तर दिया ‘महाराज ने बर्ण-व्यवस्था के विरुद्ध ठान ली है इसलिये मैं अब व्यासिगर में नहीं ठहरूँगा । भवन के समय और स्वान में रही रहूँगा ।

धुन्ध स्वर में मालतिह के मुँह से निकला ‘तुम निरे मूर्ख हो ।

‘क्या महाराज का यही निर्णय और म्हाय है ?

‘निश्चय ।

बोवन वहीं से जाता गया । भवकी बार जाते समय उसने धाखीबर्ष का हाथ नहीं छठया ।

व्यासिगर की रयाव कर तीर्थ बाधा को चल दिया ।

मानसिंह ने माँही कीर घटल का पाणिग्रहण संस्कार विजय अङ्गम से करवाया । अनेक ब्राह्मणों ने उत्सव में भाग लिया । कुछ ऐसे भी थे जो बीमारी—या बीमारी के बहाने—के कारण उत्सव में सम्मिलित नहीं हुये ।

मृगनयनी सुखी थी । जीवन के नये जाने का मानसिंह को परिचाय नहीं हुआ । विपत्तिके घात पर किसी दिन ग्वाभिवर आयेगा मानसिंह को विस्वास था ।

[१४]

साखी धीर बटल के पाण्डिपहण संस्कार के उपरान्त उत्सवों की भूम भव गई। मानसिंह ने जाम-बूझकर उत्सव मनाये—जिसमें जगत जान जाय कि ये जातपाठ के उत्तम सिद्धि-बकड़े बगधनों की नहीं मानता बूझरे, मृगनवनी सामन्तमान बनी रहे।

सामन्तों धीर सम्पत्ति बानो ने उन दोनों का निमन्त्रण किया धीर भेंटें दी। मृगनवनी धीर मानसिंह ने भी निमन्त्रण दिया। बड़ी राती में हठ किया कि पहले में निमन्त्रण दूँगी पीछे मृगनवनी। मृगनवनी को मानता पड़ा।

अभी तक साखी के हाथ का बनाया या परोसा हुआ भोजन उन पाठ पात्रियों में से किसी ने नहीं खाया था अथवा उसको ध्यानिबर के किले में जाये हुये बहुत काफ़ी समय हो चुका था। अचरत ही ऐसा कोई नहीं थाया था क्योंकि उसके घंटाके समय-मसब थे।

उसी बात का हिन्तु नहीं जिसके हाथ का हुआ बूझरी ऊँची बात वाले घाले। मृगनवनी ने अपने कम में भोज का आयोजन इसीनिचे किया था कि साखी लकड़ को अपने हाथ से परोसेगी फिर कोई उसके स्वाह-मसक पर उभरी न उठ सकेगा।

परन्तु बड़ी राती ने पहले ही निमन्त्रण दे दिया।

और, इसके उपरान्त सही। मृगनवनी ने सोचा।

पुस्तों को जलम भोज कराया गया और बरिपाटी के अनुसार स्त्रियों के भोज का प्रबन्ध मसब। रात्रियों के लिये जल लकड़ आयने। मृगनवनी के सामने भी जल आयया। साखी इसी के पाठ बैठी थी। बड़ी राती कुछ दूर। कड़की बाँलों में एक उत्तक उठेजना थी।

जब परोस हो चुकी बड़ी राती ने आरम्भ करने का अनुरोध दिया।

मयनयनी ने मुकुटान के साव मीठे स्वर में कहा 'महाराजी की धपने बहुत रीति कई बुलहिन के हाथ से परोस कराने की है । साधारानी बोड़ा सब को परोस दें न ?

बड़ी रानी हँसती हुई बोली 'यह रीति रनवालों की नहीं है ।

अर्थात् पाँचों की है ।

'जब धापने साधारानी को रनवास का सम्मान दिया है तब पोट्टी की पाँच की रीति को भी बर्न जाने दीजिये । हम सबको बिस्वाम हो जायगा कि वह सब धाप की हो गई ।'

'धापकी है तो हमारी पढ़के है ।

तो बोड़ा सा सबको परोस देगी और पाँच सा धापकी । और बाहे किसी को न परोस ।

'धाप इतना हठ क्यों कर रही है ?

धापकी प्रसन्न करने के लिये ।

मुकुटो तो इसके कोई प्रसन्नता नहीं मिलेगी ।

'तो भाग सब भोजन करें, मैं बीठी रहूँगी ।

'एनी सबन्धा में हम में से कोई भी भोजन नहीं करेंगी ।

प्रणवा ने साखी के सुम भोजन की परीसे देखी हैं । इसमें तो धापकी कोई धायेन नहीं होता ?'

'हमको तो किसी में भी कोई धायेन नहीं करना है क्योंकि कांटों में से भोजन को नुसारना है न ।

मयनयनी के धाव ती तप गई । साखी दरबारसकारों से मरी हुई नीचा निर निबे बीठी थी ।

मयनयनी ने कहा 'मैं नहीं जानती थी कि निमन्त्रण के बहाने धपवान दिया जायेगा ।

बड़ी रानी की उत्तमिष्ठ माँझों में चंचलता घायब । बोधी थापका हठ हमारा धपमान कर रहा है ।

मृगनयनी उठ साड़ी हुई । साखी से कहा 'बनो नाची ।

नाची नहीं उठी । उसने हाथ जोड़ कर संकेत में प्रार्थना की 'बैठ जाओ जाने भी वो ।

मृगनयनी ने बुद्धता के साथ कहा 'नहीं यहाँ से बनो । वह अपने को बहुत ऊँचा समझती है ।

सुमनमोहिनी कुछ कहना चाहती थी परन्तु उसके होठ ऐसे चिन्न बने थे कि उन्हें से एक शब्द भी नहीं निकला ।

वे दोनों वहाँ से घपने कम में चली गई ।

सुमनमोहिनी ने बासी को आज्ञा दी 'इन दोनों वालों का भोजन बाहर फेंक दो ।

बासी ने मृगनयनी और साखी के नाम उठा लिये और बाहर जाने को हुई ।

सुमन ने दूसरी आज्ञा दी 'वे भोजन मेहतर को भी मत देना । कहीं दूर फक जाना ।

बासी चली गई । उसने मेहतर को भोजन नहीं दिया । दूर से बाहर कुत्तों की डाल दिया और चली आई ।

जिन कुत्तों ने खाया वे दो दिन के भीतर मर पड़े । कुत्तों की मौत का ठीक-ठीक कारण किसी को मान्य नहीं होने पाया । जिनके कुत्ते वे इनको भक्ष्य दिए का सम्येह हुआ । कामाफूसी हुई । चर्चा हुई । ईर्ष्या और बड़ी परन्तु साधारण जनता के मुँहके जाने बहुत कम पड़ी ।

मृगनयनी और साखी को इसका अविलम्ब ज्ञात हो गया कि बड़ी रानी ने इन दो वालों का भोजन ठिकठा दिया । मृगनयनी को उस रात बड़ा मानसिक क्लेश रहा परन्तु वह यह नहीं जानती थी कि उस भोजन के जाने वाले इन कुत्तों की जैसी कुनति हुई ।

[१२]

हमारे दिन मानसिंह को भा म लूम हो गया । मुमनमोहिनी के साथ समने बार बिबाह करना व्यर्थ समझा । डरता डरता सा मृगनयनी के बग में गया । सोचता था होम करते हाथ जसा ।

मृगनयनी ने अपनी मानसिक पीड़ा पर अधिकार कर लिया था । मानसिंह को डरता लुब्धता सा घाता देखकर मृगनयनी विनोद मग्न हो गई ।

बोली 'महाराज तो कुछ ऐसे रिश्तामई पड़ रहे हैं जैसे सिंह की विकार चुन्न कर घा रहे हों ।

मानसिंह घास्वस्त हुआ । उसने मृगनयनी को बहू में भर लिया । कुछ छल चुन रहकर कहा 'समझ में नहीं आता तुमको कैसे सन्ताना है ।

'काहे की सन्ताना ?' बोो हो गया सी हो गया । मने निश्चय कर लिया है कि एसी बातों पर धाये कभी ध्यान नहीं दूँगी ।

इन प्रकार से निश्चय को मानसिंह पहले भी सुन चुका था परन्तु वह जानता था कि अनवरत प्रयत्न का ही नाम जीवन है ।

'तुम बड़ी हो लक्ष्मण बहुत बड़ी हो । माई हुई कठिनायियों को बरारत करके धाये घाने वालो कठिनायियों से लड़ जाने के निचे संसार रहने में मन को धानन्द मिलता है—

मानसिंह को प्रश्नचन करने की शक्ति में देखकर मृगनयनी ने धमकी धोर धाँसे ऊँची की-होनों पर मुस्कान सित र्ध धोर बेहरे पर बिगड़ गई ।

टोक कर बोली मन को ओ धानन्द मिलता है वह किस जानन्द के समान होता है ?

'इन मस्किनों को देखकर ओ जानन्द मिलता है उसने प्रयत्न ।

‘इतने निश्चय से ।’

‘बड़ी कठिनाइयाँ भी तो निश्चय ही पाती हैं बिनाका सामना निश्चय ही करना पड़ता है । दूर की कठिनाइयाँ तो थोड़ा सा डर खोड़कर बली जाती हैं ।’

‘छोड़ दीजिये नहीं तो होठों को चमेट कर मुँह जटका लूँगी ।’

‘तो मैं हँस पड़ूँगा । फिर ?’

‘आप बहुत दुरे हैं ।’

‘और तुम बहुत अच्छी हो । दुरे भले की खोजी का तो निश्चय ही है ।’

‘नहीं आप बहुत अच्छे हैं । बड़े भले । जब दूर बैठकर बात करिये ।’

‘बात तो यों ही चल रही है ।’

‘अच्छा मैं एक बात पूछती हूँ ।’

‘एक नहीं दो । पूछो । अस्वी-अस्वी पूछी मैं बीरे-बीरे उत्तर दूँगा ।’

‘मैं पूछती हूँ जब मेरी समस्या उत्तर आयवी धीरे मैं खींच ही आऊँगी तब भी क्या आप इतना ही प्यार करेंगे ?’

‘यह क्या कह रही हो ?’

‘आपने दो बातें पूछने के लिये कहा था दूसरी यह कि प्रेम को स्वामी कैसे बनाया जा सकता है ?’

‘मानसिंह की बाहें डींगी पड़ गई । आश्चर्य चम्पीर ही नहीं । सुगनयनी बससे घसप होकर बारा दूर बैठ गई ।’

‘मानसिंह भी बैठ गया । सुगनयनी मुस्कराये लयी ।’

‘मानसिंह की चम्पीछा चम्पी गई ।’

मानसिंह बोला 'तुम सबमुझ बड़ी हो। मुझसे बड़ी धीर बहुत प्रच्छे।

'बाह ! बाह !!

'ठीक कहता हूँ।

'कैसे ?

मानसिंह उसके निष्ठ्र धाने को हुपा। मृगनयनी धीर प्रपिक मुस्कराई।

'धीर निष्ठ्र धाने तो मैं बहुत छोटी रह जाऊँगी।

मानसिंह स्मिर हो गया।

'तुम संयम से प्रेम को प्रचल बनाती हो धीर मैं धरने विकार से उसको प्रचल कर देता हूँ। संयम के आसार बासा प्रेम ही धाने भी टिके रहने की समर्थता रखता है।

मृगनयनी ने यईन टेढ़ी की उँवली ठोड़ी पर फेंरी धीर मुस्कान को बिकरा।

'मन में उपदेश ज्यादा भरा दिखता है आज।

'जबो उपदेश देना बगिठों ओर धाबायों का काम है।

उसी क्षण बोधन का बिच उसकी आँखों के साधने चूम गया। धौपी धोरकी का बा वह मानसिंह ने सोचा। मुस्कराया।

बोला 'तुम्हारी प्रत्येक मुस्कान प्रिय-प्रिय समय पर तरह-तरह का दिगलाई पड़ने वाला समोनापन तुम्हारी धवि का हर एक धंघ ऐसा कूट कर देता चाहता है। इनका साकार कि जीवन के प्रत्येक तन्म धरने प्रेम का प्रचल प्रतिबिम्ब बना रह कर दिखलाई पड़ता रहे। जनी-धमी नेरी तन्म में धा गया कि यह कैसे सम्भव होगा। प्रिय धरन को बनवा रहा है उसका नाम मृगग्र-मन्दिर रहे ?

मृगनयनी ने हँस कर टोका — 'धारम्य के कोर में ही नक्सी पिर पड़ी । मेरी बड़ी का नाम रक्षिये—मृगन मन्दिर ।'

'नहीं यह नाम नहीं रखना जायगा । तुम मेरे मन की रागी हो इस सोनों इस मयम के एक कण्ड में पालनकरता बिष्णु भववान का पूजन-ध्यान करेंगे इसलिये यह भवन मन्दिर कहलावेगा तुम मेरी मानिगी हो, मैं तुम्हारा । मान इसलिये इस का नाम होगा मान-मन्दिर । तुमको माबुम है तुम्हारी कौनसी छवि मुझको बार-बार उमपाती है ।

मे क्या मान ? प्राय न जाने क्या क्या करते रहते हैं ।

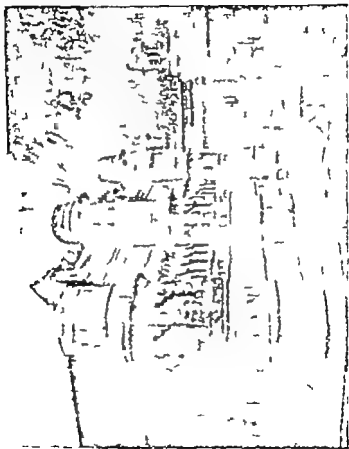
त्रिषु समय मन्दिर पड़ने की बड़ी झुकुट जाके हरे-हरे पत्तों के लता-बितान बाँधे मण्डप के नीचे तुम उध प्रांगण में धाई - वह छवि । मान-मन्दिर का द्वार उस बड़ी की छवि को मूर्त करेगा ।

मानसिंह एक छल्ल चब रहा । मृगनयनी ने गर्दन की एक हलकी सी मुरकी नी धीरे एक माँक की बितवन को धरा सा ठेंसा किया । मुस्कणदी हुई बोली 'धीरे क्या ?

वह कहता गया 'ऐसे बड़े नीर छाटे द्वार बनाऊँगा जिसमें होकर जाने वाला प्रकाश तुम्हारी हँसी धीरे मुस्कानों को व्यस्त करे । तुम्हारे कैल-कुम्हल कगीनों की बोनों धीरे कूट-कूट जाने वाली लटें उन द्वारों की बन्दनवारी सजावटों में उतर आयेंगी । तुम्हारी मुस्कानों के पीछे वो मोठी से बमक बाँधे हैं वे बेलबूटेदार मिथरियों की छाभा द्वारा व्यस्त हो जायेंगे । ऊपर है कण्ड के प्रांगण में निकसी हुई गोखें बारबें धीरे उनकी बतली सुहावनी बड़े-गियाँ तुम्हारी बितवन धीरे बौड़ों को प्रकट करती रहेंगी । उन सबके ऊपर के लंगूरे धीरे कमसे तुम्हारे—

मृगनयनी ने हँसते हुये टोका 'धीरे क्या नहीं सुनना चाहती ।

'धन्या धन्या तुमों', मानसिंह ने कहा 'बाहर की बिद्यामता धीरे भीतर का सीमर्य हमारी-तुम्हारी सपासना धीरे बिष्णु की प्रापचना को मूर्त करेगी ।



‘हो यह कही ठिकाने की बात ।

‘तुमको उद्यान का कीनसा वृक्ष सबसे अधिक मोहक लगता है ?

‘केला । उसके हरे भरे खोलते हुये बड़े-बड़े पत्ते हाथियों के कान से भी बड़े बहुत अच्छे लगते हैं ।

‘ये पत्ते अपने स्वाभाविक रङ्ग में मान-मन्दिर के ऊपरी छत के बाहरी भाग पर बराबर टोक दिये जावेंगे । जब पड़े कि किसी उद्यान के भीतर मन्दिर है । घोर अन्धकार की आँखों में अपने जड़ों के हाथी बिह, बाहर अन्य पशु घोर आकाश के वपुके ईश आरत इत्यादि पाँवों को बगवा हुआ । विष्णु की मूर्ति है न के ? कैसा रहेगा ?

‘बहुत अच्छा । मुना है किसी कलाकार ने चन्देरी के निबटवनी देवद्व में विष्णु की प्रतिमा को ऐसी मस्मान की है कि देखने वालों के दिमागों को घात करके अन्तिम के साथ ध्यान को एकाग्र कर देती है । क्या कभी उस मूर्ति के वक्ष्य कर सकूँगी ?

‘मानसिह ने झटका हाँ कहा । घाने दण के निचे मोड़ दिगुड़ गई । घाट लेकर बोला, ‘बहुत दिन हुए तुमों ने उस मूर्ति को अन्विष्ट कर दिया वर मूर्ति को अन्विष्ट माधीर्वाहमयी मुस्कान को कभी कोई नहीं निहा पाया । देवद्व नामका के सुस्तान के समीप है । यदि पुरखों की बगली की निजाने में कभी अर्घ्य हुआ भीर देवद्व को ग्वाभिर के भीतर का मियाँ ही दर्शन कर लेगा ।

‘अपने वहाँ के कलाबन्त काटीवर नहीं ला सकते उस मुस्कान को वहाँ से घाने हुएव की पाँटों में बाँधकर ?

‘अज्ञात ता बड़े । कलाकार के भीतर पूरी उमावना जास्वा पडा घोर भक्ति धीप के द्वारा जाय पड़े तभी वह अनवरत मुस्कान को बाँधी हवी, के द्वारा अन्धकार में अलका कर पिते सकता है । प्रयत्न करेगा । मान-मन्दिर के भीतर तीव्र ही विष्णु की अग्नि को अवरदाईया दिवके

दर्पनों से हमारे भिवक की मुस्कानें प्रबलता के साथ हलकी बनी रहीं कि हम उनको अपने आलपास भी बाँट सकें ।

कविता कर बैठे न पाए प्रथ ।

कई बार कह चुका हूँ कि साकार कविता तो तुम ही जो उस प्रश्न के साथ जो धीरे भीतर लदा बनाती रहती हो ।

साकार कविता तो नामक बँचू है ।

अब लोच उनको बँचू बाहर भी कहने लय है । कविता बाधनी ही होती है जैसी तुम ।

मृगतयनी होत पकी ।

बोली, मैं बाधनी हूँ । और वह जो तानों पुरकानों फूट-मैत्र-वर्तों, हाथियों-माइरों सूरज की छिरछों और कण्ठमा की बाँधी को पंखों में समझा देता चाहते हैं वह कीम है ?

मानसिह की बिबबिबकर होत पका ।

मुझ साथ अपराध उसने कहा 'नामक बँचू घाबकक बड़ी साधना कर रहे हैं । परेछा हुआ जीवन एक मोर रक्का रहता है पानी तक पीता भुन खाते हैं । किसी रात के बगाने या किसी गरिपाटो या कई तानों के सुखन में दिन रात एक करे जान रहे हैं । कोई रोकटोक करता है तो बीछा लेकर उबकने पीछे जाने को भयक पकते हैं चिन्ता नहीं बाँधे फिर उनकी उत प्यापी बोधा का तुम्हा ही क्यों न कूट पाय ! वह माने घालारों और तानों से मुस्कुराते हुये बिप्लव का बाधनी और सबको बाँटेंगे' ।

अब इसी तरह की साधना मिलनी कलावन्त करें, तब बिप्लव की मूर्ति में उस प्रकार की मुस्कान टोकी-हथीडे के द्वारा लतार पावेंगे । ठीक है न ?

गिरनपुत विलकुल ही ठीक है । मानसिह ने उठकर मृगतयनी को पंख में फिर भर दिया ।

‘यह नहीं होना चाहिये ! कैसे मरुती बानें करते-करते घाय बया कर छठ । मृगनयनी ने हँसते हुये कहा ।

मानसिंह फिर मन्मथ जा बैठा ।

बोला ‘दिप्लु के इस सुन्दर मान-मन्दिर में हम दोनों पुबारी बनकर रहेंगे । हम ही दोनों ।

घोर सुमनमोहिनी घोर के सातों कहीं रहेंगी ? मृगनयनी के धमन के नीचे से सहसा किसी ने पूछा । वहीं किसी न उत्तर दे लिया बनी रह बनी रहें । सब सह झूठी सब सहती झूठी । सुख-दुख की संयिनी लानी भी तो साथ रहेगी । लानी को बड़ी रानी मद्युन समझती है । घोर मन्मथ को भी । मेरे घोर लानी के पास का भोजन मिहतर तक को नहीं दिया गया ।।। इतनी मई बीनो समझी गई हम दोनों ।।।। कितना मयमल ।।।। परन्तु मैंने घोर लानी न उस अपमान को भी जाने का विरचय कर लिया है । महाराज कितना प्यार करते हैं ! वह अपमान इस प्यार के सामने बिलगुन लुप्त है । परन्तु यदि निग्य-निग्य होता रहा तो सही के हमन-रामन में उलझ रहना पड़ेगा और म कलाओं में कोरी रह जाऊँगी । मृगनयनी सोच रही थी ।

मानसिंह ने हँसकर कहा ‘तु सोच रही है महारानी को ? तू के बङ्गल पहाड़ बाँध के लताविनाम बाने मन्दिर के नीचे जाने वाली दुलहन की धवि को ? या पैर की किसी लाम को ?

‘नहीं तो — घोर से मृगनयनी बोली — ‘अपनी मनी धपन नाव की मरी के मृदु जल की याद करने मनी थी ।

‘घोड़ी से बाबली हो न । बड़ा था न कि मन्दिर के मन्दिर घाने में बोड़ा था हो समय घोर मयेगा ।

‘यहाँ डिसे के ऊपर, घाने के मन्दिर तक कैसे चढ़ेगी वह मन्दिर ?

‘हो ऊपर तक तो नहीं जा सकती है । परन्तु उत्तर-दूर के रोन बानी टक टक तो घा ही सपती है ।

वहाँ तक कि आदमों और एक भजन वहाँ भी बन जाय। बन ठकठा है न ?

बिच समस्या को मिटाने के लिये मानसिंह भयनयनी के पाठ प्रासा या मानो उसका हल भयनयनी के ही मुँह से मिस गया।

उत्साह के साथ बोला 'बहुत अच्छा ! बहुत अच्छा !' ये सोचता था मान-मन्दिर के निर्माण के बाद क्या कर्केना छो तुमने कुछ बतलाया ! ! ! वहाँ मन्दिर बनकर खड़ा हुआ जाता है वही बनना महल। उनका नाम होया पुष्परी रानी का महल।

उस पर भी भयन नाम की छाप बीजित।

एक इत तुम्हारा मान मिला। एक मेरा भी मानो। उसका नाम पुष्परी रानी का महल ही होया।

सचमें भी न ही सब बातें जवारी जायेंगी क्या ?

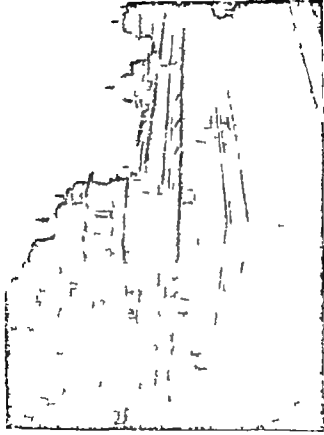
नहीं मित्रता रहेगी जैसी तुम्हारी क्षति की समय-समय पर विपदा विपदाई पकती है। तुम्हारे सामुपणों जैसी।

ये कितने सामुपण अपनी क्षति पर लायती हैं ?

नहीं सिखाई पर सामुपण और सामुपणों के बीच सिखाई। अपना के पीछे जो विचार है उसको लगन के साथ मर्त करने का प्रयत्न करना। जितना भी सफल हो जाय अपने को कुछकल्प समझना।

हेबपड़ के विपय-मन्दिर को फिर भयन हान में लाना चाहिये और उसको फिर से क्यों का क्यों बनना देना चाहिये। इस काम को आप कर दें ?

इत कठम्य की मुक्ति ने मानसिंह की कला-कर्मणा और भोज की ललित-मनुरता को बचका दिया जैसे किती ने मान-मन्दिर और भूजरी महल के निर्माण को यकायक रोक दिया जो जैसे बीमू बाबरी ने किती मोटी टांग को छेते-छेते यकायक बीजा को पटक कर छोड़ दिया जो।



बोला 'समय जाने पर उसको भी कहेंगा।

मगनमनी ने कहा कृपा धीर कर्माभ्यासन के बीच में तीन का बनाने रचना तो घाप जानते ही हैं मैं क्या कहूँ। कमा से कमी कमी मन उबर जाता है तो चाहती हूँ नाहर बा घरने पर बाए का सम्मान करें। देवता चाहती हूँ भूम तो वहीं पर।

मानसिंह का उत्साह पर्याप्त मात्रा में नहीं आया—किन्ती दिन इनकी भी याचना कर दिया। राई के बज्जल पाठ ही तो हैं।

बबकी बार नरवर के बज्जलों में बलिये। वहाँ हाथियों के कुम्ह दिखलाई पड़ेंगे। उनके साथ गणेश भी जैसे कूदते-फुरकते बचें। वहीं से बन्देरी घोर देखपड़ को बपीम करने की योजना बनाइये।

नरवर कमा धीर राजसिंह मानसिंह की कल्पना में भूम करें। राजसिंह नरवर को अपनी बपीनी समझता है। बन्देरी धीर देखपड़ सहज ही हाथ नहीं सपन के। फिर भवन-निर्माण धीर कमा-नृबल के कार्य को समुप छोड़कर जैसे उसने बड़े काम को यकायक आरम्भ किया था? पहले अपने निकटवर्ती मोर्चों की बली भाँति समझित कर लूँ। निहालसिंह का धन जैसे बुरे समय पर हुआ। कितना अस्वस्थ मन नरवर का बहूँ। छोड़ें।

मानसिंह ने अपने भाव को छिपाकर कहा 'बहुत धीमे बचपन में। पूरबी-महल के काम को आरम्भ करदूँ धीर बल-मन्दिर के निर्माण की बलि को बढ़ाई। फिर धीमे उस काम को धी हाथ में लूँ। अब नर सिंघ के लिये राई का धीर अपने यहीं मानसिंह बज्जल उपपन्न होगा।

[२१]

कसा चम्पेरी पहुँच गई। उसने अपनी विफलता का कारण बँबू को बतलाया। बँबू पर का रीप राजसिंह के भीतर कसा के प्रति अर्पण में पतनने को हुआ। दुःख हो गया।

बोला, 'ये नहीं जानता था कि बँबू इतना बड़ा बन्हा है। वह धावर बाहर यहाँ कुछ भी नहीं था। ग्वालियर के पानी ने सबको निहम्मा कर दिया।

'होरी-ध्रुवप की परिपाटी को भाँजने में सने हैं वह धावरम घोर प्रकार प्रकार की टोड़ी बनाने की बुन में। घुबटी टोड़ी बंक्त घुबटी इत्यादि। उनको घोर कुछ भी नहीं मुक्त रहा है।

'माह में गई टोड़ी। वह ग्वालियर में रह गया सो धम्मा ही हुआ। किसी काम का नहीं निकला। खेब है कि तुम भी कुछ न कर सकी।

कसा ने जो कुछ प्रयत्न किया था बतलाया।

फिर बोली 'भापने यह कहा था कि जब ग्वालियर बिर जाने को हो तब तुम्हें समाचार देना सो ग्वालियर चिपटे चिपटे रह गया परन्तु फिर पिरना तब छाप नरवर पर बढ़ाई कर देना।

'मैंने क्या केवल यही कहा था ? इतनी बात तो धीरों के ही सामने कही होती चक्रे में भी तो कुछ कहा था।

'ठोक ठोक याव नहीं। परन्तु मैंने गई रानी धीर पुरानी रातिमों में काशी फुट उठवा दी धीर जबकि कुछ नहीं हो सका। किते के चित्र बनावे थे पर वे हाथ से निकल गये। बतलाया है भापको।

'तुमने नाचने-जाने में क्याका ध्यान लगाया इसलिये तुम्हारा निरवय बिबुल गया। वह लीर कोई बात नहीं। दिल्ली का बाबदाश एक न एक दिन ग्वालियर पर बढ़ाई करेगा धीर मानसिंह को मारेगा। तुमके बही मार पाया तो बैसे मरेगा। इधर हमारा यह मुल्तान इतना निहम्मा ॥

बनता निकम्मा कि कुछ करता-करता ही नहीं । मही तो मन बाह्या है कि नरवर के फाटकों पर फिर अपने हाथों की जा ठेसुं । पर यह मुस्लाम ! बहुत ही मन्ग है । व्यापक हठार मुन्दरियों की तो अपने हरम व बाग़िम कर चुका है ।

‘या ! व्यापक हठार !’

‘हां । और उसका प्रसु है कि पूरी वस्तु हठार में पावनों को बरके ही हम लूपा !’

‘पुरुषों का कुछ टीक नहीं । एक पर से उसका मन उचलकर फिनगी अपनी अनेक पर फिलम जाता है ।’

‘तही कहा सब पुरुषों के लिये यह बात सानू नहीं है । ये सब मन्ग मन्ग मन करो ।’

‘आपने मेरे साथ कीनसा बड़ा म्पाय किया ?’

‘मेरे प्रसु में बीनू पर सीन गया था । कुछ बानों यो ही मूह से निकल गई । घान तुमको हठार-उबर नहीं आती देना । मुस्लाम में बहुत कर मपना है ।’

‘क्यों ?’

‘तुमको मानू नहीं । मुस्लाम में मुन्दरियों की दूध-जोड़ के लिये एक महकमा सोना है । मानके भर में उसके बाहरी मयै-मये नपों की पक-पक के लिये धुमने मृते है । यहाँ भी पाये व और कुछ को से मये ।’

‘राजपूत कहा जा सोन है ?’

‘जहा राजपूत बहुत है वहाँ रन मुहमे बाव नहीं आने । जहाँ बोदे है वहाँ उग्रव करते है ।’

‘राजपूत बहुत क्यों नहीं हो पाते ?’

‘बही हो जाते । सुरज राखसिंह के सामने जानसिंह का निम्र वृत्त गया । रक्षसिंह तोमरों की सेना सबका विजय । जहाँ समय गरबर की बपीली बोलों के सामने धा लड़ी हुई धीर पुरखों का बदला । तोमर और हम कैसे एक ही कहाँ खान पान, सम्मान और रहन-सहन कर मचने हैं ?

कहा धाँखों के सामने लड़ी थी ।

बोला ‘तुम्हारे नाम की भी बूझ-खोज यहाँ हुई थी ।

कहा सचका यह । ‘हाँ । उसके मुँह से निकला ।

बूझ सब क्या करें ? कहाँ जाऊँ ? मेरा तो धीर कोई नहीं है ।

‘रामरुत की बाँह कड़क गई ।

बबने कहा ‘मे तो हूँ । तुम्हारे ऊपर धाँख जाने के पहले मेरे वर के टुकड़े-टुकड़े हो जाएँगे ।’

‘घाप धकेले क्या कर लेंगे ?’

‘बहुत कुछ । हम बोड़े ने ही गरबर के झिंक को कँपा दिया था । सुस्तान डीला सब क्या नहीं तो गरबर की है ? ते दिट क्या देगा ।’

‘पर घाप उधर तो वर पर चले नहीं ।

मे तुमको किसी विप्राय के स्वाम से एक दूया । इसके विवाय अपना सुनेबार धेरका मेरा निम्र है । वह कपटी नहीं है । मेरे साथ चल नहीं करेगा । फिर नाम बड़ जाने वर धनी के ऊपर घाव जाने के निम्र मेरी देह तो है ही ।

कहा ने लोका जानसिंह कितना बड़ा है ।

[१३]

बाद निकल गया । बबन्त घामई धीरे घामई । नलीरहीन ने माई में बाध हमार स्थिती इकट्ठी करली परन्तु धमी उससे प्रण के पूरे होने में तीन हजार की कसर थी । मटर के ऊपर उसने त्रिमासुरीन से भी बड़कर कृपा बरलाई । लजाने में कोई कमी नहीं थी क्योंकि बालके का विज्ञान समय पर अपना मगान बुझता रहता था । इसारतें खड़ी करने का विचार उसने त्वाण दिया था जिनपर अर्थ होता । मेवाड़ दिल्ली के बाद गझ से लड़ता रहता था । गुजरात का महमूद बबरी कमी जानकर कमी अहमदनगर कमी खोराष्ट्र के राजपूतों की लड़ाइयों में कई बरस से बीबा हुआ था । यद्यपि इसन माई के सुल्तान को कम से कम एक बार कुछ घटने की सीबन्ध का रसी थी परन्तु वह बबन्त नहीं पा रहा था । नलीरहीन जानता था लेकिन उसका विस्वास था कि हम। धमी बहुत दूर है । इसलिये आप को मारकर सब बाध में सब बड़े भारी परिस्थान को स्थापित करने की नून में लगा हुआ था । बाह्य उसने बिठा मुन्दर मुबली को म्बर पाई कि वृत्त दीशये । अनेक लोगों का बड़ी पना होवका था । मानका के राजपूत अपने होठ काफ काट बांटे था रहे ब किन्तु एक नहीं हो पा रहे थे । मेरिनीराय का जन्म ही बुद्ध था परन्तु उसन बाधका के राजपूतों का धमी अपनी गांठ में नहीं बांध पाया था । इन बांधी के उठने की बात नलीर को मामूम थी होनी तो वह पूरा जेपेया करता । धीरे इन प्रकार की बांधी जब उस काठ से अर्जर भारत में उठती थी तब वह भी किसी की जेपेया नहीं करती थी । नांवा के बांध में मेवाड़ तब ही रहा था । रामानुजाचार्य चैत्रन्य महा प्रभु कबीर हत्यादि ने अतिमार्ग की परमनीय राशि को अग्रज बन ही लिया था ।

नलीरहीन धनी इन्द्रपुटी के निर्माण में सिर के बल लगा हुआ था ।

एक दिन उसने माई की बड़ी भील अर्जुनयाशह ने धनी अन्तगच्छों को छठार कर अल-विहार करने की ठानी ।

मन्त्र में भी कहा, 'बाह ! क्या कहना है अभीपनाह दुनिया के किसी भी पद पर ऐसा कभी नहीं हुआ होगा ।

बल-बिहार के विस्तृत क्षेत्र में छनातों की छाईं नबारी गई । एक जोर सट्टाने वाली भील की नीली बलराशि दूसरी घोर छनातों के भीतर रङ्गबिरङ्गे शारीक बस्त्रों घोर झिलमिलाई धनकारों से लगी हुई व धनराशे, टिङ्गीदण की तरह उमड़ रही थीं । धनर धनमें घोर निर्द्वेषों में इतना ही कि टिङ्गीया एक ही रङ्ग की होनी हैं । बरसात की तिवलियों बीसी परन्तु बरसात में एक ही स्वान पर इतनी तिवलियाँ इकट्ठी नहीं मिललाई पड़ती । सब हंसती-मुस्कराती बातें कर रही थीं । सब अपने बस्त्रों को सट्टा-सट्टा रही थीं सब अपने जीवन का प्रदर्शन कर रही थीं । परिणाम-स्वरूप इतना घोरगुन बढ़ा कि नबीरहीन को उसके ठण्डे करने का एक ही उपाय मिला । उसने सीन्हा इन घोरगुन को पके ठो इन्ड भी बन्द नहीं कर सकता ।

इसलिये उसने वायन कीर नृप्य धारम्भ कराया । उस सञ्जीव के आस्वादन के लिये बधन में सब प्रसाधन ले ही—सुराही व्याके मटक ह्यादि न्यावि ।

प्रजाराशों का करान निवार बोली देर के लिये भीमा पड़ बसा । नसो का सतोप नहीं हुआ ।

मयीन को बन्द करके बोला 'पानी में कूद पड़ो घोर धापत में सुधा-अपमन लेलो । मैं भी पानी में उतरूँगा पर नत्त को बरा देखने के बाद ।

आवेद्य-बाहिकाश्री न इस क्रमजान को बाबिलम्ब जारी कर दिया । का बुजियाँ तीरना जानती थीं वे कपड़ों की उतार छोडामकर पानी में कूद पड़ीं । भी तीरना नहीं जानती थी वे बाट पर बैठे बैठे पानी में पैरों से कलोलें करती हुई, नमाया देखने लगीं । नमीरहीन कभी इस पम्प और कभी सब समूह की बधाया देने लगा ।

हुए स्वयं ही-मैत्री हुई नील में घाँघी हुए निराल मर । एक
 मर, कृष्ण को हुई और सहायता के लिये बिस्मयाने मरी । पाश के समूह
 की कुछ उनको बचाने के लिये सरपणी । यही हुई स्वयं उनसे धन्य
 कर अपने हीर धनके भी प्राप्ति को संकट में डालने के परिष्कारि में
 पावई ।

मतीरहीन बिस्मयाना — "नको बचाओ । उनको बचाओ ।"

मनेक कछों से व ही धन निराले ।

मतीर हाथ-हीर बचाने मर उद्धवा-कुरा मतिर बानी म नहीं
 उतरा । मरने से उल्लेख भी धनिक उद्धवा-कुरा की परलु और कुछ नहीं ।

मनात के पीछे मृत्तान के बहुत से मोटर सड़ से । उनमें से कई
 का तीरक से मनात को बीरकर होइ वह पानी में कई और दुर्घटियों
 को बचाकर किनारे से धावे । के स्वयं धनिक ही गई थी बिम्बु मरता
 मर नहीं की । उनका उन्कार होन मर । जिन पुरानों से रसा की की
 के निवाहों नीची धनिक हुये व चाहते थे कि मृत्तान का दृष्टि — मर वह
 मर और पुरस्कार प्राप्त करें ।

मृत्तान की दृष्टि उन्कर नहीं । उनसे मृत्तान उन मर को अपने
 निराल बनाया । नीची धनिकों लिये के उनके धन धन्य ।

मुद्गाध नाम ?

उन नाम म मर धनिक नाम बनता ।

मुद्गाध के मोटर कई धन धन ?

उन मोटरों की पिछी से व ।

निमने मनाया था ? किमके हथ म धावे ? बालों । बनता था ।

उन्होंने पानक की पुकार मनी की । मुद्गाध का मरीर मरता था ।

मनिसे धन धावे से ।

मरने उनमें से एक ही नाम धनिक "मुद्गाध" म मुद्गाध मरता था
 कि "नको बचाओ ।"

‘कमबख्तो ! तुमको तुकुम दिया था !! वह कड़का ।

फिर कोई धीर क्यों नहीं कर पड़ा ? उनके मन में उठा घातक धीर तब के भारे कुत्त न कर सके । नरमराने मगे ।

मसीर ने आज़ा भी ‘इलज’ वह तिर बड़ से बुझा करबो जिसकी पीछों से यह सब देखा धीर ह्वाश भी काट दो ।

जवाहिरों ने उन मोर्चों को कैय कर लिया । कुलात के बाहर लंबा कर उनको मार दिया गया । सुस्तान की आज़ा का पछरघा पासन होवया

फटे बूँदों से मसीर बोला ‘जवाब मटक सब मरवा किरकिरा हो गया । कोई धीर पछल सोचो ।

जवाब मटक के होश कूच कर चुके थे ।

मसीरहीन ने कई खेल-खिलवाड़ सोचे धीर छूट । त्रिमां सहन गई थी । परन्तु उन्हें सुस्तान को प्रसन्न करना था । कई खेल हुये । मीसी भील ने यह सब देखा धीर अपनी धनवरत सहारों के नीतर रख लिया ।

[४८]

सिक्खर मोरी को खासियर काँटे की तरह लटकता था। उसने धनक बार बाँधमणु दिने परन्तु वह कभी छूटन नहीं हुआ। सिक्खर के भाई जसाब न जौनपुर-बङ्गात की घोर बग़ावत का मूँडा ठेंबा किया—सर्वात धपनी घसय सस्तनत कायम कर्म का प्रयास किया सिक्खर उबर गया तो वह अन्तर्बेह की घोर विसक भाया। सिक्खर जौनपुर को नष्ट कर चुका था। जौनपुर का सुस्तान हुसैनघाह दिनेके नाथ पर सङ्गीत का हुमनी काहङ्का बया घोर विन्यात हुआ घोर विसने जौनपुर को सुन्दर इमारतों से लबाया बङ्गात की घोर घटक रहा था। सिक्खर अन्तर्बेह में धाने के लिये लखनऊ में ठहर गया। लखनऊ छोटा ही नगर था परन्तु उसका शौन बड़ा घोर बाँध उपजाऊ था। दिन्नी की धामनीता में जौनपुर के साथ लखनऊ का शौन भी था यथा।

लखनऊ में ठहरने के समय सिक्खर के पास बहुत से अस्त्र-दीनबा बया हुये। सिक्खर इनका बहुत पछपाती था। वह उनका राजनीतिक महत्व को जानता था।

इन बुस्तों व धरने बहुपन को प्रकट करन के लिये ऐलान करबाया यदि किसी दिन्नी में हिम्मत हा तो जाकर नम के धामनों वर हुमाने बाध बहुत करे।

घोर तो निन्नी ने इस विनोती को स्वीकार करन व उरसोविज नहीं दी थी बाँधन ने स्वीकार कर लिया। वह लममम तीन वप तीन बाधा करने के बाध धपनीया से बहुरा बुन्दावन की घोर भा रहा था। गाड़ी लरकर का लमाया देखने की धाम्ना के साथ बहुत करने की बाधना धमत्त पड़ी। धाम्नाधर्म करने के लिये तो वह उधार ही लाम बैन्य रहा था। धोणदियों की धमनिस में जा पड़ेबा।

मोटी मोटी ठनीवार मोटी धँवरती, बुन् मिर लम्बी मोटी पर मोटे कपड़े की छोटी नी पगड़ी। नब धक नट्टेय। नट्टेयैर। कट-करी

बड़ा हाथ में कुछ नहीं । तिपाही जगदी देवकर होंगे । मुक्तों ने बोंहें
तापी घोर मुट्टियाँ कहीं ।

बोड़ी देर में लया सर यन् । तिब्बत घाकर ऊँचे तल पर बैठ
यया । बहुत धुक हो गई ।

गुवा एक ही या कई है ?

एक । केवल एक बही सब में रम रहा है ।

हमारे यहाँ के मुट्टी भी यही कहने हैं पर के पलटी पर हैं । हम
नहते हैं कि गुवा सबसे जलम है । तुम इसका झण्टा सावित करो ।

परमात्मा सब में है घोर सबसे जलम भी । हमारे घास घोर अपि
पड़ते हैं । यहाँ तक कि कबि भी कहते हैं । सब सीमा है घोर सब
उत्पत्ति ।

कुछ या माना तुमने । गुवा के पास पहुँचने का एक ही रास्ता है
सिर्फ एक ? या कई ?

जितने जगज्ज हैं जगने हो रास्ते हैं । पर पहुँचते हैं सब एक ही
ठौर पर ।

‘यात्री पक्षों परधरों घोर जगज्जों की भी पूजा करके ?

‘जकी या हममें से किसी को भी अपने भीतर की पूरी यज्ञा घोर
जगज्ज के फलों में जगज्ज बने तो जगज्ज उस तक पहुँचने का मुमीया
मिल जायगा ।

‘यात्री मुर्ती की पूजा करके भी ?

हाँ ।

‘जगज्ज के दुकड़ों की ?

‘वे जगज्ज के दुकड़े नहीं हैं । जगज्ज की मायता का बिन्दु है ।

‘तुम्हारे मोती गुवा को निराकार जगज्ज कहने हैं । फिर उस यज्ञीन
घोर इन जगज्ज पूजा में कोई फल है या नहीं ?

‘हूँ धीर नहीं भी। मानने धीर जानने बाके की जानकारी धीर
वर्षित के दर्जे पर निर्भर है।

‘बेवकूफी धीर अज्ञान के बीच में कोर फर्क है या नहीं?

‘बहुत। बेवकूफी घड़न का एक दर्जा है धीर अज्ञान बेवकूफी का
बुरा दर्जा।

‘क्या कहता है?’ विक्रमर चिन्ताया।

बोवन ने उत्तर दिया ‘मेने टोच ही तो कहा जहाँनाह।

‘बहुत करने आया है या घालियों की बहखानी करने? निरादर
चिड़चिड़ाया।

बाह्यण निर्मम रहा। निष्कम्प स्वर में बोला ‘बहुत करने आया
हूँ तब की खोज करने और राखी बात बताने के लिये। मेरी बात
घण्टी न खरी हो तो कहिय यहाँ से बसा जाऊँ?

परन्तु न ता उसके मन में वहाँ से भाग जाने की इच्छा थी धीर न
बोवन की चाहते थे कि वह भूँछे तान के धिर उठाकर बसा जायें। तब
की खोज किसी का उद्देश्य न था। दोनों एक दूसरे को घातवित्त करने
की प्रेरणा से दीप्त हो रहे थे। बोवन के भीतर निभयना की मक्का
की पीठ पर बल।

इधर-उधर छड़े हुए मुमसमान मिपाही उस धारक बाह्यण का
बहने लो वादन समझ, फिर उसकी हिम्मत का देखकर उनक मानक
इसमें ने उनसे कहा ‘बहादुर है मिपाही है बिचारा कही पीगपाना न
जाय।

एक मौतकी बोना ‘कैसे कैसे आयाये बिरहमन? हार मान आया
धीर हमनाम को कुबूल करो तब नहीं से जा सकोमे।

‘मेरा बर्ष किस बर्ष से बम है जो मे घबने को छोड़कर दूसर का
बस्ता पछई? बोवन ने निर्भयता क साथ कहा।

‘यह कुछ है ! यह कुछ है ॥ मौलवी भील बड़े ।

‘कहाँ है रहने वाले हो ? शिकम्बर ने प्रश्न किया ।

उसने उत्तर दिया — ‘ग्यालियर का ।

‘ग्यालियर का । यानी मानसिंह का बामूत ।’

‘मानसिंह का बामूत नहीं है । मानसिंह से तो लड़कर निकला है
कई बरस हो गये ।

‘रासत ! भूठ ॥

बहुत बन्ध हो गई । सवाल का बोधन का सब क्या किया जाय ।

कुस्ताल ने मौलवियों को आदेश दिया इसकी एकरीर का कँसला
घात मौलों के सिपुर्द किया जाता है । तै करिये ।

बोधन की समझ में अब आया कि क्या होने वाला है । उसको
घपने भीतर एक जगमगाहट दिसलाई दी जैसे उसने घपने जीवन में
बहुते कमी समझ नहीं की थी ।

मौलवियों को कैसला देने में देर नहीं लगी । वोड़ी देर से परस्पर
बाग करते रहे जिसको बोधन नहीं समझा ।

मौलवियों ने कैसला दिया इसलाम कबूल करो करना सिर काट
कर फेंक दिया जायगा ।’

स्वच्छ, निष्कम्प स्वर में बोधन ने निर्णय के सामने सिर झुकाया—
घपका धर्म नहीं छोड़ूँगा । सिर काट कर फेंक दो क्योंकि वह मेरा
नहीं । मैं यह सिर हूँ ही नहीं ।

‘अब भी सुझियों की सी भूठ । शिकम्बर के मुँह से निकला ।
बोधन सङ्गपरमर की मूर्ति की तरह घबरा उठा । उसने झट्टी पर
हाथ रख बिदे से ।

मुखमग्न विप्राहियों के जब में समझ ‘या अस्ताह यह क्या हो
रहा है । इस तरीक़े को क्यों यों ही जारी जा रहा है ?

परन्तु सिद्धन्तर और मुस्लिमों के राज्य में निपाही बेवत में और व अपनी बबमी को कावते थे ।

बोधन जम्मादों को लौप दिया गया ।

मरने के समय वह फिर स्विकार का भावना का घण्टि और निर्भय । वह सब में रम रहा है मेरे और जम्माद के भीतर नहीं है, जम्माद की उनवार घोर मेरे विर में भी नहीं है । सब में नहीं है । सब बराबर है । वाली और घटन में नहीं है । दोनों में नहीं है ? फिर मने उन दोनों के बीच में घेर क्यों किया ? पर वह तो बर्गायम की बात की : जो कुछ की हो वह किसी के लिये मगमें कोई धुपई नहीं । सिद्धन्तर के लिये नहीं भीतवियों के लिये नहीं किसी के लिये नहीं ।

जम्माद उसकी घान्त-वर्गीर गुण को देखकर एक लख के लिये विचलित हुआ ।

बोधन ने कहा 'क्यों निरुत्थ कर रहे हो ? जम्मादो ।

जम्माद का हाथ निर्भय पड़ा और एक धनु के लिये तलवार काप गई ।

बोधन को अपने भीतर कुछ और अवमसाहट दिखलाई नहीं ।

'जम्माद, बोधन ने कर्कशता के साथ जम्माद को बुझा की ।

तलवार उसकी बर्तन कर लगी और वह अपने बाज्जिन लोक में पहुँच गया ।

सिद्धन्तर और भीतवियों की बोधन के प्राप्ताप की सूचना दे दी गई ।

मुक्तयाम नैतिकों को उन निरीह बाधल का बतल नहीं सुहाया । कुछ बरनराहट हुई । सिद्धन्तर और भीतवियों में परामर्श हुआ ।

फिर उन्होंने जो कुछ किया उससे इतिहास के चर्चे तथा के लिये अनुचित हो गये ।

मृगमार के घसों को सिपाहियों में बाँटा धीर सनकी मरमराहट को नृत्ति कर दिया ।

परन्तु नृतियों धीर नन्धियों के छोड़ने कोड़ने में जो बाव उभर भारत में नहीं फूट पाई थी वह एक योग्य के बंध में फूट गई । अन्तर्बद्ध धीर अन्तर्बद्ध की शैली विद्याओं के दोनों की छातिर्मा पावो औकार की बन गई ।

सिक्खर धीर सिक्खर के पुस्तों सरदारों ने सोचा, घब हुआ बिस्वी की सस्तनत का बाबा मचकूत । उन्होंने नहीं देख पाया कि पावे काप गये । बिस्वी की सस्तनत को बचकन बनाने में ही बड़ी बड़ी बाबायें धीर भी थीं—एक ग्वाभियर कुसरा मेवाड़ । मेवाड़ कुछ दूर पड़ता था परन्तु ग्वाभियर तो छातो का कौता था । बिस्वी से ग्वाभियर आक्रमण करने के लिये आना बहुत समय के आता था इसलिये आगरे को बसाने बनाने धीर उसको एक बड़ी सतानी का रूप देने का सिक्खर ने संकल्प किया । वह आगरे को कुसरी राजबानो का रूप देन पर फूट पड़ा । वहीं से ग्वाभियर की सहज ही नष्ट कर दिया जायगा धीर मेवाड़ का दमन भी कर दिया जायगा सिक्खर ने सोचा ।

[११]

कालियर किये की पहाड़ी का उत्तर-पूर्व वाला छोर नीचे की ओर कुछ झर पया है। चार बा में डमक ऊपर मगनयनी का गुम्बरे पहुच बन पया। ऊपर के कोन से इस के कोन का भी सम्बन्ध जोड़ दिया गया। नीचे वाले कोन के नीचे से राई गाव वाली सांक नदी की नदी हुई नहर घुमरी महल के नीचे वाले लण्डों में घा गई और उसके पानी के निकास का भी सम्बन्ध हो गया। नुमरी महल नवमय डक लौ हाथ सम्बा और मवा लौ हाथ जोड़ा। दो लण्ड ऊपर, दो लण्ड नीचे। नीचे के लण्ड के बीचों बीच साक नदी की नहर के जल के बिन्दे हीड छोर चारों ओर दोलखड़ी वाला है। ऊपर के लण्डों के बीच में बिल्कुल घायन चारों ओर मु म्य मटाई यां ओर लट्टे। बाहर ओर भीतर के मगनयनी के रूप-सकप का प्रतिबिम्ब—प्रबन्ध सीबा, बनोना और छरीला। वलों के द्वार बिबाड मण्डप के लठा-बिठाग और बम्बरबारों के खोपक। पूरे मगन में बैठी यांमें मंडिवां और साज रीये कोड़े छोरे मुम्बर घामुषण यह पहिनी थी। पूरा मगन बाक से घलंकारों में लघोया हुआ हुआ कोड़े से घलंकारों से पूरा मगन मवाया हुआ।

मगनयनी दो पुत्रों की माता हो गई की। एक का नाम राजनिह हमरे का नाम कालनिह—नामी उनको लण में राये और बाजे कइती थी। नुमरी महल ऐसा लणता का मागों कीई लणतन मुम्बर माता मयनी मोटी में दो होनहार मिह-जुनों को लिये घायन के साथ बैठी हो। नुमरी महल के ऊपर किये की पहाड़ी की ऊंची गड़ी सीवार और उनसे दक्षिणी कोने पर मानमन्दिर। सब यह पूरा बन कर तैयार हान वाला ही था। लणता या जैत यह सीवार मानमिह का लम्बा धांडा हो जैते मानमन्दिर का मानमिह बख-मुष्टि में डक लाई को लिये हुये मरनी मवा की गया क लिये सदा हो।

बैसे माम-मन्दिर भी तैयार हो गया था कबल ऊपर के खम्बों के बाहरी पत्तों के कुछ भागों में कके के पत्तों के उभार नहीं बिठ्ठाये थे।
सके थे। एक दिन धामा जब वह काम भी पूरा हो गया।

मूह प्रवेश के लिये होनी के उत्सव की रंग-रंगनी का मुहूर्त रखा गया। होनी के उत्सव में जगता जैसे ही यस्त जो रंग-रंगनी के दिन तो मस्ती में डूबने उठगने ही लगी। माम-मन्दिर धीरे धीरे मूहरी महल के साथ जगता के मन का अपनापना स्थापित था।

मूह प्रवेश का मुहूर्त माने को हुआ।

सैनिकों ने केसरिया साफ बाँधे को माम-मन्दिर के सुनंध्यवा ऊँचे केसरिया भण्डे से होड़ सी लवा रहे थे नगर की स्थिति रंग-बिरंगेपन में फूट पड़ी। नायक बैजू ने गमे कपड़े पहिने बरसते पुटने पहिन निय पमड़ी बरस गई बरसराती हुई, बीणा को पोंछ, बाँधा, फूलों से सजाया और मरस्वती का पूजन किया। माम-मन्दिर मूकनयनी को बूझरी महल में माम-मन्दिर में ले आया। नीचे से माम-मन्दिर ऐसा लज्जा था जैसे बदन कर्ती कदनी-कुञ्ज में बिन्दु ने मुस्कान के साथ बरबहुस्त पसार दिया हो। केले के पत्तों के बनावत रंग धीरे धीरे ने पत्थर की बागियों में हावी माहुर और जल पशुओं के बेबटके बिहार ने मूकनयनी को बही कल्पना थी। भीतर पहुँचकर ऊपर के जगह के पहले धामा में पश्चिम की ओर बिन्दु का मन्दिर उसकी चारों ओर पत्थर में सुख अनुपात की बिबिध प्रकार की बागियाँ। बागिन की बूझरी और बिद्यान पुस्तकालय और तीसरी ओर सजा भवन जिसमें नायक-न दल इत्यादि होना था। बिन्दु मन्दिर के सामने बूमरा कभ था जिसकी बनावट साज-ठिकार पहले से कुछ भिन्न थी परन्तु पतनी ही सुन्दरता में नूबा हुआ।

मूकनयनी ने कहा 'बहुत ललित और सुन्दर है। बापकी कल्पना में जो कल्पिता रही है वह माम-मन्दिर में धामे गुरे नैयब और भूझार के साथ था बँठी।

‘येरी कविता नहीं तुम्हारी कविता । घोर कारीगरों के ध्यान की कविता । मेरे घर कारीगरों को जो मूक नहीं वे सके उसको तुम्हारे देवे हुए मेरे भाव न उसको दिया । कारीगरों ने योग साधा उनके ज्ञान में वह भाव मूर्त हुआ और टाँकी हुनोड़े ने तुम्हारी कविता और मेरे भाव को बत्तारों में उतार कर बसा दिया ।

बृहन्नयनी को अपनी उस ककला की याद या आई । रात का समय बचाम पर सोठ की रसवाली के बिय बीठी हुई चाँदनी में निजट बहने वाली नदी की लहरों की चयक और घनाज की बानों की ऊँपटी भूम सोख ऊँचे पहाड़ इरे भरे विद्याल बूझों के पूञ्ज और जङ्गल में स्वच्छन्द घूमने वाले पशु । उसने सोचा वह सब साकार हो गया और ऊपर के कभरा ऐसे लमते हैं जैसे पहाड़ के लम्बे सततल पटपटे पर घूमट बीचे हुये घचार घोर किरनी के पेर हों । मगनयनी धामन्दयल हो गई । मानसिह ने देखा उसके चेहरे पर जीवन का लावण्य और माता का सोन्दर्य एक बूछरे से होड़ सी मया-सगाकर परस्पर भुल रहे हैं ।

‘मात्र तुमको नायक बीजू की गई परिपाटी का बहुत अच्छा बामन बामन तुमने को मिलेया ।’ मानसिह ने कहा ।

वह उत्साह के साथ बोली और इसके उपरान्त मैं भी अपने वहाँ घापको कुछ सुनाईनी और ताजबनूस विस्तारकी । मैंने तैयार कर लिया है ।

‘मबरय सबसद तुम को कुछ भी न कर डालो वह जोड़ा है ।

मच्छा ! यह घाप लमे बगाम ।

‘तो तुम मान कर जाओ मे मगाने मगूया ।

‘वहाँ बलिये मेरे वहाँ फिर देगूनी घापको जितना मगाने है ।

मात्र रसपञ्चमी है सँभलकर जाना ।

मच्छा तो रही देगे कोन विसरने घमाता है ।

माफ़ी दूरा खूँगी ।

'उस द्वार में भी मेरी ही बीछ रहेगी ।

'बाह ! बाह ! ! बिच भी मेरा और पट्ट भी मेरा ! ! !

वे दोनों हँस पड़े । मान मन्दिर का ऊपरी खंड जहाँ वे दोनों कड़े
से मानो उस हसी में अपनी हँसी मिला रहा था ।

नीचे के सण्ड में बहल-बहल होने लगी ।

मुहुर्त प्राणवा धब बली मानसिंह ने कहा ।

वे दोनों अपने अपने स्थान पर जा पहुँचे । दिव्य-मन्दिर में पुनः
हुआ धीरे उसके बाव बावन-बावन ।

सम-मवन के ऊपरी सण्ड में स्थियों के बैठने के लिये जालीदार
स्थान था । वहाँ जाँठों पलियाँ मृगनयनी जाली धीरे मन्द के कुछ बड़े
सोनों की स्थियाँ बैठ गईं । जाली मृगनयनी के निरुद्ध बँधी थी । वहाँ
मन्द बासियों की कुछ स्थियाँ ।

नायक बीजू न होरी बाहे ।

साइली मान न करिये होरी के दिनन में ।

कीन तिहारी मान-----

बाँध घिना को खेल जाँकि बँधी हो

मोहूँ ठान । साइली मान न करिय ।

नायक बीजू ने अपने गाने में प्रचुरता और कापीयरी के मेढ की
पराकाष्ठा कर दी । विश्व बंधन छोड़ी ही देर उसका साथ कर पाया ।
पके का साथ बाँधा नहीं कर सकता कह कर उसने हँस के साथ अपनी
द्वार की स्वीकार किया और बीजू का साथ देने के लिये ठम्बूरे को
छाड़ा रहा ।

दिन होने के कारण ऊपर के सण्ड में कोई रानी नहीं ऊँची या
छोई परन्तु रक्षास्वाधन के साथ साथ बीच बीच में समकी बात-चीत का

कम नहीं टूटा। जब तब मगन में गायन बस रहा था बड़ी रानी ने एक बासी के द्वारा सोने के बाल में दो बड़े बड़े बाल भजे एक मगनयनी के लिये दूसरा साक्षी के लिये।

बाल के सामने पहुँचते ही एक पुरवासिनी ने कुछ ही क्षणों में भाई मोरे की धोर फिर मगनयनी की तरफ की। उसमें समाया ही बर्तन प्रकट हो गया। मगनयनी ने देख लिया। बाल में से बाल को उठाया मस्तक से घुसाया धीरे गीठ में बाँध लिया। साक्षी ने गायन की धोर से ध्यान को हटाकर बाल को उठाया मस्तक झुका कर प्रणाम किया धीरे धीरे में कामने को हुई हो की कि मगनयनी ने बसका हाथ दबा दिया। बोली 'साक्षर के साथ गीठ में बाँधलो।

घाँस के संकेत से साक्षी ने पूछा। घाँस के ही संकेत की भाषा में मगनयनी ने समझ दिया कि उसमें कुछ है साधो मत।

बोली 'सम्मान का पान है बड़े भावों पिला है गीठ में बाँधलो। साक्षी ने बाँध लिया। बासी फिर नवाये बनी गई।

साक्षी धीरे मगनयनी का ध्यान संकेत पर से उचट गया। साक्षी बालने के लिये घातुर हो उठी। मगनयनी की उत्प्रेक्ष्य धान्ति के बावरे में हकी थी। वह उन पुरवासिनियों से कुछ पूछने के बखतर की सोच में भव गई। साक्षी को उसने बेव बेव रहने का संकेत किया। जब बैजू का बालन 'बाइबाहो' के बीच में था मगनयनी ने धीरे धीरे बुराकर मगनमोहिनी की धोर बैठा। वह सिम उदास धीरे बचन सी थी।

अचानक धक्कर बाकर मगनयनी ने पुरवासिनी से बीरे से पूछा 'क्या बात की? पान छाने से क्यों रोक दिया था?'।

'कहाँ रोकता था? रोकता तो नहीं था, महारानी जी। पुरवासिनी ने कहा परन्तु घाँस उसकी कुछ बहने के लिये उठावनी सी हो रही थी।

'घाँसों से बर्तों का। बगलाघो न। ये तुम्हारे ऊपर किसी प्रकार की भी घाँस नहीं घाने दूँगी बचन देती हूँ।

‘बड़े लोगों की बातों को कौन कहे महारानी बी ।

‘बेबटके कहो । मैं बिगती करती हूँ । कोई नहीं जान पावेगा ।

‘तब पानों में बिप का संदेह है ।

‘क्यों ? कैसे ?

‘बड़ी महारानी बी का घाप पर कोप है ।

‘सो तो है पर आपको सम्येह क्यों हुआ ?

‘घाव उनके महल में नहीं घाटी-घाटी वह आपको में नहीं घाटी-
घाटी बस्ती भर जानती है ।

‘सुनना ही या धीरे कुछ ?

‘आपको नहीं मानूम ? बस्ती भर जानती है ।

‘क्या ?

‘यह कि उन्होंने एक बार बिप दिया था परन्तु आपने भीजन नहीं
किया । कुत्तों ने साया सो मे ठकप-ठकपकर मर गये ।

‘कब की बात है ? बहुत दिन हो गये । याद नहीं पड़ती ।

‘बह साक्षारानी का ब्याह हुआ और उन्होंने भीज दिया ।

‘सच्चा ! ठीक है ॥

‘मैं हाथ जोड़ती हूँ महारानी बी किसी को मानूम न होवे पावे ।
नहीं तो हमारा घर घर बाह्य में पड़ जावेगा ।

‘बिरबास रनको । आपको यह बात कब मानूम हुई ?

‘कई बरस हो गये अभी मानूम हो गई बी । बस्ती घर में फैल
गई बी । आपसे किसी ने नहीं कहा ।

‘साक्षी ने भी इन बातों का धनिकंध सुन लिया ।

‘भावन की समाधि पर समायजन में एक निवास उठ खड़ा हुआ ।

विजय ने समुरोह किया था कि तराना पाया जाय ।

बीजू बोला 'तराने में नके को मचाने के सिवाय और है ही क्या ?

विजय ने बतलाया 'बीसा धापड़ी मई परपाटी में बहुत कुछ है बीसा ही उसमें भी बहुत कुछ है । योपाल नायक और झमीर दुसरो ने मिस कर उस परिपाटी को बसाया था ।'

योपाल नायक के सिवाय बीजू और किसी को मान्यता नहीं देता था । बोरास को दो सी बर्ष हो चुके थे इसलिये उसके नाम पर पुण्यतता की छार की । पुनर्गुमाने सवा ।

बोड़ी देर बाद बीजू ने कहा 'मैंने तराना भी सीखा था परन्तु पाता नहीं हूँ ।

विजय ने हठ किया । मानसिंह ने संकेत से समर्थन ।

'झमीर तो नहीं गाऊँगा चाहे कोई भी मुझ का क्यों न हो जाय' बीजू बोला और उठ जाया हुआ ।

मानसिंह हँस पड़ा । मनाते हुये से कहा 'बीठिये बीठिये । गो तिर वाला नहीं राबण दस तिर वाला था ।

बीजू बैठ गया । झमीरता के साथ बोला 'राबण का धम्म नहीं हो सकता । रामचन्द्र ने अपने निज के बाण से मारकर उनको तार लिया था ।

सभा को विस्मित करते हुये मानसिंह ने कहा — आपकी और धाधार्य विजयवज्रज्ञान को मुखरी महल में बसना है ।

सभा विसमित हो गई । ऊपर के राज्य से त्रिपयी भी बसने लगी ।

मृगनयनी ने बड़ी रानी के सामने जाकर कहा 'आप मेरे पर चढ़ायेगी ?

'मेरा तिर कुछ रहा है । नहीं था तर्जुमी । जब है यही पान खाये तब से दूधन सवा है ।

इसी घर से मैंने नहीं छाया । पाप उस घर में बहारें तो पान नहीं
 सिखाईनी उनको भी नहीं बिगड़ो मैंने गाँठ में बाँध लिया है ।

मुमनमोहिनी की बुद्धि एक साख के भिये करारी पड़ कर नीची
 हो गई ।

‘में सब जाऊँगी कह कर वह बली गई ।

नगर की वे स्थियाँ कनसियों देखती हुई जा रही थीं । बाट नहीं
 ठहर तो नहीं गई उनको संका भी उपेक्षा की बुद्धि के साथ मृगनपती
 ने आस्वासन दिया । मूजरी महल जाकर उसने पानों को पोसा । उसने
 कुछ चा । परन्तु वह बटना को दबाया चाहती थी इसलिये पान फट
 गिये । राजा से नहीं कहूँगी उसने निश्चय किया ।

[६]

भूवरी महल के उत्तरीय भाग के बरिचयी बल में एक साठा बड़ा समा भवन बनाया गया था। उसके सिरे पर एक छोटा सा मंत्र रचया हुआ था। भवन पर गटराज की सोने की मूर्ति। इसकी विजय जङ्घम की देख-रेख में बनाया गया था।

गटराज की मूर्ति एक विकसित कमल पर खड़ी थी। गोलाकार कमल की पंक्तियों में खड़ी हुई। घाघा का एक मण्डप बनाया गया था। इस मण्डप के मूर्ति की दोनों ओर भी निकलती हुई रखी गई थी। मूर्ति चतुर्भुजी थी। एक बायें हाथ में डमरू दूसरा बाया हाथ बरहमूत्र में। डमरू वाले हाथ को उस ओर वाली घाघा की भी छू रही थी। एक बायें हाथ में धर्म दूसरा कमल के पत्रों में पड़े हुए एक बीज की ओर संकेत करने वाला। बायें वाले हाथ को दूसरे पार्श्व की भी छू रही थी। कमर में पंचियों की करबोनी। कमरे पर खरू। एक काम में पुरुषों का रम्या कुण्डल दूसरे में स्त्रियों की खेती वाली। बीच का में पुष्पामाला एक मट घनप मूसती-मूसती हुई। एक बटा में बाड़े चार कुंडलियों वाले हुये भाव छोटा सा मुण्ड घोर मङ्गा का प्रतिबिम्ब ओर ऊपर बीच का चढ़ाया। घरीर के घाघे भाग पर व्याघ्रचर्म।

मानसिंह विजय घीर बीजू ने मूर्ति को प्रणाम किया। मानसिंह बघल वाले बटा में बसा। समा भवन घीर उस बटा के बीच परवर की जाती ही थी।

भूवनपनी गटराज पिथ के बीच में भी ओर लानी बीगा लिये हुये सरस्वती के बीच में। भूवनपनी पिथ के बीच में होने हुये भी घनप सव घन्नों की बनी-जाति डके हुये थी।

मानसिंह ने कहा 'समा भवन में बनी। पहले ताण्डव नृत्य होना फिर उनका पावनवादन।

‘उनके सामने नहीं होना ताण्डव नृत्य ।

‘ये तो तुम्हारे मुखन हैं । एक से नाचनबादन सीखा, दूसरे से घातन ।

‘सिखाय भापके धीर किसी पुरुष के सामने न मैं नृत्य कहेगी और न लाजगी ।

‘तुम पदाँ नहीं करतीं फिर यह क्या ?

‘पर्दान करने का यह प्रयोजन बोझे ही है जो पाप कह रहे हैं ।

‘अच्छ तो उनका नाचन सुनन के लिये तो बड़ा बनो ।

‘गायन भी हम दोनों यही से सुनेंगी ।

नाचसिंह बना गया । मृगनयनी के उस आचरण से वे दोनों संतुष्ट हुये बैठू विद्येय कर ।

नाचनबादन के उपरान्त वे दोनों जैसे बये । तब मृगनयनी धीर लाजगी सभा मसन आई ।

मृगनयनी ने सिध ताण्डव स्तोत्र की शप्ता धीर लाजगी ने बीछा पर बजाया । फिर मृगनयनी ने ताण्डव नृत्य किया ।

जैसे सुखे काठ में अग्नि निक्षेपण है उसी प्रकार सिध-अग्नि बज धीर चेतन में निहित है । सिध अपने ताण्डव नृत्य से अग्नि को बज धीर चेतन में स्थानित धीर स्फुरित करते हैं । जीवन धीर आकार प्रकार में सिध की नृत्य-सीमा प्रकट होती है । निरव की समुची क्रिया की धनादि सिध का ताण्डव ध्वस्त करता है । बार हाथ बारो बिछाओं में अक्षिप्त व्यापकता इनक नाच धीर सन्द निक्षेपे विस्व का विकास बना बरबहुस्त रसा अग्नि विस्वध्वान्त अक्षि बीषा हाथ नृत्य के लिये ठठे हुनै चरण के प्रति ठठे हुये हाथ के सरस-दान को प्रकट करने वाले । धर्मचक्र आगते हुये ध्यान-कैन्द्र को धीर नाच चरण की स्थिति की बतलाने वाले । उत् के साथ सम्बन्ध इसी साधन

द्वारा सम्मन । पितृ के हिमालय से धामे वाली गङ्गा भारत की समृद्धि
घोर बढ़ा देने वाली । एक कान का कुण्डल घोर दूसरे कान की वाली
पुरुष घोर पत्नी की चोकर । कमर की मणि मेखला वाली हुई
पत्नियों को कमर के नीचे न जाने देने घोर ऊपर की ही और प्रवाहित
कर देने के लिये—ऊपरता बनाने के लिये—कटिबद्ध । कमल बिन्दु का
छोटा पितृ की धन्यता पावनता का प्रतीक । कमल के चारों ओर का
प्रभा-मण्डल पितृ के विश्वव्याप्त शोक का प्रतिबिम्ब । मुण्ड पट्टदार के
रमल का चोकर ।

मृगयनी ने ताण्डव की इस सार्विकता को धारण नृत्य द्वारा बढ़ा
के साथ मूर्त किया । नृत्य के अन्तिम भाग की अवस्था में जब मगनयनी
स्थिर हो गई तब मानसिंह के मन में हिलोईं छा गई । अत्यन्त मनोहर—
मन को बहुत ऊँचे स्तर पर ले जाने वाला बहुत ही मोहक—हृदय में
पाड़ी बढ़ा उत्पन्न करने वाला विलक्षण सुन्दर—वासना को न उल्लास
कर दृढ़ता को देने वाला । मानसिंह को मृगयनी के सौन्दर्य में इतना
बैभव प्रतीत हुआ जिसका उसको प्रथम मिलन की पड़ी में भी अनुभव
नहीं हुआ था ।

मानसिंह को लगा स्त्री का पौरव सौन्दर्य-महत्त्व स्थिरता में है जैसे
उत्त नदी का जो बरसात के मटवैले तेज प्रवाह के बार बार में नीले
पल वाली मग्नरति-वाहिनी हो जाती है—दूर से विलकुल स्थिर और
धाम्य बहुत निश्चय से प्रकटि वाली ।

मानसिंह ने आस्था के साथ कहा 'अभी राती यदि धाम यहाँ धात्री
तो माँ में बाँध कर रहा है कुछ के काठी ।

'मन्दिर से न भी माँ में कुछ बाँधकर लाई थी मृगयनी के मुँह
से निकल गया । उसने तुरन्त अपना रुक दिया ।

'क्या ?' मानसिंह ने पूछा । लाली मृगयनी का न ह ताकने लगी ।

मृगयनी के होठों पर बरसात छा गई—जैसे जिस ताण्डव के समय
मुकुरा गये हों ।

बोली 'विष्णु की मुक्तान का प्रसाद सङ्गीत के मिथुन का मान्य ।

मानसिंह को सम्येह हुआ ।

उसने प्रश्न किया 'बड़ी राणी क्यों नहीं आई ?

मृगजयन्ती ने उत्तर दिया अपना-अपना मन । याप धर्म-पुर की
छब बिम्बायों की छोड़कर अब बाहर की बातों पर ध्यान दीजिये ।'

बाह्र बर कर मानसिंह ने कहा 'केवल एक मन्दिर राई में और
बनवाना है । बोधन को बनव दिया था । बोधन की प्रेतात्मा को छान्ति
मिलेगी ।

ये दोनों बरा बिकी ।

उनके प्रश्न करने के पहले ही मानसिंह ने बतलाया बोधन को
सिकन्दर लोदी ने जलनऊ में बरपा डाला ।

मानसिंह ने बोधन के बच की जितनी और खेती क्वा सुनी भी
सुना दी ।

समाचार कब आया ? मृगजयन्ती ने बहाली के साथ पूछा ।

लाखी हूसरी और बेखाने लबी ।

'अमी-अमी मानसिंह ने उत्तर दिया ।

'बुट बाबशाह को क्या मिल गया होया अब बीन बाह्यउ के मार
बासने से ? मृगजयन्ती धीरे से बोली ।

कुसफुसाते स्वर में लाखी ने कहा 'बीन तो नहीं जा वह । बड़ा
बाधुनी और बहुत हठी ।

मृगजयन्ती की शान्त-बुटि में भर्त्सना कौन गई, लाखी ने नहीं देखा ।

मानसिंह बोला 'गैहवाकसिंह घर गया बोधन की मार डाला
धर्मबेद के मन्दिरों और मूर्तियों को ध्वस्त किया सिकन्दर ने । ईश्वराना
मानसिंह ने सिकन्दर के धर्म प्रत्याचार नहीं सुनाये ।

घातक बाहर कुछ दूरी पर हस्मा सुनाई पड़ा। मानसिंह सुनने लगा।

‘रवचर्यी का हस्माक जान पड़ता है। उसने कहा।

‘रतना! मगनयनी न बाधचर्य प्रकट किया।

मानसिंह न द्वारपाल को बीकाया। उसने लौटकर बसलाया। रैनिकों को भी वी कर स्वीय बनाया है उसी का हस्माक है।

वे रैनिकों ऊपर के लज्ज के मरौल में गये। वहाँ से उस हस्माक को लेने गये। विभिन्न विभिन्न प्रकार के बीभत्स रूपों में रैनिक बीकाया रहे थे। कुछ पर्वों पर सवार थे। एक सवार हाथ में फूट लुम्ह पर फट बांस की झाड़ी को बाँधे हुये विजय की बीला का स्वीय कर रहा था। दूसरा बीभू के नायन का। कुछ मुछाड़िये रैनिक रैनिकों के विह्वल बेध में थे।

मगनयनी यह कहकर लाली के साथ दूट भाई। रैनिकों ने यह हे मे लेल।

मानसिंह कुछ लज्ज देखता रहा। हस्माक बाँधे संवीर की बहस का मज्ज करते हुये एक दूसरे के ऊपर पड़ी बीला और दूट लम्हरे की मार बरसाने लगे। पड़ते देवता राज-मिलवाड़ रहा फिर बसली मारपीट हो गयी। स्त्री देवचार्य पुण्यों ने ली मारपीट न मान लिया। कुछ और बीड बढ़े। बी डल बनन में डेर नहीं लगी और लज्जा मुत्तममुत्ता हो गयी। रैनिक अपने-अपने हविषारों के लिये चिड़वाने और चिन्तोड़ी देने लगे।

मानसिंह वहाँ से उठर कर घाटक पर भागा। द्वाररक्षक परेशानों में थे रिकर्तम्यविमूढ़।

मानसिंह हस्माक के पास पहुँचा। उसने चिन्ताकर निवारण किया। रैनिक मज्ज लिये थे परन्तु राजा के मालिक ने उनकी बरबस दिया और वे वहाँ से घन टोर-ठियों पर लगे लगे। मानसिंह प्रबन्ध करके ली

घाया । मृगरी महल के पहले फाटक के बाईं और निष्ठवर्ती हिंडोवा फाटक पर कुछ खनिकों में ताव था । उनको दाम्त करके वह मृगनवनी के पास आ गया ।

बोला तुम्हारे शास्त्रकार ने बौद्ध के बच की शिक्षता को दयावा और ललित नाम समय दिये- अब इस हुस्नद ने मन को ग्लानि से भर दिया है ।

'होमी क ये चार पाँच दिव सोमों को मतवाला कर बैठ है । मृगनवनी न कहा ।

'इतना मतवाला ! मान मन्दिर की विशालता और सुन्दरता का इनके मन पर कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ा ।। नायक बीजू और आचार्य विजय की नफ़्तन कतापी इन प्रमाओं ने ।।। और वह भी क्लिष्ट के भीतर और तुम्हारे महल के निष्ठ ।।।। मानसिद्ध न अपनी खीम प्रकट की ।

मृगनवनी कुछ खलु कावती रही ।

बोली 'येसे सोमों के मन पर कला का धावर बीरे बीरे ही बँटता है ।

'भर में अबह अबह लोच नायक बीजू की परिपाटी सीखने बने हैं । उनमें कला की समझ आने लगी है कला का धावर करते हैं । पर वे मेरे इतने निष्ठ रहते हुए भी उजड़ूष और भड़ ही बने रहे !'

ये लोच बीजे भी तो कुछ नहीं हैं ।

मरा विचार है यहाँ संगीत का विद्यापीठ स्थापित करें । नायक बीजू की रत्नरता को देख भर के लिये जाता हूँ । ये लोच भी सीखेंगे और सुवरने ।

'वहा अच्छा विचार है । संगीत विद्यापीठ को स्थापित करिये ।

'तुमने भरद मुस्मान वाले विष्णु भगवान की जिस प्रकार की मूर्ति का सुभाष दिया था वह मान-मन्दिर में प्रतिष्ठित होगई है । उसी प्रकार

एक मुक्ति और छोटे से सुन्दर मन्दिर का निर्माण राई के निवे करारू गा ।
मेरे शोकन को बचन दिया था ।

'यह भी बहुत अच्छा विचार है । इसे भी पूरा करिये । और भी
कहीं मन्दिर बनवाइयमा ? सज़ीत के बिचारीठ ?

मासिह को मगनयनी के स्वर में ध्यङ्ग की आनक सो मामूम पडा ।
उसने मोक्षेन के साथ टकटकी लगाई । मगनयनी अस्कराई । आठों में
धीरता और स्थिरता भी मुस्कान में बेधन की बरसाही ।

'मायकी ललित कमाये ग्वाभियर के नाम को धमर कर रेंगी । इनी
निवे पूछ ।

'तुम्हारे मन में जो कुछ हो कहो तुमको मेरी सीख्य है ।

'मरनी सीख्य कभी मत रखाया करिये । वे तो आपकी दासी हूँ
क्या कहूँ ।

'दासी नहीं हो बेबी हो । मेरे हृदय की मापीरररी । बलनामो, मैं
कुछ भन में पड़ गया हूँ ।

मेरे शब्दच नृत्य की योजना जान बुझकर की थी । कुछ प्रयोजन
था ।"

क्या ? भे जानना चाहता हूँ । तुमको जैसा धाम पाया बैठा कभी
नहीं देखा था ।

धाम पाण्डव बंध के हैं—धर्म की समान । क्या मुझको स्मरण
दिनाने की धारणकता है ?

एतकी कोई भी ठोकर नहीं भूल सकता है धीर न दम बाध को
कि मेरी रानी मगनयनी दृष्ट के बंधनों से सम्बन्ध रखती है ।

वे कुछ भी हूँ आपकी हूँ जो धर्म की धीर नीत्य के हैं । धार्यन
की रपा के निवे धम धाम क्या करता चाहते हैं ? क्या हम तरह के बनेंगे

सैनिकों के हाथों उसकी रक्षा होगी जिनके विनोद का रूप यह है जिस को सभी सभी देख साईं हूँ ?

मगतयनी की आँखों में तेज का परन्तु मस्तिष्क नहीं था ।

यै इन सैनिकों को कहा गया हुआ — मानसिंह ने आदेश के साथ कहा — 'इस महल के फाटक पर ! और ऐसे समय ।

मगतयनी को अपने पाद के किसानों को होती की याद या गई ।

'यद्यपि वे कुछ नहीं होया महाराज । उनको सदा भीकस बनाने रक्षने का प्रयत्न किया जाना चाहिये । हर कमाओं की मूर्ति हुई है सधर बाज बिचा और मुख-बिचा का धम्यास कम हो गया है । अपने सैनिक किसान-वरों से जाये हैं । हमारी कला उनके विवेक में नहीं बँठी इसलिये अपनी बानी पहिचानी को के उठे और हमारी कला की चिन्त भी उठाने लये । हम कलाओं को अधिक समय देंगे तो वे सबधर पाते ही अपनी बातनामों पर उतर उतर जायेंगे ।

इस ध्याना से मानसिंह का अन्तर्मन छहमत नहीं हुआ । वह सोचने लगा ।

मगतयनी ने कहा मेने महामारत में पड़ा है कि बिच की रक्षा मरन दाप ही जाने पर ही सास्व का बिलन हो सकता है । मेरा वही प्रयोजन है और कुछ नहीं ।

बिलकुल ठीक कहा रही हो मैं मानता हूँ । और यह यही कहेंगे । इसी मोर ध्यान हुआ । केवल राई में एक मशिर बगवाने की बात है सो यह भी होता रहेगा और वह भी और केवल एक लंबी-बिचापीठ की स्थापना ग्वालिगर में । इसका मुहूर्त हो गया है । मैं बोपछा करके यहाँ पाया हूँ ।

धन्य है । परन्तु महाराज कला कर्तव्य को सजग किये रहे, भावना विवेक को सम्बल किये रहे, मनोवच और बारछा एक दूसरे का हाथ पकड़े रहें । मझो कुछ और नहीं बहना है ।

‘यही कर्सेना । मैं प्रण करता हूँ । सुना है कि शिकन्दर भारते में अपनी अमरी शासक ग्वालियर पर प्रबलता के साथ आक्रमण करने की बात ठी कर चुका है । मैं सेना की ठीक करने का सब तयार प्रयत्न कर्सेना ।

वेने कुछ प्रभावित कहा हो तो यमा चाहती हूँ ।

‘कुछ भी प्रभावित नहीं कहा । कभी भी मुझमें कोई नृति वैसी तो देना उद्योग के कुछ कामा करो ।

मृतमनो मिलकर मुस्कराई ।

बोनी, ‘नृत्य आनन्दो कैसा लगा ?

मानसिह प्रफुल्लित हो गया ।

‘कुछ कहते नहीं बनता । आचार्य विषयज्ञान ने जितना सिखाया होता उतने कही अधिक करके सिखा दिया । जितना लजीब और सुंदर था वह । फिर भी कभी देखा—परन्तु उतनाये हुये वर्तमान का कुछ वास्तव काके । वह परिपाटी रक्षण की है । उत्तर में भी कभी रही होमी । या कहा के छाई होमी जैसे तीन-मन्दिर के उत्तर की बना यही रक्षण से या । परन्तु सब तो कर्णित ही कोई यही उनको जानता हो । जो कुछ है वह भी निराश की और जा रहा है । ये उनकी ऊपर उठना चाहता है ।

मानसिह के भीतर ललित कामाओं का अनुपम फिर आन पडा ।

बोना ‘तुमने विचारी में भी बहुत कुपयता पा ली है । बोने से वरों में ही उतना सब लीला लिया । विनय हो । विनयने वालों के भी आन निकल गई ।

मानसिह की कल्पना में कला का विनयाया और विरोध हो गया ।

मृतमनो लज्जा के साथ मुस्कराई ।

मानसिह की बसे पुरान दिनों की रक्ति या गई । उनको लगा मृतमनो का शारीरिक बीर्य भीतर के सीर्य के साथ साथ बढ़ता ही गया है ।

मृगनयनी ने कहा 'असिने अपनी विशालता में ले लो । वही प्रापक ऊपर रक्त के कुल छींटे भी डाल दूँगी ।

मैं बाहूटा भी यही हूँ । मैं तुमको क्या कोरा छोड़ दूँगी ?' मानसिह बोला और ईसता हुआ उसके साथ हो गया ।

मृगनयनी की विशालता की वह अनेकवार देख चुका था । घबराहटों के देवताओं के बिजों के साथ मानसिह के विविध स्थितियों के बिज थे । कीपुत्री महात्तर घोर बेसन्तोत्तर के भी । एक घोर राय-रायनियों के भी बिज थे । एक बिज अचूरा था । उसका प्रारम्भ उसी दिन किया गया था । रेखाएँ लंबार भी रक्त नहीं भरे मरे थे । मानसिह ने बारीकी के साथ देखा । बिज दो भागों में विभक्त था । एक भाग में बरफासुपणों से सजा हुआ एक सुन्दरी मन्त्र पर बैठी है एक पञ्चाशत लिये है । दूसरी स्वर मन्त्र का बाध तीव्रती बोझा पर रैवनिनी फेर रहो है । चौथी नाच रही है पाँचवीं वा रहो है । एक स्त्री रंग राग और सुवन्धित इन्द्र लिये मन्त्र पर बैठी हुई सुन्दरी के पास सेवा के लिये खड़ी है । छारा दृश्य बंसे किसी रानी का बच्चा हो । बिज के दूसरे भाग में खड़ी दूर, पृष्ठ धूमि में अज्ञात और पहाड़ है । उनमें कुछ सघन राधु क्षिप्ते सुके थे बाव पड़ते हैं । रानी के दरबार के द्वार के बाहर एक योधा अनिवच्य की वृत्ति में खड़ा हुआ है—उसका एक पैर रानी के दरबार में जाने के लिये बठ चुका है मुँह अज्ञान में क्षिप्ते राधुओं की विद्या में है और बाँधें उस दरबार की ओर फिरी हुई है । उसके तरङ्ग में तीर नहीं है, कनर में बंधी लसवार म्बल से घापी बाहर है ।

मानसिह ने सोचा 'क्या इस योधा की आकृति मेरी जैसी बनाई गई है ? और क्या मन्त्र पर बैठी हुई सुन्दरी को क्षिप्ते मृगनयनी से मिलती है ? कुछ सास की बारीक निगल के बाद उसकी विश्वास ही क्या कि कोई भी आकृति पहचाने हुये व्यक्तियों से नहीं मिलती । फिर भी बिज का प्रयोजन स्पष्ट था ।

पूछा 'रक्त कब मरे जायेंगे इस बिज में ? बहुत सुन्दर बन गया है ।

किस दिशा से बिज में रंभों का भरणा प्रारम्भ करें ? पहले इस रहस्य की ओर से या मृत्युपाता की ओर से ? मृगनयनी ने कटाक्ष के साथ मुस्कराते हुए प्रश्न किया :

मानसिह हँस पड़ा ।

बोपा, ओलों में एक साथ रज्जु करो ।

एक साथ । मृगनयनी ने हँसकर कहा ।

तो जैना भी चाहे । तुम अपने इस बिज की बात को मेरे मन में पहले ही बिछपा चुकी हो — ईंधते हुये बोपा — बिज नुमने बिजगाण बनसा है बिज के किस धनु को पहले रण की कूची पोयी इसको गुनँ है ही ऐ करना पड़ेगा । अभी तो रम-यम्बवी का अपना रम बरत जाय ।

मृगनयनी ने मुस्करा के साथ बड़ी-बड़ी धीलों के चलक लताये और फिरसे । मानसिह के ऊपर उसने रण काणा और मानसिह ने उठ पर ।

उसको धक में भरकर मानसिह ने कहा 'तुम लक्ष्मण मेरी रंभी हो ।

थोड़ी देर के बाद मानसिह मानसिह को लौ लाया ।

अभी मृगनयनी नहीं हुआ था । मानसिह के पत्थरी का रंभ संघ्या लोण प्रकाश से होड़ भी लगा रहा था । कइसी पम्पकों का आहार नगर ओर लहो रंभ मोहक था । जैसे जैसे निष्ठा पहुँचता गया उसके चमत्कारपुर्ण विभुल लेखक और लोण के रक्त में मस्त होना गया । द्वार पर पतँकर मरनी कल्पना और छिन्नी के कीपल पर उसको प्रतिमान हुआ । उसी समय मृगनयनी के बिजपाता के उध धधुरे बिज की बात पाई । कता का धनुजीलन और कपल का बातल साथ साथ चल गइये हैं । ये पैना की भी लमाईल और लविन लताओं की भी उदति करना पड़ेगा । मामक पैनु न मात्र दोरी को किने मिठाण के साथ गाया था । किना नमान कलाकार है वह ॥ मृगनयनी का लण्डन मय भी किना मन्दर, केना ललोना था ॥ मृगनयनी के धधुरे बिज की दोरी लताओं में एक साथ ही रंभ अरे जा सकते हैं । उसने बोपा ।

[५१]

ग्वातिबर के किन्न में छात-बहु के मन्दिर के पास पूर्व की ओर किये की दीवार के एक कील पर एक छोटा सा बो-मन्जिहा पत्ता मकान था ।

बैजू इसी में घुसेला रहता था । रसोइया राज्य की ओर से बाना पकाव के निचे मित्रुस्त था । इसलिय बेंकिनी के छात बहु संवीठ के घन्नास में बिपटा रहता था ।

बतन्त ज़ुदु जाने की भी परन्तु मात-बाचीन समीर की सुपन्नि धीर ठगक को उसने ममी नहीं बटोरा था ।

मावक बैजू मानसिह धीर मुधनसनी के सुझाये हुये टाढ़ी राव के एक भय को नके के स्वर धीर बीछा के तारो पर साज धीर मीब छु था । निकटवर्ती मन्दिर में भी बीछा के ऊपर कोई उंगलियों के भटके दे रहा था । यह घटल था । ग्वातिबर त्रपर में धरेंक बूहत्त गाने धीर बीछा बजाने के सीलीन हो गये थे । बिचको बीछा का बास बुकड़ बान पड़ा उम्होंने तितार को बकड़ लिया । धमोर धुत्तक ने दो सी बर्ष पड़े बीछा को तितार का बप दे दिवा था । ग्वातिबर में तितार का बलन उसकी सुबमता के कारण हो गया था ।

परन्तु घटल में तितार को बहून न करके बीछा पर ही हाथ फेरने का निश्चय किया । बीछा उसकी साधारण और छोटी सी ही थी । थुक् से नाम माव की शिला पाकर समने इधर-उधर लुने हुने धीर अपने भीती को बीछा पर निकालने के घन्नास में दिन रात एक कर दिने ।

उसको लगा मुकको बहुत प्य गया । वह बैजू को अपने हाथ की कपरीपरी से परिचित कराया चाहता था । बैजू को अपने घर बुलाना दुष्कर था । उसके घर पर बीछा के जाकर बाल मात में भूतबचक बनमा बतको घन्ना नहीं लगा । छात बहु के मन्दिर निकट ही था—बहु बाबा

छोटा मन्दिर विजोपकर निकट—इसलिये इसी मन्दिर के बाहरी भाग में बाड़े को लेकर जा बैठा। कोई विजयश्रुति बाट न थी। परों में चबूतरों घोर चौराहों पर, मन्दिरों में घोर पेड़ों के नीचे बहो हो उठा था। यहाँ तक प्रातःकालीन स्नान प्रक्षालन के लिये जो सोन नगर बाहर कुपा बाबड़ी या ताम्बा पर जाते थे वे भी धरनी बीणा या खिठार को काम पर हाँव के जाते थे। घोर अवसर मिलते ही 'नोपठनोम' में लग जाते थे।

घटन बड़े काब के साब बीणा के ऊपर एक तराने को निकाल रहा था। उसको धाया भी कि जैसे ही बँजु का ध्यान इस घोर बटा कि उसने भीतर बुनाया घोर लूब पुँवो को कसाकारों के बीच में—एक घुर घोर बूँत का माग्य रिप्य होने लायक हो चकर ही।

बँजु मकान के ऊपरी खण्ड की खिड़की के पास धरने काम में बहुर हुआ हुआ था। यह तान यह तान यह मयक यह मयक। यकायक बँजु के बने थे ऐसी तानें बनकर निकलीं कि यह हर्ष की कमोर्तों में दिगम गया। फिर बसने बीणा के ऊपर जगहों तानों के उतारने का प्रयास किया। कई बार घड़फन हुआ। बीणा को एक तरङ्क रसकर मरोम में माल-मन्दिर की एक कोर को देखने लगा। बँजुओं के बीच परबर्गों में बनी हुई बग्नबागों की डमेटी और मुरकी हुई बेनों के बीच में बीनोर किमरिया और मूँक उगावे हुये हाथी पर टिपटी हुई रवि रसिमों पर घमि बस गई। यकायक शरण पीछ पन्वरों की आगिओं में बने पुष्पों घोर हँसों पर जा बटकी।

'अरे ! यह मन्दिर भी टोड़ी की हनी तान को ले रहा है। बीणा पर तान घोर मयक यह धों निकल घावेगी। यह उनाम के नाव बोना।

आज कर उसने बीणा को उठाया यने के मगाया घोर उगड़े कई पुँवने लिये। नम घाबि-गुन बुधन में बीणा की एक जूँगी हीनी यह

घई घोर तार का तनाव कम हो गया। बँबू का नहीं धातुम पड़ा।
 जैसे ही बजाने के लिये तार पर उँगली चलाई, बीणा बसुरी बोली।

बँबू ने लिसिया कर कहा 'क्या करती है ? तुरन्त समझ में आ
 गया कि झूटी का अपराध है। हँस पड़ा।

'घो हो ! मानमन्दिर की तुमने भी झूँकी ली घोर होती पड़ गई।
 ठीक करे बेठा हूँ।

बटन के काग में ली धावाच पड़ी। उसने अपने बाजों को और भी
 ठीके स्वरों बजाया।

बँबू जब झूटी को समेटकर तारों को मिला रहा था तब बटन के
 बाजों की मद्धार उसके कान में पड़ी। अपनी बीणा को मध्य में रखकर
 बँबू ध्यान के साथ उस मन्दिर से धारने वाली ध्वनि को सुनने लगा।
 कुछ क्षण सुनने पर एक हाथ में बीणा को लिये हुये बिड़की पर आया।
 वहाँ से बटन दिखलाई पड़ता था।

बँबू का नेहल बिड़ल हो गया।

उपट कर चिन्ताया 'जमे घो ! घरे घो बँसुरे बेताके !! बन्ध कर
 इस कमलोज की !!!

बटन ने कड़े होकर उसकी प्रणाम किया। बँबू ने जैसे बेचा ही
 न हो।

बोला 'क्यों पीछे पड़ा है राव-रावणियों की हत्या के ! बन्ध कर
 इस पाप को वहीं तो पीरम बरक में वापसा !!

'आपसे संपीठ के विषय में कुछ बात करना चाहता हूँ। पीठवा
 चाहता हूँ। ठराने की बजा रहा था। बटन ने कहा।

बँबू बरस पड़ा 'मैं ठराने के बन्धे जाता हूँ यहाँ से या फेक देके
 तिरों ऊपर घोर फोड़ देता हिर।

‘म कुँवर घटलसिंह हूँ । घापो पहिचाया नहीं ! घटल ने
बतलाया ।

बीजू बोला ‘भाग ! भाग !! भाग !!! बड़ा भाया कहीं का सिंह
सिंह !!!’

घटल क्षुब्ध होकर मन्दिर के पीछे जसा गया । बीजू अपनी घटारी में ।

घटल ने बाढ़ा बीणा को बहू या सास किसी के भी मन्दिर के
पत्थरों से वे मार्ग धीरे टुकड़े-टुकड़े करके जल दूँ । बहू बीणा को जगम
में बसा कर वहाँ से जल दिया ।

[१२]

यागसिंह के साथ मृगनवनी कई बार राई के धंगलों में धिकार के लिये हो घाई थी पर जबकी बार मन में विषय उत्साह प्रतीत हुआ।

लाखी के साथ वह सब स्थान पर बड़े बाध के साथ गई जहाँ कई दरम पहले अपने और लाखी ने दो सवारों को मार दिलाया था और दो को जगा दिया था। उसी झाड़ी का कहीं पता न गया जिसमें वह बटना पड़ी थी। परन्तु पहाड़ी की मोड़ बढ़ी थी जिसके पीछे छे बार सवार घाने में लड़क भी गयीं थी।

मृगनवनी न सोचा यदि फिर बेवा ही पकसर था आने तो सामना कर लूंगी ? तब छोटी सोचों धन बकी हो गईं हैं। हाथ पैर में मन भी पहले से अधिक ही है पर क्या साहस भी उतना ही स्फुरणमय है ? क्या सतनी ही मन वाली हैं ? इसमें कुछ कमर मानून हैं। क्या कलाघों के धनुषीजन ने धनुषन कुछ अधिक दे दिया है ? अब क्या में किन्तु-परन्तु कर उठूंगी ? क्या सतनी मान-दीड़ कर सकूंगी ? क्या मेरे हृदय सुघर को कर्मों पर लाद कर के जा सकूंगी ? इसको धायद न कर सकूँ।

लाखी ने अपने मोठर कोई कसर नहीं पाई। परन्तु एका घबहर करनी घाने ही क्यों जमा, उसने सोचा।

फिर वे दोनों उन स्थान पर भी गईं जहाँ यागसिंह से प्रजन मिलन हुआ था। वेने किन्तुने बेबकक बात की थी। क्या वे सब बातें मेरे ही कही थीं ? किसान की लकड़ी ने। किसान की लकड़ी रामा के क्या कम तरह बोन सकृती है ? पर में उस समय जानती थी तो नहीं थी कि रामा किन्तुना बड़ा होता है। और यदि मैं वह जानती कि रामा की माठ यनिवा पहले से हैं तो क्या में मन की बात को जान ऐसी ? और यह मानून होगा कि सुमनमोहनी कीन और कैसी हैं तो निश्चय ही नहीं कर देदी। पर अब क्या ? सुमनमोहनी और उन बात के होते हूँ भी रामा का मेरे पूरा प्रेम बाबा और बाबे रूँबी।

शिकार खेलने के अपरान्त राजा उन सबके साथ बाघन पुजारी के स्थान पर गया। बरमह के पेड़ के नीचे उठा था। फूटे हुये मन्दिर की बगल एक नया सुन्दर मन्दिर बन गया था परन्तु गांव में मशतों की संख्या घटिक नहीं बढ़ी थी। नया पुजारी गांव के किसानों की उम्र में के देवता के लिये बीसमें बीर धपन लिये तीसमें भाग से अधिक के भेता था। गांव वालों को घबराता था परन्तु वे बम-आवना के कारण कुछ नहीं कह सकते थे।

मृगनयनी ने सोचा इस नये सुन्दर मन्दिर को भी यदि किसी दिन किसी ने धाकर छोड़ दिया तो क्या छिर एक धोर नया मन्दिर बनाया जावेगा? कब तक यह कम जारी रहेगा। इसके धक्कों की बाहों में जब तक कम नहीं धाया तब तक यही कम रहेगा। किसान जब तक प्रबल नहीं हुये तब तक बराबर यही होता रहना है। किसान कैसे प्रबल बनें? कत्ताघों की शिक्षा से? उँह। सबसे इनकी बाहों को कितना बल दितेगा? पेट भर जान को भिल दूब मट्ठा भी कराये और कुछ इनके पास बचता भी रहे। तब कम्पाये इनके बाहुबल को स्मिरता दे सकेंगे? यह सब कैसे हो? राजा सेना को पुष्ट करके तो इस काम के करने के लिये कहेंगी।

मृगनयनी ने गांव में जाने की इच्छा प्रकट की। राजा तौर से उन स्थान को देखने की बहा। उसने मानसिह को गांव में धाते हुये पहुँचे-पहुँच देखा था और वहाँ मानसिह की धारती उगारी थी।

वे दोनों तबारी में उस स्थान पर गये। धम्म थोड़े पर था।

उस स्थान को देखकर मृगनयनी के मन में मयानी भी छिर गई। यहाँ बहुत से मरनारी उसी प्रकार लड़े हुये थे। उमी तरह को जानती। पालियों में फून नहीं थे। नये पुजारी न फून क वेड़ नहीं मया पाये थे। मृगनयनी उस दिन ऐसी ही पाँव में लड़ी हुई थी।

मानसिह उसके पास आया।

बोला 'यही है वह स्थान जहाँ तुमको घोर लाशारागी को पहले-पहल देखा था ।

लाशों छत गारियों के चेहरे पहिचानने में समी हुई थी । कुछ पहिचान में आ गये कुछ नय न । इन्हीं के पुरापह घोर पदमग्न का ने धिकार होकर यहाँ से गई थी । कितने सीधे घोर विनीत विनम्र निष्ठ रहे हैं इस बड़ी । मरे घोर अटल के साथ कितनी कुटलता की थी इन्होंने ॥

मगलमनो ने मानसिंह से कहा, 'मैंने अपने देवता पर यही फूल बढ़ावा था ।

वह बोला 'घोर देवता ने उस फूल को अपनी पपड़ी में छँस लिया था ।

गिर गया क्रिया उस फूल का ?

'सामने जो है ।

'बड़े बीसे हो आप ।

'वही पपड़ी में ही लौटा हुआ है परन्तु उसको कोई देख नहीं सकता ।

'न जाने क्या क्या कह उठते हैं अब नहीं बोर्णूयी ।

बोड़ी दूर मुगलमनो का घर था । वह गिर-गिरा गया था । अटल उसको देखकर लौटा ।

राजा को प्रसन्न था कह बोला 'घर तो गिर ही गया है । आ भी उसमें गया । परन्तु जगमग्न है ।

मासी ने बीरे से मुगलमनो से कहा 'क्या कहना इन्हीं जगमग्न का ।

मानसिंह ने अटल से कहा 'उसमें जो कुछ था अब पड़ी के रूप में बढ़ा कर दो कुँवर जी ।

घटल को घबराव हुआ नहीं कहाँ बनेगी गड़ी यहाँ पर महाराज ?

मानसिंह ने उत्साहित किया — देखो तो पहले । क्या यहाँ कोई भी स्थान नहीं बना गरी बन सके ?

‘अटल मे नदी के दोनों किनारों की तरफ बाँध दीवारें धीरे धीरे ऊँचे रहाड़ पर जा ठहराई ।

हे तो महाराज यह रहाड़ की चोटी है परन्तु ऊँची बहुत है । फिर वहाँ पानी की कमी कितनी न बनी रहेगी ? घटल बोला ।

मानसिंह ने कहा, ‘पहले यहाँ नदी की तालाब बा । नदी लम्बे हो गई और तालाब पुर मया । तालाब को उपरवाये देता हूँ और मडा को बनवाय देता हूँ । ग्रामियर की रखा के लिये इस रहाड़ी की चोटी पर एक अच्छी गरी का बनवाना बहुत आवश्यक है । अचान्ने की बात है कि आज तक मेरे ध्यान में यह सुझ क्यों नहीं आई यद्यपि जानता इस स्थान को बहुत पहले से हूँ ।

सुगन्धनी की कल्पना में बसकी बिजगासा का भव्य चित्र घूम गया । रेखा-चित्र के अङ्गुल वाले भाग में रंग का भरना शुरू हो गया है । उसने प्रसन्नता के साथ सोचा ।

उसने बाँध भर के सामने घटल से कहा ‘वे तुमको यह बाँध और नावडा की भूमि बायीर में सुन-सन्नाह के लिये सजाता हूँ । नदी भी बनेगी । राज्य की रखा धीरे प्रजा का पालन बिल देकर करना ।

आनन्द के बारे घटल खूब मया । अब बँजु या कोई नू मरा तिरस्कार नहीं कर लड़ेगा उसके अन्तर्धन में अटा धीरे हर्ष में विनीत हो गया ।

सुगन्धनी ने सोचा क्या बाँध के बिस्तान इनके जागीरदार बन जान में मुसी हो पार्वने ? हमारे उन शर्तों की कीमत ओतैगा जिनकी से रचनाली दिया करती थी ? आनन्द कीमत ओतैगा होना ? पृष्ठ ३

व्यर्थ है। फिर भी पूछूँ। फिर नाम क्या? छोटे-छोटे से बड़े से सेत से। पूछने का व्यर्थ कहीं न हो चाय कि जिनके पास अभी हैं उनसे छीन लिये जाएँ। जाने भी हूँ।

माँजी से बोली 'अब तो तुम घपची गड़ी में घाबर रही हो राबराजी की।

'उसने चिहुँक कर उत्तर दिया 'मे तो घपने बूझी महस में रहूँगी महाराजी की।

मृगनयनी हँस पड़ी।

'माँजी तुमको यहाँ एक दिन घाबर रहा ही पड़ेगा।

मगरजी ने तुम्हारी इस बात की नहीं मानी लड़ पड़ूँगी। मृगनयनी के स्वर की मजल करते हुये साजी ने व्यक्त किया। वह प्रसन्न थी।

[१३]

श्वानियर पर घाकमण करन और धरणी बार उठको बूम में मिसा देने के इरादे से सुस्तान सिक्खर न आये में बड़ी भारी सेना तैयार की। नयनय एक लाख सवार को साथ पैदल सिपाही को साथ गुनाय और एक हजार हाथी। धरणी और छागसी की सिपा के लिये समन एक बहुत बड़ा मन्दरा स्थापित किया था। बरबारी मस्जों के साथ इन मन्दरों के मोतियों को भी लेने का संकल्प किया। कच करने में धरणी विनम्र था। उनके आसूनों ने समाचार दिया कि मुजरात का महमूद बखारि मारवा की ओर आ रहा है। मुजरात और मारवा के मुल्कानों के बड़ का परिणाम देखकर ही वह श्वानियर पर घाकमण करना चाहता था। मोनबी और कड़ाबू सरदार उनका धीम इपना करने के लिये उबसा रहे थे। कूच के शूरों का निराश करन के लिये। एक पहर रात में वे घरे में दरबार हो रहा था। आसू मुद्राबनी थी। सड़ाई के लिये बन बदन की घुन का भनमें खार उठ रहा था। सिक्खर का आसूनी बिजान बहूत सुमंभट्टि था। उसने समाचार दिया था कि राजा मानतिह सोमर न छप ठ बिछापीठ को स्थापित करके नयनय बंजु के हाथ में जो एक पागल है दे दिया है और अब इमारतों के काम को बढ़ावा ही बनाता हुआ बड़े पैमाने पर सेना को तैयार करने में जुट रहा है।

‘जगानाह अब बीटने का मही मौका है। बरसात के लिये तीन-चार महीने हैं। कच करने में देर नहीं लगनी चाहिए। एक सरदार न आसूरोप किया।

प्रधान मुल्का ने कहा ‘आन-मगिर को साक कर देने की बड़ी घाबई।

सिक्खर बोला ‘महमूद बखारि मादू को छतन करके चन्देरी मन्दर होता हुआ श्वानियर आ लखता है। मैं चाहता हूँ कि श्वानियर को छतन करके मन्दर चन्देरी होता हुआ मादू की फिर निम्नी की बादशाहत में

मिस्ताऊँ और फिर मुबारक को । बगर्ग और नसीरुद्दीन की आँखें चापस में बसभ चुके उस वक़्त कूब करना मुनासिब होया ।

एक सरदार ने समर्थन किया — भूमिस्त्रि है बगर्ग मासबा में धाते धाते राजपूताने की तरफ़ बक़ शेर व और नसीरुद्दीन से सड़ाई न हो, इसलिये बेख़ डेना ख़ाफ़ा होया । इन्तकार की समाह ठीक है ।'

सैनानायकों और मुस्माधों का बहुमत तुरन्त बड़ाई कर देने के बस में था । आगरा में इसी बड़ी सेना को पड़े-पड़े बिताते-बिसाते ख़ाना भी कम होता था रहा था ।

सिकन्दर ने मान लिया । उसी समय बड़ी ख़ोर की ग़बनझाहूट का सम्म हुआ और वीरान धाम की ज़त, वीरारें पश्ये कर्ष तस्त मतनब तकिये कांपने लगे । जयता या जैसे प्रसन्न की बड़ी धा गई हो । मुस्माँ से मस्माँ के सरदारों से सरदारों के सिर टकरा पय । तस्त के ऊपर बावबाह धौबे मुँह बिर पड़ा और पंजा मलने बाबा युसाम उसके ऊपर । मौबबियों और सिकन्दर की आँखों के सामने मोहन के मारे जाने का चित्र फिर गया ।

'या मस्माह ! रहम !! रहम !!! उन लोगों के मुँह से नीज निकली । यमादान नीट मये । धौबेरा झा गया । मानो परमात्मा ने उनकी पुकार को सुनने से इनकार कर दिया ही । लोग इधर-उधर मुड़कने लगे ।

बडा प्रचण्ड मूकम्ब आया था ।

X

X

X

X

उस समय के कुछ पहले माहू से दूर महमूब बगर्ग बैठहाबा पड़ाव पर पड़ाव आलता हुआ मियुक्त स्वाग पर रँग-बसेरे के बिये रुक गया । उने हुये तम्बू में था कैटा । पलङ्ग की एक बाबू डायी शेर पके हुये आलत और दूसरी और भी सोने के बालों में सबे हुये डायी शेर । रात में नीज

मुली धीरे मुँह बचा — मूल के कारण बाग पड़न में कोई टाक भी नहीं
 का रोम का रस्नूर को ठहरा—ता विचार क्या करता ? क्या प्रातःकाल
 की प्रतीक्षा करता ? तब तक गरीब घाँवों का क्या होता ? क्या वे कम
 पाया उन पर ? उस करबट बाँक जूती तो बाई सेर बाबलों भर बाग
 क्षतिर इस करबट बाँक जूती तो उठनी ही लीस के बाबलों का दूसरा
 बाग । क्षतिर एक ही तरफ पाँच सेर बाबलों के रखने में तुक क्या ?
 उन करबट से इस करबट बीन-बीन के उठना कष्ट उठाना ही क्यों
 बाग ? उस करबट बाँक जूती हाथ बढ़ाया धीरे बाई सेर बाबल छाँक ।
 फिर तीन बार बट क बाँक दूसरे करबट बाँक जूती हाथ बढ़ाया धीरे
 दूसरा बाई सेर छाँक । धीरे सेर भर भी सेर भर गहद धीरे देड़ भी
 क्यों का कलेवा धुवा छाँक के लिये मीरुद । उनमें कोई बीनमेक
 हो नहीं ।

पहल पहल की गहरी नींद सोया ही था कि पलंग हिल गया जैसे
 धाँवों में बर्बर झायवा हो । बघरों चित्त तो रहा था । पलंग की
 मचल हिलगुल ने करबट दे दी । धाँक लुग पड़ी । बघरों ने पात रफ्त
 हुप पीढ़े बाले बाग के बाबलों पर हाथ बढ़ाया । पीड़ा लिखका । बघरों
 ने धीरे हाथ बढ़ाया । वह नींद भी लिखका । बघरों ने कुड़कुड़ा कर
 एक को बड़ब लम्बा किया धीरे दूसरे से धाँवें पीढ़ी । परगु बाबल
 क्षति न लगा । धम्म से बाग नीब जागिर । धम्म न उसक ऊपर पाड़ा ।
 उन बघल भी यही हुआ । अन्तर इतना रहा कि उस धीरे का बाग धीरे
 शांति नीब न बिरकर धम्म से धम्मकी बीड़ी पीठ पर जा बड़ा । बघरों
 पड़ाम ने नीप । पलंग उमक ऊपर । नीब गिरे हुये बाबलों का छकिया
 बाग हुप बाबलों न लम्बी मूर्छों पर सजेर लिखाव का काम किया ।
 पलंग के ऊपर गिरे हुये बाबलों में ने कुछ ने मूँह पर धीरे कुछ ने
 छाँक पर बचायी जमाई ।

१ बघरों चित्लाया—'धोऊ ! जिनों ने धार डाला ।। कमबलों के
 नर नींद नीं दिया ।।। बचायो बचायो ।।।

सारी छावनी में बड़ी लौट-पौट मची हुई थी। हाथी बागों पर लौकसें छोड़ कर बिनाब रहे थे जोड़े बिल बिना रहे थे धीर धावर मुड़क-मुड़क कर हाथ-तोबा मचा रहे थे।

पहाड़ों से पत्थर टूट-टूटकर बहूबहाते हुये मुड़क रहे थे। पेड़ बड़ों से उखड़ उखड़कर बराटे के साथ गिर रहे थे। नदियां धीरे धीरे मरोमरो के पानी में जलजली मच गईं।

मृगनयनी प्रचण्ड रोष पर था।

X

X

X

उसी रात मौजू का सुस्ताम नसीबदोन घण्टी बेपनों की महुंमसुमारी की छान चुका था। घण्टी पूरे पन्नाह हजार की बिलती में लमनन उड़ हजार की बसर थी। बहीबलता रोड खुपता था केसा जोसा बिना जाता था इसमिये सही सक्ता जात थी। सक्ता के सम्बन्ध में उसको कोई खटका नहीं था परन्तु उसको समाचार मिला था कि हम में बहुत से लौंडे भी स्थितों के बैठ में वालिन हो गये हैं। उसको तन्हेह था कि वे मुबक कुछ बेनमों की काम बासना को तृप्त करने के लिये जा चुके हैं। तन्हेह निवारस धीरे दण्ड बिनाग के बिये महुंमसुमारी की बस-रत पड़ गई।

कई बज्ज रक्षिकारों घपने घपने जिम्में का बहीबलता जोने सुस्ताम के साथ चल रहीं थीं। महुंमसुमारी में सहायता करने वाली जनक स्थियां घनमिनत मसालों को पहराती हुई सुस्ताम के साथ थीं। महुंमसुमारी का काम जोड़ा धीरे धाधारण नहीं था। स्त्री बेधकारी मुबक सहज ही हाथ मपने वाले नहीं थे। जैसे जैसे बहीबलता का पकना घनमन्वाध धीरे घमीबलत बलता वे हजर-ठहर बिलकते जाते। घन्त में उनका पकड़ा जाता निरिपत था क्योंकि महल के चारी धीरे सेवा का कड़ा बहरा था। नदीर जोड़ी देर बाद बककर ठहर गया। पैरों के बकने का सवाल ही नहीं था बाधियां कर्मों पर बसके सक्त को लाने चल रही

यै, शम्भु पाते कमरा गई जो । तब नीचे रख दिया गया । गलीर
झर तपिबों में लगा गया ।

बढ़ बढ़ बढ़ ऊँच धूम का गर्जन-तर्जन हुआ । तुरन्त माँह का
हिना जो एक ठोके बीच पर्वत पर है घर घर काँप उठा । गलीर के
झर तपिबों लीट, लल पलटा धीरे बढ़ मुह के बल नीचे का रहा ।

यह विस्माया — 'बचाओ ! मुझको बचाओ !' यह किसी को नहीं
छाड़ो ! ! ! जिस पकड़े भिसे का रहे ह कोई बचाओ ! ! !

मगलें हाथों से धूल बरें धीरे मुड़क-मुड़क कर चुपचुपों की तरह
बगलें बुझने लगीं । बड़ीकाते नीचे बिर गये । उनके पद जुनते बढ़
हीरे बढ़-बढ़ाने लगे । कुछ के ऊपर मगलें गिरीं धीरे सनकी होसी सी
बग उठी । दाहिनी बेगलों पर धीरे बेगलों दाहिनी पर लड़कड़ा-लड़कड़ा
का कर बिरने लगीं । निकटवर्ती महल बियमवाने सगे भागो कह रहे
हों घर बले धीरे तब बले । बेगलों के रंगीन कीमती कपड़े बिदा लेने को
हूँ धीरे उनमें से घनेक बिर के बल गिरीं । सेना के सिपाही इयामत
का पाला बगल बिर पर पैर रखकर इधर उधर भागे । स्त्री बेग भारी
बुझों को प्रतीति हुई कि हम बले तो बले हमारे साथ हमारी प्रेमसिमा
भी बली धीरे सत्याजारी गलीर भी गया । भागते बिरते पड़ते उनको
बाहर निचल जाने का मार्ग थोड़ा बहुत मूछा—भागो उन्हीं के भाग
के वह मुकप हुआ हो ।

×

×

×

मानसिंह मानसिंह से गुजरी महल को आ रहा था । अग्रमा के
बुझने प्रकाश में मानसिंह ऐसा प्रतीत हुआ जैसे ध्यान-मग्न हो । थोड़ी
दूर सड़ा-पड़ा देखता रहा फिर चल दिया । मदनपत्नी के पास पहुँचकर
उठने कहा 'मानसिंह मुझको अभी अभी ऐसा लगा जैसे ध्यानमग्न हो

मदनपत्नी बोली 'कभी वह हँसता हुआ जान पड़ता है कभी काटा
हुआ धीरे कभी ध्यान-मग्न । किसी दिन उसको रणभरी का भी काम
करते दृष्टे देखेंगे साथ ।

उसी समय नरसिंह मुनार्ह पड़ी। दोनों मुनने लगे। मूखी मूख
कांपने लगा। बन्दनवार बाके द्वार भूमने लगे। ऊपर की सीढ़ी बड़ी
पहाड़ी के ऊपर सीढ़ी सीढ़ी भूमा सी भूमने लगी। वे दोनों एक दूसरे
के धनु में पड़ गये। तपठ मने धीरे धीरे साने लगे।

प्रलय आ रही है। मानसिंह के मुह से निकला—दसके पड़े
महि कृष्ण धीरे कर मिया होता।

वे दोनों एक दूसरे से बलभे हुये फिर पड़। मानसिंह की धाँसे
मिच गई। धुननयनी की कुली थी। वृष्टि स्थिर। हूठ सटे हुये।
मुठिया कसी हुई।

‘कोई बात नहीं। भगवान की मुस्कान का ध्यान करिये। धिब के
तापक का। धीरे धीरे सानि के साथ मेरे प्राणनाथ धन के धन के
सामन उठ जाइये।

विषयबन्धन ने दिन में सात बज काम किया था बैठा कि सतक
निबम था। अब अपने सम्ये केसी में ठेक डालकर बाही के बनेऊ में
बैठे धिबनिन का हाथ में लेकर प्रार्थना कर रहा था—सुत का बनेऊ
सतके सम्प्रदाय में निपिड था। उसी समय बर्जन-सर्जन हुआ। उसने
धाँसे खास थी। नर की सीढ़ी काप उठी। वह अपने धातन पर
बुनते-बुनते मुड़क गया।

बोना धिब का कमर बजा है। तापक का धारम्भ है। कर्मभूत
का दुराचार धत्ताचार तुमकी असह्य हो उठा है धनधन। धरत में लो।
तुम्हारे लोक में बड़ी पहुँचता है।

बीबन घर उसने कायक—काम पेट भरने के लिये परिश्रम किया
था। सतक निरवाध था मुक्त सटीके काम करने वाले सब धीरे-धीरे धीरे
कैलास बर्जत नर धत्ताचार पहुँच जायेने।

नामक बैजू ने भटपट बोझ सा ला-पीकर तम्बुरे को हाथ में लिया और एक नये छय को ध्रुवपथ में बिठमाने का प्रयत्न करने लगा । तानों के बीच में गर्जन-तर्जन की हुंकार उठकी ऐसी लगी जैसे किसी ने पत्ता-पत्र पर मोर की नापें बी हों परन्तु उस गर्जन-तर्जन का मेस बैजू के शरीर की ठान में न बैठ ।

बिल्गा पड़ा — 'क्या करता है ये ?

घाँसे कोनीं तो वहाँ कोई नहीं । दीवार की कुटी से टपी बीछा काँप कर झड़झड़ा उठी ।

बोला, 'तरस्वती माता कहीं बैसुरा हो गया होऊँ तो धमा करना । बीछा झड़झड़ा कर झपाटे के साथ नीचे गिर पड़ी और वह स्वयं तम्बुरा सहित एक घोर लटक गया ।

कोस है रे तम्बुरा मत फौड़ डाम मेरा ।

X

X

X

सैठ साहूकारों और सम्पत्ति वालों ने अपनी बन-सम्पदा के लिये हाथ हाथ मचाईं किसान मजदूर अपने बच्चों को गिरते पड़ते धन लन से डकने लगे । बहूतियों की कच्ची मईयाँ ऊपर से दूधकर सा पड़ी । रोने कमबिमाने लगे ।

तब बिगट भूकम्प असाधारण प्रमाण झोक गया—रहा बोड़ी देर ही परन्तु बरा को उगाड़-पछाड़ गया । भूकम्प के शान्त होने पर लोगों को विश्रित हुआ कि भूचाल आया था ।

मिस्तर लोरी के बीचान घाम में लीम पधार्हें धा-धाकर उठे बैठ, पनाशन रोपन किये लगे और ठी हुआ कि ग्वालियर पर कुछ रिमों घाबलग्न नहीं किया जायगा ।

माँ में मझीरहीन ने बहोती से हीत में धाकर बकबात की, उसकी बिरी-मड़ी परिमों ने बाये टटोले और कानड़े सेनाले जब तक तिनाही

इकट्ठे हों, तब तक सभी बैद्यवारी छोकरे मार्ग को स्वच्छ पाकर गो रो ग्याहू ही गये । पछियों की धुमार का काम कुछ दिनों के लिये स्थिर हो गया ।

गुजरात का सुस्ताव महामुख बनरी मुखिम से जाबनों पीड़े और पलंग से पीछा छूटा सका । अब आड़-पोंछकर उठा तो लम्बी दाढ़ी धीरे मुँहों को बेहल पाया । कपबल्ल बनबले ने खाना कराव दिया तो किया दाढ़ी मुख पर भी कहर बरसा दिया । सुवेरे के कलेबे की प्रतीक्षा में घोर स्यावनी को वचाबिचि स्थित करन में उसने अपलक रस बिताई । माने बड़ना मजहूस समझ कर गुजरात को लौट गया ।

बालबिह ने देखा सब ज्यों का त्यों है । अब धानि सुनी तो मूवमयी को स्तिर बैठा पाया ।

‘यह सब क्या था ? मार्गसिंह ने पूछा ।

मूवमयी ने कतर दिया, ‘भूकम्प । हम सबको कर्तव्य का स्मरण दिलाने आया था ।

विजयजयम ने देखा कंजाध पर्वत पर नहीं पहुँच पाये । कामक—
धम—को घोर भी जवन के साथ धपने बीचन की बड़ियाँ हूँवा धम में कंजाध की प्राप्ति वप्रतिषर्भ है । उसने निश्चय किया ।

बनू ने कहा ‘माता धरस्वती तुमने अपराध क्षमा कर दिया है । कर दिया न ? कभी मूल से बेसुरा या बेताल होगया हूँवा धाने कभी ऐसा न होया कान पकड़ता हूँ । आतिबर में इतने बेसुरे घोर बेताल बड़ बने है कि ठिकाला नहीं । ही न हो वह लम्हीके पापों का फल था ।

कुछ पकड़े बकल टूट गये थे कुछ बरारें प्य गय थे । अपकी जोड़े ही समय में मरम्मत होपई । मिरे हुये कल्ले मकानों की मरम्मत में बराब दिन लग गये । बरिष्ठ किसान मजदूरों की शोपड़ियाँ ऐसी गिरपई की कि समझी मरम्मत ही ही नहीं पकटी थी । मजदूरी से अब-अब सबको

प्रकाश मिला तब तब अन्होंने बोड़ा बोड़ा करके मछाना इकट्ठा किया और काफी समय में रहन लायक झोंडियाँ बनावाई ।

मागविह न राई की पहचान पर यही का बनवाना शारम्भ कर दिया, परन्तु वह काम उतनी धीमेता के साथ नहीं होरहा था जितनी तत्परता के साथ उसकी कला-सेवा चल रही थी । मुबनबनी की बिचपाना का वह बिच बड़ी मधुरा था ।

[१४]

म्हानियर नर में सधाचार फैल गया कि एक महारमा रामेश्वर के पैदल चलकर म्हानियर जाये हैं केवल सर्वोटी सपाठ हैं, नीम के बत्ती पर नुबूर करते हैं और ध्यान में डग्न रहते हैं, म्हानियर से दो तीन कोस उत्तर की ओर मोठी भील पर ठहरे हैं । अंगोटी और नये पाँच । फिर रामेश्वर से म्हानियर ॥ उस पर ध्यान ॥ जगता पर धारण का गया और वह धारणपर्यण सदा नर प्राप्ति के लिये समझ पड़ी ।

मोठी भील को मानसिंह ने लपार करवाया था । अरम पूरा हो चुका था । सबसे नहर विकास कर वह घासपास की भूमि की विचार का आयोजन कर रहा था । मूकम्प के कारण भील कई जगह लपट हो गई थी । मानसिंह ने मरम्मत ही नहीं करवाई बल्कि कुछ जगहों के भीतर भील के बाँधों को और भी ऊँचा और चौड़ा कर दिया । महारमा इस भील के किनारे बाहर ठहरे थे । राधा से मिलना चाहते थे — या बीसा कि मानसिंह से बात ने कहा महारमा दर्शन देना चाहते हैं । परन्तु दर्शन देने के लिये राधा को मोठी भील पर स्तब्ध जाना चाहिये । विजयजङ्गम को भी सामूह्य हो गया ।

राधा महारमा के पास जाना चाहता था । वह चौ-साठ सौ कोस की दूरी से महारमा दर्शन देने के निमित्त प्यारे हैं, हम क्या दो तीन कोस भी चल कर न चारों जनके दर्शन करने ?

विजय ने निवारण किया 'दोभी और महारमा इस तरह मारे-मारे नहीं फिरते । जिनको धार्तक कमाने की पकड़ी है वे ही करते हैं ऐसा । सरस्वी हैं, जिन देने में क्या बुराई है ?

इस प्रकार की समस्या करने वाले तीनों का केवल एक उद्देश्य होता है । परलोक की प्राप्ति चाहे हो या न हो वे लोग इस लोक को पपनी इस समस्या के धार्तक से मृष्टी में बना देना चाहते हैं । आपने कई बर्ष हुये

मेरी धीर एक वीर्यवान् के विचार पर कुछ इसी तरह की बात कही थी। स्मरण है आपको ?

‘हैं कुछ बंभला सा स्मरण है। बोधन पुत्रादि ने उस दिन सबसे पहले बूढ़ी रानी की बाण-विद्या का राई से धाकर समाचार दिया था। दुराणों में धनेश स्वर्गों पर पड़ा है कि योगी राजाधों के पास उपदेश के निचे बसे धीर राजाधों ने उनका धावर सरदार किया।

‘उस युग की बात जानें बीजिये। इस युग की सोचिये। धनमी बनता पर हमका प्रभाव पड़ता ? मेले धीर हाटें लम उठेंगी। तुम्हों से मुड़ होने वाला है बनता धीर सेनिकों का ध्यान धनने कार्य को छोड़कर उनके हों की तरफ लम देता।’

‘जैसे हो धीर न भी हो बननी नहीं जाता है। सोचूंगा।

मानसिंह भी दिन तक नहीं गया। उसको समाचार मिला कि योगी ने धनधन कर दिया है—‘जब तक राजा धाकर मुझसे नहीं मिलेगा, तब तक नीम की पत्तियां भी नहीं खाऊंगा।

मानसिंह धस्विर हो गया।

विजय ने कहा ‘महाराज वह मर जायगा तो एक मूर्ख पावल कम हो जायगा।

‘बैजू की भी नीम पावल कहते हैं पर क्या कोई चाहता होता कि बैजू मर जाये ?

‘बैजू विद्या का पावल है यह योगी कहलाने वाला मूर्ख यहेंधार का पावल है।

‘मैं उनको धनधन करके नहीं मरने दूंगा। उसके इस प्रकार देह का धन करने से बनता के ऊपर बहुत बुरा प्रभाव पड़ेगा।

मानसिंह नहीं जाना। योगी से मिलने गया।

बोपी दुखले छारे छरीर का था। सम्झी कसीभी बाहें। देख से
जवान छीर बालो से छी बरस का। पाँखें बमती हुई। मानसिंह ने
सोचा योयाम्मास के कारण सोने बीसा तर गया।

मानसिंह ने प्रणाम दिया। उसने बरबहस्त छठमा। बोपी न कहा
'इतना बमण्ड है तुम्हको।'

मानसिंह का स्वाभिमानी क्षणियस्व आगा परन्तु कसामों की विनम
ने उसको निर्बन्धित कर दिया। बोसा बमण्ड के कारण नहीं बुझ की
तैयारी में फसा रहन के कारण नहीं घा पाया।

'उसी के सम्बन्ध में कुछ बतलाना चाहता हूँ।'

'घाब्रा हो। पालन करने की सोचूना।'

'कितने सैनिक तैयार हो गये हैं?'

'पचास सहस्र यहा पक्कीस सहस्र नरवर हैं। जम्बल नदी की
बीकियों पर एक-एक हो हो सहस्र तैयार है।'

'बीकियों की बात जाने दे। छीर बढ़ा सकेगा?'

'कठिनाई के साथ परन्तु प्रयत्न कल्या?'

'जवाबियर के किले को ठीक व्यवस्था में कर लिया है?'

'ठीक व्यवस्था में है।'

'गुरजों की ठीक रचना कथाविद् जानस्यकता पढ़ जाये।'

'छात्र सुबरी है।'

'कितनी है?'

'एक।'

'कहाँ की गई है?'

बज्जल पहाड़ को, परन्तु महाराज गुरजों की धान है कि गुरज का
हान सिवाय घनने पुनों छीर सेनापति के किसी को भी न बतलाया जाम
इतलने छीर घागे कुछ नहीं कह सकता।

कोई बात नहीं कोई बात नहीं। मूढ़ की तैयारी की धमेछा मजन घोर पुत्रा में पक्षि मया यह घोर धरने सैनिकों की भी मया। इसी से कस्याण होना। आ धर मुझको मत भर। ध्यान लपाईया।

मानसिंह बला आया। वह योगी की कत्तीलो ईह और सनेत्र नेत्रों से प्रभावित हुआ था। बिजय आने को उत्सुक हुआ। दूसरे दिन बात चोत हो सकी।

मानसिंह ने उसको सब बात बतलाई। उसने कहा कोई विशेष महत्व की बात नहीं हुई। मुझको उसकी जनमयानी हुई देह घोर दमकनी हुई घात बहुत घण्टी मयी।

कोई महत्व की बात नहीं हुई। धार कहते क्या हैं। मेरा घोर क्रिमे का तारा भेद ले लिया उमने।

‘सब किमी पर गंका उठान का मुहारा स्वभाव ही है।

अब भी धारको उस तपस्वी के हाँग पर लगेह है। मूढ़ के बाल में धारको घोर सैनिकों की ओ मजन-मूजन में ही दूध बाल का धरने दे वह कैसा भी कोई हो मुझकी तो नहीं जबता। एक बार दिग्बाहसे तो उनको, है भी मोठी भीम पर या नहीं।

राजा ने घोत्र करवाई। योगी का पिछनी संघ्या से ही कोर बना न था।

‘महाराज।—जरा सीध रबर में बिजय ने मानसिंह से कहा मझकी तो वह धनु का जागृत नामूम पड़ता है। मेरा घोर मुरझ का भद ले गया। मेरा को निमगी जान लेने का जनना भेद नहीं है परन्तु मुरझ का भेद हाथ से निकल गया, यह बहुत बुरा हुआ। अब क्रिमे को धम से भर लीजिये। मुरझ पराजित हो गई है। धरक भीर पर न तो मुरझ से धम हत्यादि प्राप्त हो सकेया घोर न कोई सहायता। पस्ते बहा होकर धनु के क्रिमे में पुन बढ़ने की सम्भावना ही गई है।

मार्गसिंह को बहुत परित्याप हुआ । मृगनयनी के सब्बोवन का स्वरण हुआ—क्या कलाघों के परिशीलन ने मेरे मन की चौकसी को डीला कर दिया है ? कलाघों का इसमें क्या दोष ? बहुत करके वह कोई योगी ही था । उसका एक स्वाग को छोड़ कर दूसरे पर बल देना ब्रह्मा का कारण नहीं होना चाहिये । जलन-मुजल में लगे रहने का उसका उपदेश स्वाग किं ही था । योगी धीरे किस बात का उपदेश करता ? विजय का उन्हे भ्रम पर आधारित है । परन्तु यह ठीक है कि युद्धको सेना का सङ्गठन उत्प्रेरता के साथ करना चाहिये और उस सुरङ्ग को बन्द कर देना चाहिये । फिर बाढ़ समय पर रक्षा का साधन ? रक्षा का साधन भगवान का शरोबा और मुन्नाघो का बल है । सुरङ्ग को बन्द कर दिया ।

मार्गसिंह ने ध्वजिलम्ब सुरङ्ग को बन्द कर दिया । उत्प्रेरता के साथ युद्ध की तैयारी पर पिल पड़ा । राई की पक्षी संसार हो गई । अन्य पक्षी और बहिर्यों की भी उसने शरम्भत करा ली ।

शरमात धीरे एक दिन उसको समाचार मिला कि सिकन्दर लोदी ने विशाल सेना के साथ जम्बूद्वीप को पार कर लिया ।

[६१]

सिक्खर ने अपनी सेना के तीन खण्ड किये । एक को मरवर की रिया में भेजा और दो खण्डों को भिन्न भिन्न दिशाओं से ग्वामितर पर । राई के पास से जाने वाले खण्ड के साथ बहू स्पर्ध था । मरवर की घोर जाने वाली सेना का पता मानसिंह को नहीं लगा । उसने समझा ग्वामितर पर ही तीन ठरक से बढ़ाई हो रही है ।

प्रकाशिता करने की योजना सीधे बन गई । उत्तरी छिरे को मानसिंह परदेइता हुआ बीच वाले खण्ड को या बबोबेवा खिल्ली छिरे को मानसिंह का एक नायक इसी तरह बबाबेवा और बीच वाले को अलग रोक कर पीछे हटावेगा । बीच वाली सोमर सेना के सहारे के लिये राई को पड़ी अलग के अधिकार में । तैयार होते ही वह सबको मिल गई थी ।

राई की पड़ी में घटस के साथ लारी की जाना था । लारी मृग मयनी से बिछा सने छाई । वह पड़ी में एक बार रह आई थी ।

‘बाहली की यहीं बनी गई । लाली ने कहा । उसके पक्ष में कुछ घटका ।

मृगमयनी बोली ‘ये भी यही बाहली हूँ । मेरा से बड़े देती हूँ । राई की पड़ी कुछ बड़ी नहीं है । हम दोनों यही क्रिमे की रक्षा के लिये एक साथ रहेंगी ।

‘बहु कहते थे कि उन्हें बाहर-बाहर लड़ना पड़ेगा मैं बड़ी की हेतुमान और महायज्ञ के लिये भीतर रहूँ ।

‘तो भी वहां क्या करोगी ?

‘अभी तो नहीं हूँगी । कुछ घोर सरदारों की भी लिखा होता । पहली लड़ाई के समय गांव के मरनारी बंधनों में भाग कर बहुत बन्ट भेजते रहे — मैंने तुमने ही क्या क्या नहीं अनुता था — सब की बार के सब बड़ी में आ आने ।

‘घोर तो कोई बात नहीं कहीं धिर न खाधो नदी में ।

‘धिर तो कहीं भी सकते हैं ।

‘यहाँ समाजना कम है । पर असम में मोह साब में रहने का है । सोचती हूँ पैया के पास तुम्हारा रहना उस खेटी ली नदी में अधिक उपयोगी होना ।

‘मैं भी वहीं सोचती हूँ पर न जाने मन क्यों बैसा हा रहा है । अच्छा अब तुम अपनी उसी मुस्कान के साथ बिना बो बिसके साथ पहले राई-गड़ी को भेजा था ।

मगनयनी के होठों पर मुस्कान घायल घोर घाँसों में जल । साखी की घाँसों से तो बड़े बड़े घाँसू टपक पड़े । दोनों एक दूसरे से मिष्ट बई ।

मगनयनी अपने को संयत करके बोली ‘कोई संकेत घाटा बिखलाई पड़े तो तुरन्त समाचार भेजना मैं यहाँ से सहायता भेजूंगी ।

‘यदि समाचार भेजने का सुमीचा न हुआ तो ? साखी ने पूछा ।

‘तो कोई ऐसा संकेत करना जो यहाँ तक बिख आय । मगनयनी ने उत्तर दिया ।

साखी ने ऐसे संकेत को सोचा । उसको गरगर का स्मरसु हो गया । मटों ने उस रात एक बड़ी होसी जलाई थी । साखी ने गरगर से आकर बतलावा का फिर सुनाया ।

मगनयनी ने कहा ‘मुझको भासा है कि धनु को जबकी बार भी उसी प्रकार पीछे हटा दिया जायगा जैसे पहले कई बार हटा चुके हैं ।

साखी जैसी यई । चलते समय उसने मड़कर एक घाँसू घोर डल-काया था ।

सोजना के घनसार मानतिह भी क्रिके से बाहर लड़ने के बिज जता गया ।

मगनयनी ने दूसरे दिन अपनी बिजसाला के उस धमुरे बिज के कर्तव्य-विधा वाले रंग में कुछ नीर रंग भरे । परन्तु बिज अब भी धमुरा था ।

[१९]

मरेना के निरुद्ध घातमयूर के ऊँचे भीचे वीक्षणों में पहली टक्कर सिम्हर के उत्तरी कण्ठ से मानसिंह के वल की पहल्ले हुई। मानसिंह का हाथी-रस सिम्हर की सेना के हाथी-रस के सामने नहीं था परन्तु सड़ते-मड़ते इन दोनों रसों की मुठमेंड हो गई। मानसिंह बोड़ पर था। उसको हाथी की मयेजा घपने बोड़ पर घबिड़ बिम्बात था।

दोनों रसों के हाथी-समूह बिबर कर लड़ने लगे। परन्तु हाथी से हाथी टकराते कम थे। बोझते बिबाधते घबिड़ थे। हाथियों के होड़ों पर से दोनों रस तीरों की बर्या कर रहे थे। मोबा भारी कबल म्निममोद घीर तब बडामे हुये थे। सभिये एक दुसरे को बहुत कम हानि पहुँचा सके। कपारी मझाई वीरलों घीर सवारों की हुई।

मानसिंह ने देखा दिम्बी की सेना के एक घण्ट में विविध आकार प्रकार के बिनाही कसगह लड़ रहे हैं। रज्ज तापियां माथ मकड़े घाँने छोटी ताक बिपटो-बिपटापन मानो काय तक जा रहा हो—मँह बोड़ा बीसे बिना हँसी के हँस रहे हैं। गाल बमड़े की मुत्तादियों जैसे फूले हुये घीर गाल की हड्डी उठी हुई, सिर कम्बों पर लटा हुआ मानो मदन हो ही नहीं ठाड़ी के ऊपर बाल बहुत बोड़े। उसने इनका बर्णन वहीं बड़ा था—हुस है आज कल के समय मपोमर्मन ने कभी पहले इनके पुस्तों को ठोका था घाय ने देखा है। मानसिंह ने मुरम्न सोमरों के धुड़ सवार इन की इन पर दूट पहने की आजा दी।

तोमर दूट गड़े। मुरल वीरनों की सहायता के लिये मुई-मबार माथ परन्तु तोमरों का बय ग्रहार ही पड़ चुका था। मुरगन सैनिक जान पर मेन कर सड़ने मग पर तोमर सवार घापी की तरह दूट थे। मुई सवार उन वीरनों की रक्षा करने नहीं था पाये थे कि तोमर सवारों ने उनको लममन बिद्या डाला। मुई सवारों से मानसिंह का बय 'दर, दर महारथ। की पुकार मयाजा हुआ जा मिहा। मुई सवारों ने मज बिना

दिया। तोमर सवार जिन्होंने मूलतः पैदलों की पीठों को तोड़ा था दूसरी ओर से उन पर झट पड़े। थोड़ी ही देर में तुर्क सवारों को पीछे हटना पड़ा। उनके साथ ही दिस्सी की सेना के अन्य पैदल सिपाही पीछे हटे। फिर दिस्सी की सेना लड़ते-लड़ते पीछे हटती ही गई। दिस्सी के हाथी समूह ने जब अपनी सेना के एक बड़े घंघ को पीछे हटते देखा तो वह भी लौट पड़ा। संघ्या तक यही होता रहा—दिस्सी की सेना का यह बाजू हटता हुआ बीच बाँके खण्ड से वा मिला घोर झट गया। मानसिंह ने अपनी सेना को घटोरा और एक सुरसिंह स्वाम पर रात के लिये पड़ाव बना लिया।

प्रातःकाल फिर युद्ध आरम्भ हुआ। जब दिस्सी की सेना बहुत सावधानी के साथ बढ़ रही थी क्योंकि पहले दिन उसकी काँड़ी हानि हो चुकी थी। सेना का संवामन सिकन्दर लोधी कर रहा था।

मानसिंह के खण्ड का सम्पर्क बीच बाँकी टुकड़ी से हो गया जिसका नामक बटम था। पीछे पछरें और जङ्गल रखा के लिये वे घोर उनके पीछे राई की गड़ी। बायें हाथ की तरफ तोमरों का एक दल नरवर की ओर मोड़ी गई दिस्सी की सेना से टक्कर लेने की छिड़क में था परन्तु यह टक्कर नहीं हुई। सिकन्दर ने रात में ही उस टुकड़ी के पास आदेश भेज दिया था कि लौट कर मानसिंह की पूरी सेना पर पीछे से छापा मारे।

दोपहर तक सफ़ाई साधारण बलि के साथ चलती रही। तीसरे पहर उसमें अचानक तेजी आ गई। मानसिंह के बायें बाजू से कटरकर नरवर जाने वाली टुकड़ी ने पीछे से बाबा किया। वह पछरों और जङ्गलों में होकर आ गई थी।

मानसिंह ने घटत घोर अन्य सरदारों से कहा तुम लोच कैन्द्र को संभाके रहना। कैन्द्र को पीछेकर तुर्क आये न बड़े पार्वे में निबटता हूँ वन ओलों से।

घटम घोर दूसरे सामान्य उरसाह के साथ केन्द्र को बामर नङ्ग लये । मानसिंह पैरलों घोर बुकसबारों को लेकर पीछे से घाने बानों पर धमक पड़ा । हाथियों के दल को उसने इनके पोछे येजने की छात्रा भी ।

मानसिंह के भिये बङ्गल की मङ्गाई कठिन पड़ रही थी ठी दिल्ली की सेना के भिये घोर भी घबिच बठोर । दिल्ली की सेना को बीरे बीरे पीछे हटना पड़ा । धंघ्या तक मानसिंह ने उस सेना को बिलकुल हटा दिया परन्तु वह हटकर फिर सिकन्दर के बङ्ग के सम्पर्क में था नहीं । मानसिंह का हाथी-दल इसका पीछा न कर सका ।

इस बङ्ग को एक नये कोच से भाटा हुआ देखकर घटम का केन्द्रीय दल हिल गया । सिकन्दर ने घोर का धाकमल किया । नय कोण से घाने वाले दल ने भी बकसा पहुँचाया । मानसिंह के केन्द्र को घटर की घोर हटना पड़ा । सिकन्दर सामधानी के साथ कुछ घोर बढ़कर दक गया । रात में मानसिंह घटम वाले दल के साथ सम्पर्क स्थापित न कर पाया । घनेघ होते ही मङ्गाई फिर धुक होगई । घटम के दल को पोछा घोर हटना पड़ा । जब उसके भिये सिबाये न्यातिघर या राई जाने के घोर कुछ नहीं मूक रहा बा । राई की मङ्गी निचट थी । वहाँ से मानसिंह का सम्पर्क हाथ लग सकता था इसलिये रात होते ही वह घरमें दल के साथ राई की मङ्गी में घापया घोर वहाँ से लड़ने की योजना बनाती ।

दिन में मानसिंह को घशिण की रिघा से सिकन्दर की एक बड़ी टुकड़ी से सामना करना पड़ा । वह टुकड़ी घई मोलाघार सा बनाकर मङ्ग रही थी । एक सिरे पर लम्बो होकर बटल के दल से घोर दूसरे सिरे पर मानसिंह के दल से निङ्ग रही थी । मानसिंह का केन्द्र पीछे बा बकसा या इसलिये सिकन्दर ने घघने घई मोलाघार में से एक टुकड़ा बा लम्बा तीर बा बनाया । मानसिंह ने सिकन्दर की यह बात परता सी घोर उसने दो बाबघों में अरनी सेना को बाँटकर दोनों पक्षों का पीछे हटाने का प्रयास किया । परन्तु सिकन्दर का यह तीर राई की रिघा में बङ्गल की उरछ छाँटी

पसकर फँस चुका था । रात हो जाने के कारण मानसिंह इसको पीछे न हटा सका ।

शील दिल के युद्ध में सिकन्दर की बहुत हानि हुई, परन्तु बीस दिन उत्तर की दिशा में उसको मुन्नाइयत बिलसाई तक गई और उसने एक दल लेकर बाहर ग्वालियर के निकटवर्ती क्षेत्र को अधिकार में करने के लिये रखा । मानसिंह को मायूस होपया । उसको ग्वालियर के दक्षिण पश्चिम पक्षपर गौन की ओर से सिकन्दर के उस उत्तरी बाजू और ग्वालियर के बीच में जाना पड़ा । उसे जान पड़ा कहीं ऐसा न हो कि ग्वालियर फिर बाय ओर हमको बाहर से लड़ना पड़े । मानसिंह के उस तरफ मुड़ते ही सिकन्दर ने घटम को दुकड़ी को राई गढ़ी में घेर लिया । गढ़ी ऊँची पहाड़ी की चोटी पर थी । उसके चारों ओर बहरी लोहों की । पूर्व की ओर, गौन और साँक नदी की तरफ बड़ी ऊँचाई थी । दक्षिण, उत्तर और पूर्व इस प्रकार सुरक्षित थे परन्तु पश्चिम की दिशा में गढ़ी के नीचे ज़मीन बहुत नीची न थी । उसने यहीं दुकड़ा के साथ सामना करने का निश्चय किया ।

मानसिंह को घटम का कोई समाचार नहीं मिला । उसको विश्वास था कि पूरी दुकड़ी राई-गढ़ी में होगी परन्तु ग्वालियर की पूरी रक्षा का ब्यापक क्रिये बिना वह राई गढ़ी की ओर नहीं जा सकता था । तो भी उसने सिकन्दर की उत्तर वाली दुकड़ी पर ब्रह्मच वेध के साथ छापा मारा । सिकन्दर की उस दुकड़ी की हानि के साथ पीछे हटना पड़ा । सिकन्दर राई गढ़ी के चेंरे के लिये अपने एक दल को छोड़कर भागे पड़ा । मानसिंह ने उसकी उत्तर वाली दुकड़ी को पीछे हटायी ही था कि सिकन्दर का ब्रह्मच दल दक्षिण की दिशा से उसकी टक्कर में आगया ।

मानसिंह ने वेध के साथ सामना किया । सिकन्दर का आक्रमण भी बिफट टैजी के साथ हुआ था । सिकन्दर ने ग्वालियर के क़िले और ग्वालियर के निकटवर्ती पर्वतों को बराने का बहुत प्रयत्न किया परन्तु यह बार बार विफल हुआ । समुद्र की गढ़ी और मारी बहुरों की तरह उसके

सवार सौमरों पर दृष्टी घीर जैसे ममूद की लहरें पहाड़ से टकरा टकरा कर बीच लौट लौट जाती हैं ऐसे ही उनको इन्हें-हट जाना पड़ा ।

रात होने पर मानसिंह ने देखा कि आम्बियर के किले में पहुँचकर वहाँ के गड का संभालन करना पयाबा सम्भवा होगा इसलिये वह किले में बसने लगा गया । शिकन्दर ने आम्बियर घीर मानसिंह की बिचारी हुई स्त्री को लोभे लक बेर लने की योजना बनाई थी परन्तु भोर होउ हुआ उसने देखा कि सेना घीर पूरे सामान के साथ मानसिंह किले के भीतर जाता गया है । उसको अपने कई पुराने धनुषों का स्मरण था । इसी प्रकार मानसिंह को शिकन्दर के पिता बहामान ने उभीस लीस कर्षे पहले बरकर हान का प्रवास किया था और इसी तरह कई बार उसने स्वयं प्रयास किया था परन्तु प्रत्येक प्रयास पराजय में परिणत हुआ । वह उन धनुषों को बुझाना नहीं चाहता था ।

किले में घुसने के लिये या किले पर चढ़ जाने के लिये कोई भी साधन सम्भव था । विद्युत् कील कर्षों में जो जो कोमिर्षों की लई थी वे सब धमकन हुई थी । हाँ सी हाथ की खड़ी हाथ के किले में आक्रमण करिषों के हमारों सिपाहियों के प्राण उन प्रयत्नों में के लिये थे ।

उसने अपने प्रयास जानून को बुलाया ।

वहाँ है वह मुराद ? शिकन्दर ने पूछा ।

पुलके छोटे छोटे के जानून ने — उनके कैदरे या छिर पर लकट बाध नहीं थे वहाँ जहाँनाह बाध के इन्ही जङ्गलों पहाड़ों में लड़ी है । मानसिंह से सिर्फ इतना ही निकल पाया था । कल दिन में ललाच कर ली पायेगी ।

दिन निरतने पर मानसिंह घीर शिकन्दर की सेनाओं की कोई घुट बेद नहीं हुई । शिकन्दर ने चारों तरफ से आम्बियर को घेर लिया परन्तु दोषों चर्षों के लैनिक यकाच के मारे लुर हो रहे थे, इसलिये विषाम

करते रहे । जानूसों ने मुरझ का पता लगा लिया और सिकन्दर को
जगह दिखावायी परन्तु वह बन्द थी ।

‘इसको पोता जा सकता है’—सिकन्दर ने कहा,— फिर दिन और
रात में खासियर पर हमला ऊपर घीर गोथे दोनों तरफ से किया जाय ।

मुरझ को रोलने का प्रयत्न किया गया कुछ दूर तक ठोसे पत्थर
मिले उनको निकाल लिया गया परन्तु उसके बाव ठोस बनाई मिली को
राक्षस नहीं हिलाई जा सकती थी । सिकन्दर को निराश होकर खीटवा
पड़ा । रात में दिस्सी का शिबिर सतर्कता के साथ विधाम-याम होबया ।
सबेरे कोई नई तरकीब निकालूंगा सिकन्दर सोच रहा था । घाघी एत
के मधनग सिकन्दर के शिबिर की सतर्कता कुछ शिबिर यह गई । और
का इस्मा हुआ । विधाम याम मेनिक आम पड़े । छड़छड़ाकर उठ बैठे,
और हमियार पकड़ कर दूर उधर फैल गये । बूँबूके प्रकाश में तीर
घा घाकर चले जात रहे थे । बहुत से सिपाहियों के मारे जान के बाद
सिकन्दर की सेना खासियर की सेना के निकट आ पाई । उसकाट का
यद्ध होते होते फिर कई ओर से सिकन्दर की सेना पर तीरों की बौछारों
पर बौछारें धान समी । सेना को कुछ पीछे हटना पड़ा । जब तक तितर
शितर सैनिकों को इकट्ठा करके व्यवस्था स्थापित की जावे तब तक लड़ाई
ने मिये बहुतों कोई रहा ही नहीं । रात के तीसरे पहर सिकन्दर ने देखा
मानसिंह का कोई हस्ता किसी न किसी मुरझ में होकर आया और कुछ
छान पड़बादर सील गया उकर कही कुछ मुरों घीर है । शिनका पता
जानूसों को नहीं लगा था । पता दिन में लगाया जावेगा उसने सक्त
किया ।

[३]

जिन घर धामधान होती रही परन्तु मुरझ का पना नहीं बना ।
जि घर ने सोचा राई गरी को ही ममान करदें तो कुछ तो समीप
जि न जायवा ।

गानिपर के बरे को सोझ सा धीरे धाम बसाकर समने राई बड़ी
पर पान को फेगित किया । घपर कोई गुप्त हूँ तो परे के बाहर
हूँ । इसमिये सब राउ में छाने का हूँ नहीं रहेवा उमने रचना की ।

राई बड़ी पर अपने पर हृमक किये गये परन्तु सख्त नहीं हुये ।
गरी को बरों पर बड़े बड़े पावरों क डर ब आ ऊपर से मुड़ाने जाकर
रायमनकारियों को घन मय मये के जाते थे । नीरों को बोझार
हूँ ही रही थी ।

उम राउ मित्रदर की सेना पर काई छाया नहीं पड़ा । दूसरे जि
जि मुरझ को गात्र की मई को पड़ा नहीं सका । राई गरी पर फिर
स रचना रिप वय परन्तु संघ्या होने पर फिर बही विफलता हाव मयी ।

माधीराउ के उरालन उनको ध्यान की पर फिर छाया पड़ा । सबको
जा का बदन तीव्र था । परन्तु मित्रदर भी उसका पक्का धोउने के
जिने रसना मैदार था । धारामार प्रकण्डता के नाच लड़ने-मड़ने पीछ
हूँ रहे थे । मित्रदर मोर सब धारामारों को बिनी तरह भी धक्कामै
र ना बाहना था । उनके बहुत बिराही ह्माहम हुये । मोर होने होते
समान एक छाने में हम को छोड़कर बगी गात्र हो पर । हम धार
हूँ के का ब बिनी भाँति भी उझार नहीं कर गये धीरे उनका विमोह हो
जाता था । जहाँ जाने होते उम छाने में हम में बचन एक बचा बाकी
गार मड़ने मड़ने मारे गये । जो बचा था वह भी बेगारह पादम था ।
मित्रदर ने उनकी मरहमारी कबाई परन्तु बट मरगावत्र होबुवा था ।

मित्रदर ने उनकी गुलामाउ । गुलाम गुम मोव विधर के जाते थे ।

बायस ने क्रिसे की बीर संकेत किया ।

सिकन्दर को प्रोत्साहन मिला । बुझरा प्रसन्न किया 'किसी सुरंग में हाकर भाये य ?'

माहूत ने हामी मरी ।

सिकन्दर को बीर प्रोत्साहन मिला । पुष्कार घोर बहरी की ।

'कहाँ लुकी है वह सुरङ्ग मेरे जवान ?

माहूत ने टूटे त्वरों में बतलाया 'बायें हाथ पर जो बाबड़ी है उसमें होकर ।

सिकन्दर प्रसन्न हो गया । दुरन्त कुछ सिपाहियों को सोज करने के लिय भेजा । सिपाही जोरकर नहीं भा पाये थे कि बायस का प्राणाम्य हो गया ।

सिपाहियों ने छीटकर बतलाया कि बायें या बायें हाथ की किसी भी बाबड़ी में सुरंग का कोई निम्न भाग नहीं है ।

सिकन्दर ने मृत योधा की तरफ़ घाँव घेरी । उसके चेहरे पर झंकी मुस्कान थी । मर चुका था इसलिये उससे अब बीर कुछ पाने की आशा न थी । सिकन्दर स्वयं बाबड़ी में सुरंग के सिरहाने की ओर के लिये गया । वास्तव में वहाँ कहीं भी सुरंग का निधान नहीं था । लौट आया ।

सहसा मृत सिराही के चेहरे पर निमाह आई । उसकी मुस्कान मानो झिझ रही हो ।

सिकन्दर बोला 'इसने बोझ दिया । कमबलत मरते मरते एक भूत बोझ है !'

सिकन्दर के बंदे के पहरे-बोझियों का बीजस प्रमाण करके उसने राई बड़ी पर भयंकर हस्ता मुलबाया ।

हमसे करते करते रात होने की आहँ पर अन्त में वही डाक केतोन पत । कुछ रात बीते पड़ी के पास पास घामि हो गई ।

लाक्षी ने सफ़ियों का एक बड़ा ढेर सपका कर बाग़ लपका दो ।
दो पड़ी में ज्वाला धपग से बाते करने लगी । हू हू करते लो ऊँचे धीर
रनाश ऊँचे जाने लगी ।

गामिपर में इनका प्रकाशोदितलाई पड़ा । मानसिंह ने उसको देखा
मृगनयनी ने भी । दोनों उसके धर्म की धामते से । दो बड़ी बीछे वह
प्रकाश कम हो गया । इसी क्षण मानसिंह की भेंट मृगनयनी से हुई ।

‘महापति राई बड़ी अन्तसिंह धीर लाक्षी संकट में हूँ । मृगनयनी
ने कहा ।

मानसिंह बुड़ वा ।

‘इतना ठो मामूम बड़ मया कि दोनों राई पड़ी में हूँ । उनके मंज
का निवारण कम करूँगा । राउ के बोधे पहर ऐसा प्रबन्ध आनमल
करूँगा तुम्हें पर कि वे बच नये तो कमी नहीं भूँगे ।

‘परन्तु धाप धरने को संकट में बहुत न दासना ।

‘हू ! हू ! ! हू ! ! ! संकट में धुनने के समय उसके धाने धीर बड़े
धन का भी ध्यान रखना पड़ता है मया ।

धन विनयाता के धन धपूरे धन में धनिक रख धरने का समय
बा मया है ।

‘मुझको एकधारा के निसे मोहू हो मया वा जाने नहीं होया नाबनी
मे बाहर धाप में न रहू मझनी इनी का पधनावा है ।’

‘निजम्बर डिने के बहुत निजम्बर धेरे को लयेगा वा रदा है यदि
धुह को धनकर उनकी सेवा को नष्ट कर सका तब तो टीक ही है, यदि
धना न हुआ तो धेरा नबन्ध निजम्बर धावेगा फिर करना तुम मनबाहा
लप्य देव ।

राई पड़ी से निजलाई बड़ने धाना प्रकाश विनमून कम बड़ मया ।
धामा वा एक विनरा हुआ वा धनका धान सिद्धिधर रह मया वा ।
मानसिंह धरनी धीरना के नवउज में मया ।

राई बड़ी के बास-पास बरा बासे हुये सैनिकों को बहु ऊँचा टीला प्रकाश देतकर कुछ बकराहट हुई, जान पड़ता है राजपूतानियों ने जोहड़ा किया है और राजपूत हम मोर्चों पर धम टूटने वाले ही हैं। ली के बाव हो जाने पर अब कहीं से कोई बाधा नहीं हुआ और कान लगाने पर भी बड़ी में कोई बहस-गहन नहीं सुनाई पड़ी तब भी मैं जी धाया। फिर इतनी धान बनाने का मतलब ? ठण्ड इतनी है नहीं कि तापने के धिये धान का इतना बड़ा झुंझा फहराया गया हो। कुछ बात पक्कर है। सरदारों ने सभाही की।

कुछ मन्त्रसे रात में ही बड़ी पर चढ़ जाने और भीतर जाकर बड़ी का फाटक खोलकर, बाहर वालों को भीतर करके बड़ी के दर को ध्वनि-सम्ब समाप्त करने पर तुल्य बने। उन्होंने रस्सियों और मसेनियों का प्रबन्ध किया और बड़ी पर चढ़ जाने की योजना में लग बने। भीतर प्राग के द्वास्त हो जाने पर बाकी ने घटस को वृत्ता कर रूखा 'बाधिपर' में विरहित हो गया होगा कि हम जोय संकट में हैं।'

'बहाँ भी घेरा पड़ा होगा। देखें कस क्या होगा है। मन्त्राचार जायद कस कुछ कर सके।'

प्राग रात ही में कुछ होगा।

'मोर्चों पर लड़ते-लड़ते बक बने हैं रात में कुछ नहीं हो सकता।

प्राग की रात बायने की है।

'यरी बाबें तो दूटी पद रही हैं।

'सुम हो जायो। मैं जानूँगी।'

प्राग के कुछ किसान जो शरण कर दिया गया में था पर वे भंडार के पास आये। उन्होंने प्रणाम नहीं किया—नियम हो गया था कि बितनी बार आनीरदार या मद्रपति के नामने कोई बाय नाहे नद मैनिह हो या न हो प्रणाम करे।

मृगनयनी

नाथ ! वह घातक मनुष्य जिसे मैं जानता हूँ, तू जानता है ।
के पास है घातक जिसे और से चौकी का नाम होता है ।
तोयेंगे ।

भैया ! राक्षसाह्व भी नहीं करता ।।

घटस कभी नहीं भला कि दुर्गा सोचों की कुरंग के कारण नरको
जाने दिनों उन मटो के साथ घटते फिरना पड़ा था ।

बटक कर बोला इस तरह हमारे पास थावा जाना है ।
उस का सऊर नहीं ।।

किसान नहीं समझे । मुकववा घर ।

उसका परिवार बोला तो जैसी कटो करेवे । बहुत बुरा था ।

बुरा न दार ही — 'बुरा काम प । मुकवी घर ।
पना प्राण पीन २० ह ।

किसानों को विराम था कि घपनी मापीर को रवा के निर लड़
एा है । बर्त में कुरबाउ बल मवे । सागी का मातुम हुआ था नि एवे
। उन पर उनको चौकी है जहाँ म म्क क उपर कउ घाते की संभारना
कम है ।

उसके घर जाने पर मागी न म्म म्मे कड़ा भूम मा बाघा मे
पमान क निर बाघी हुईवी ।

बहु जाना ही बोड़ा सा सो म निर म्म म्म घना देना घोर
गो जाना ।

घमन का लम्बा घोर लम्बा सा म्मा । मागी ने तीरों बरा तरकम
उठाया कमर में लम्बा बंधी कम्पों घोर छापी पर नव सदाय घोर
बलही ।

मभी म्मा पर उमन मुक न कुरा घामम्य पाया । म्मका न्मका
न उम म्मन पर घट्टी जरा उन जिमाना की चौकी थी । निहा
उंर रहे वे कुरा सा म्म थे ।

उसने उससे धीरे से कहा 'तुम नौस घर जाकर सो जाओ। मैं बोड़ी देर यहाँ ठहर कर बहरे को बदल दूनी।'।

किसान चौंक पड़े। पहचान देने का झूठा हठ करने लगे।

साखी झूठ थी। उसने बुमार को साथ सनको बिछा कर दिया।

किसान लपुटे गये 'जोगों ही अपने गाँव से हूँ पर कहाँ साखी घोर कहाँ बह।

बढ़ी में दल छिने के मोचे एक बड़ा पेड़ का जिसकी मुम्पट घोर घाबे ऊपर एक घाई थी। इसकी छाया में वे किसान पहचान देते देते सो बैठे थे। साखी उत्सुकता के साथ बठ गई। उसकी घाबों में नींद या ऊँच का केस मात्र भी न था।

बोड़ी देर बीठी रह कर बह साड़ी हो गई। कमरों के धरोखों में होकर मोचे की ओर देखा। घण्टक धन्यकार। निश्चिन्त मन का कोई भी धोष नहीं दिखालाई पड़ रहा था। ऊपर लारे छिन्ने हुये थे। दूर की पहाड़ियाँ समीप लाने सीटीसी जान पड़ती थीं। टेढ़ी छिरछी बहती हुई साँक मरी की पल्लवी रेखा बकर मझिनी पार रही थी। दूरी पर बेरा घासने वालों के डरे की भाव मुनम-मुनम कर रही नदी के संकट को जवा-जवा दे रही थी। बीसे राई की डीप में लाहुर इस्पाधि बज्जली बालघर घट में प्रायः बोका करते थे परन्तु धाकमण्डारियोंकी रौवारोंकी के नारे थे बहुत दूर किसक गये थे। विधाय भैंरुओं की भीषी के घोर कुब्र नहीं मुनाई पड़ता था। मुमसान को छेवती हुई कभी कभी बड़ी के भीतर 'जागते रहो ! जागते रहो !!' की पुकारें भर मुनाई पड़ जाती थीं।

साखी को उन पुन्य-मेखी पुकारों से ऊपर खेचुरों के मोचे समन धन्यकार के पेट में कुब्र भर-बराहट मुनाई पड़ी। बिचलाई तो कुब्र पड़ नहीं रहा था काल जवाकर मुनने जयी। बोड़े से राख निरतम्बता रही। साखी ने समुमान जवावा बज्जल का कोई समूहोना। दीवार से टिककर बैठ गई। गरगर की बह गात्र उसको पार बाई। पृथी ही रात थी।

इससे भी अधिक ऊँची सीवार । गटों की चक्की के पाटों के बीच में हम दोनों । बोड़ी सी भी चुकती कि सब समाप्त हो जाता । अब तो बहुत मुरखित हूँ ।

बीने फिर बारबाराहट हुई । लाखी खड़ी हो गई । ध्यान समाकर मुना । कुछ नहीं मुनाई पड़ा । लाखी को बिस्वास हो गया बन्धन का कोई कामचर छिपते-मुकते पानी पीने के लिय मरी की घोर आ रहा है । नरसपट्ट बड़ी । लाखी का बिस्वास घीर भी पुष्ट हुआ । फिर देर तक बारबाराहट नहीं मुनाई पड़ी ।

लाखी ने कल्पना की ग्यानिपर में क्या हो रहा होगा । उबने को देख लिया होगा इन सबों से । कम राजा सहायता के लिये धारण राई गरी का सञ्चार होना बीर से फिर घबरी निमी से आ निर्मूखी । लाखी कई रात की जायी थी । नींद आ गई । सीवार के सहारे तिर लटक गया उबके बेच कमाव का ठकिया सा बन गया । स्वप्न हुआ जैसे घटने मर्तों का मृग्य पहाड़ की भाड़ी के पीछ से खड़बड़ाता-भड़बड़ाता हुआ भाया जाता आ रहा हो घीर वह एक हाथ से कमान घोर दूसरे में नींद लिय हुए निघाना बांधने की घुन में हो बोड़ी पर तीर बढ़ाया घीर बोरी गिचती न हा । पकटा कर कसन घाँस गोपी घीर मीठी । कमान पर हाथ डाला घीर तरकम को टटोना अब जहाँ के उहाँ प । करने तो वहाँ नहीं वे परम्पु बगन में बोड़ी दूर बम्ब का घण मुनाई पड़ा । बरन मोड़ी तो कुछ सीधे कँगुरों पर से प्राचीर पर उगलते दिगमाई बड़ । ये कौन है ? उसके मन में ज़रन उठा । क्या ये घटने है ? इनने में कँगुरों पर एक तिर घीर विलभाई पड़ा । वह धाकाता की घोर ऊँचा हुआ । जिन्नी ने सीवार के कण पर पैर रक्का घीर घम्ब ने भीने उतर भाया । फिर वह कँगुरों के झरास में न बाहर की तरक भाँटा घीर बीरे न किसी एमी जारा में बोना जिसको वह नहीं समझ सकी । ये घटने नहीं है तुम्हें है । उनको कोई संदेह नहीं रहा । पूर की जून से मुनाई पड़ा 'जागते रहो !

भाभी ने धारा का बढ़ाकर घातककारियों की निन्ता करनी लगी। यह पद की छाया के अन्तर में पठरीली वन घटी को घेर के गोड़ी की दूर झरमूट से घाँवे कठ्ठी कुछ गुँथ-गुँथ कर रहे थे। उनमें से एक बीमार लड़िका गहल ल भीतर घाने वाली को भीतर डगारन में लड़ावता कर रहा था।

छाती में घरना कर्मज एक जगह सर के भीतर निश्चर कर दिया।

बहुत हीने से कमान धीरे तरबत का कर्म पर से उठाया। पी? ने मुड़ी। एक बार प्रत्यक्षा पर बढ़ाया धीरे धाँधीर पर एक मदे निश्चमे रुँदे धिर का निशाना बाधकर छोड़ दिया। इधर तीर छटा उधर बीर निश्चमी धीरे नवापमुद भरमराकर पीछे के पीछे हो पम्म छल के साथ कुछ धीरे पड़ने वालों का अपने साथ केता हुआ गहरे दगदरे में नीची खड़ी हुई भीर को कुचमता हुआ समाप्त हो गया। पहा इन्का-मुस्मा हुआ धीरे वहाँ खड़ी हुई कुछ मुरमट में बहल-बहल मच गई। फिर मासी की कमान से धार तीर बनवना कर घूने धीरे इस मुरमट पर दूटे। कुछ मदे जिन्हीमि बाह-कगहँ पैदा की कुछ धानी के तर्कों से टकरा कर टपल गया। उस मुरमट ने भी समझ लिया कि तीर कहाँ था रहे ह। वहा से भी मासी पर तीरों की बीछार हुई। कुछ मनाते रुँदे निश्चम मदे। कुछ तर्कों से टकरा कर मलमला बवे। एक उलक कम्मे के नीचे से पसमियों के छोड़ के भीतर जा जाता। परन्तु लाती ने भीर कमान को नहीं छोड़ा।

इस मुरमट निश्चर गई थी। लाती को हा एक लड़े जलूम परें कुछ दूर दूँदे से। जा पहे से उल पर लाती ने धर्मिम तीर छोड़े। इन्हीमे बीबार के पगूर पर बड़न की जोशिम की परन्तु रस्सी का मनेनी का पता न सवने के कारण फिर नीचे था रहे।

लाती खड़ी हो गई। उसने तनवार निकाली। लौमी धा रुँदे मोर नाँसी से घाम रूँह से रक्त की पुहार बूझ पड़ी।

घटन घपने डेरे पर बसा आया । वहाँ से बिठा का प्रकाश दिखताई पड़ता था । क्या इस प्रकाश को निभी मे भी देखा होगा ? उसके मनमें प्रश्न पड़ा । वसे में कुछ घटकने ली हुषा । उसने तुरन्त दबोच दिया । प्रकाश की ओर से मुँह को फेरकर उसने घपने दलपतियों को आज्ञा दी एक पहर रात रहे जाएक खोनकर तुको पर दूट पड़ना है ।

जिनको घपने प्राण प्यारे हों वे जा सोनें जिनका तौमर, मदीरिया और मुजर नाम प्यारा हो केसरिया बाने पहिन लें । यदि गधू की पाठों को बीर-झाड़कर निकल बये तो बस प्यासिदर में ।

रात के सघाटे का केवल पहले मामों की वाग्विषाई हिलोड़ रही थी। ग्वातिबर फिले के परिचयपत्री परगब नामक फाटक को टेढ़ो-मेढ़ो खिरी रात से मानसिह के पैदल सैनिक उत्तर घोर मूबरी महसूस के पास बाँस धुबीय फाटक से मबार घोर हावी। वो बिगाघों में सिक्न्दर को फंसी हुई ज़ीब पर प्रचण्ड आक्रमण हुआ।

सिक्न्दर इस तरह के आक्रमण के लिये तैयार न था। उसका क्या था कि किसी अज्ञात मूर्ख में से कुछ आपा-भार ही उपभूष करते रहने। का मुँह हुआ उसको सिक्न्दर को घायल न थी।

एक ओर से मानसिह के हाथिया ने रौंझना कुचलना शुरू कर दिया दूसरी ओर से मबारा ने तलवार बरसाई, सोसरी घोर से पैदलों ने तीरों का प्रसव रोप दिया।

सिक्न्दर की पूरी सत्ता कांप गई जिस पर घोर हटती हुई सड़न पानी। वह बार-बार जमकर मुँह करने पर पुनर्जी घोर बार-बार उसको पीछे हटना पड़ता। मैदान में मुँह हुआ घाटियों-महालों पर हुआ परम्पु मिक्न्दर की सेना के पैर न हो सके। सिक्न्दर की कुछ सेना ग्वातिबर के वधियल की ओर हुनो कुछ राई की विद्या में घोर उसका एक घंघ हाथियों से घिर गया जो लड़ते-लड़ते मबरे के पहले ही गल्ट हो गया। मानसिह उलझ के साथ पक्ष का संभावना कर रहा था। इधर से उधर घाबेय रु जाने वाले घोर समाचार लाने वाले दूत गाजबानी घोर तल रना के साथ काम कर रहे थे। प्रातःकाल के लिये घबरी कुछ बेर थी।

मिक्न्दर के पास राई की घोर से कुछ मुकुगवार पीड़े घाबे। उन्होंने बताया कि राई का बेरा बालने वाली ज़ीब पर कोई गया दुरमन बढ़ धामा है घोर बेतरह मज रहा है। मिक्न्दर की वास्तविक स्थिति का पता नहीं लगा।

राई का फाटक रात के तीसरे उदर के लगभग भन गया था।
 मेनरिया जाना पहिने रामपूत तामर भयोभिये बजर गब—बिकरुडर की
 रोमा पर सपन पागों में टूट पड़े। चरा छिप मिथ हो गया। परन्तु परे
 पागों का एक सङ्ग उस समय छिपे था जब गागी न गीकी घोर रस्सी
 ने पहारे पड़ने वाला का मुवाधिया क्रिया। दन जद न धम्म के नन
 का रोहा दिया। पमाताग बद्ध होने लगा। विहगर वो मयाबार दने
 न तिये कुछ मबार बोले गये। दामे न रिखी को जन नहीं था कि
 कन्स का दम कहा मे था न्हा।

धम्म जब दम से बसहाया पड रहा था फिर जान न कारण ता
 नहीं जाता ताता था बाय घीर पाज नयवार को जिम्नी का गरह पोका
 रहा था। जही विमना पहो स्वान मापी हो जाता था। ठमक मापी
 मो दम हुठमों के साथ महा नङ्ग रह प। ये सब सगो नङ्गे धर्म
 परने पातों की पीछ ठसज न रहे थे। राई के दन सनन बागों
 को मृण मुर्मय हो नही अत्राप्य भो भग रही थी।

प्रातःकाम की वो पटी। उसकी रोमाये साह मरा की लहरा कर
 मबारी घोर एक तोर धम्म की छाँय में बसकर मङ्क गया। धम्म गिर
 पडा। मरु हो गया हो था हृषिये पाज मे बहन दम बेच पर्वका पाया।
 एक बन्ना भिगमिया गई—म राह नङ्गा जमी के साथ बरा जहाँ
 पड गई है घीर म जा रहा हूँ।

धम्म समान हो गया परन्तु जगद धमक सार्थी धमी बाड़ी प। ने
 गन्ध के साथ मान का रूढ़ रहे थे परन्तु नहीं भिय रने थी। धम्म
 का मरण देग कर तो घीर भी ताव ला गय। लड़ाई होनी रहा।

मुरौंय हाते ही विहगर क हरवारों न लहर की दि मरवर की
 दिया से मानविज की पन्नाग मेमा छा रही है। मरवर में विहगर न
 धारमा की मृषमा गैर बर् की दमिये न्हा हठार मवारों का एक
 न्हा दमिये की मराया के गिण न न्हा था।

बकरी के पाटों के बीच में पितमा सिकन्दर ने पसल्य मही किया ।
गाम्भी के साथ बिचार करके उसने राई के बज्जूसों-पहाड़ों में बड़े जाने
का निरूपण किया ।

जब राई पर पहुँचा उसने देखा कि मझाई समाप्त हो गई है । उसने
बहुत से सैनिक और घनेक राजपूत हठाहूत पड़े हैं—मानो सारी बुझनी
को भूस कर एक जगह धा खोये हों ।

हठाहूतों का प्रबन्ध करके सिकन्दर राई की बाँध घोर पठार के
पीछे जा ठहरा । ग्वालियर घोर राई दोनों बच पड़े । सिकन्दर ने निश्चय
किया अन्तर्द्वे से घोर अधिक सेना को बुलाकर उसके दो भाग कर्मा-
एक ग्वालियर को घेरे रहे और दूसरा गरवर पर हमला करे, जिसमें
एक हमले की मरव न कर सके ।

मानसिंह ने सुबोध के उपरान्त ग्वालियर के घेरे को समाप्त पाया ।
उसको राई की निम्ता थी । ग्वालियर का प्रबन्ध करके राई गया । तब
तक सिकन्दर सैन्य हटकर बहुत दूर निकल चुका था ।

घटन और उसके साधियों को केसरिया बालों में सिपटा हुआ रस
लोभ में पड़ा था । उसका माथा ठगका । इन्होंने ऐसा क्यों किया ?
बौद्ध की भावसमकता क्यों पड़ी ? ये या तो रहा था संकट के संकेत
को देख लिया था । ने एक दिन और ठहरे रहते क्यों इतने कटावने
हो गये ? नकी सुगी जान पड़ रही है । समु इसमें नहीं रिक्तताई पड़ता ।
देखू क्या बात है ।

मानसिंह ने मझी का पता लगा लिया । छटक चुके थे । जलमें थोड़े
से किसान जन थे । भीतर गया । लाली के कार्य और मरुत का समा-
चार मिला । उस स्थान पर जहाँ निता धन भी बरम थी गया । निता
के समीप ही लाली के बहने क्यों के क्यों रखे हुये थे । उनमें मोतिबों
की वह माता भी थी जिसको धिकार में उसने बड़े में पहिनाया था ।
मानसिंह ने माह के साथ उन पहनों को बँधवा कर एक बज्जरक्षक के
बुजुर किया । राई नदी की छा का प्रबन्ध करके ग्वालियर लौट आया ।

मृगनयनी ने लाली के कार्य धीरे धीरे का बलान्त धीरे अपने भाई
न घोष का सतिष्ठ बलान्त जब मुना तब उसने छाती को बल की तरह
बला दिया । हिनकिमी बल के भीतर सूरों को बल की तरह भाई
परम्यु बल न बल सती ।

मानसिद्ध न लाली के गहन सामने रण नये ।

बोला, इनमें मोतियों की बल माला भी है जिसे तब दिन चिह्नार
न पहिनाया जा ।

अब मृगनयनी रो पड़ी । अपचाप रोती रही । देर में धरने को
समय कर पाया ।

बहा, 'मोतियों की माला को तब बल के ऊपर टींगुपी ।

मानसिद्ध उसको लालना बैकर व्यवस्था करने के विय बला बला ।
मरकर की सेना को लौटा लिया गया । वह विचरकर का सामना करने
के प्रयत्नों में धीरे भी बलिक तलर हो गया । दूतों ने उसको सधाचार
दिया कि विचरकर बलकर भादरा की धार लौटा बला जा रहा है ।
आनी व्यवस्था को बल करने के उद्देश से बलिक विचरकर का पीछा करना
बलिक नहीं समझ ।

[५९]

शिकन्दर की सहायक सेना इटाली में थी। यीशु चम्बल पार करके उससे चम्बल की घाटियों पर आ मिली। शिकन्दर ने शुरुआत कृष किया। विशाल सेना के दो बड़े-बड़े भाग किये। एक गरवर की घोर गया वह तब तक ठहरा बाधक था। दूसरा व्याधियर पर आया। मानसिंह परिचित बाधनों के कारण किसे के बाहर बहुत दिनों मुठ नहीं कर सकता था इसलिये उसने छपा मारों के कई बम दिल्ली की सेना को निरन्तर मलाते रहने के लिये छोड़ दिये और वह किसे से मुठ जारी रखने की योजना में न गया।

शिकन्दर ने गरवर को आ घरा। गरवर वाले घरने किसे को अपने पालने में। बा भी। माँह का कोई इत शिकन्दर को नहीं था। बादेरी को जब बाड़े तक गया सकता था। उसको मानस हो गया था कि माँह के मुस्ताल का साकल निर्जन पड़ गया है और राजपूतों के समूहों तथा तुर्क-मराठों के समूहों में इन्ध बनता रहता है। गरवर को जीव लिया तो बादेरी सहज हो मानसी मानसा पैरों तक आ बावेबा और व्याधियर आ भी हमन कर मूँगा उसकी बारखा थी।

शिकन्दर की सहायता के लिये राजसिंह भी आ गया। उसकी सहाय में गरवर की बपीठी के सामने और कुछ नहीं बिकता था। उसेना देने के लिये उसका बाट निरन्तर साज रहता था। उस समय तुर्क-मराठों की राजनीति को प्रेरणा मुस्ता-वीरवियों से मिलती थी और अधिकतर राजपूतों को मादुं थे।

राजपूत एवं उचित के सार के कायम थे—

पावर्तें मकोवे बपी काज नमराज हूँ

गहिम बपीम कस्त कवि की मानव हैं।

शिकन्दर और राजसिंह ने गरवर पर हमले पर इकट्ठे किये, परन्तु गरवर के काटकाट से मत न हुये। गरवर वाले माना करले ने कि पहले

की मति स्थानिपर से लड़ावता एक व एक दिन सा चावनी परम्पु उनको
बना मानुम वा कि स्थानिपर के चारों घोर घेरा बढ़ा हुआ है ।

बरबर के घेरे की बाटूबा बहीना लग गया । शिकम्बर रात दिन
दिवाकर बरबर के बिनाप पर बटा हुआ था । उसको विरपाव था कि
लुकिवारों से बरबर को न बिना सका तो मूर्खों धारकर तो मिटा ही
सुंया ।

और ऐसा ही हुआ ।

बरबर के भीतर घाघ चावनी बिलकुल बुरा गई । कुछ दिन वेहों की
छान घोर पत्तों से काम बजाया । फिर बसता ही गया ।

बढ़ने वाले मकरध्वज साध पर एकत्र हुये । चावी दिया । नये पयाने
के मकरध्वज का स्वरण किया और नित्य उदय घोर अलग होने वाले सूर्य
को नमस्कार किया । करने कदिरोंकी घोर बाँध घेरी घोर बहिं लगी ।

फिर ऐसी बर्तित्वति में जो कुछ होता थाया था हुआ—बिनामों
बुनी गईं तिनहीं ने घातमाहति की । बढ़ने वाले किले का कम्पक सोल-
कर लवहारों भिजे हुये पानुषों की ललवापी पर दूर रहे । शिकम्बर का
बिजय मिल गई । परम्पु उसके लालिप नवीन को भी बह दिन निजमा
बढ़ा कि बरबर ने घातलतपरण मूर्खों पर कर ही दिया ।

शिकम्बर को बिजय तो मिल गई परम्पु कोय बढ़ गया । उमरिह
ले कहा 'मे बरबर का लपटा जब बिलकुल बरस हुआ तब चावकी
बावीर में लबा हुआ । बलमा हो तो मेरे लाल भीतर जगो घोर हबोहों
का काम देखो, बरमा जब मुनाई जब बजा ।

उमरिह उसके साथ किले में नहीं गया । वह लवज दया घोर भा-
मी लमक गया, इसलिये उत्तमिज नहीं कर सका ।

शिकम्बर किले के भीतर गया । किले के चारों लानों का बस्कर
कष्टकर निरीक्षण किया । बोड़े से दीव घोर बर्षण्ड मन्त्रि से प्रभुर
संथा में दीव मन्त्रि । दीव मूर्खों घाल एव की लवता, पान्ति

का प्रदत्त करन वाली। परन्तु विभिन्न मुम्कान दिव की तेजस्विता और जैनशोधदूतों की शान्ति-विराटा से उसको वास्ता ही क्या था ?

मिकन्दर ने नरवर में छः महीने रहकर मन्दिरों और मूर्तियों का ऐसा बरनाचूर किया कि कोई कह ही नहीं सकता था कि नरवर में कभी कोई मन्दिर या मूर्ति थी। सौन्दर्य और शान्ति के प्रतीकों का वह शायद विषमसुख सबसे अपनी निपटानी में करवाया था। राजसिंह और ग्वालियर को न मिला था तो उनके प्रिय प्रतीकों को तो चूरकर दिया ! उसने अपनी शोकाग्नि को इस तरह बुझाने के प्रयत्न किये।

परन्तु उसने व्योपार करने वाले सेठ साहूकारों को नहीं छुटाया। उनके व्योपार की उनको बक़रात थी और सेठ साहूकारों को उसके टंकों की। किसानों का सपना किसी को भी बेना था। उनकी शान्ति-भावना भी ही। अपने में सम्पूर्ण धरतु एक दूसरे से बनन !

छः महीने के बाद उसने राजसिंह को बुलाया और क्लृप्ता तथा नरवर की बानीर उसे बेकर ग्वालियर की ओर चल दिया। परन्तु दिल्ली में से निकले उसको डेढ़ साल से ऊपर हो गया था। कोप की नरवर में उन्माद कर ही भागा था ग्वालियर को भीत केने की धाधा भी नहीं। इसलिये ग्वालियर से अपनी सेना को समेट कर दिल्ली चला गया।

राजसिंह ने नरवर को प्राप्त करने के बाद कष्टा को भी बुला दिया। किन्ते के एक माग में उसके पुराने और नम बैनिध था बसे थे। बाक़ा उबाड़ पड़ा था। हाई कोस के बरे वाला इतना बड़ा क्लृप्ता ! कितनी ऊँचाई पर !! कितनी शताब्दियों बाद घाब फिर से अपने घर धाया !!! राजसिंह ने अपनी इन बड़ी सम्पदा को मुमा-मुमा कर निकलाया।

उत्तरवर्ती पहला लख तोलावाका नाम से प्रख्यात था। राजसिंह ने बतलाया 'दोहा हमारे पुरखे थे इस फाटक से कूब कर उनको भादना पड़ा था। वह बुरहा भी कहलाते थे। घाब उनकी बाग़ह में बुरहा बन कर मुम्हारे साथ हैं।'।

दिलो इस घाटक के पास के कौंगुरे, नीच मुझे हुबे ह । जब राया
नम ने इस स्थान को छोड़ा तब सोच के मारे ये कौंगुरे मुक पय य ।

धीर देखो यह रामानन्द का मन्त्र है धीर यह उनके बैठने का नमस्कार है। रामानन्द हमारे बहुत पुराने पुरखा होखे हैं।

यवा राजा जब इनसे दरिद्र थे कि थोड़े थोड़े तक घोर इन मरिचक
बटाई पर बैठा करते थे ? कथा ने सोचा । जब व दोनों निम्ने के इन
मण्ड में पहुँचे जिसमें दूर दूर तक मुनियों के टुकड़े घोर बूने पाने
तब जाता थी ।

उसने पूछा 'कहाँ गया ?'

राजमिह में विक्रन्दर के विनाश कार्य का संसार में शर्मान बिना ।

बसना सया जैसे ललित मुर्तियां खुद बाप कोन कास कर रह रही हैं तुमने हमको क्यों नहीं बताया ? क्या की चीजों में यान्त्रिकता है । मदनदा इतर में बोली 'यह सब साधन क्यों होना दिया ' जैसे ज्ञान दिया

राजसिंह सकपका गया। एक क्षण में तैमसकर उसने कहा

मे नहीं था महा उन शिलों हमारे मेरा हाथ नहीं था ।

‘ता पारने रोछा क्यों नहीं ?

‘म बदेगा जर ही क्या करना था ? तुमरा सँभालना था। मे देना। पर जो हुआ था ही गया। म यहाँ बरन मे पहर मरन बनवा दूँगा।’

मैं यहाँ अभी नहीं आऊँगी। ये नहीं जानती थीं क्या मही याचा था। मर हो जाने पर भी उन मरि गवर्नमेंटों में गानि व — बिगरी र्म् गानि। वना भण्ड भी हो जाय यावो र्जिन भी हो जाय ना भी उनमें बहपन का कुछ धन ना रहना हा ८। वना माचरी हुई उनमें माच बगी गई।

मृगनयनी की प्रवस्था इस रही थी परन्तु सोम्वर्य बड़ रहा था ।
अगर का सावध रहिर हो गया और भीतर का बड़ता हुआ सीन्दर्य
भीतों में छा गया ।

वसित कमाओं पर उसको अधिकार प्राप्त हो गया था फिर भी
उसने सम्प्राप्त निरन्तर रक्खा । बैजू ने मृगनयनी की एक नई परिपाटी
तैयार करके मांज ली थी । इसके मांजने में उसको मानसिंह से सहायता
मिली परन्तु मृगनयनी से उसकी भी अपेक्षा अधिक । मृगनयन इसके
पहले भी कई नामों से जाना जाता परन्तु उसके चार भङ्ग—स्वाधी
भक्त्य सन्धारी और धायोब—इन तीनों के सहयोग से ही बने और
निबरे । कई एक मृगनयनी के मुख्य भेदों और सहकारिता से बैजू
ने बताया जैसे मूखरी मासमूखरी, न हुनमूखरी और मयममूखरी ।

विशेष बड़ा करता था—काम ही सब कुछ है । काम करना ही
नाम का बर्मे है । काम करते-करते ही मनुष्य स्वर्ग-लोक की भी प्राप्ति
कर सकता है ।

मानसिंह बतलाया करता था—मनुष्य धकेल धकेले काम करके
सन्तोष और हर्ष को तो प्राप्त कर सकता है परन्तु काम से मानस्य
तभी हाथ नव सकता है, जब उसको दूसरों के सहयोग से किया जाय ।

शिकन्दर या किसी भी शासकता की बत्ता टल गई थी परन्तु वह
जायता था कि यह बत्ता फिर कभी फिर पर आ सकती है, इसविषये वह
सेना के सेमाधने-सुधारने में बहुत व्यस्त रहने लगा । कुछ समय निकल
कर वह मूखरी महल में भी जाना करता था ।

बैताल-जीठ की शत्रु थी । वे दोनों मूखरीमहल की छत पर थे ।
मूख में लिफ्टी हुई-सी बांदनी लिफ्टी हुई थी । मानसिंह ने धावद
किया कुछ माफी । तम्बूरा पास रक्खा हुआ था ।

‘क्या माई ? मुनयनी ने धाम स्वर में पूछा ।

‘धपना कोई धुपपद । मुझको बहुत धपना लगता है । नायक बँजु की नामकी में भी उठना मिठाव नहीं मिलता जितना तुम्हारे बछे में ।

‘नायक नायक ही है । मैं तो उनकी शिष्य घर हूँ ।

‘शिष्य तो उनके बहुत से होमये हैं जो इस कई परिपाटी को देग भर में कैलाशेवे । परन्तु तुम तुम्हीं हो ।

‘मैं धुपपद नहीं मुलाना चाहती कुछ धीर मार्कवी ।

‘जो मन को धावे पावो मैं तो मुलना चाहता हूँ ।

मुनयनी लम्बुरा उठाकर पाने लयी—

‘मोरी तोहि लाज मुकट वारे मोरी तोहि

बन्ना सुरज मोरी सेवा करत है

किन्ति करत भी लस तारे । मोरी तोहि—

मुनयनी ने दुहल-दुहल कर इसी पद को बड़े रस के साथ पाना ।

नाचन की समाप्ति पर वे दोनों बाजाप की धोर देखने लगे । बाजाप धोर तारे धावों में कापते के जान पड़ ।

एक सेविका ने मुनयनी दी नायक बँजु लाये हैं ।

बँजु को बिठलवा लिया गया । वे दोनों धाम में जाकर उल्लेख मिले ।

‘बँजु की निद्रामय को,—‘धप धाप नायक की धोर कम ध्यान देने लगे हैं । धमिक बीजिये ।

मुनयनी बोली ‘मैं तो देती हूँ । इनको सेना राजनीति राजा के सेवामने में लाया रहने दीजिये । धावके संगीत विद्यापीठ की गुरी सहायता मिल ही रही है । धोर कोई धावयकता है ?’

बँजु ने धावयकता बनलाई,—‘रज्या को लगीत का महाराज न है । जब सामने होते हैं तब धनेक कई-कई धुमों निकलती है । ‘महा’ नामने रहता बाहिक ।

‘बुद्धिमान फिर फिर कर पा सकता है, इसलिये उसका सामना करने
तैयारी में सदा मने रहना अधिक आवश्यक है। मानसिंह ने कहा।
बैजू बिस्वा पड़ा — ‘आप कहते क्या हैं। सब बुद्धिमान मर गये।
सरस्वती की कृपा से अब कोई नया उत्पन्न नहीं होया। आयेया भी तो
कि बसे ही भाग कर भौट जायेया।

हठ मत करिये नायक जो मृगनयनी विजय के स्वर में बोली।
‘तो मरना मन नहीं लागेगा। बैजू ने कहा।
एक रात बाद मृगनयनी न प्रगल्भ किया ‘आचार्य विजयमङ्गल कहते
ह कि धारने जो नये राग बना लिये सो बना लिये अब नहीं बना सकते
क्या यह बात ठीक है ?

विजयमङ्गल क्या जान। वह तो ऐसा कहत ही रहते हैं।
‘और किसी किसी की कल्पना है कि गुजरी टोड़ी राग जो धारने
बनाया है उसकी कुछ रूप रेखा गुजरात में पहले से है।
‘और मूर्ख कहता है ? धारने एक दिन टोड़ी राग गाते हुये धन
जान एक तान बनाई मेम उसको मनमें रख लिया और उसका बिस्तार
करके गुजरी टोड़ी बनाकर खड़ी कर दी। मूक लोग क्या जानें।
तो अब नये राग कैसे बनेंगे ? आपका मन कुछ हार जा क्या
है न ?

‘नहीं तो। जब धकेले में सरस्वती जी की धारायना करता हूँ तब
नई नई बातें झूमती-झी उमरती जमी जाती है। मन जमी नहीं
हारेगा।

मृगनयना न मानसिंह की धीरे एक सूक्ष्म बुद्धि फटी। बैजू ने लज
नहीं किया। वह कुछ गुणगुना उठा पा।

मानसिंह ने मुन्करा कर कहा ‘तो जब तक मैं तमवार द्वारा तुम्हें
की धारायना करता हूँ आप नये-नये रागों के सूजन द्वारा सरस्वती की
करिये।

बैजू हँस पड़ा। बोला ‘हाँ हाँ ठीक है। ऐसा ही होगा।

[७१]

गरबर के बिनाउ को हुये कई बरस हो गये थे जग्हेरी भी मानना
ने बटकर गरबर के घसीन धा मर्त पा परन्तु मर्तिरानो को मयदा बा
जैसे कुछ निग ही हुये हों और जैसे जड़ी कुछ हुआ ही न हो ।

क्योंकि, उसका मग्न पूरा हो गया था । परिषों के बहीराते में पूरे
पगह हज़ार को विन्नी दर्ज हो चुकी थी ।

उठरने ईशान के महीने में उगका फिर जगबिहार को गूभी ।
मग्न्या के पहले कानिदाह भीम पर बनानो से फिर हुये रक्त-विरक्त
बिनानों के नीचे फिर परिस्थान का जमपट कहा । घबकी बार हमारा से
बहकर रक्त-विरक्त मग्न सामुपण नई-नई विप्रायें बसे राम-बद का
घायोजन । मग्ननी पूरा पर बद बिनानों के नीचे बाने लगी । रक्तान
गुहियों को जमपटक हिलोड़े गाने लगी ।

गदाका मग्न बास था । मनीर न घाहेन दिया नारी में उदा
त घमन का लभ हो । उनके बाग नाच-नाचा ।

ओ हुकुम ।

‘मग्न्या करो द्योते । पहले बोझ नाच हो जान फिर मग्नोदमन ।

ओ हुकुम जहीनवाह ।

मे भी मग्नोदमन के गम में गरीक होऊँगा । उगका जमनी
तई कामुचना में प्रपन्न हो ।

ओ हुकुम गदाका मग्न के मर्त से फिर निवता ।

बहु कगारों के साथ नाच-नाच हुआ । तथा कि मनीराना भी दया
गई हारी । नाच-नाच की उभाण हा । होन मनीराना के मग्नारे पदकर
भी गया । मनीराना के इनमें बाकार प्रसार उमक दमक में था, जैसे
यदि मग्न को भी मनीराना उगका देर तक कामुचना नहीं दे
सकती थी ।

परिस्थान जलबिहार के लिये उत्कृष्ट था। परन्तु सुस्तान को जमाने कीन ? किसने इतनी हिम्मत ? मटक से मापह किया। उसको भी चाहत नहीं हुआ।

मटक से एक बगवती के कान में कुछ कहा। वह कुछ दूर जाकर बिस्मार्ह—साँप ! साँप !! साँप !!!

कई कण्ठों से यही ध्वनि बेभाव निकली।

मसीर भी आवाज़ बिस्मा बढ़ा—‘साँप ! साँप !! साँप !!! कहाँ है ? कहाँ है ?

मटक से लौट कर जहाँ की ‘अहोपवाह, माप गया।

मसीर ने धावेक दिया, ‘दूर फेंक दो उसको। मगर ज़ेब में बग फँसना। ज़नात के बाहर फेंक दो। पहले वाले उसको कहीं बाढ़ देने।

फेंक दिया, अहोपवाह। मटक न सात्पना थी।

मसीर ने जैन की साँठ लेकर कहा ‘कम से जहाँ-जहाँ साँप मिलें मक्को मरवाता चुक कर बुँबा। जन्मा धम यह सब हो।

परिवाँ पानी में डूब गयी। मसीर भी उतर गया। खेत होने लगा। हलै-हलै ठहरने वाली हुए बाने लगी। परन्तु बहुत दूर नहीं। मसीर कुछ दूर विकस गया।

बोली ही बेर खेतने के बाद मसीर लड़ गया। बस कूत गई। हाथ बेर फटने लगा। मटक ने किनारे पर से देखा। सोचा सुस्तान बिस्मार्ह कर रहा है।

सुस्तान के हाथ-पैर डोलने पड़ गये। बिस्मार्ह ‘बचाओ। ज़नात के बाहर डिपाहियों ने मुन लिया, परन्तु जमकी हिम्मत नहीं पड़ी। कीन पपना धिर बीर हाथ कटवाये। उन्मुने सोचा।

सुस्तान फिर बिस्मार्ह ‘बचाओ !!

वरियों की भी पुराना अनुभव याद था गया। इनकी बचाने में
कहीं हम ही न हुए जायें। कोई भी उसकी तरफ नहीं गयी। सब
सीपती थीं कोई न कोई भाकर बचा गया।

मटक इधर-उधर घोंड़ भुप कर रहा था धीरे बिस्ता रहा था।

कमरबस्तो ! बचाओ !! उसका सारा प्रयास प्रवर्जन मात्र था।
बहु बाइता था मुस्तान देखते स्वाभा विरता उत्तर है।

बचाने की कोई नहीं पहुँचा। मुस्तान कुछ से पानी के पीने पला
गया।

सब क्षमताका और बिस्म-मुबार बची। वरियाँ पानी में से निकल
निकलकर कद पहिने-सेमाने में लय गई। बाइर रोता बहु बचा।

सब सारे पीरे के ऊपर की धागें बूँद रहे न — मुस्तान टब गये।
मुस्तान बूब गई !!

पहरेवालों का बीरब धीरे डर सम्प्लत हो गया। ज्वात की काटफ
भीतर बत गई। स्त्रियाँ इधर-उधर बिस्ताही सावली फिर रही थी
एक दूसरी से टकरा-टकरा का ली थी। विवाहियों के मरक का पकड़
निबा।

नतीर के लड़कै के पास समाचार पहुँचा। बहु मुरम्त माया। बड़वा
काम को उसने दिया बहु का मटक का बच। फिर उसने व्यवस्था की।

दुसरा काम को उसने दिया बहु का वरिष्ठान का निर-निर
करना।

सीपता काम को उसने दिया बहु का मरिनीराम को बुलाकर
रात्रपूतों द्वारा सरपदा सरवारों का समय और बातका का धावक।
मुझे भीतरियों की धरा लया वरम्त उसने बरबाह नहीं की। नमीर
का लड़कन मरम्त निजरी निमीर के नाम से प्रख्यात हुआ।

[७२]

देवाङ्ग के सिंहासन को राखी सीधा ले पाया । महम्मद बख्शी दो वर्ष पीछे इस कनेजे मोहन ध्यातु और रक्तपात को करव करते भर गया । दाकण में वृष्णदेवगय में बिजयनगर को समूह किया । सिद्धर सोयी को उसके भाई जनाल ने परेगात किया । सवाई स्वामादिक ही थी । मझाई हुई । जनाल द्वारा और भाग कर सिद्धर के बिरमभु मानसिह के पास सहायता के लिये ग्वालियर आया । मानसिह अपने सैनिकों का इस तरह का सहाई म धर्म्य व्यव नहीं करना चाहता था इसलिये जनाल अपने अपने सहायों को ग्वालियर में ही छोड़ कर नौबताने की तरफ भाग गया । वही पड़ना गया और पातरा भेज दिया गया । सिद्धर ने वही किया जो उसी परिस्थिति में कहा होता था था—मर्याद विरमभु न उसका प्राणवध का वध दिया ।

जनाल अपने जिन अपने सहायों को ग्वालियर में छोड़ गया था वे अपने को अपना पा रहे थे । दिल्ली का नहीं सकते थे क्योंकि निक ग्हर लम्बा कतल करवाय बिना न मानता कहीं धर्म्य वध के लिये ठिकाना न था ।

मानसिह ने उनका धारण प्रदान की । बाबरासन दिया मरा ममदा मुल्तानों और गुल्तानी राखन से है न कि बुलमयानों से । काम करो, राजमकत रही और हिन्दुओं के समान ही मर्याद पाते हुये रज्जत के साथ जीवन को बितायो ।

सिद्धर का ग्वालियर की हार कभी नहीं भूली । उसने सबकी बार बहुत मझी तैयारी की । निश्चय किया—ग्वालियर की वही दुर्बल कर्षेया जो मरमर कीकी थी । इस तैयारी की फिटर में वह मर भी गया ।

मानसिह ललित जनालों के बिकास और सैन्य संवदन के सम्मुख में गया हुआ था । जगहों केवल एक बिन्ता थी—वही रानी से पुन

बिक्रमादित्य था । मृगनयनी से दो पुत्र राजनिह घोर बापसिंह — राज
घोर बाले—राज्य कीज करेगा एक या तीनों ? जबका राज्य के तीन या
दो बराबर-बराबर भाग कर दिय जायें ? तीन या दो भाग कर देने में
ठिठर ज्वालियर कितने समय तक धागरा दिखी ॥ सामी टिक सरेगा ?
यह समस्या उसकी चिन्तित बिये रहती थी । इस बिम्बा में जन्मान्त उन
समय घोर था कड़वा था जब मुमनमोहिनी इन गमस्या के गुनगान था
जठ करने समती थी । वह सोचता था बड़ी रानी को भय है कि मैं बड़ी
यथायक मर न जाऊँ तो मजदरी राभी सश्रव करवा उठेगी क्योंकि उसको
राज्य का अधिकार माग्यता घोर अपनी पड़ा दिय हुये था । मरे मरने
की सोचती है यह । मेरे मरने की ॥ यह कङ्कषापन उनका बहुत पछा
अपार जाता था ।

एक दिन मुमनमोहिनी ने इस प्रश्न का अनिरणय के कुहास में म
निकाल कर निस्तंभयता के रूप प्रकाश में ल जान का दृष्ट अवसर दिया ।

अबतर पाते ही उसने मागसिंह से कहा 'निम्ना का मुग्धाल ठिठर कर
माने की सवारी कर रहा है ।

'समाचार था गया है । वह मर गया ।

वह मर गया तो कुछ धावेगा ।

'सामना करेंगे । जीवन है ही इनके निय ।

आपकी साथी उमर अबक परिपक्व करते बरत ही बीती है । अबत।
कुछ बिग्राम मिलना चाहिये । जवन-युवन की भी कुछ अधिक समय ।

काय करने जाना मरने से कुछ पछे पड़े ही कहा होता है । मैं तो
किसी बात में भी निमित्त नहीं कहा हूँ घोर जवन-युवन भी बरता रहा
हूँ ।

इन कुमारों से भी कुछ नाम सीखिय नहीं तो निरर्थक कह जायेंगे ।
निकला रहा हूँ ।

‘यदि नरवर का क्रिया किसी कुमार के हाथ में होता तो यों ही न भिन्न जाता। क्या फिर हाथ था सकेगा ?’

‘प्रबल कर रहा हूँ।’

‘यदि हाथ में था चाय तो किसी कुमार को चाय देने ?’

‘वे दोनों तो छोटे छोटे ही हैं। बड़े कुमार विक्रमादित्य को भेज चुका यदि नरवर हाथ सब क्या तो।’

‘छोटों की क्यों नहीं ? क्या वे दोनों इतने प्यारे हैं कि स्वामिंदार में रहें और विक्रम नरवर में रहे ?’

‘किसको कहते हैं—भूत न क्यात कोरी के महुमल्लहा !’

‘भूजरी महल में सूत और कपास नहीं कुछ है। चाक क्यों नहीं कहें कि राजादिह या बानादिह में से किसी की स्वामिंदार का राज्य दिया जायदा और विक्रम को नरवर या ऐसे ही कहीं क जङ्गल और पहाड़ की जायदा ?’

‘धनी तो वे हैं और बहुत दिल बिकेगा।’

‘बनवान करें चाय लहसुन सब दिवें और राज्य करें न कल ही घर बाँटें और आपके इस हुज्जत ब्याह और ही।’

‘बड़ी रानी के बने में हिनकी या गई और बानादिह को हँसी। बड़ी रानी की हिनकी बन्ध हो गई, बांगुलों में के शिवनारिया कूट नहीं।’

‘बोली आपकी स्पष्ट कर देना चाहिये। जिसको राज्य देना हो धनी के बहु दीजिये।’

‘और योग्य होना, वही राज्य करेगा। धनी से जिस को बोने की घटक ही क्या है ? विक्रम मुझको कितना प्यारा है। उसकी यह जानता है। चाय नहीं जानती।’

‘जबकि चायकी शिवना में जानती हैं जगना विक्रम नहीं जानता।’

‘घोर पाप यह भी नहीं जानती कि तन लोगों में गरम्पर बिगना स्नेह है !

‘हाँ घा ! हम सब बातों को गुजरी रानी घबिह अन्धता जानती हैं । क्या प्यामियर के तीन टुकड़े किसे आवेंगे ?

मानसिंह न रात मुष्कान के साथ उत्तर दिया ‘घात्र तो टुकड़ हो नहीं रहे हैं ।

उस रात मुष्कान के नीचे मानसिंह के हृदय में बहुत गुहन थी ।

[७३]

कुछ दिन पौछ भुगनयनी ने मानसिंह से कहा 'असिय बिजयामा के सस बिज को बिजसाई ।

उत्कण्ठा के साथ मानसिंह ने पूछा 'हो गया धुप ?

उसने उत्तर दिया 'पूरा तो नहीं हुआ थोड़ी सी कसर है । पर कुछ घागे बढ़ गया है ।

मानसिंह उसको साथ बिजयामा में गया । उस बिज के लक्ष्य वाले धनु में कुछ रंग और भर दिये गये थे । दूसरा धनु काफी भर दिया गया था परन्तु उसमें बाँझो सी कसर और थी ।

कला वाले धनु के ऊपर लिखा था 'कला' और दूसरे धनु के ऊपर लिखा था 'कर्तव्य' । उसको मानसिंह ने पहले पिला नहीं देखा था । 'कर्तव्य' वाले धनु के ऊपर एक कूटी से साँझी बाली मोतियों की माला टँगी हुई थी । मित्रियों के प्रकाश में मिलमिला रही थी ।

भुगनयनी ने मानसिंह के हाथ में एक पत्र दिया । मानसिंह ने पढ़ा । उसमें लिखा था—'उर्बासिंह और बानसिंह गद्दी यागपीर के अधिकारी नहीं होंगे । वे अपने बड़े भाई को घामा का पालन करते हुये केवल अपने कर्तव्य का निर्वहण करेंगे । इस फैसले की एक प्रतिनिधि महापत्नी—भुगनयनी के पास आज ही भेज दी गई है ।

पत्र को पढ़ कर राजा ने आश्चर्य के साथ भुगनयनी की ओर देखा । उसको बेहरे पर मुश्किल थी ।

भुगनयनी के कोस-कलाव में कुछ रक्त रेखाओं की सहूँ प्रकट हो चुकी थी लवटा का बीसे बेसा जमली की रेतोंमें स्वास्थ के रिनतों में बरसवा रही थी ।

शरीर का कीर्ण्य घास्या के सजीनेपन को ओर भी अधिक पा चुका था ।

मगनयनी

उसको स्मरण हो पाया—हरी का घोर खोहर में महत्त्व स्थिरता में है जैसा उस नदी का जो बरसात के मर्मोत्ते से प्रवाह के बाद घर में नीले जल वाली मगर गति-पायिनी हो जाती है—दूर से बिलकुल स्थिर बहुत पास से प्रकटिमानिनी ।

मानसिंह की घाँवें सज्जन हो गईं ।
 यह तुम क्या किया ? मानसिंह के काँते हुए होठों से घोर से निकला ।

बिज के 'वर्तव्य' वाले घड़ की घोर उँगली उठाना हुई वह बोली 'यह ।

मगनयनी की मरकान घोर लिली । मानसिंह की घाँवें घोर सज्जन हुई ।

मानसिंह के अंश से नीर भी नीरे से एक बाध निजला 'यह तो बिज का यह घम पूरा हो जाना चाहिये । उसको समूचा क्यों छोड़ा जा रहा है ?

मगनयनी ने कहा 'संकल्प घोर मानना जीवन-तखती के दो पलके हैं । जिसकी घण्टिक मार से नाद कीजिये वही नीचे जाता जायगा । संकल्प वर्तव्य है घोर मानना कला । दोनों के समान समन्वय की आवश्यकता है । न तो घड़ी कला का घम पूरा हुआ है घोर न वर्तव्य का । तनड़ी के दोनों पलके तुके हुये हैं न इन बिज में ?

मगनयनी की बुद्धि सामी के मुक्ता-हार पर गई । घाँवें बोड़ी नी भनभना आई ।

मानसिंह ने भी देगा ।
 घोर भी दबे स्वर में बोला 'वर्तव्य बाते संघ में सब कोन भी कमर रह गई है देखी ?
 पीछियों की माता घोर समूर्ण बिज पर बुद्धि पुनानो हुई मगनयनी ने वर्तव्य बाते संघ पर उँगली रगड़कर कहा 'प्रजा के गुन की देग की

मानसिंह ने मृगयणी को छाती से लगा लिया । मृगयणी ने उसके कंधे पर धरना फिर टिका दिया । उसी बड़ी धाँके मानसिंह की मुड़ी हुई बरोनियाँ से उसका बड़ा धीर लोगों के सम्मुख एक कूदरे से जा मिले ।

मानसिंह के कपड़े हुए होठों से जीम जीम खर निकसे—

‘कना धीर कर्तव्य का समन्वय इस कसर की किसी दिन मकर पूरा करेगा ।

फिर जन लोगों की दृष्टि मोटी-भाता की धीर बड़ी ।

बहु बमक रही बी ।

(समाप्त)

